First Edition : 1000 Copies

Copies of this book can be had direct from Jaina Samskriti Samrakshaka Sangha, Santosha Bhavan, Phaltan Galli, Sholapur (India)

Price Rs. 8/- per copy, exclusive of postage

जीवराज जैन ग्रंथमालाका परिचय

सोलापुर निवासी ब्रह्मचारी जीवराज गौतमचदजी दोशी कई वर्षोंसे संसारसे उदासीन होकर धर्मकार्यमें अपनी वृत्ति लगा रहे थे। सन् १९४० में उनकी यह प्रबल इच्छा हो उठी कि अपनी न्यायोपार्जित सपत्तिका उपयोग विशेष रूपसे धर्म और समाजकी उन्नतिके कार्यमें करें। तदनुसार उन्होंने समस्त देशका परिभ्रमण कर जैन विद्वानोंसे साक्षात् और लिखित सम्मतिया इस बातकी सग्रह कीं कि कौनसे कार्यमे सपत्तिका उपयोग किया जाय। स्फुट मतसचय कर लेनेके पश्चात् सन् १९४१ के ग्रीष्मकालमें ब्रह्मचारीजीने तीर्थक्षेत्र गजपंथा (नासिक) के शीतल वातावरणमे विद्वानोंकी समाज एकत्र की और ऊहापोहपूर्वक निर्णयके लिए उक्त विषय प्रस्तुत किया। विद्वत्सम्मेलनके फलस्वरूप ब्रह्मचारीजीने जैन सस्कृति तथा साहित्यके समस्त अंगोंके सरक्षण, उद्धार और प्रचारके हेतुसे ' जैन सरक्षक सस्कृति सघ ' की स्थापना की और उसके लिये ३०००० तीस हजारके दानकी घोषणा कर दी। उनकी परिग्रहनिवृत्ति बढ़ती गई, और सन् १९४४ मे उन्होंने लगभग २,००,००० दो लाखकी अपनी सपूर्ण सपत्ति सघको ट्रस्ट रूपसे अर्पण कर दी। इस तरह आपने अपने सर्वस्वका त्याग कर दि. १६-१-५७ को अत्यन्त सावधानी और समाधानसे समाधिमरणकी आराधना की। इसी सघके अतर्गत ' जीवराज जैन ग्रथमाला ' का सचालन हो रहा है। प्रस्तुत ग्रंथ इसी ग्रथमालाका अष्टम पुष्प है

प्रकाशक
गुलाबचंद हिराचद दोशी,
जैन संस्कृति संरक्षक संघ,
सोलापुर.

मुद्रक
फुलचंद हिराचद शाह,
वर्धमान छापखाना,
१३५, शुक्रवारपेठ, सोलापुर



स्व. ब्र. जीवराज गौतमचन्द्रजी

भट्टारक सम्प्रदाय

अर्थात्

मध्ययुगीन दिगम्बर जैन साधुओंके संघ
सेनगण, बलात्कारगण और काष्ठासंघका
सम्पूर्ण वृत्तान्त



सम्पादक

श्री. विद्याधर जोहरापुरकर, एम् ए

(सस्कृतके व्याख्याता, नागपुर महाविद्यालय, नागपुर)

वीर संवत् २४८४) मूल्य ८ रुपये (सन १९५८

सम्पादकीय

शिलालेख, ताम्रपट व ग्रंथ-प्रशस्तिया इतिहास-निर्माणके अमूल्य और सर्वोपरि प्रामाणिक साधन है, यह बात अब सर्व स्वीकृत है। जैनधर्म सबधी ये प्रमाण अभी-तक पूर्णरूपसे सुलभ नहीं हो सके इसी कारण जैनधर्मका इतिहासभी अभी तक प्रामाणिकरूपसे प्रस्तुत नहीं किया जा सका। सौभाग्यसे इस कमीकी अब धीरे धीरे पूर्ति होनेकी आशा होने लगी है। अनेक प्रकाशन सस्थाये अब इस ओर अपना ध्यान दे रही हैं। माणिकचन्द ग्रथमालाकी तीन जिल्दोंमें डॉ. गेरीनो द्वारा संकलित सूचीमे उल्लिखित प्राय: समस्त जैन लेखोका सग्रह हिन्दी भावानुवाद सहित प्रकाशित हो गया है। औरभी अनेक छोटे बडे लेखसग्रह प्रकाशित हुए है। हमारी यह ग्रथमालाभी इस दिशामे प्रयत्नशील है। अभी अभी जो इस ग्रथ मालामे Jainism in South India and Some Jaina Epigraphs शीर्षक ग्रथ प्रकाशित हुआ है वह इस बातका प्रमाण है कि इन लेखोसे कैसा अज्ञात इतिहास प्रकाशमें आता है।

प्रस्तुत पुस्तकमे प्रो. विद्याधर जोहरापुरकरने भट्टारकसम्प्रदाय सबधी ७६६ लेख सग्रह किये हैं। और उनका हिन्दी भावार्थभी लिखा है, तथा ऐतिहासिक टिप्पणिया भी जोडी है। नामादि वर्णानुक्रमणियोसे ग्रथका उपयोग करनाभी सुलभ बना दिया गया है। यद्यपि इनमेके बहुतसे लेख पहलेसे हमारी दृष्टिमे चले आरहे हैं। किन्तु यहा जो उन्हे व्यवस्थासे कालक्रमानुसार रखा गया है उससे अनेक तथ्य प्रकट होते है। जिनका विवेचन किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है। प्रस्तावनामे सकलनकर्त्ताने अनेक सूचनाए की हैं जिनपर ऊहापोह व मतभेद सभव है। किन्तु अपने प्राक्कथनमें उन्होंने यह प्रतिज्ञा की है कि “ इस पुस्तकके अगले भाग प्रकाशित होने पर इस विषयपर विस्तारसे लिखनेका सम्पादकका विचार है। ” इसपरसे हमे धैर्यपूर्वक ग्रथके अगले भागकी प्रतीक्षा करना चाहिये। हमे इस उदीयमान साहित्यसेवीसे भविष्यके लिये बहुत बडी आशायें हैं।

हीरालाल जैन
आ. ने. उपाध्ये

प्राक्कथन

मध्ययुगीन जैन समाजके इतिहासमे भट्टारक सम्प्रदायका स्थान महत्त्व-पूर्ण है। इस सम्प्रदायसे सम्बद्ध इतिहाससाधन पट्टावलिया प्रतिमालेख, ग्रथ-प्रशस्तिया आदि विपुलमात्रामे प्रकाशित हुए है। किन्तु इन साधनोंका व्यवस्थित उपयोग करके कोई ग्रन्थ अब तक नहीं लिखा गया था। इस कमीको अशत दूर करनेके उद्देश्यसे ही प्रस्तुत पुस्तकका सम्पादन किया गया है।

अनेकान्त, जैन सिद्धान्त भास्कर, आदि सशोधनपत्रिकाओंमें प्रकाशित सामग्रीके अतिरिक्त, नागपुर, कारजा, अजनगाव तथा कुछ अन्य स्थानोंके अप्रकाशित इतिहाससाधनोका भी इस पुस्तकमें उपयोग किया गया है। इनमे नागपुरके समस्त मूर्तिलेखोका संग्रह हमे देवलगाव निवासी श्रीमान शान्तिकुमारजी ठवली द्वारा प्राप्त हुआ। शेष साधन हमने स्वय सकलित किए है।

इस पुस्तकका स्वरूप एक तरहसे इतिहास-साधनसूची जैसा है। पहले मूल लेख दिए हैं, फिर उनका हिंदी साराश टिप्पणियो सहित दिया है, तथा इस परसे फलित कालानुक्रम भी साथमे दिया है। भट्टारकों द्वारा निर्मित ग्रथोका परिचय, मूर्तिकलाका विकास तथा जातीयसघटन आदि जो विषय विस्तृत विवेचनकी अपेक्षा रखते है उनका प्रस्तावनामें निर्देश मात्र कर दिया गया हैं। इस पुस्तकके अगले भाग प्रकाशित होने पर इस विषय पर विस्तारसे लिखनेका सम्पादकका विचार है।

पट्टावलियों आदिमे जो बातें बहुत ही सदिग्ध है उनका हमने विवेचन नहीं किया है, सिर्फ कहीं कहीं निर्देश भर कर दिया है। जहा तक हो सका, सुस्थापित तथ्योंका ही निवेदन किया है। कुंदकुद, उमास्वाति आदि आचार्यो-के गणगच्छादिका क्या सम्बन्ध रहा इस विषयमें भी हम ने चर्चा नही की है क्यों कि इस विषयके लिए पर्याप्त तथ्य उपलब्ध नहीं है।

इस पुस्तकके लिए बाबू कामताप्रसादजी, मुनि कान्तिसागरजी, पडित मुख्तारजी तथा परमानदजी आदि विद्वानो द्वारा प्रकाशित सामग्रीका उपयोग हुआ है। इसके वर्तमान स्वरूपके लिए श्रीमान् डॉ. उपाध्येजीकी प्रेरणा, श्रद्धेय प. प्रेमीजीके आशीर्वाद तथा श्रीमान् डॉ हीरालालजी जैनका प्रोत्साहन ही कारणभूत हुए हैं। 'जैनमित्र' के वयोवृद्ध सपादक श्रीमान् कापडियाजी ने भ.

सुरेन्द्रकीर्ति आदिके फोटो भेजने की कृपा की है । पुस्तकके मुद्रण कार्यका निरीक्षण जीवराज ग्रथमालाके सुयोग्य कार्यवाह श्री अक्कोळेने सुचारुरूपसे किया है । इन सब महानुभावोंके प्रति हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं ।

हमे खेद है कि इस ग्रथमालाके सस्थापक श्रद्धेय ब्र. जीवराज गौतमचद दोशी का इस पुस्तकके प्रकाशित होनेसे पहले ही देहान्त हो गया । सशोधनके विषयमें उन्हें बहुत रुचि थी । हम उन्हे हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं ।

पुस्तकके परिवर्धन तथा सुधारके विषयमे जो भी सुझाव दिए जायेंगे उनका स्वागत किया जायगा ।

नागपुर
ता २-४-५८

– सपादक



अनुक्रमणिका

संपादकीय
प्राक्कथन
अनुक्रमणिका
संकेतसूची
Introduction
शुद्धिपत्र

प्रस्तावना – १–२३

१ ऐतिहासिक स्थान १
२ उत्पत्ति और पार्श्वभूमि २
३ परंपराभेद और विशिष्ट आचरण ४
४ स्थल और काल ६
५ कार्य–मूर्तिप्रतिष्ठा ७
६ ग्रन्थलेखन और संरक्षण ९
७ शिष्यपरम्परा ११
८ जातिसंघटना १२
९ तीर्थयात्रा और व्यवस्था १३
१० चमत्कार १५
११ कलाकौशलका संरक्षण १५
१२ अन्य सम्प्रदायोंसे सम्बन्ध १७
१३ परस्पर सम्बन्ध १९
१४ शासकोंसे सम्बन्ध २१
१५ उपसंहार २३

भट्टारकसम्प्रदाय – १–२९९

१ सेनगण १
२ बलात्कारगण–प्राचीन ३९
३ ,, कारंजाशाखा ४८

४	,,	लातूरशाखा	७९
५	,,	उत्तरशाखा	८९
६	,,	दिल्ली-जयपुरशाखा	९७
७	,,	नागौरशाखा	११४
८	,,	अटेरशाखा	१२६
९	,,	ईडरशाखा	१३६
१०	,,	भानपुरशाखा	१५९
११	,,	सूरतशाखा	१६९
१२	,,	जेरहटशाखा	२०२
	परिशिष्ट १ बलात्कारगण की शाखावृद्धि,		२०९
	२ काष्ठासंघ की स्थापना,		२१०
१३	काष्ठासंघ माथुरगच्छ		२१३
१४	,,	लाडबागड-पुन्नाटगच्छ	२४८
१५	,,	बागडगच्छ	२६३
१६	,,	नन्दीतटगच्छ	२६४

परिशिष्ट—	३ भट्टारक—नामसूची	३००
,,	४ आचार्यादि नामसूची	३०८
,,	५ ग्रन्थनाम सूची	३१२
,,	६ मन्दिर उल्लेखसूची	३१७
,,	७ जाति—नामसूची	३१९
,,	८ शासक—नाम सूची	३२०
,,	९ भौगोलिक नामसूची	३२२
,,	१० नक्शा	३२७

संकेतसूची

१ प्रकाशित साधन–

अ. – अनेकान्त मासिक, स. प. जुगलकिशोरजी मुख्तार आदि.

च. – श्री. जिनदास ना. चवडे, वर्धा, द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ.

दा. – दानवीर माणिकचन्द्र, ले. ब्र. शीतलप्रसादजी.

भा. – जैन सिद्धान्त भास्कर त्रैमासिक, स. डॉ. हीरालालजी जैन आदि.

भा. ग्र. – उपर्युक्त त्रैमासिकमें प्रकाशित ग्रन्थप्रशस्ति–सग्रह.

भा. प्र. – उपर्युक्त त्रैमासिकमें प्रकाशित प्रतिमालेख–सग्रह

म. प्रा. – मध्यप्रान्त और बरार के हस्तलिखितोंकी सूची

स. रायबहादुर हीरालालजी.

हि. – जैन हितैषी मासिक, सं. प. नाथूरामजी प्रेमी आदि.

जै. – जैन साहित्य और इतिहास, ले. पं. नाथूरामजी प्रेमी (प्रथम सस्करण

२ अप्रकाशित साधन (मूर्तिलेख तथा हस्तलिखित) –

का. – बलात्कारगण मदिर, कारंजा.

ना. – सेनगणमदिर, नागपुर

प. – काष्ठासघमदिर, अंजनगाव

पा. – पार्श्वप्रभु (बडा) मदिर, नागपुर

व. – बलात्कारगण मंदिर, अजनगाव

म. – श्री. मा. स. महाजन, नागपुरका संग्रह

से. – सेनगण मंदिर, कारजा

३ जिन ग्रंथों की प्रतिलिपियोंकी पुष्पिकाएं मूल लेखाकोंमें दी है उन लेखाको के शीर्षकोंमें उन ग्रंथों के नाम ब्रेकेटमें रखे गए है ।

INTRODUCTION

(A digest of Hindi Prastāvanā)

1 General Nature

Bhattāraka is a term applied to a particular type of Jaina ascetics. Unlike a Muni or Yati, these ascetics assumed the position of a religious ruler They managed large estates donated to some temple and enjoyed supreme authority in religious matters. Their tradition is very much similar to that of the Sankarāchāryas.

2. Extent of the Subject

Bhattāraka tradition is found in both Digambara and Svetāmbara sects. Twentytwo seats of Digambara Bhattārakas are known today Out of these, one seat of Senagana existed at Kāranja (Dist. Akola, Berar), ten seats of Balātkāra Gana existed at Jaipur, Nagore, Ater, Ider, Bhanpur, Surat Jerhat, Karanja, Latur and Malkhed, and four seats of Kāsthāsangha existed at Hisar, Surat, Gwalior and Karanja. The complete historical account of these fifteen seats is embodied in the present work Remaining seats of Digambara Bhattārakas are situated at Kolhapur, Mudbidri, Karkal, Humbuch and Sravan Belgola. We hope to edit the account of these seats in the second volume of this work

3 Age of the tradition

Traditions embodied in the Dhavalā, Harivamsapurāna etc. are unanimous about the line of pontiffs that existed during the first seven centuries after Mahāvīra Bhadrabāhu II and Lohārya II were the last two pontiffs in this line Traditional Pattāvalis of various seats of Bhattārakas generally begin with either of these two

Exact historical references to these seats are, however, found from eighth century A. D To fill up the gap between these six centuries all traditions claim the famous pontiffs such as Kundakunda, Samantabhadra, Devanandi Pūjyapāda etc., according to their will.

Even these references found from eighth century onwards are not continuous. The later Bhaṭṭāraka traditions generally begin from the thirteenth century A. D., which continue upto the present day

4 **Literary Contribution**

This volume contains references to about 400 compositions of various Bhaṭṭārakas. This literature is mainly divided into three topics epics, stories and texts for worship Epics and stories are generally smaller reductions of stories found in the Padmapurāna of Ravisena, Harivaṃsapurāna of Jinasena and Mahāpurāna of Jinasena and Gunabhadra. These are found in Sanskrit, Prākrit, Apabhranśa, Hindi, Marathi, Gujarati, and Rajasthani. Various Purānas by Sakalakīrti of Ider and numerous Vratakathās by Srutasāgarasūri are noteworthy References are also found to works on grammar, astrology, prosody, logic, metaphysics, medicine, mathematics and other allied subjects

5. **Contribution towards Art and Architecture**

Installation of various images was considered to be the main work of a Bhaṭṭāraka These ceremonies presented a good opportunity for large religious and social gatherings and to establish one's prestige in the society Various titles such as Saughapati, Seth etc , were conferred upon chief donators of the ceremony

More than a thousand images were installed at a single ceremony by Jinachandra at Mudasa (Rajasthan) chief donator was Seth Jīvarāj Pāpadiwāl These images were later on sent to a large number of temples all over India They are found right from Amritsar to Madras and from Girnar to Calcutta This ceremony took place on the Aksaya Tritīyā of Sam 1548 (1492 A D)

Some twenty types of images were installed during this age The largest number of images were of Pārśvanātha, the twentythird Tīrthankara. Temples, pillars and other monuments formed an important part of Bhaṭṭārakas' work.

6 **Instruction**

Preservation of manuscripts was the most valuable work done in this age. Works on grammar, medicine, mathematics

and similar technical subjects, which were written by Jaina teachers of past, were regularly studied by the disciples of every learned Bhattāraka Several copies of these works were prepared for this purpose only The udyāpana ceremony of every Vrata usually consisted of a donation of some manuscript to some Bhattāraka

7 Social activities

By virtue of their position as a religions teacher Bhattārakas were above the level of caste distinctions But this aspect of Hindu Culture had so much influence on Jaina society that it could not be ignored Every seat of Bhattārakas was generally associated with one particular caste

Bhattārakas often arranged long pilgrimages with a large number of followers In this respect, Srutasāgara Sūri's visit to Gajapantha and various pilgrimages of Devendrakīrti (Third) of Karanja are noteworthy. Bhattarakas sometimes looked after the management of the holy places, for instance, Shri Mahavirji was managed by Bhattarakas of Jaipur

Many times, non-Jain students came to receivein learng from Bhattārakas The names of Pt Hāji, Śaiva Mādhava, Bhūpati Prājna Miśra and Dvija Viśvanātha are notable in this respect

Bhattārakas were supposed to possess miraculous powers gained through some Mantras To walk through air, to remove the effect of poison, to make stone-image speak are some of the miracles ascribed to various Bhattārakas

The Mathas of Bhattārakas were centres of various social functions This provided an occasion for preservation of various arts Many references are found to music, painting, sculpture, dancing and other arts

8. Interrelations

There was no principle for which there could be a serious dispute between different seats of Bhattārakas Their inter-relations rested entirely on personal attitude Śribhūsana of Nanditatagachchha had worst relations with Vādichadra of Balātkāragana, but Indrabhūsana of the same line had good relations with all.

9. Other religious sects

References are found to various disputes between these Bhattāraka Institution and Vedic scholars, Svetāmbara sect and the Terāpantha The last was particularly against the system of Bhattārakas Disputes with Śvetāmbaras often resulted from the question of possession of some holy places

10 Relation with Rulers

No king was following Jainism in the age of Bhattārkas Some ministers, no doubt, were from Jaina families There was no hostility with any particular ruler. Jaina society continued its work peacefully even during the reign of all Moghul emperors Akbar recieved special honour for his sympathetic attitude Relations with the Tomar dynasty of Gwalior also seem to be notably good Visits to courts of various Hindu and Muslim rulers are often referred to

11. Conclusion

Thus it would be clear that the Bhattāraka tradition played an important part in the history of Mediaeval Jaina society. This book, though containing the account of only a part of the tradition contains references to some 400 Bhattārakas, their 175 disciples, 309 literary compositions, 90 temples, 31 castes; 100 rulers and 200 places. With more sources utilised, their figures can be easily doubled

The age as it was, was not very glorious But some personalities deserve attention Jaina history will remain incomplete without the mention of Sakalakirti, Śubhachandra and Jinachandra History of rise gives inspiration. History of downfall gives lessons Both are necsssary for a growing society With this view, we hope, this topic will recieve due attention, though it was so far completely neglected

---

भट्टारक संप्रदाय—

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
प्रस्तावना १४	१३	इन्द्रभूषण	ज्ञानभूषण
मूल ३०	१९	सि. भा. वर्ष पृ ९ में श्री गोडे का लेख	सि. भा. वर्ष ४ पृ ९ में श्री गौड का लेख
११२	४	पट्टाधीश हुए।	सुखेन्द्रकीर्ति पट्टाधीश हुए।
११२	८	सुरेन्द्रकीर्ति	सुखेन्द्रकीर्ति
१८७	२०	उपर्युक्त पृ ७१२	उपर्युक्त पृ. २७१
२६१	१४,१५	गोपसेन | जयसेन	गोपसेन | भावसेन | जयसेन
२६३	१३	अ. २ पृ. ६०६	अ २ पृ. ६८६
२६९	१०	भा ७ पृ १६	म. ४९
३०२	२७	धर्मचन्द्र (विशालकीर्ति के शिष्य) ५१२-५१३	×
३२३	३०	जिन्तुर ६९	जिन्तुर ३९

प्रस्तावना

१. ऐतिहासिक स्थान

जैन समाज के इतिहास मे सामान्य तौर पर तीन कालखण्ड दृष्टिगोचर होते हैं। भगवान् महावीर के निर्वाण के बाद करीब ६०० वर्ष तक जैन समाज विकासशील था। अपने मौलिक सिद्धान्तो का विकास और प्रसार करनेके लिए उस समय जैन साधु अपना पूरा समय व्यतीत करते थे। जनसाधारण से सम्पर्क कायम रहे इस उद्देश से वे परिव्रज्या-निरन्तर भ्रमण का अवलम्ब करते थे। मठ, मन्दिर या वाहन, आसनों की उन्हें आवश्यकता नहीं थी। तपश्चर्या के उनके नियम भी भगवान् महावीर के आदर्श से बहुत कुछ मिलते जुलते थे। श्वेताम्बर सम्प्रदाय के रूप में साधुओं मे वस्त्रधारण की प्रथा यद्यपि उस समय भी थी तथापि भगवान के आदर्श जीवन को वे भूल नहीं सके थे।

ईस्वी सन की दूसरी शताब्दी से जैन समाज व्यवस्थाप्रिय होने लगी। व्यवस्थापन का यह युग भी करीब ६०० वर्ष चलता रहा। इस युग के आरम्भ में कुन्दकुन्द और धरसेन आचार्य ने विशाल जैन शास्त्रों को सूत्रबद्ध करने का आरम्भ किया। पाचवी सदी में श्वेताम्बर सम्प्रदाय ने भी अपने आगम शास्त्रबद्ध किये। अनुश्रुति से चली आई पुराण कथाए इसी समय विमलसूरि, सघदास, कविपरमेश्वर आदि के द्वारा ग्रन्थबद्ध हुई। तत्त्वज्ञान के क्षेत्र मे भी समन्तभद्र और सिद्धसेन के मौलिक विवेचन को अकलङ्क और हरिभद्र द्वारा इसी युग मे सुव्यवस्थित सम्प्रदाय का रूप प्राप्त हुआ। पल्लव, कदम्ब, गग और राष्ट्रकूट राजाओं के आश्रय से इसी युग मे मठ और मन्दिरो का निर्माण वेग से हुआ तथा आचार्य परपराएं सार्वदेशीय रूप छोड कर स्थानिक रूप ग्रहण करने लगीं।

नौवीं शताब्दी से जैन समाज का जनसाधारण से सम्पर्क बहुत कम होता गया। भारतके कई प्रदेशोंमें अब यह सिर्फ वैश्यसमाज के एक भाग के रूप में परिणत होने लगी। राजकीय दृष्टि से भी मुस्लिम शासकों का प्रभाव धीरे धीरे बढने लगा। इन परिस्थितियों मे स्वभावतः विकास और व्यवस्था की प्रवृत्तिया पीछे रह गई और आत्मसंरक्षण की प्रवृत्ति को ही प्राधान्य मिलने लगा। किसी युगप्रवर्तक नेता के अभाव से यह संरक्षणात्मक प्रवृत्ति धीरे धीरे व्यापक होती गई और अन्त मे उस ने विकासशीलता को समाप्त कर दिया। इसी प्रवृत्ति के फलस्वरूप साधुसघ में भट्टारकसम्प्रदाय उत्पन्न हुए और बढे। भट्टारकों के

पूरे कार्य पर इसी मनोवृत्ति का प्रभाव मिलता है। एकदृष्टि से यह प्रवृत्ति समाज के अस्तित्व के लिए आवश्यक भी थी। यह प्रवृत्ति न होने के कारण ही बौद्ध धर्मावलम्बी समाज भारत मे नष्ट हो गई यद्यपि उस का सामर्थ्य जैन समाज से अपेक्षाकृत अधिक था।

२. उत्पत्ति और पार्श्वभूमि

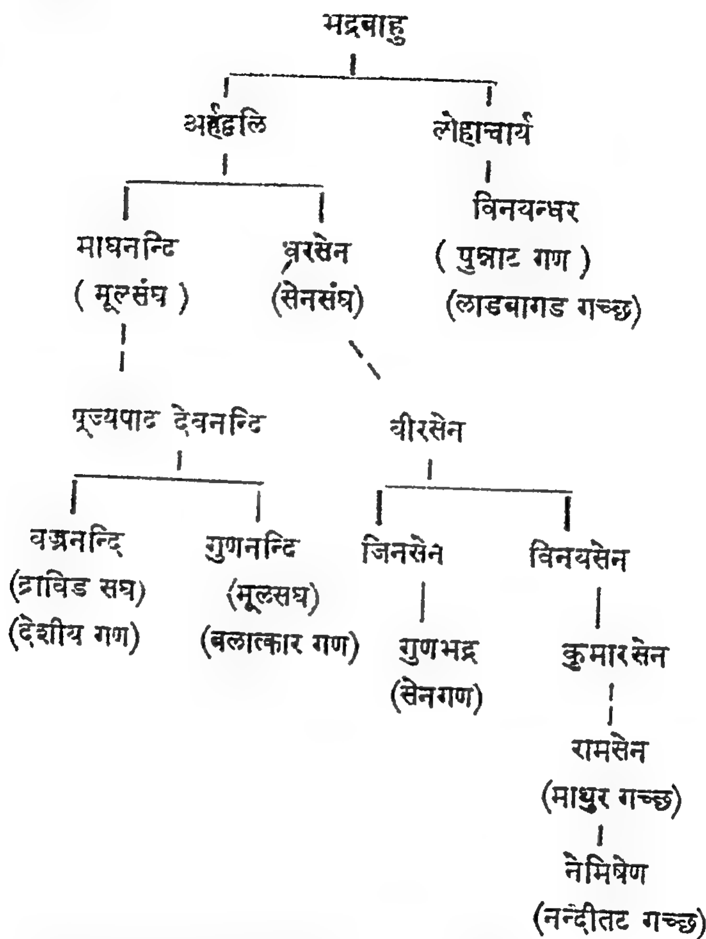
उपर्युक्त तीन कालखंडों में पहले विकासशील युग के इतिहास के साधन बहुत कम मात्रा में उपलब्ध हैं। इस युग में दिगम्बर और श्वेताम्बर इन दोनों संघों में एक एक ही आचार्य परम्परा का अस्तित्व सुनिश्चित हुआ है। स्थूलतः देखा जाय तो दक्षिणभारत में दिगम्बर सम्प्रदाय और उत्तर भारत में श्वेताम्बर सम्प्रदाय कार्यशील रहा था। दिगम्बर परम्परा में भगवान् महावीर के बाद गौतम-इन्द्रभूति, सुधर्मस्वामी लोहार्य, जम्बूस्वामी, विष्णुनन्दि, नन्दिमित्र, अपराजित, गोवर्धन, भद्रबाहु, विशाख, प्रोष्ठिल, क्षत्रिय, जय, नागसेन, सिद्धार्थ, धृतिषेण, विजय, बुद्धिल, गंगदेव, धर्मसेन, नक्षत्र, जयपाल, पाण्डु, ध्रुवसेन, कंसाचार्य, सुभद्र, यशोभद्र, भद्रबाहु और लोहाचार्य इन आचार्यों को श्रुतधर कहा जाता है और इन का सम्मिलित समय ६८३ वर्ष कहा गया है।[१] श्वेताम्बर सम्प्रदाय में प्रायः इतने ही समय मे आर्य जम्बूस्वामी के बाद प्रभव, शय्यभव, यशोभद्र, संभूतिविजय, भद्रबाहु, स्थूलभद्र, महागिरि, सुहस्ति, सुस्थित, सुप्रतिबुद्ध, इन्द्रदिन्न, दिन्न, सिंहगिरि और वज्रस्वामी इन आचार्यों का उल्लेख पाया जाता है।[२] इसी समय यद्यपि यापनीय संघ की तीसरी परम्परा भी हो गई है, तथापि उस की ऐसी कोई व्यवस्थित परम्परा का निर्देश नहीं मिलता है।

इस पहले युग के अन्त से ही दूसरे युग की विभिन्न परम्पराओं का आरम्भ होता है जिन का आगे चल कर तीसरे युग के विभिन्न भट्टारकसम्प्रदायों मे रूपान्तर हुआ। इस परम्परा-विस्तार का प्रमुख कारण स्थानभेद था और कहीं कहीं कुछ आचरण के फरक से भी उसे बल मिला है। यद्यपि इस दूसरे युग का इतिहास इस ग्रन्थ का प्रमुख विषय नहीं है, तथापि पार्श्वभूमि के तौर पर इस परम्परा-विस्तार को निम्न तालिका के रूप में अंकित किया जा सकता है। यह तालिका प्रधानरूप से पट्टावलियो के अवलोकन से बनाई गई है और इस लिए अन्तिम

१ धवला भाग १ पृ ६६ आदि.

२ तपागच्छ पट्टावली (जैन साहित्य संशोधक खंड १ अंक ३) आदि

रूप से निर्णीत नहीं है। फिर भी ज्ञान की वर्तमान स्थिति में यह काफी तथ्यपूर्ण कही जा सकती है।



उत्तरवर्ती सम्प्रदायों की पट्टावलियों से इस द्वितीय युग की परम्परा निश्चित करना सम्भव नहीं है क्यों कि उन मे अन्य सम्प्रदायों के अच्छे आचार्यों को अपनी ही परम्परा का घोषित करने की प्रवृत्ति देखी जाती है। वीरनन्दि, मेघचन्द्र आदि देशीयगण के आचार्यों के नाम बलात्कार गण की पट्टावलियो मे तथा जिनसेन, वीरसेन आदि सेनगण के आचार्यों के नाम लाडबागड गच्छ की पट्टावली मे पाये जाते हैं यह इसी का परिणाम है। दूसरी चीज यह है कि पट्टावली लेखकों का समय इन आचार्यों के समय से बहुत बाद का है और इस लिए कितनी ही चमत्कारिक कथाएं उन के द्वारा विभिन्न आचार्यों के लिए गढी गई हैं। पट्टावलियों में दिया हुआ उन का समय और क्रम भी इसी लिए विश्वासयोग्य नहीं है।

इस ग्रन्थ के विभिन्न प्रकरणों के प्रारंभिक परिच्छेदों से ज्ञात होगा कि अधिकांश भट्टारक परम्पराओं के ऐतिहासिक उल्लेख नौवीं शताब्दी से प्राप्त होते हैं। इस लिए भट्टारकप्रथा अमुक आचार्य ने अमुक समय स्थापन की यह कहना असम्भव है। श्रुतसागर सूरि ने कहा है कि वसन्तकीर्ति ने यह प्रथा आरम्भ की है[1]। किन्तु यह सिर्फ उस विशिष्ट परम्परा के लिए ही सही है। भट्टारक सम्प्रदाय की विशिष्ट आचरण पद्धतियाँ धीरे धीरे किन्तु बहुत पहले से ही अस्तित्व में आ चुकी थीं यह प्रस्तावना के अगले विभाग से स्पष्ट होगा। भट्टारक सम्प्रदाय में ये पद्धतिया तेरहवीं सदी के करीब स्थिर हुईं इतना ही कहा जा सकता है।

३. परम्पराभेद और विशिष्ट आचरण

साधुसंघ के साधारण स्थिति से यह परम्परा पृथक् हुई इस का पहला कारण वस्त्रधारण था। यह पद्धति बहुत पहले ही विवाद का कारण बन चुकी थी। भगवान् पार्श्वनाथ की परपरा के आचार्य केशी कुमारश्रमण ने गणधर इन्द्रभूति गौतम से इस पद्धति के विषय मे प्रश्न किया था। इस के परिणाम स्वरूप तात्कालिक रूप से यह विवाद शान्त हुआ[2]। किन्तु वस्त्रधारी साधुओं का अस्तित्व बना रहा। आगे चल कर आर्य महागिरि और शिवभूति के समय फिर यह विवाद जागृत होता गया और अन्त में जब आचार्य कुन्दकुन्द के नेतृत्व में संघ ने दिगम्बरत्व का सम्पूर्ण समर्थन किया तब हमेशा के लिए श्वेताम्बर और दिगम्बर ये भेद दृढ हो गये। इस के बावजूद भी दिगम्बरसम्प्रदाय में फिर वस्त्रधारण की प्रथा शुरू हुई। इसे मुस्लिम राज्य काल में और अधिक बल मिला और आखिर वह भट्टारकों के लिए अपवाद मार्ग के रूप में मान्य कर ली गई। व्यवहार में यद्यपि वस्त्र का उपयोग भट्टारकों के लिए समर्थनीय ठहरा दिया गया तथापि तत्त्व की दृष्टि से नग्नता ही पूज्य मानी जाती रही। भट्टारकपद प्राप्ति के समय कुछ क्षणों के लिए क्यों न हो, नग्न अवस्था धारण करना आवश्यक रहा। कुछ भट्टारक मृत्यु समीप आने पर नग्न अवस्था ले कर सल्लेखना का स्वीकार करते रहे[3]। नग्नता के इस आदर के कारण ही भट्टारकपरम्परा श्वेताम्बर सम्प्रदाय से पृथकता घोषित करती रही।

भट्टारकपरम्परा का दूसरा विशिष्ट आचरण मठ और मन्दिरों का निवासस्थान के रूप में निर्माण और उपयोग था। इसी के अनुषंग से भूमिदान का

१ लेखांक २२५ देखिए.
२ उत्तराध्ययन सूत्र, केसीगोयमिज्ज अध्ययन.
३ देखिए लेखांक १९०

स्वीकार करने और खेती आदि की व्यवस्था भी भट्टारक देखने लगे थे। संवत् ५२६ मे वज्रनन्दि ने द्राविड संघ की स्थापना की उस के ये ही मुख्य कारण थे ऐसा देवसेन ने कहा है।[1] शक ६३४ मे रविकीर्ति ने ऐहोळे ग्राम में जो मन्दिर बनवाया वह इस पद्धति का पर्याप्त पुराना उदाहरण है यद्यपि भूमिस्वीकार के उल्लेख इस से भी पहले के मिले है।[2]

इन दो प्रथाओं के कारण भट्टारकों का स्वरूप साधुत्व से अधिक शासकत्व की ओर झुका और अन्त में यह प्रकट रूप से स्वीकार भी किया गया। वे अपने को राजगुरु कहलाते थे और राजा के समान ही पालकी, छत्र, चामर, गादी आदि का उपयोग करते थे।[3] वस्त्रों में भी राजा के योग्य जरी आदि से सुशोभित वस्त्र रूढ हुए थे। कमण्डलु और पिच्छी मे सोने चादी का उपयोग होने लगा था। यात्रा के समय राजा के समान ही सेवक सेविकाओं और गाडी घोडों का इतजाम रखा जाता था तथा अपने अपने अधिकारक्षेत्र का रक्षण भी उसी आग्रह से किया जाता था। इसी कारण भट्टारकों का पट्टाभिषेक राज्याभिषेक की तरह बडी धूमधाम से होता था।[4] इस के लिए पर्याप्त धन खर्च किया जाता था जो भक्त श्रावकोंमे से कोई एक करता था। इस राजवैभव की आकाक्षा ही भट्टारक पीठों की वृद्धि का एक प्रमुख कारण रही यद्यपि उन मे तत्त्व की दृष्टि से कोई मतभेद होने का प्रसग ही नहीं आया।

विभिन्न पिच्छियों का उपयोग विभिन्न परम्पराओं का प्रतीक रहा है। सेन गण और बलात्कार गण में मयूरपिच्छ का उपयोग होता था[5], लाडबागड गच्छ मे चामर का पिच्छी जैसा उपयोग होता था, नन्दीतट गच्छ मे भी यही प्रथा थी[6] और माथुर गच्छ मे कोई पिच्छी नहीं होती थी।[7] इतिहास से ज्ञात होता है कि अन्यान्य आचार्यों ने बलाकपिच्छ और गृध्रपिच्छ का भी उपयोग किया है[8] और उसे निन्दनीय नहीं माना गया किन्तु भट्टारक काल मे अक्सर इस छोटी सी चीज को लेकर कटु शब्दों का प्रयोग होता रहा है।

भट्टारकों के कार्य के विषय मे अगले विभागों मे चर्चा की गई है। उन के अतिरिक्त एक विशिष्ट रीति का उल्लेख कारजा के भ शान्तिसेन के विषय मे हुआ

---

१ दर्शनसार २४-२८. २ मर्करा ताम्रपत्र आदि. ३ देखिए लेखाक ७२५. ४ देखिए लेखाक ६७२. ५ देखिए लेखाक ५१. ६ देखिए लेखाक ६४३. ७ देखिए लेखाक ५४१. ८ जैनशिलालेख सग्रह भा. १ भूमिका पृ. १३१

है । इस के अनुसार आप ने बडे समारोह से समुद्रतट पर स्नान किया था ।[1]

४. स्थल और काल

साधुत्व के नाते भट्टारकों का आवागमन भारत के प्राय सभी भागों में होता था । दक्षिण मे मूडबिद्री, श्रवणबेलगोल, कारकल, हुबच इन स्थानों पर देशीय गण आदि शाखाओं के पीठ स्थापित हुए थे । प्रस्तुत ग्रन्थ मे वर्णित भट्टारक भी यात्रा के लिए श्रवणबेलगोलतक आते जाते थे यद्यपि इस प्रदेश से उन के कोई स्थायी सम्बन्ध नहीं थे । इस से दक्षिण मे तमिलनाड और केरल ये दो प्रदेश प्राचीन समय जैनधर्म के प्रभाव क्षेत्र मे रहे थे किन्तु भट्टारकों का कोई सम्बन्ध उन से नहीं था ।

पूर्व भारत में सम्मेदशिखर, चम्पापुर, पावापुर और प्रयाग की यात्रा के लिए विहार होता था ।[3] वैसे इस प्रदेश में न तो कोई भट्टारकपीठ था, न उन का शिष्यवर्ग था । आरा के नजदीक मसाढ मे काष्ठासघ के कुछ उल्लेख मिले है ।[4] उन के अतिरिक्त पूर्व भारत से प्राय. कोई स्थायी सम्बन्ध नहीं था ।

महाराष्ट्र में मलखेड का पीठ बलात्कारगण का केन्द्र था । इसी की दो शाखाए कारजा और लातूर मे स्थापित हुई, जिन का वर्णन प्रकरण ३ और ४ में हुआ है । कोल्हापुर मे लक्ष्मीसेन और जिनसेन इन दो भट्टारकों की परम्पराएं थीं किन्तु उन का इस ग्रन्थ में सम्मिलित करने योग्य वृत्तान्त हमें प्राप्त नहीं हो सका । ये दोनो भट्टारक अपने को सेनगण के पट्टाधीश मानते है । बलात्कारगण के अतिरिक्त कारजा में सेनगण और लाडबागड गच्छ के भी पीठ थे । इन पीठ-स्थानों के अतिरिक्त विदर्भ के रिद्धिपूर, बाळापुर, रामटेक, अमरावती, आसगाव, एलिचपुर, नागपुर आदि स्थानो मे तथा मराठवाडा के जिन्तुर, नादेड, देवगिरि, पैठन, शिरड आदि स्थानो मे इन पाच पीठों के शिष्यवर्ग अच्छी संख्या में रहते थे । मूल उल्लेखों में इस भाग का उल्लेख प्रायः वराट, वैराट, वऱ्हाड आदि नामों से हुआ है । मलखेड को मलयखेड और कारंजा को कार्यरंजकपुर की सज्ञा मिली है ।

गुजरात मे सूरत बलात्कार गण का और सोजित्रा नन्दीतट गच्छ का केन्द्र था । समुद्रतटवर्ती इलाको मे नवसारी, भडौच, खभात, जाबूसर, घोघा आदि स्थानो मे भट्टारको का अच्छा प्रभाव था । उत्तर गुजरात मे ईडर का पीठ महत्त्व-

१ देखिए लेखाक ७५. २ देखिए लेखाक ५१४, १२५ आदि. ३ देखिए लेखाक ४३९ आदि. ४ देखिए लेखाक ५८६ आदि.

पूर्ण था। सौराष्ट्र मे गिरनार और शत्रुजय की यात्रा के लिए भट्टारको का आगमन होता था किन्तु वहा कोई स्थायी पीठ स्थापित नहीं हुआ।

मालवा मे धारा नगरी प्राचीन समय मे जैन धर्म का केन्द्र था। उत्तरवर्ती काल मे इसी प्रदेश मे सागवाडा और अटेर के पीठ स्थापित हुए। सागवाडा की ही एक परम्परा आगे चल कर ईडर मे स्थायी हुई। महुआ, डूंगरपूर, इन्दौर आदि स्थान इन्ही पीठों के प्रभाव मे थे। इसी के उत्तर मे ग्वालियर और सोनागिरि मे माथुर गच्छ और बलात्कार गण के केन्द्र थे। देवगढ, ललितपुर आदि स्थानों में इन का प्रभाव था।

राजस्थान में नागौर, जयपुर, अजमेर, चित्तौड, भानपुर और जेरहट मे बलात्कार गण के केन्द्र थे। हिसार मे माथुर गच्छ का प्रधान पीठ था। पजाब से कुछ स्थानों मे पाई जाने वाली मूर्तियो के अतिरिक्त भट्टारको का कोई सम्बन्ध ज्ञात नहीं होता। दिल्ली से समय समय पर प्राय सभी पीठों के भट्टारको ने अपना सम्बन्ध जोडा है। किन्तु मेरठ और हस्तिनापुर के कुछ ग्रामो के अतिरिक्त उत्तर-प्रदेश से भी भट्टारकों का कोई खास सम्बन्ध नहीं था।

प्रत्येक पीठ के प्रकरण के अन्त में दिये गए कालपट से उन के समय का स्पष्ट निर्देश होता है। मोटे तौर पर देखा जाय तो सेनगण के उल्लेख नौवीं सदी से आरम्भ होते है तथा उस की मध्ययुगीन परम्परा १६ वी सदी से ज्ञात होती है। बलात्कार गण के उल्लेखों का प्रारम्भ १० वीं सदी से तथा मध्ययुगीन परम्परा का आरम्भ १३ वीं सदी से होता है। काष्ठासघ के विभिन्न गच्छो के प्राचीन उल्लेख ८ वीं सदी से एव मध्ययुगीन परम्पराओ के उल्लेख १४ वी सदी से प्राप्त हो सके हैं। प्रत्येक पीठ का विशेष प्रभाव किस शताब्दी मे रहा यह कालपटो से अच्छी तरह देखा जा सकता है।

५. कार्य – मूर्ति प्रतिष्ठा

मूल ग्रन्थ का सरसरी तौर पर अवलोकन करने से भी स्पष्ट होता है कि भट्टारको के जीवन का सब से अधिक विस्तृत कार्य मूर्ति और मन्दिरों की प्रतिष्ठा यही था। इस पूरे युग मे मूर्तिप्रतिष्ठा का यह कार्य इतने बडे पैमाने पर हुआ कि आज के समाज को उन सब मूर्तियो का रक्षण करना भी दुष्कर हुआ है। इस का एक कारण यह है कि प्रतिष्ठा उत्सव को धार्मिक से अधिक सामाजिक रूप प्राप्त हुआ था। जिस प्रतिष्ठा का निर्देश इस ग्रन्थ के दो पक्तियो के मूर्तिलेख मे हुआ है उस के लिए भी कम से कम हजार व्यक्तियों को इकट्ठे आने का मौका मिला था।

प्रतिष्ठाकर्ता को समाज का नेतृत्व अनायास ही प्राप्त होता था और उसी प्रतिष्ठा में यदि गजरथ भी हो तब तो सघपति का पद भी उसे विधिवत दिया जाता था। सामाजिक मान्यता की इस अभिलाषा के साथ ही मुस्लिम शासकों की मूर्तिभंजकता की प्रतिक्रिया के रूप से भी जैन समाज मे मूर्ति प्रतिष्ठा को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान मिला।

इस युग मे प्रतिष्ठित की गई मूर्तिया साधारणतः पाषाण और धातुओं की होती थीं। धातु मूर्तियो का प्रमाण कुछ बढता गया है। तीर्थंकर, नन्दीश्वर, पचमेरु, सहस्रकूट, सरस्वती, पद्मावती आदि यक्षिणी, क्षेत्रपाल और गुरु ये मूर्तियों के प्रमुख प्रकार थे। तीर्थंकरों की मूर्तिया पद्मासन और कायोत्सर्ग इन दो मुद्राओं में होती थीं। इन मे पार्श्वनाथ की मूर्तिया सर्वाधिक संख्या में और विविध रूपों मे पाई जाती है। नागफणा के ऊपर, नीचे, आगे या बाजू में होने से पार्श्वनाथ की मूर्तियों मे यह विविधता पाई जाती है। शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरनाथ इन तीन तीर्थंकरो की सयुक्त मूर्ति को रत्नत्रयमूर्ति कहा जाता है। किसी एक तीर्थंकर की मुख्य मूर्ति के ऊपर और दोनो ओर अन्य तेईस तीर्थंकरों की छोटी मूर्तिया हो तो उसे चौबीसी मूर्ति कहा जाता है। इसी प्रकार अनन्तनाथ तक के चौदह तीर्थंकरो की संयुक्त मूर्तिया भी पाई जाती है। और इसका खास उपयोग अनन्तचतुर्दशी पूजामें किया जाता है। सामान्य तौर पर इस युग की तीर्थंकर मूर्तिया सादी होती थी। मूर्ति के साथ ही भामडल, छत्र, सिंहासन आदि भी उकेरने की पहली पद्धति इस युग मे प्रायः लुप्त हो गई। मूर्तियों का विस्तार दो इच से बीस फुट तक विभिन्न प्रकार का रहा है फिर भी अधिकाश मूर्तिया एक फुट ऊंचाई की है। मूर्तियो का निर्माण मुख्य तौर पर राजस्थान में होता था।

यन्त्रों की प्रतिष्ठा यह इस काल की विशेष निर्मिति है। दशलक्षण धर्म, रत्नत्रय, षोडशकारण भावना, द्वादशांग आगम, नव ग्रह, ऋषिमडल और सकलीकरण के यत्र ये इन के विविध प्रकार थे। सभी धर्मतत्त्वो को मूर्तरूप में बाधने की प्रवृत्ति ही इस यत्रप्रतिष्ठा का मूलभूत कारण है।

पहले तीर्थंकरो के साथ अनुचरो के रूप मे यक्ष आदि देवताओ की मूर्तियों का निर्माण होता था। इस युग मे उन की स्वतन्त्र मूर्तिया बनने लगीं। यक्षों मे धरणेन्द्र और क्षेत्रपाल प्रमुख हैं। यक्षिणियों मे चक्रेश्वरी, ज्वालामालिनी, कूष्माण्डिनी, अम्बिका और पद्मावती ये प्रमुख है। ज्ञान का प्रमाण जैसे कम होता गया

वैसे इन सब की मूर्तियों को पद्मावती के ही विभिन्न रूप माना जाने लगा, और अन्त में काली और दुर्गा जैसी अन्य या स्थानिक सम्प्रदाय की देवताओं के साथ भी इन की एकता होने लगी थी। कुक्कुट आदि वाहन, धनुष आदि शस्त्र इत्यादि बाह्य चिन्हों से यह गलत एकता आसानी से स्थापित हो सकी जिस का अब भी जैनसमाज मे काफी प्रभाव है।

प्रतिष्ठाओं के लिए वैसे कोई महीना वर्ज्य नहीं था। फिर भी वैशाख मे सब से अधिक प्रतिष्ठाए हुई। इस का कारण शायद यह था कि अक्षय तृतीया एक स्वयंसिद्ध मुहूर्त माना जाता था। उस दिन के लिए पंचाग देखने की जरूरत नहीं समझी जाती थी। यातायात आदि की दृष्टि से भी यही मौसम ऐसे उत्सवों के लिए अनुकूल भी होता है।

संख्या की दृष्टि से दिल्ली शाखा के भ. जिनचन्द्र द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तिया सब से अधिक है। प्रतिष्ठाकर्ता सेठ जीवराज पापडीवाल के प्रयत्नों से ये हजारों मूर्तिया भारत के कोने कोने मे पहुंची है। इन की प्रतिष्ठा संवत् १५४८ की अक्षयतृतीया को हुई थी। विशालता की दृष्टि से ग्वालियर और चंदेरी की मूर्तिया उल्लेखयोग्य हैं। कारजा के उपान्त्य भ. देवेन्द्रकीर्ति ने भी रामटेक, नागपुर आदि स्थानों में विशाल मूर्तिया स्थापित की हैं।

मूर्तियों के पादपीठ के लेख बहुधा टूटी फूटी सस्कृत में लिखे जाते थे। क्वचित हिन्दी, मराठी आदि लोकभाषाओं का भी उपयोग उन के लिए हुआ है। उन का विस्तार मूर्ति के विस्तार के अनुरूप होता था।[1] सर्वाधिक विस्तृत लेख में समय, प्रतिष्ठाकर्ता सेठ की वशपरम्परा प्रतिष्ठासचालक भट्टारक की गुरुपरम्परा, स्थान, स्थानीय और प्रादेशिक शासक तथा एकाध मंगल वाक्य इन का निर्देश होता था।

६. कार्य– ग्रन्थलेखन और संरक्षण

भट्टारक युग का ग्रन्थलेखन मुख्य रूप से पिछले युग के ग्रन्थो के सक्षेप या रूपान्तर के रूप में था। कोई नई मौलिक प्रवृत्ति उस मे नहीं थी। पुराण, कथा और पूजापाठ इन तीन प्रकारो की रचनाए सख्या की दृष्टि से सर्वाधिक है। कर्मशास्त्र, अध्यात्म आदि गम्भीर विषयों के ग्रन्थो पर कुछ टीकाओं के अतिरिक्त अन्य लेखन नही हुआ।

---

१ लेखों के विस्तारभेद का नमूना देखिए-जैन सिद्धान्त भास्कर व. ७, पृ १६.

पुराण और कथाएं साधारणतः जिनसेन कृत हरिवंशपुराण, रविषेण कृत पद्मपुराण तथा जिनसेन कृत महापुराण के आधार पर लिखी गई। संस्कृत में ईडर शाखा के भ. सकलकीर्ति और भ. शुभचन्द्र के विभिन्न पुराण ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश में माथुर गच्छ के भ. अमरकीर्ति, भ. यशःकीर्ति और पंडित रइधू की रचनाएं अच्छी हैं। हिन्दी में शालिवाहन, खुशालदास आदि कवि प्रमुख हैं। राजस्थानी में ब्रह्म जिनदास के रास ग्रन्थ बहुत सुन्दर हैं। गुजराती में सूरत शाखा के भ. वादिचन्द्र, जयसागर और नन्दीतट गच्छ के धनसागर तथा भ. चंद्रकीर्ति की रचनाएं उल्लेखनीय हैं। मराठी में पार्श्वकीर्ति, गंगादास, जिनसागर और महतिसागर ये चार लेखक विशेष लोकप्रिय हो सके थे।

पूजापाठों में अष्टक, स्तोत्र, जयमाला, आरती, उद्यापन ये मुख्य प्रकार थे। जिन मूर्तियों और यन्त्रों की प्रतिष्ठा भट्टारकों द्वारा हुई उन सब के अस्तित्व को बनाये रखने के लिए ये पूजापाठ नितान्त आवश्यक थे। पूजनीय व्यक्ति या तत्त्व की अपेक्षा पूजा के द्रव्य का अधिक वर्णन करना इस युग के पूजापाठों की विशेषता कही जा सकती है। इन की दूसरी विशेषता इन की गेयता है। छोटे बडे विविध मात्राओं के छंदों में रची होने से बहुधा सामान्य आशय की पूजा भी बहुत आकर्षक मालूम पडती थी। गुजराती और राजस्थानी के पुराण ग्रन्थों में और खास कर रास ग्रन्थों में भी यह गेयता मौजूद है जिस से उन की लोकप्रियता बढी है।

इन प्रमुख विभागों के बाद न्यायशास्त्र में भ. धर्मभूषण कृत न्यायदीपिका और भ. शुभचन्द्र कृत संशयिवदनविदारण उल्लेखनीय हैं। आचारधर्म पर षट्कर्मोपदेश, धर्मसंग्रह और त्रैवर्णिकाचार ये ग्रन्थ इस युग के प्रातिनिधिक कहे जा सकते हैं। सकलकीर्ति के मूलाचारप्रदीप में मुनिधर्म का वर्णन हुआ है। कर्मशास्त्र पर ज्ञानभूषण और सुमतिकीर्ति की कर्मकाण्ड टीका एकमात्र उल्लेखयोग्य ग्रन्थ है। प्राकृत का एक व्याकरण भ. शुभचन्द्र ने और दूसरा एक श्रुतसागरसूरि ने लिखा है। अकारान्त क्रम से लिखा हुआ संस्कृत शब्दों का कोष विश्वलोचन श्रीधरसेन की एकमात्र रचना है। हिन्दी में भगवतीदास ने अनेकार्थनाममाला कोष लिखा है। ज्योतिष और वैद्यक पर भी उन के ही ग्रन्थ हैं। गणितज्योतिष में भ. ज्ञानभूषण के कार्य का उल्लेख मिलता है किन्तु उन के कोई ग्रन्थ उपलब्ध नहीं होते। इन के अतिरिक्त कैलास, समवसरण आदि अनेक स्फुट विषयों पर छोटी छोटी कविताओं की रचना की गई है।

प्राचीन ग्रन्थों के हस्तलिखितों की रक्षा यह भट्टारकों के कार्य का सब से

श्रेष्ठ अंग है। व्रतों के उद्यापन आदि के अवसर पर नियमित रूप से एकाध प्राचीन ग्रन्थ की नई प्रति लिखा कर किसी मुनि या आर्यिका को दान दी जाती थी। गणितसारसंग्रह जैसे पाठ्य पुस्तकों की कई प्रतियां शिष्यों के लिए तैयार की जाती थीं। पुराने हस्तलिखित खरीद कर उन का संग्रह किया जाता था। पुराने संग्रहों को समय समय पर ठीक किया जाता था। ग्रन्थों की भाषा कठिन हो तो उन के समासों में टिप्पण लगा कर पढने के लिए साहाय्य किया जाता था। हस्तलिखितों की अन्तिम प्रशस्तियों का ऐतिहासिक महत्त्व सर्वमान्य है। इस ग्रन्थ में सम्मिलित समयसार और पंचास्तिकाय की प्रतियों की प्रशस्तियां नमूने के तौर पर देखी जा सकती हैं। गणितसारसंग्रह की प्रतियां भी प्रातिनिधिक हैं।

७. कार्य– शिष्यपरम्परा

जैन समाज में विद्याध्ययन की व्यवस्था कुलपरम्परा पर आधारित नहीं थी। शायद इसी लिए वह ब्राह्मणपरम्परा जितनी सुदृढ नहीं रह सकी। यह कमी दूर करने के लिए हमेशा शिष्य परम्पराओं के विस्तार का प्रयत्न जैन साधुओं द्वारा किया गया। भट्टारक सम्प्रदाय भी इस प्रवृत्ति को निभाता रहा। ग्रन्थ के मूल पाठ से स्पष्ट होगा कि इस कार्य में भट्टारकों ने काफी सफलता प्राप्त की। ब्रह्म जिनदास, श्रुतसागरसूरि, पण्डित राजमल्ल आदि भट्टारकशिष्यों के नाम उन के गुरुओं से भी अधिक स्मरणीय हुए हैं।

व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा के फलस्वरूप जिस प्रकार भट्टारक पीठों की वृद्धि हुई उसी प्रकार शिष्य परम्पराओं का भी पृथक् अस्तित्व रह सका। अनेक बार देखा गया है कि भट्टारकों के जो शिष्य पट्टाभिषिक्त नहीं हुए थे उन की स्वतन्त्र शिष्य परम्पराएं छह सात पीढियों तक चलतीं रहीं। गणितसारसंग्रह और शब्दार्णवचन्द्रिका की प्रशस्तियों में इस के अच्छे उदाहरण मिलते हैं।

विभिन्न भट्टारक पीठों में सौहार्द की रक्षा करने में भी शिष्यपरम्परा का महत्त्वपूर्ण उपयोग हुआ। दक्षिण के पण्डितदेव और नागचन्द्र जैसे विद्वानों का उत्तर के जिनचन्द्र और ज्ञानभूषण जैसे भट्टारकों से सहकार्य हुआ वह इसी का उदाहरण है। ब्रह्म शान्तिदास के सूरत और ईडर इन दोनों पीठों से अच्छे सम्बन्ध थे। इसी प्रकार पण्डित राजमल्ल भी माथुर गच्छ की दो भिन्न शाखाओं से एक ही समय संलग्न रह सके थे। कारंजा के लाडबागड गच्छ के कवि पामो जैसे शिष्यों ने नन्दीतट गच्छ के भट्टारकों से घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किए थे। इस दृष्टि से परस्पर

सम्बन्ध और अन्य सम्प्रदायों से सम्बन्ध इन दो विभागों मे आगे और विचार किया गया है।

जैनेतर सम्प्रदायों के विद्वान भी कई बार भट्टारकों के शिष्य वर्ग मे सम्मिलित हुए थे। द्विज विश्वनाथ भ. इन्द्रभूषण के शिष्य थे। भ. राजकीर्ति के शिष्यो मे पण्डित हाजी का उल्लेख हुआ है। गोमटस्वामीस्तोत्र के कर्ता भूपति प्राज्ञमिश्र भी जैन विद्वान प्रतीत नहीं होते। इस दृष्टि का भी विशेष विवरण अगले विभागों मे होगा।

जैनेन्द्र व्याकरण, गणितसारसग्रह, कल्याणकारक जैसे शास्त्रीय ग्रन्थों को जैनेतर समाजो मे उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था जिस से उन का पठन पाठन कई बार लुप्तप्राय हो गया। इस सकट में से ये ग्रन्थ जीवित रह सके इस का अधिकाश श्रेय भट्टारकों के शिष्यवर्ग को ही है। इन्हीं ने इन ग्रन्थो की प्रतिलिपिया करा कर उन का अभ्यास किया और उन की आयु की वृद्धि की।

८. कार्य– जातिसंघटना

जैन समाज में इस वक्त जो जातियाँ है इन की स्थापना दसवीं सदी के करीब हुई ऐसा विद्वानो का अनुमान है। इन जातियो मे अधिकाश के नाम स्थान या प्रदेश पर आधारित है। बघेरा गाव से बघेरवाल, खडेला से खडेलवाल, पद्मावती से पद्मावती पल्लीवाल इत्यादि नाम रूढ हुए है। इस युग के हिन्दू समाज के प्रभाव से जैन समाज मे भी यह जातिसस्था अति नियमित और कठोर हुई। खानपान, विवाहसबन्ध, व्यवसाय और ऊँच नीच की कल्पना इन चारो बातों मे जाति का ही निर्णायक महत्त्व होता था और बहिष्कार के शस्त्र से वह बराबर कायम रखा गया। अब इन चारों मे सिर्फ विवाहसबन्ध पर ही जाति का प्रभाव है और वह भी कई जगह ढीला पड चुका है।

साधुपद पर प्रतिष्ठित होने के नाते भट्टारक जातिभेद से ऊपर होते थे। फिर भी बिरुदावलियो में उन की जाति का अनेक बार उल्लेख हुआ है। जाति सस्था के व्यापक प्रभाव का ही यह परिणाम है। इसी प्रकार यद्यपि भट्टारकों के शिष्यवर्ग मे सम्मिलित होने के लिए किसी विशिष्ट जाति का होना आवश्यक नही था तथापि बहुताशत से एक भट्टारक पीठ के साथ किसी एक ही विशिष्ट जाति का सबन्ध रहता था। बलात्कार गण की सूरत शाखा से हुमड जाति, अटेर शाखा से लमेचू जाति, जेरहट शाखा से परवार जाति तथा दिल्ली जयपुर शाखा मे

खंडेलवाल जाति का विशेष सम्बन्ध पाया जाता है। इसी प्रकार काष्ठासंघ के माथुर गच्छ के अधिकांश अनुयायी अगरवाल जाति के, नन्दीतट गच्छ के अनुयायी हूमड जाति के और लाडबागड गच्छ के अनुयायी बघेरवाल जाति के थे।

अनेक जातियों में भाटों द्वारा जाति के सब घरानों का वृत्तान्त संग्रहित करने की प्रथा थी। ऐसे वृत्तान्तों में अक्सर किसी प्राचीन आचार्य के द्वारा उस जाति की स्थापना होने की कहानी मिलती है। नन्दीतट गच्छ के प्रकरण से ज्ञात होगा कि नरसिंहपुरा जाति की स्थापना का श्रेय रामसेन को दिया जाता था तथा भट्टपुरा जाति उन के शिष्य नेमिसेन द्वारा स्थापित मानी जाती थी। ऐतिहासिक काल में भी सूरत के भ. देवेन्द्रकीर्ति (प्रथम) को रत्नाकर जाति का संस्थापक कहा गया है। बघेरवाल जाति में मूलसंघ के आचार्य रामसेन द्वारा और काष्ठासंघ के आचार्य लोहद्वारा धर्म की स्थापना हुई थी ऐसी कथा मिलती है। कई स्थानों पर जैनेतर समाजों में धर्मोपदेश दे कर नई जातियों की स्थापना की गई इसी का यह उदाहरण कहा जाता है। इतिहाससिद्ध न होने पर भी इन कथाओं को भावना की दृष्टि से कुछ महत्त्व अवश्य है।

प्रत्येक जाति में नियत संख्या के कुछ गोत्र थे। मूर्तिलेख आदि में बहुधा इन का उल्लेख हुआ है। बघेरवाल जाति के पच्चीस गोत्र काष्ठासंघ के और सत्ताईस गोत्र मूलसंघ के अनुयायी थे। नागौर शाखा के भट्टारक बहुधा खंडेलवाल जाति के विभिन्न गोत्रों से लिए गए थे। लमेचू, परवार, हूमड आदि जातियों में भी गोत्रों के उल्लेख मिलते है। हूमड जाति में लघुशाखा और बृहद्शाखा ऐसे दो उपभेद थे। इन्हें ही दस्सा और बीसा हूमड कहते हैं। इसी प्रकार परवार जाति में अठसखे, चौसखे आदि भेद थे। ये भेद विवाह के समय कितने गोत्रों का विचार किया जाय इस पर आधारित थे। श्रीमाल, ओसवाल आदि कुछ जातिया श्वेताम्बर सम्प्रदाय मे ही हैं। किन्तु इन के भी कुछ उल्लेख दिगम्बर भट्टारकों द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियों के लेखों में मिलते हैं।

९. कार्य-तीर्थयात्रा और व्यवस्था

तीर्थक्षेत्रों की यात्रा और व्यवस्था ये मध्ययुगीन जैन समाज के धार्मिक जीवन के प्रमुख अंग थे। तीर्थक्षेत्रों के दो प्रकार किये जाते हैं। जहा किसी तीर्थंकर या मुनि को निर्वाण प्राप्त हुआ हो उसे सिद्धक्षेत्र कहते हैं। जहा किसी व्यक्ति, मूर्ति, या चमत्कार के कारण क्षेत्र स्थापित हुआ हो उसे अतिशयक्षेत्र

कहते है। सिद्धक्षेत्रो मे पश्चिम मे गिरनार और शत्रुंजय विशेष प्रसिद्ध थे। दक्षिण में गजपंथ और मागीतुंगी प्रसिद्ध थे। पूर्व में सम्मेदशिखर, चम्पापुरी और पावापुरी ये सर्वमान्य सिद्धक्षेत्र थे। मध्य भारत मे सोनागिरि और चूलगिरि (बडवानी) को कुछ महत्त्व था। अतिशयक्षेत्रो मे सुदूर दक्षिण में श्रवणबेलगोल की गोमटेश्वर की महामूर्ति सब से अधिक प्रसिद्ध थी। राजस्थान मे धूलिया के केशरियानाथजी की कीर्ति सर्वाधिक थी। हैद्राबाद राज्य के माणिक्यस्वामी भी काफी लोकप्रिय थे।

कारजा के सेनगण के पट्टाधीशो मे भ जिनसेन और नरेन्द्रसेन ने लम्बी यात्राएं कीं। वहीं के बलात्कार गण के पट्टाधीश देवेन्द्रकीर्ति (तृतीय) ने पश्चिमी क्षेत्रों की छह यात्राए कीं। ईडर शाखा के भ. सकलकीर्ति (प्रथम) और भ पद्मनन्दि की शत्रुजय यात्राए स्मरणीय रहीं। भानपुर शाखा के भ. रत्नकीर्ति के शिष्यो ने दक्षिण की यात्रा की। सूरत शाखा के भ. विद्यानन्दि, उन के शिष्य श्रुतसागरसूरि और भ. इन्द्रभूषण ने विस्तृत यात्राओ का नेतृत्व किया। नन्दीतट गच्छ के भ. चन्द्रकीर्ति और भ. इन्द्रभूषण ने दक्षिण की विस्तृत यात्राए कीं। इन के अतिरिक्त छोटी मोटी अनेक यात्राओं के उल्लेख मिलते हैं जो भौगोलिक नाम सूची मे पूरी तरह सकलित किये गए है। परस्परसम्बध के निरूपण में कुछ तीर्थयात्राओं पर प्रस्तावना के अगले विभागों मे और विचार हुआ है।

नन्दीतट गच्छ के ब्रह्म ज्ञानसागर ने अपने समय के तीर्थक्षेत्रो का वर्णन स्फुट कवित्तों मे किया है। इस मे सिद्धक्षेत्र और अतिशय क्षेत्र मिला कर ७८ क्षेत्रो का उल्लेख हुआ है। इस का साराश अन्यत्र प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार जयसागर की तीर्थजयमाला, श्रुतसागर की रविव्रत कथा तथा षट्प्राभृतटीका और छत्रसेन की पार्श्वनाथपूजा मे भी अनेक तीर्थक्षेत्रो के उल्लेख है। विस्तार भय से ये सब मूल ग्रन्थ में समाविष्ट नही किए जा सके। तीर्थक्षेत्रों के इतिहास की दृष्टि से इन का अपना महत्त्व है।

महावीरजी क्षेत्र की व्यवस्था जयपुर शाखा के भट्टारकों द्वारा, सोनागिरि की वहीं के भट्टारको द्वारा तथा केशरियाजी क्षेत्रकी व्यवस्था काष्ठासघ के भट्टारकों द्वारा होती थी। इस दृष्टिसे विशेष उल्लेख प्राप्त नहीं हुए है किन्तु होने की सभावना अवश्य है।

१०. कार्य– चमत्कार

मन्त्र तन्त्रों की साधना द्वारा किसी देवी या देव को प्रसन्न कर लेना भट्टारकों का विशेष कार्य माना जाता था। ऐहिक दृष्टि से मुक्त होने के कारण और श्रावकों से कम सम्बन्ध होने के कारण मुनियों को मन्त्रसाधना करने का निषेध था। भट्टारकों का स्थान समाज के शासक के रूप में होने से उन के लिए मन्त्रसाधना इष्ट ही समझी जाती थी। सूरत शाखा के भ. मल्लिभूषण ने पद्मावती देवी की आराधना की थी, तथा लाडबागड गच्छ के भ. महेन्द्रसेन ने क्षेत्रपाल को सम्बोधित किया था, ऐसे उल्लेख प्राप्त हुए हैं।

मन्त्रसाधना द्वारा भट्टारकों ने जो चमत्कार किये उन के कुछ उल्लेख प्राप्त हुए है। इन में पालकी का आकाश गमन मुख्य है। भ. सोमकीर्ति ने पावागढ में और भ. मलयकीर्ति ने आतरी में यह चमत्कार किया था। सूरत के अन्तिम भट्टारकों के विषय में भी ऐसी ही अनुश्रुति प्राप्त हुई है। सरस्वती की पाषाण मूर्ति के द्वारा दिगम्बर सम्प्रदाय का प्राचीनत्व सिद्ध किया गया यह भी चमत्कारों का अच्छा उदाहरण है। सामान्यतः यह चमत्कार आचार्य कुन्दकुन्द द्वारा किया गया ऐसा मानते हैं, किन्तु कुछ विद्वानों के मत से यह चमत्कार उत्तर शाखा के भ. पद्मनंदि द्वारा किया गया था। कारंजा शाखा के भ. पद्मनंदि की मृत्यु मुक्तागिरि क्षेत्र पर किसी चमत्कार के कारण हुई ऐसी लोकोक्ति है। कारंजा के भ. देवेन्द्रकीर्ति (उपान्त्य) ने सातकुली के प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर लगी हुई आग मन्त्रित जल द्वारा शान्त की ऐसी भी अनुश्रुति है।

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में चमत्कारों का कोई महत्त्व नहीं रहा है। किन्तु मध्ययुग की सामान्य लोगों की भावनाओं को देखते हुए उसे धर्म के क्षेत्र मे जो स्थान मिला वह स्वाभाविक ही प्रतीत होता है।

११. कार्य– कलाकौशल्य का संरक्षण

मध्ययुगीन समाज के जीवन मे धर्म को जो महत्त्वपूर्ण स्थान था उस के कारण अन्यान्य अनेक क्षेत्रों का धर्म से सम्बन्ध स्थापित हो गया था। धर्म के नेता के नाते भट्टारकों ने विविध कलाओं को समय समय पर प्रोत्साहन दिया यह इसी का उदाहरण है। संगीत, शिल्प, चित्र, नृत्य आदि कलाओं के विषय में इस ग्रन्थ में अनेक उल्लेख प्राप्त हुए हैं।

पूजाप्रतिष्ठा भट्टारकों का प्रमुख कार्य था और इस मे संगीत का महत्त्वपूर्ण स्थान था। इस युग के पूजापाठों में गेयता विशेष रूप से है इस का निर्देश पहले

किया जा चुका है। प्रतिष्ठा उत्सव के समय अक्सर दूर दूर से भजन या कीर्तन के लिए गायक बुलाए जाते थे। इस के अलावा अन्य समय भी हफ्ते में एकबार मन्दिरों मे सामुदायिक भजन करने की प्रथा थी। भजनों के लिए भट्टारकों द्वारा रचे गए कई पद उपलब्ध होते हैं।

मूर्ति, यन्त्र और मन्दिरों की निर्मिति से भट्टारकों द्वारा शिल्पकला के सरक्षण मे महत्त्वपूर्ण योगदान मिला है। कई स्थानों पर मन्दिरों में पाषाण या लकडी के स्तम्भों या छतो पर जिनेन्द्र जन्माभिषेक, सम्मेदशिखर आदि तीर्थक्षेत्र और अन्यान्य कथाओ की प्रतिकृतिया प्राप्त होती हैं। सूरत के गोपीपुरा मन्दिर की एक मेरुमूर्ति पर चार भट्टारको की मूर्तियां निर्मित हैं। जिन्तूर के निकट नेमगिरी पर नेमिनाथ की विशाल मूर्ति के पादपीठ पर उस क्षेत्र के संस्थापक वीर संघपति और उनके कुटुबियों की सुदर मूर्तिया उत्कीर्ण हैं। इसी प्रकार अनेक स्थानों पर मन्दिरो के सामने विशाल मानस्तम्भो का निर्माण हुआ है जिन पर समवसरणादि विविध दृश्य अकित मिलते हैं। भट्टारकों के समाधिस्थानों पर निर्माण किये गए स्मारक भी कई स्थानों पर दर्शनीय बने हैं।

हस्तलिखितो की प्रतिया कराते वक्त कई भट्टारकों ने अपने चित्रकलाप्रेम का परिचय दिया है। जिनसागर विरचित सुगन्धदशमी कथा की एक प्रति ७३ चित्रों से विभूषित है जो नागपुर के सेनगणमन्दिर मे उपलब्ध हुई है। अजनगाव के बलात्कारगण मन्दिर मे चौवीस तीर्थंकरो के शास्त्रोक्त आसन, यक्ष, यक्षिणियाँ, वर्ण आदि से युक्त सुन्दर चित्र प्राप्त हुए हैं। नागपुर के त्रैलोक्यदीपक नामक हस्तलिखित में बडे प्रमाण पर मानचित्रों का अकन हुआ है। काष्ठासघ माथुरगच्छ के भ. क्षेमकीर्ति के उपदेश से वैराट नगर के जिनमन्दिर को विविध चित्रों से अलकृत किया गया था। कई सुन्दर प्रतियों का लेखन सुवर्णाक्षरो द्वारा हुआ है। पूजा के लिए जो मण्डल बनाये जाते थे उन में भी कई बार चित्रकला के अच्छे नमूने प्राप्त होते हैं।

मध्ययुग मे अन्य कलाओ की अपेक्षा नृत्य कला कुछ हीन लोगों की कला मानी जाती थी। फिर भी विविध धार्मिक उत्सवों के अवसर पर टिपरियो के खेल को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। खास कर विजयादशमी और पद्मावती की रथयात्रा के अवसर पर नियमपूर्वक इस का प्रयोग होता था।

इन सब कलाओं के केन्द्रित होने के कारण ही मध्ययुग मे मन्दिरो को समाज जीवन के केन्द्रों का स्थान मिल सका। इस से इन कलाओं का अस्तित्व

बना रहा और साथ ही उन में गम्भीरता और पावित्र्य की भावना भी दृढ हो सकी। इसी लिए बाल और वृद्ध, स्त्री और पुरुष सभी प्रकार के व्यक्ति मन्दिरों की ओर आकर्षित हो सके। जैन समाज का अन्य समाजो से सौहार्द स्थापित करने मे भी इन कलाओं का विशेष महत्त्व रहा।

१२. अन्य सम्प्रदायों से सम्बन्ध

सेन संघ, काष्ठासंघ और बलात्कारगण की परम्पराओं के आरंभ काल में जैन धर्म के प्रतिस्पर्धी वैदिक और बौद्ध ये दो धर्म प्रचलित थे। इस लिए बौद्ध दर्शन की अनेक मान्यताओं के खंडन का प्रयास जिनसेन, गुणभद्र आदि आचार्यों के ग्रन्थों में दिखाई देता है। किन्तु भट्टारक परम्पराएं दृढमूल हुई उस समय तक बौद्ध धर्म भारतवर्ष से प्रायः पूरी तरह निर्वासित हो चुका था। इस लिए भट्टारक पीठों से बौद्ध सम्प्रदाय के सम्बन्धों का प्रश्न ही नहीं उठता। अपवाद रूप से नन्दीतटगच्छ के भ. विजयकीर्ति द्वारा वसुधारा नामक बौद्ध तन्त्र विषयक रचना की एक प्रतिलिपि की गई थी जो हाल मे ही उपलब्ध हुई है। पट्टावली आदि मे कहीं कहीं बौद्धों के पराजय के जो उल्लेख हैं उन्हें प्रत्यक्ष आधार न होने से पुरानी परंपरा का अनुकरण मात्र समझना चाहिये। बौद्ध ग्रन्थों के अध्ययन या अध्यापन की प्रथा भी भट्टारक सम्प्रदाय मे बिलकुल नहीं थी जो श्वेताम्बरों मे कुछ हद तक कायम रह सकी।

इन परंपराओं के आरंभ काल मे वैदिक सम्प्रदायों का अद्भुत प्रभाव जैन समाज पर पडा। इस से जैन समाज का ढांचा बिलकुल ही बदल गया। एक सवर्ण हिन्दू की तरह जैन भी जातिसिद्ध उच्चता पर विश्वास करने लगे। सामाजिक और वैधानिक मामलों में भी जैनों ने प्राय पूरी तरह वैदिकों का अनुकरण किया। आरंभसे मठसंस्था कैसे उत्पन्न हुई इसका अभी पूरा संशोधन नहीं हुआ है, तो भी भट्टारक सम्प्रदाय के विकास पर शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठों का परिणाम स्पष्ट दिखाई देता है। शायद उस समयकी मांग ऐसी ही कुछ होगी। भट्टारक पीठों मे भी कई दृष्टियों से वैदिक पद्धतियों का प्रवेश हुआ। पद्मावती आदि देवियों को काली, दुर्गा या लक्ष्मी का ही रूपान्तर माना जाने लगा। अध्यात्म-शास्त्रों के व्याख्यान में आत्मा के समान ही ब्रह्म का निरूपण होने लगा। कथा पुराणों मे भी कई वैदिक कथाओं का समावेश किया गया। भट्टारकों के लिए शिक्षक या शिष्यों के रूप मे कई बार वैदिक पण्डितों की योजना होती थी। इस से यह प्रभाव व्यापक हो सका। द्विज विश्वनाथ, भूपति प्राज मिश्र, शैव माधव

ये भट्टारकों के प्रभाव क्षेत्र के घटक बन सके।

अप्रत्यक्ष रूप से यद्यपि इस प्रकार वैदिक सम्प्रदाय से समझौता किया गया तथापि प्रत्यक्ष रूप से अनेक बार उस से संघर्ष भी हुआ। विभिन्न वादविवादों में श्रुतसागरसूरि ने नीलकण्ठ भट्ट का, प्रतापकीर्ति ने केदारभट्ट का, विजयसेन ने चन्द्रतपस्वी का, चन्द्रकीर्ति ने कृष्णभट्ट का और धारसेन ने धनेश्वरभट्ट का पराजय किया था। ग्रन्थों मे भी न्याय, वैशेषिक, सांख्य, वेदान्त आदि वैदिक दर्शनों पर खंडनात्मक लेखन किया गया।

बारहवीं सदी से मुस्लिम राजसत्ता भारत मे दृढमूल हुई। नग्न मुनियों के स्थान पर भट्टारकों की स्थापना होने में इस परिस्थिति का बड़ा हाथ था। आगे चल कर भट्टारकों ने अनेक मुस्लिम शासकों से अच्छे सम्बन्ध स्थापित कर लिए। मुस्लिमों द्वारा इस युग मे जैनों पर कोई विशेष अन्याय हुआ हो ऐसा ज्ञात नहीं होता। किन्तु मुस्लिम समाज या इस्लाम धर्म से जैनों का विशेष सम्बन्ध नहीं आता था। अपवाद रूप से भ. राजकीर्ति के शिष्य प. हाजी अवश्य मुस्लिम प्रतीत होते हैं।

भट्टारकों से श्वेताम्बर सम्प्रदाय के सम्बन्ध बहुत अच्छे नहीं थे। शायद इस लिए कि इन दोनों के बाह्य रूप में कोई अन्तर नहीं रहा था, वे अपना विरोध अन्य मार्गों से प्रकट करते रहते थे। भ. श्रीभूषण ने एक विवाद में श्वेताबरों का एक मन्दिर गिरा कर उन्हे निर्वासित कराया था। स्थानकवासी सम्प्रदाय के मूर्तिपूजा विरोध के लिए श्रुतसागर सूरि ने जगह जगह उन की निन्दा की है। स्थानकवासी साधु उच्च नीच का विचार न करते हुए सब लोगों से आहार ग्रहण करते थे इस पर भी उन्हें काफी गुस्सा आता था। केवलियों का आहार, स्त्री मुक्ति और भ. महावीर का गर्भान्तरण इन श्वेताम्बर मान्यताओं के खण्डन के लिए भ. शुभचन्द्र ने संशयिवदनविदारण नामक ग्रन्थ लिखा। अपवाद रूप से कारंजा के भट्टारकों के विषय में श्वेताम्बर साधु शीलविजय ने प्रशंसात्मक उद्गार व्यक्त किए थे। किन्तु ऐसे प्रसग बहुत ही कम बार आते थे। श्वेताम्बर और दिगम्बर सम्प्रदाय के इस विरोध का एक प्रमुख कारण तीर्थक्षेत्रों का अधिकार था। माणिक्यस्वामी, केशरियाजी, चंदवाड, जीरापल्ली, आदि अतिशय क्षेत्र और प्रायः

* यह मतप्रणाली प्राप्त ऐतिहासिक आधारोंकी सीमाओंमें समझ लेनी चाहिए। यह अभी विचाराधीन है, और इस विषयमें मतभेद भी है।

—ग्रंथमाला संपादक

सभी सिद्धक्षेत्र दोनों सम्प्रदायों द्वारा पूज्य थे इस लिए उन पर अधिकार पाने के लिए प्रायः झगडे होते रहते थे।

सत्रहवीं शताब्दी मे राजस्थानके आसपास जैन सम्प्रदाय मे शुद्धीकरण-वादी तेरापथ की स्थापना हुई। नाटक समयसार आदि के कर्ता पण्डित बनारसी-दास इस सम्प्रदाय के नेता थे। पूजा पद्धति को सादी करना, मूल अध्यात्मशास्त्रों का अध्ययन और अध्यापन बढाना तथा शास्त्रोक्त आचरण न करनेवाले भट्टा-रकों को पूज्य नही मानना ये इस सम्प्रदाय के प्रमुख लक्षण थे। भट्टारक सम्प्र-दाय मे शासनदेवताओं की पूजा को एक प्रमुख स्थान मिला था उसे भी तेरापंथ ने नष्ट करना चाहा। स्वभावतः भट्टारकों द्वारा इस पथ का विरोध किया गया। अपवाद रूप से कारंजा के भ. देवेन्द्रकीर्ति (तृतीय) के सम्पर्क में आ कर आगरा निवासी जीवनदास ने तेरापथ का अपना अभिमान छोड दिया ऐसा उल्लेख मिलता है।

दक्षिण में श्रवणबेलगोल, कारकल, हुमच्च और मुडबिद्री इन स्थानो पर देशीय गण आदि परम्पराओं के भट्टारक पीठ थे। ये दिगम्बर सम्प्रदाय के ही होने से इन के सम्बन्ध उत्तरीय भट्टारकों से प्रायः अच्छे रहते थे। पण्डितदेव, नागचन्द्रसूरि, श्रुतमुनि आदि दाक्षिणात्य विद्वान् भ. जिनचन्द्र, ज्ञानभूषण, श्रुत-सागरसूरि आदि से सम्बन्ध स्थापित करते थे। कारंजा के भ. धर्मचन्द्र श्रवण-बेलगोल पहुचे तब भ चारुकीर्ति से उन की मुलाकात हुई थी। नन्दीतटगच्छ के भ. चन्द्रकीर्ति ने नरसिंहपुर मे एक विवाद मे विजय पाई उस समय भ. चारु-कीर्ति उन्हें मिलने आए थे।

१३. परस्पर सम्बन्ध

भट्टारक सम्प्रदायों के परस्पर सम्बन्ध प्रायः व्यक्तिगत मनोवृत्ति पर निर्भर रहते थे। इसी लिए न तो उन मे कोई स्थायी वैर दिखाई देता है, न स्थायी प्रेम। सहकार्य या झगडे के लिए कोई तत्त्व आधारभूत नहीं था। इसी लिए समय समय पर विभिन्न प्रकार के सम्बन्ध स्थापित हो सके।

सेन गण के प्राचीन आचार्य वीरसेन और जिनसेन अपनी प्रतिभा और विद्वत्ता के कारण पुन्नाट संघ के आचार्य जिनसेन द्वारा सन्मानित हुए थे। उन ने जिन आचार्यों का पूज्य बुद्धि से स्मरण किया है उन मे भी सम्प्रदायभेद की कोई झलक नहीं आती। आचार्य कुन्दकुन्द का अनुल्लेख अवश्य कुछ खटकता है।

इसी परंपरा के पल्लपण्डित ने आचार्य शाकटायन पाल्यकीर्ति की व्याकरण-कुशलता का उल्लेख किया है। शाकटायन यापनीय संघ के थे यह सुप्रसिद्ध है।

सेनगण की उत्तरकालीन परम्परा मे भ. वीरसेन (प्रथम) ने नन्दीतटगच्छ के भ. सोमकीर्ति के साथ एक प्रतिष्ठा महोत्सव मे भाग लिया था। इन के बाद भ. सोमसेन (चतुर्थ) ने धर्मरसिक की प्रशस्ति मे महेन्द्रकीर्ति का गुरु रूप मे उल्लेख किया है। इन के शिष्य भ. जिनसेन पूर्वाश्रम मे ईडर शाखा के भ. पद्मनन्दि के शिष्य रह चुके थे। इस परम्परा के अन्तिम भ. वीरसेनस्वामी का पट्टाभिषेक कारजा के ही बलात्कारगण के पट्टाधीश भ. देवेन्द्रकीर्ति के हाथों हुआ था। इन के बाद भ. रत्नकीर्ति और भ. देवेन्द्रकीर्ति ये दो और भट्टारक बलात्कारगण की कारजा शाखा मे हुए। वीरसेन स्वामी के इन के व्यक्तिगत सम्बन्ध खास विरोध के नही थे। किन्तु इन के शिष्य वर्ग में परस्पर वैर की भावना बहुत तीव्र हो चुकी थी। अब नए युग के प्रभावसे यह विरोध लुप्तप्राय हो चुका है।

लातूर और कारजा ये बलात्कारगण की एक ही परपरा की दो शाखाएं होने से आरंभ में इन के सम्बन्ध काफी अच्छे थे। किन्तु बाद में लातूर के भ. नागेन्द्रकीर्ति का कारजा के भ. देवेन्द्रकीर्ति (उपान्त्य) से एकबार अपने अधिकार क्षेत्र को ले कर कुछ विरोध भी हुआ था।

दिल्ली शाखा के भ. जिनचन्द्र का प्रभाव व्यापक था। सूरत के भ. विद्यानन्दि, ईडर के भ. ज्ञानभूषण तथा अटेर के भ. सिंहकीर्ति और नागौर के भ रत्नकीर्ति इन के प्रभावक्षेत्र में सम्मिलित होते थे। इसी शाखा के भ चन्द्रकीर्ति का उल्लेख नागौर के भ. नेमिचन्द्र द्वारा लिखाई गई एक ग्रन्थप्रशस्ति में मिलता है।

ईडर के भ. सकलकीर्ति ने ज्ञानकीर्ति, धर्मकीर्ति और भुवनकीर्ति इन को भट्टारक पद पर प्रतिष्ठित किया था। इन के शिष्य ब्रह्म जिनदास के अनेक शिष्य थे। इन में ब्रह्म शान्तिदास ने सकलकीर्ति की परम्परा के समान ही सूरत की भ. लक्ष्मीचन्द्र की परम्परा से भी सम्बन्ध स्थापित किए थे। अपने ग्रन्थों के कारण अन्य अनेक सम्प्रदायो द्वारा सकलकीर्ति सन्मानित हुए थे। ईडर शाखा के ही भ शुभचन्द्र ने सूरत के लक्ष्मीचन्द्र और वीरचन्द्र का स्मरण किया है।

भानपुर शाखा के भ. गुणचन्द्र के गुरु भ. सिंहनन्दी का सूरत शाखा के श्रुतसागरसूरि तथा ब्रह्म नेमिदत्त ने आदरपूर्वक स्मरण किया है। इसी शाखा के भ रत्नचन्द्र (प्रथम) का पट्टाभिषेक हेमकीर्ति द्वारा हुआ था किन्तु उस समय

बडी शाखा के (सम्भवतः ईडर) कुछ श्रावकों ने विघ्न उपस्थित करने की कोशिश की थी।

सूरत शाखा के भ. विद्यानन्दी ने काष्ठासंघीय श्रावकों के लिए भी मूर्ति-प्रतिष्ठाए कीं। इन के शिष्य श्रुतसागर सूरि के विविध सम्बन्धों का उल्लेख पहले हो चुका है। इन की परम्परा के भ. लक्ष्मीचन्द्र के शिष्यों मे कारंजा के वीरसेन और विशालकीर्ति भट्टारक प्रमुख थे। इन के प्रशिष्य भ. ज्ञानभूषण के शिष्यों में भी काष्ठासंघ के भ. रत्नभूषण का समावेश होता था। सूरत के ही भ. वादिचन्द्र का नन्दीतटगच्छ के भ. श्रीभूषण के साथ एक बार वादविवाद हुआ था।

जेरहट शाखा के श्रुतकीर्ति ने दिल्ली के भ. जिनचन्द्र के शिष्य विद्यानन्दि का स्मरण किया है।

माथुर गच्छ की दो विभिन्न परम्पराओं मे लाटीसंहिता और जम्बूस्वामी-चरित के कर्ता पण्डित राजमल्ल एक ही समय सम्बद्ध थे। एक ही गच्छ की होने पर भी इन परम्पराओं में अन्य विशेष सम्बन्ध नहीं पाए जाते।

लाडबागड गच्छ के भ. पद्मसेन के शिष्य नरेन्द्रसेन ने आशाधर को संघबाह्य कर दिया था तब उन ने अगिगच्छ का आश्रय लिया था। इन की परम्परा के मलयकीर्ति ने तरसुम्बा मे मयूरपिच्छ धारण करनेवालों का पराजय किया था। त्रिभुवकीर्ति के बाद इस शाखा में कोई भट्टारक नहीं हुए इस लिए इस के अनुयायी नन्दीतट गच्छ के भट्टारकों द्वारा ही समस्त धार्मिक कार्य कराते थे।

नन्दीतट गच्छ के भ. श्रीभूषण और चन्द्रकीर्ति का मूलसंघ के प्रति बहुत ही विकृत दृष्टिकोण था। मयूरपिच्छ की उन ने खूब निन्दा की है। किन्तु इन्ही के परम्परा के इन्द्रभूषण के समय फिर से सेनगण और बलात्कारगण के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित हो गए थे।

१४. शासकों से सम्बन्ध

इस युग मे किसी राजाने प्रत्यक्ष रूप से जैन धर्म धारण किया हो ऐसा प्रतीत नहीं होता। अपवाद सिर्फ राष्ट्रकूट सम्राट अमोघवर्ष का हो सकता है। आदिपुराण आदि के कर्ता जिनसेन, गणितसारसंग्रह के कर्ता महावीर एवं शाकटायन व्याकरण के कर्ता पाल्यकीर्ति ने आप की बहुत प्रशंसा की है।

ईडर के राव भाणजी के मन्त्री भोजराज जैनधर्मीय थे। इन के कुटुम्बीयों ने श्रुतसागर सूरि के साथ गजपन्थ और मांगीतुंगी तीर्थक्षेत्रों की यात्रा की थी।

इसी प्रकार विजयनगर के मन्त्री इरुग दण्डनायक जैन थे। आप ने भ. धर्मभूषण के उपदेश से विजयनगर में कुन्थुनाथ का भव्य मन्दिर बनवाया था। जयपुर आदि राजस्थान के राज्यों में भी समय समय पर जैनधर्मीय-मन्त्री हुए है।

जो राजा स्वय जैन नहीं थे उन ने भी समय समय पर भट्टारकों की विद्वत्ता या मन्त्रप्रभाव स प्रभावित हो कर उन का सत्कार किया था। राजा भोज की सभा में लाडबागड गच्छ के भ. शान्तिषेण सत्कृत हुए थे। इसी गच्छ के भ. विजयसेन कनौज के राजा हरिश्चन्द्र द्वारा सन्मानित हुए थे। ईडर के राव रणमल ने भ. मलयकीर्ति का तथा कलबुर्गा के सुलतान फिरोजशाह ने भ. नरेन्द्रकीर्ति का सन्मान किया था। मालवा के सुलतान ग्यासुद्दीन द्वारा सूरत शाखा के भ. मल्लिभूषण का आदर किया गया। इसी शाखा के भ. लक्ष्मीचद्र और ईडर के भ. ज्ञानभूषण ने कर्णाटक के देवराय, मल्लिराय, भैरवराय आदि कई स्थानीय शासकों से सन्मान पाया था। कारजा शाखा के पूर्व रूप के भ. विशालकीर्ति दिल्ली के सुल्तान सिकन्दर, विजयनगर के सम्राट विरूपाक्ष एवं आरग के दंडनायक देवप्प द्वारा सत्कृत हुए थे। इन्हीं के शिष्य विद्यानंद ने भी मल्लिराय आदि शासकों से सन्मान पाया था।

सेन गण, बलात्कार गण एवं पुन्नाट गण के प्राचीन समय के उल्लेख बहुधा दानपत्रो के रूप में प्राप्त हुए है। उत्तरकालीन चालुक्यों में राजा त्रिभुवनमल्ल, रानी केतलदेवी, राजा त्रैलोक्यमल्ल आदि के दानपत्र उल्लेखनीय हैं। कच्छपघात वश के राजा विक्रमसिंह ने भ. विजयकीर्ति को नवनिर्मित जिनमन्दिर के लिए भूमिदान दिया था। उत्तरकालीन भट्टारको के विषय में भी ऐसे अनेक उल्लेख प्राप्त हो सकेंगे यद्यपि ऐसे प्रत्यक्ष उल्लेख अभी उपलब्ध नही हो सके है।

इन प्रत्यक्ष सम्बन्धो के अतिरिक्त ग्रन्थप्रशस्ति आदि में तत्कालीन राजाओ के अनेक उल्लेख मिलते हैं। ग्वालियर के तोमर वशीय राजा वीरमदेव, डूगरसिंह, कीर्तिसिंह एव मानसिंह का कालनिर्णय माथुरगच्छ के भट्टारको ने उन के जो उल्लेख किए हैं उन्हीं से हो सकता है। मुगल वश के बाबर से लेकर महम्मदशाह तक प्राय. सभी सम्राटों के उल्लेख अन्यान्य ग्रन्थप्रशस्तियो मे मिले है। हिन्दुओ को भयभीत कर देने वाले औरगजेब के समय भी जैन ग्रथकर्ता अपना कार्य शान्तिपूर्वक जारी रख सके थे। इन उल्लेखो में सम्राट अकबर के विषय में लाटीसहिता के कर्ता पण्डित राजमल्ल ने लिखे हुए ७० श्लोक विशेष महत्त्व के है। इन मे एक महाकाव्य के समान ही अकबर और उस की राजधानी आगरा का वर्णन किया है।

१५. उपसंहार

भट्टारक सम्प्रदाय का इतिहास अब तक कुछ उपेक्षित सा रहा है। इस ग्रन्थ में उस के एक भाग का उपलब्ध वृत्तान्त सगृहीत हुआ है। इस से यह स्पष्ट होता है कि इतिहास का यह भाग भी काफी महत्त्वपूर्ण है। इसी पद्धति से दिगम्बर सम्प्रदाय के मुडबिद्री, श्रवणबेलगुल, कारकल, हुमच और कोल्हापुर के भट्टारक पीठों का वृत्तान्त तथा श्वेताम्बर सम्प्रदाय के बीकानेर, दिल्ली, लखनऊ आदि अनेक भट्टारक पीठों का वृत्तान्त सगृहीत किया जाए तो जैन सम्प्रदाय का एक हजार वर्षों का इतिहास बहुत कुछ स्पष्ट और प्रामाणिक रूप ले सकेगा।

इस ग्रंथ में एक सीमित सख्या मे ही साधनों का उपयोग हो सका है। अभी अनेक भट्टारक पीठों के शास्त्रभाडार, अनेक मूर्तिलेख एवं शिलालेखो का अवलोकन कर के नई सामग्री प्रकाश में लाई जा सकती है। इसी प्रकार ऐसे कई मूर्तिलेख आदि साधन सन्दिग्धता के कारण इस ग्रन्थ में समाविष्ट नहीं किए है। अधिक साधन उपलब्ध होने पर इन की सन्दिग्धता भी दूर हो सकती है। इस तरह साधनों की मर्यादाओं के बावजूद इस ग्रन्थ में कोई ४०० भट्टारकों का, उन के १७५ शिष्यों का, ३०० ग्रन्थों का, ९० मन्दिरों का, ३१ जातियों का, १०० शासकों का तथा २०० स्थानों का उल्लेख हुआ है एव उन का ऐतिहासिक मूल्य निर्धारित हुआ है। यदि सब साधनो का पूरा उपयोग किया जाए तो यह सख्या आसानी से दुगुनी हो सकती है।

भट्टारक सम्प्रदाय के इतिहास मे जैनसमाज की अवनति का ही इतिहास छिपा है। किन्तु उस में कई उज्ज्वल व्यक्तिमत्त्व हमारा ध्यान आकर्षित करने के लिए समर्थ हैं। भ. शुभचन्द्र और भ. सकलकीर्ति जैसे ग्रन्थकर्ता और भ. जिनचन्द्र जैसे मूर्तिप्रतिष्ठापक आचार्यों की सर्वथा उपेक्षा की जाए तो जैन समाज का इतिहास अधूरा ही रहेगा। उन्नति का इतिहास प्रेरक शक्ति के रूप मे उपयुक्त होता है। उसी प्रकार अवनति का इतिहास भी अनेक शिक्षाएं दे सकता है। भट्टारक सम्प्रदाय के इतिहास मे जो सरक्षणशीलता दृष्टिगोचर होती है उस के परिणामों से सावधान हो कर यदि हम फिर एक बार विकासशील प्रवृत्ति को अपना सके तो जैन समाज फिर एक बार अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर सकती है।

---

१. सेनगण

लेखांक १ – षट्खंडागमटीका धवला वीरसेन

अज्जज्जणंदिसिस्सेणुज्जुवकम्मस्स चंदसेणस्स ।
तह णत्तुवेण पचत्थूहण्णयभाणुणा मुणिणा ॥
सिद्धंतछंदजोइसवायरणपमाणसत्थणिवुणेण ।
भट्टारएण टीका लिहिएसा वीरसेणेण ॥
अट्ठतीसम्हि सासिय विक्कमरायम्हि एसु सगरमो ।
पासे सुतेरसीए भावविलग्गे धवलपक्खे ॥
जगतुंगदेवरज्जे रियम्हि कुभम्हि राहुणा कोणे ।
सूरे तुलाए सते गुरुम्हि कुलविल्लए होते ॥
चावम्हि वरणिवुत्ते सिघे सुक्कम्हि णेमिचदम्हि ।
कत्तियमासे एसा टीका हु समाणिआ धवला ॥
वोद्दणरायणरिंदे णरिंदचूडामणिम्हि भुंजंते ।
सिद्धतगंथमत्थिय गुरुप्पसाएण विगता सा ॥

(भाग १ प्रस्तावना पृ. ३६)

लेखांक २ – कसायपाहुडटीका जयधवला जिनसेन

श्रीवीरसेन इत्यात्तभट्टारकपृथुप्रथः ।
पारदृश्वाधिविश्वानां साक्षादिव स केवली ॥
यस्तप्तोद्दीप्तकिरणैर्भव्यांभोजानि बोधयन् ।
व्यद्योतिष्ट मुनीनेनः पंचस्तूपान्वयांबरे ॥
प्रशिष्यश्चंद्रसेनस्य य शिष्योऽप्यार्यनंदिनाम् ।
कुलं गणं च संतान स्वगुणैरुदजिज्वलत् ॥
तस्य शिष्योऽभवच्छ्रीमान् जिनसेन समिद्धधीः ।
–इति श्रीवीरसेनीया टीका सूत्रार्थदर्शिनी ।
वाटग्रामपुरे श्रीमद्गूर्जरार्यानुपालिते ॥
फाल्गुने मासि पूर्वाह्ने दशम्या शुक्लपक्षके ।
प्रवर्धमानपूजोरुनंदीश्वरमहोत्सवे ॥
अमोघवर्षराजेंद्रप्राज्यराज्यगुणोदया ।

निष्ठिता प्रचयं यायादाकल्पांतमनल्पिका ॥
एकोनषष्टिसमधिकसप्तशताब्देषु शकनरेंद्रस्य ।
समतीतेषु समाप्ता जयधवला प्राभृतव्याख्या ॥

(भाग १ प्रस्तावना पृ. ६९)

लेखांक ३ – आदिपुराण

अहं सुधर्मो जम्ब्वाख्यो निखिलश्रुतधारिण. ।
क्रमात्कैवल्यमुत्पाद्य निर्वास्यामस्ततो वयम् ॥ १३९
त्रयाणामस्मदादीना काल. केवलिनामिह ।
द्वाषष्टिवर्षपिंड' स्याद् भगवन्निर्वृते' परम् ॥ १४०
ततो यथाक्रम विष्णुर्नंदिमित्रोऽपराजित. ।
गोवर्धनो भद्रबाहुरित्याचार्या महाधिय ॥ १४१
चतुर्दशमहाविद्यास्थानाना पारगा इमे ।
पुराणं द्योतयिष्यंति कार्त्स्न्येन शरद. शतम् ॥ १४२
विशाखप्रोष्ठिलाचार्यौ क्षत्रियो जयसाह्वय ।
नागसेनश्च सिद्धार्थो धृतिषेणस्तथैव च ॥ १४३
विजयो बुद्धिमान् गंगदेवो धर्मादिशब्दत' ।
सेनश्च दशपूर्वाणां धारका. स्युर्यथाक्रमम् ॥ १४४
त्र्यशीतं शतमब्दानामेतेषा कालसग्रहः ।
तदा च कृत्स्नमेवेद पुराण विस्तरिष्यते ॥ १४५
ज्ञानविज्ञानसपन्न गुरुपर्वान्वयादिद ।
प्रमाण यच्च यावच्च यदा यच्च प्रकाशते ॥ १५२
तदापीदमनुस्मर्तु प्रभविष्यति धीधना. ।
जिनसेनाग्रगा पूज्या कवीना परमेश्वरा. ॥ १५३

पर्व ३, (स्याद्वाद ग्रथमाला, इन्दौर १९१६)

लेखांक ४ – पार्श्वाभ्युदय

इति विरचितमेतत्काव्यमावेष्ट्य मेघ ।
बहुगुणमपदोष कालिदासस्य काव्यं ॥

मलिनितपरकाव्य निष्टतादाशशाक ।
भुवनमवतु देव सर्वदामोघवर्षः ॥
श्रीवीरसेनमुनिपादपयोजभृंग. श्रीमानभूद्विनयसेनमुनिर्गरीयान् ।
तच्चोदितेन जिनसेनमुनीश्वरेण काव्यं व्यधायि परिवेष्टितमेघदूतम् ॥

(प्रकाशक– नाथा रगजी १९१०)

लेखांक ५ – दर्शनसार   गुणभद्र

सिरिवीरसेणसीसो जिणसेणो सयलसत्थविण्णाणी ।
सिरिपउमनंदिपच्छा चउसंघसमुद्धरणधीरो ॥ ३०
तस्स य सीसो गुणव गुणभद्दो दिव्वणाणपरिपुण्णो ।
पक्खुववासुट्ठमदी महातवो भावलिंगो य ॥ ३१
तेण पुणो विय मिच्चुं णाऊण मुणिस्स विणयसेणस्स ।
सिद्धंतं घोसित्ता सयं गयं सग्गलोयस्स ॥ ३२

(हि. १३ पृ. २५७)

लेखांक ६ – आत्मानुशासन

जिनसेनाचार्यपादस्मरणाधीनचेतसा ।
गुणभद्रभदन्तानां कृतिरात्मानुशासनं ॥ २६९

(प्रकाशक– ज्ञानचंद जैन, लाहौर १८९८)

लेखांक ७ – आदिपुराण उत्तरखंड

निर्मितोऽस्य पुराणस्य सर्वसारो महात्मभि. ।
तच्छेषे यतमानानां प्रासादस्येव न श्रम ॥ ११
अर्थं गुरुभिरेवास्य पूर्वं निष्पादितं परं ।
परं निष्पाद्यमानं सच्छंदोवन्नातिसुंदरं ॥ १३
पुराणं मार्गमासाद्य जिनसेनानुगा ध्रुवम ।
भवाब्धेः पारमिच्छंति पुराणस्य किमुच्यते ॥ ४०

(पर्व ४३, स्याद्वाद ग्रंथमाला, इंदौर, १९१६)

लेखांक ८ – उत्तरपुराण प्रशस्ति लोकसेन

श्रीमूलसंघवार्राशौ मणीनामिव सार्चिषाम् ।
महापुरुषरत्नानां स्थान सेनान्वयोऽजनि ॥ २
तत्र वित्रासिताशेषप्रवादिमदवारण. ।
वीरसेनाग्रणीर्वीरसेनभट्टारको बभौ ॥ ३
सिद्धिभूपद्धतिर्यस्य टीकां संवीक्ष्य भिक्षुभिः ।
टीक्यते हेलयान्येषां विषमापि पदे पदे ॥ ६
अभवदिव हिमाद्रेर्देवसिंधुप्रवाहो
ध्वनिरिव सकलज्ञात्सर्वशास्त्रैकमूर्ति. ॥
उदयगिरितटाद्वा भास्करो भासमानो
मुनिरनु जिनसेनो वीरसेनादमुष्मात् ॥ ८
यस्य प्रांशुनखांशुजालविसरद्धारांतराविर्भवत्–
पादांभोजरजःपिशगमुकुटप्रत्यग्ररत्नद्युति' ॥
संस्मर्ता स्वममोघवर्पनृपति पूतोहमद्येत्यलं
स श्रीमान् जिनसेनपूज्यभगवत्पादो जगन्मंगलं ॥ ९
दशरथगुरुरासीत्तस्य धीमान् सधर्मा
शशिन इव दिनेशो विश्वलोकैकचक्षुः ॥
निखिलमिदमदीपि व्यापि तद्वाङ्मयूखैः
प्रकटितनिजभावं निर्मलैर्धर्मसारै' ॥ १२
प्रत्यक्षीकृतलक्ष्यलक्षणविधिर्विद्योपविद्यातिगः
सिद्धांताध्यवसानयानजनितप्रागल्भ्यवृद्धेद्धधीः ॥
नानानूननयप्रमाणनिपुणो गण्यैर्गुणैर्भूषित
शिष्यः श्रीगुणभद्रसूरिरनयोरासीज्जगद्विश्रुत ॥ १४
कविपरमेश्वरनिगदितगद्यकथामातृक पुरोश्चरितं ।
सकलच्छंदोलंकृतिलक्ष्य सूक्ष्मार्थगूढपदरचनं ॥ १५
जिनसेनभगवतोक्तं मिथ्याकविदर्पदलनमतिललितं ।
सिद्धांतोपनिबंधनकर्त्रा भर्त्रा चिराद्विनायासात ॥ १९
अतिविस्तरभीरुत्वादवशिष्टं संगृहीतममलधिया ।
गुणभद्रसूरिणेद प्रहीणकालानुरोधेन ॥ २०

विदितसकलशास्त्रो लोकसेनो मुनीशः
कविरविकलवृत्तस्तस्य शिष्येषु मुख्यः ।
सततमिह पुराणे प्राप्य साहाय्यमुच्चै-
गुरुविनयमनैपीन्मान्यतां स्वस्य सद्भिः ॥ २८

अकालवर्षभूपाले पालयत्यखिलामिलां ।
तस्मिन्विध्वस्तनिःशेषद्विषि वीध्रयशोजुषि ॥ ३१
पद्मालयमुकुलकुलप्रविकासकसत्प्रतापततमहसि ।
श्रीमति लोकादित्ये प्रध्वस्तप्रथितशत्रुसतमसे ॥ ३२
चेल्लपताके चेल्लध्वजानुजे चेल्लकेतनतनूजे ।
जैनेंद्रधर्मवृद्धिविधायिनि विधुवीध्रयशसि ॥ ३३
वनवासदेशमखिलं भुंजति निष्कंटकं सुखं सुचिरं ।
तत्पितृनिजनामकृते वकापुरे पुरेष्वधिके ॥ ३४
शकनृपकालाभ्यंतरविंशत्यधिकाष्टशतमिताब्दांते ।
मंगलमहार्थकारिणि पिंगलनामनि समस्तजनसुखदे ॥ ३५
श्रीपंचम्यां बुधार्द्रायुजि दिवसवरे मन्त्रिवारे बुधांशे ।
पूर्वायां सिंहलग्ने धनुषि धरणिजे वृश्चिकार्कौ तुलायां ॥
सूर्ये शुक्रे कुलीरे गवि च सुरगुरौ निष्ठितं भव्यवर्यैः ।
प्राप्तेज्यं सर्वसारं जगति विजयते पुण्यमेतत्पुराणम् ॥ ३६

(स्याद्वाद ग्रंथमाला, इंदौर १९१८)

लेखांक ९ -- मुळगुंद शिलालेख   कनकसेन

श्रीमते महते शान्त्ये श्रेयसे विश्ववेदिने ।
नमश्चन्द्रप्रभाख्याय जैनशासनवृद्धये ॥ १
शकनृपकालेऽष्टशते चतुरुत्तरविंशदुत्तरे संप्रगते ।
दुंदुभिनामनि वर्षे प्रवर्तमाने जनानुरागोत्कर्षे ॥ २
श्रीकृष्णवल्लभनृपे पाति मही विततयशसि सकलां तस्मात् ।
पालयति महाश्रीमति विनयाम्बुधिनाम्नि धवळविषयं सर्वं ॥ ३
तस्मिन् मुळ्गुंदाख्ये नगरे वरवैश्यजातिजातः ख्यात ।
चंद्रार्यसत्पुत्रश्चिकार्योऽचीकरं जिनोन्नतभवनं ॥ ४

तत्तनयो नागार्यो नाम्ना तस्यानुजो नयागमकुशल. ।
अरसार्यो दानादिप्रोद्युक्तसम्यक्त्वसक्तचित्तव्यक्त: ॥ ५
तेन दर्शनाभरणभूपितेन पितृकारितजिनालयाय
चदिकवाटे शे (से) नान्वयानुगाय नरनरपतियतिपतिपूज्यपाद-कुमारशे (से) नाचार्य मी (मे) ख वीरसेनमुनिपतिशिष्य कनकशे (से) न सूरिमुख्याय कदवर्समाळक्षेत्रे ए · वम्माना हस्तात् सहस्रवल्लीमात्रक्षेत्र द्रव्यसिद्धुना गृहीत्वा नगरमहाजनविदेशे दत्तं ॥

(जैन शिलालेख सग्रह, भाग २ पृ. १५८)

लेखांक १० – अंगडि शिलालेख वज्रपाणि

स्वस्ति सकवर्ष ९२४ नेय जयसवत्सरद चैत्रमासद सुद्ध दशमी · ' वार पुष्यनक्षत्रदंदु विनयादित्यपोय्सळन राज्यं प्रवर्तिसे सूरस्तगणद श्रीवज्रपाणिपंडितदेवर गंतियरप्प जाकियव्वे गंतियर् सोसवूरोळे नाडे पोपणद दिसेयनरसंगे वोक्कलग पोन्नरे कोट्टु मण्णेरेकोडु सोसवूर वसदिगे विट्टर् निसिदिगे यडे वक्कळेय एरडु हळ्ळद मेगण गण्ण चाल्कु मकरजिनालयक्के विट्टर् ॥

(उपर्युक्त, पृ. २२७)

लेखांक ११ – होनवाड शिलालेख महासेन

श्रीमूलसंघे जिनधर्ममूले गणाभिधाने वरसेननाम्नि ।
गच्छेषु तुच्छेऽपि पोगर्यभिख्ये सस्तूयमानो मुनिरार्यसेन. ॥
अनेकभूपालकमौलिरत्न–शोणांशुवालातपजालकेन ।
प्रोज्जृंभितश्रीचरणारविंद–श्रीब्रह्मसेनप्र(व्र)तिनाथशिष्य: ॥
तस्यार्यसेनस्य मुनीश्वरस्य शिष्यो महासेनमहामुनीद्र ।
सम्यक्त्वरत्नोज्ज्वलितांतरग. ससारनीराकरसेतुभूत. ॥
तज्जैनयोगींद्रपदाब्जभृंग श्रीवानसाम्नायवियत्पतग. ।
श्रीकोम्मराजात्मभवस्सुतेज: सम्यक्त्वरत्नाकरचांकिराज: ॥
तन्निर्मितं भुवनवुंभुकमत्युदात्तं लोकप्रसिद्धविभवोन्नतपोन्नवाडे ।
ररम्यते परमशांतिजिनेंद्रगेहं पार्श्वद्वयानुगतपार्श्वसुपार्श्ववास ॥

ॐ शकवर्ष ९७६ नेय जय संवत्सरद वैशाखद मासास्ये सोमवारददिन सूर्यग्रहणनिमित्तदिं भीमनदिय तडिय मणियूर अप्पयण वीडिनोळ् पोन्नवाडदोळ् चांकिमय्यन माडिसिद श्रीशांतिनाथदेवर त्रिभुवनतिलकचैत्यालयदलिर्प ऋषियर-ज्जियराहारदानके सर्वनमस्यवागि श्रीमत्रैलोक्यमल्लदेवर श्रीकेतलदेवियर विन्नपदि मूवत्तुगेण गळेयोळ् विट्टनेलमत्त (र्) ३५ तोण्ट ॥

(उपर्युक्त, पृ. २२८)

लेखांक १२ – बळगांवे शिलालेख रामसेन

श्रीमन् त्रिभुवनमल्लदेवर श्रीमच्चालुक्यविक्रमवर्ष २ नेय पिंगळ-संवत्सरद पुष्य सुद्ध ७ आदित्यवारददिनुत्तरायण- सक्रांतिय पर्वनिमित्त राजधानि वळ्ळिगावेयोळ् तम्मकुमार- गालदंडु माडिसिद श्रीमच्चालुक्य-गंगपेर्मानडिजिनालयद देवर्गर्चनपूजनाभिषेकक्क भोगक्क ऋषियराहारदानक्कं मेले वसदिय खंडस्फुटितनवकर्मद वेसक्कमागि ॥
अंतु समस्तशास्त्रपारावारपारगः परमतपश्चरणनिरतरप्प श्रीमूलसंघद सेनगणद पोगरिगच्छद श्रीमत् रामसेनपंडितर्गे धारापूर्वकं सर्वनमस्यं माडि कोट्ट वनवसे पनिर्छासिरद कंपणं जिड्डुलिगे ७० र वळ्ळियवाड मनेवने १ श्रीमद् गुणभद्रदेवर गुड्डं चावुण्डमय्य वरेद मंगळमहाश्री ॥

(उपर्युक्त, पृ. ३१५)

लेखांक १३ – सोमवार शिलालेख रामचंद्र

स्वस्ति भद्रमस्तु जिनशासनाय ॥ स्वस्ति शकवर्ष १०१७ नेय युवसंवत्सरद भाद्रपद मासद सुद्धसप्तमी गुरुवारददु मकरलग्न गुरुदयदल् श्रीमत्सुराष्ट्रगणद कल्नेलेय रामचन्द्रदेवर शिष्यनियरप्प अरसब्बे गतियर् ॥

(उपर्युक्त, पृ. ३५१)

लेखांक १४ – हिरेआवलि शिलालेख माधवसेन

स्वस्ति श्रीमतु विक्रमवर्षद ४ [९] नेय साधा [रण] संवत्सरद

माघशुद्ध ५ बृहस्पतिवारदंदु श्रीमन्मूलसंघद सेनगणद पोगरिगच्छद चंद्रप्रभसिद्धांतदेवशिष्यरप्प माधवसेनभट्टारक- देवरु

मनदिं जिनन पदंगळोळ् अनुनयदिं निरिसि पंचपदमं नेनेयुत्तु ।
अनुपमसमाधिविधियं मुनिमाध · पडेदं ॥

(उपर्युक्त, पृ. ४३६)

लेखांक १५ – कंबदहळ्ळि शिलालेख पल्लपंडित

भद्रमस्तु जिनशासनस्य ॥
श्रीसूरस्थगणे जातश्चारुचारित्रभूधरः ।
भूपालानतपादाब्जो राद्धातार्णवपारग · ॥ १
आदावनतवीर्यस्तच्छिष्यो बाळचंद्रमुनिमुख्य- ।
स्तत्सूनुर्जितमदनः सिद्धातांभोनिधिः प्रभाचंद्रः ॥ २
शिष्यं कल्नेलेदेवस्तस्याभूत्तन्मनीषिण. सूनुः ।
विध्वस्तमदनदर्पो गुणमणिरष्टोपवासिमुनिमुख्य. ॥ ३
तन्मौखो विबुधाधीशो हेमनंदिमुनीश्वर. ।
राद्धांतपारगो जातः सूरस्थगणभास्कर· ॥ ४
तदंतेवासिनामाद्यो माद्यतामिंद्रियद्विपाम् ।
यतिर्विनयनंदीति विनेताभूत्तपोनिधिः ॥ ५
व्रतसमितिगुप्तिगुप्तो जितमोहपरीषहो बुधस्तुत्यो ।
हतमदमायाद्वेषो यतिपतितत्सूनुरेकवीरोऽभूत् ॥ ८
तस्यानुज. सकलशास्त्रमहार्णवोऽभूद् ।
भव्याब्जषडदिनकृन्मुनिपुंडरीको ॥ ९
विध्वस्तमन्मथमदोऽमळगीतकीर्ति ।
श्रीपल्लपंडितयतिर्जितपापशत्रु· ॥ १०
पल्लकीर्तिर्यथा रूढ पुरा व्याकरणे कृती ।
तथाभिमानदानेषु प्रसिद्धर् पल्लपंडित. ॥ ११
· शक वरिस १०४६ त्रिलवि संवत्सरद

(उपर्युक्त, पृ. ३९९)

लेखांक १६ – विश्वलोचन कोश　　श्रीधरसेन

सेनान्वये सकलतत्त्वसमर्पितश्री. श्रीमानजायत कविर्मुनिसेननामा ।
आन्वीक्षिकी सकलशास्त्रमयी च विद्या यस्यास वादपदवी न दवीयसी स्यात् ॥१
तस्मादभूदखिलवाङ्मयपारदृश्वा विश्वासपात्रमवनीतलनायकानाम् ।
श्रीश्रीधरः सकलसत्कविगुम्फितत्त्वपीयूषपानकृतनिर्जरभारतीकः ॥ २
तस्यातिशायिनि कवे. पथि जागरूकधीलोचनस्य गुरुशासनलोचनस्य ।
नानाकवींद्ररचितानभिधानकोशानाकृष्य लोचनमिवायमदीपि कोशः ॥ ३

(प्रकाशक– नाथारंगजी, बम्बई १९१२)

लेखांक १७ – पट्टावली　　सोमसेन

नवलक्षधनुराधीश-सप्तलक्षकर्णाटकराजेंद्रचूडामौक्तिकमालाप्रभाधुनी-जलप्रवाहप्रक्षालितचरणनखचित्र-श्रीसोमसेनभट्टारकाणाम् ॥ ३३

(म. १३१)

लेखांक १८ – पट्टावली　　श्रुतवीर

अलकेश्वरपुराद् भरवच्छनगरे राजाधिराज-परमेश्वर-यवनरायशिरोमणि-महम्मदपातशाहसुरत्राण-समस्यापूरणादखिलदृष्टिनिपातेनाष्टादशवर्षप्राय-प्राप्तदेवलोकश्रीश्रुतवीरस्वामीनाम् ॥ ३४

(उपर्युक्त)

लेखांक १९ – पट्टावली　　धारसेन

भंभेरीपुर-धनेश्वरभट्टभ्रष्टीकृतानलनिहित-यज्ञोपवीतादिविजितसिद्धब्रह्मदेवसधर्मशर्मकर्म-निर्मलांत.करणश्रीमच्छ्रीधारसेनाचार्याणाम् ॥ ३५

(उपर्युक्त)

लेखांक २० – (समयसार)　　देवसेन

श्रीखाणदेशे वरणग्रामचैत्याले श्रीआचार्यजी देवसेनजी ओसवाल

ज्ञाते सा कल्याणचंदसा भार्या दगडुबाई तत्पुत्र आढुसाजी भार्या मेनाबाई तत्पुत्र मढासाजी पुस्तकपठनार्थं ॥

(से. २४)

## लेखांक २१ – शिलालेख		सोमसेन

स्वस्तिश्री सवत् [१५४१ वर्षे शाके १४५१ (१४०६९)] प्रवर्तमाने कोधीता संवत्सरे उत्तरगणे मासे शुक्लपक्षे ६ दिने शुक्रवासरे स्वातिनक्षत्रे योगे २ करणे मिथुनलग्ने श्रीवराटदेशे कारंजानगरे श्रीसुपार्श्वनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे श्रीमन् वृद्ध(वृषभ)सेनगणधराचार्य पारंपर्यागत श्रीदेववीरमहावादवादीश्वर रायवादिपिकी महासकलविद्वज्जनसार्वभौमसाभिमानवादीभसिंहाभिनवत्रैविद्य मोमसेनभट्टारकाणामुपदेशात श्रीबघेरवालज्ञाति खमडवाड(खटवड)गोत्रे अष्टोत्तरगतमहोत्तुंगशिखरप्रासादसमुद्धरणे धीर त्रिलोकश्रीजिनमहाबिंबोद्धारक अष्टोत्तरगतश्रीजिनमहाप्रतिष्ठाकारक अष्टादशस्थाने अष्टादशकोटिश्रुतभंडारसस्थापक सवालक्षबंदी मोक्षकारक मेदपाटदेशे चित्रकूटनगरे श्रीचंद्रप्रभजिनेंद्रचैत्यालयस्याग्रे निजभुजोपार्जितवित्तवलेन श्रीकीर्तिस्तंभ आरोपक साहजिजा सुत साहपूनसिहस्य ।

(अ ८ पृ १४२)

लेखांक २२ – पट्टावली

तत्पट्टोदयाचलप्रभाकरवादीभसिंहाभिनवत्रैविद्यश्रीमच्छ्रीसोमसेनभट्टारकाणाम् ॥ ३७

(म १३१)

## लेखांक २३ – पट्टावली		गुणभद्र

तत्पट्टवार्धिवर्धनैकपूर्णचंद्रायमान श्रीमद्गुणभद्रभट्टारकाणाम ॥ ३८

(उपर्युक्त)

लेखांक २४ – जलयंत्र

स. १५७९ मगसरमासे शुक्ले पक्षे १० शुक्रवारे श्रीमूलसंघे महरिषभ-

सेनगणधरान्वये पुष्करगच्छे सेनगणे भ श्रीगुणभद्रोपदेशात् हुंबडज्ञातीये साह वद्रा भार्यारींगादे ॥

(फतेहपुर अ. ११ पृ ४०८)

लेखांक २५ – पट्टावली　　वीरसेन

तत्पट्टोदयाद्रिदिवाकरायमाणश्रीमत्कर्णाटकदेशस्थापितधर्मामृतवर्षण-जलदायमानधीरतपश्चरणाचरणप्रवीणश्रीवीरसेनभट्टारकाणाम् ॥ ३९

(म. १३१)

लेखांक २६ – पट्टावली　　श्री युक्तवीर

विगताभिमानतपगतकषायागादिविविधग्रंथकरणैककुशलताभिमान-श्रीयुक्तवीरभट्टारकाणाम ॥ ४०

(उपर्युक्त)

लेखांक २७ – पट्टावली　　माणिकसेन

तत्पट्टे सर्वज्ञवचनामृतस्वादकृतात्मकाय श्रीमाणिकसेनभट्टारकाणाम ॥४१

(उपर्युक्त)

लेखांक २८ – अरहंत मूर्ति

सके १४२४ मूलसंघे सेनगणे भ माणिकसेन उपदेशात् गुजर पल्लीवाल ज्ञाति.. सववी नेमा ॥

(ना १८)

लेखांक २९ – पट्टावली　　गुणसेन

तत्पट्टोदयाचलदिवाकरायमाणश्रीगुणसेनभट्टारकाणाम ॥ ४२

(म. १३१)

लेखांक ३० – पट्टावली लक्ष्मीसेन

तदनु सकलविद्वज्जनपूजितचरणकमलभव्यजनचित्तसरोजनिवास-लक्ष्मीसदृशलक्ष्मीसेनभट्टारकाणाम ॥

[उपर्युक्त]

लेखांक ३१ –

मूलसंघ साखा प्रवर सेनगण संघाभरण ।
सोमविजय एवं वदति लक्ष्मीसेन तारणतरण ॥
गुणभद्र गुण गच्छादिभरण उदधिचन्द्र जगि जानिये ।
सोमविजय एवं वदति लक्ष्मीसेन वखानिये ॥

(ना. १४)

लेखांक ३२ – नंदीश्वरमूर्ति

[शके १५००] सर्वजीतसंवत्सरे माघमासे शुक्लपक्षे १३ दिने श्रीमूलसघे सेनगणे पुष्करगच्छे वृषभसेनगणधरान्वये भ श्रमण(श्रीगुण)भद्र तत्पट्टे श्रीलक्ष्मीसेनोपदेशात् बघेरवालज्ञातीय ॥

[कारजा, भा. १३ पृ १२८]

लेखांक ३३ – अनंत यंत्र

स १५— श्रीमूलसघे सेनगणे भ श्रीगुणभद्रस्तत्पट्टे भ. श्रीलक्ष्मीसेन उपदेशात कम्पिलवास्तव्य घरकौ ज्ञातीये सघई हेमासा भार्या अंबा... ॥

[मैनपुरी, भा. प्र पृ १७]

लेखांक ३४ – पट्टावली सोमसेन

विबुधविविधजनमनइंदीवरविकासनपूर्णशशिसमानाना श्रीसोमसेन-भट्टारकाणाम् ॥ ४४

[म. १३१]

लेखांक ३५ – कृष्णपुरपार्श्वनाथस्तोत्र

अविरलकविलक्ष्मीसेनशिष्येण लक्ष्मी-
विभरणगुणपूत सोमसेनेन गीतं ।
पठति विगतकामः पार्श्वनाथस्तवं यः
सुकृतपदनिधानं स प्रयाति प्रधानम् ॥ ९

[अ. १२ पृ. ३२९]

लेखांक ३६ – १ मूर्ति

सवत १५९७ श्रीमूलसंघे सेनगणे भ सोमसेन उपदेशात् कालवाडे संघवी .. ॥

[आर्वी, अ. ४ पृ. ५०३]

लेखांक ३७ – पट्टावली　　माणिक्यसेन

मिथ्यामततमोनिवारणमाणिक्यरत्नसमदिव्यरूपश्रीमाणिक्यसेनभट्टारकाणाम ॥ ४५

[म. १३१]

लेखांक ३८ – पट्टावली　　गुणभद्र

आशीविषदुष्टकर्कशमहारोगमदगजकेसरिसिहसमानानां अनेकनरपति-सेवितपादपद्मश्रीगुणभद्रभट्टारकाणाम् ॥

[उपर्युक्त]

लेखांक ३९ – रामपुराण　　सोमसेन

वराटविषये रम्ये जित्वरे (जिन्तुरे) नगरे वरे ।
मन्दिरे पार्श्वनाथस्य सिद्धो ग्रन्थो शुभे दिने ॥ २६
श्रीमूलसंघे वरपुष्कराख्ये गच्छे सुजातो गुणभद्रसूरि. ।
पट्टे च तस्यैव सुसोमसेनो भट्टारकोभूद् विदुषां शिरोमणि ॥ २३३
विक्रमस्य गते शाके षोडशशतवर्षके ।
षट्पंचाशत्समायुक्ते मासे श्रावणिके तथा ॥ २१७

शुक्लपक्षत्रयोदश्यां बुधवारे शुभे दिने ।
निष्पन्नं चरितं रम्यं रामचन्द्रस्य पावनं ॥ २१८

[कारंजा]

लेखांक ४० – (शब्दरत्नप्रदीप)

शुभमस्तु कल्याणं ॥ संवत १६६६ शाके १५३१ वर्षे श्रावणकृष्णपक्षे तिथि प्रतिपदा ॥ १ ॥ शुक्रवारे ग्रंथ लिखितं ठा. गोपिचंद उदयपुरस्थाने तिष्ठत्ये ॥ कल्याण भवेत् ॥ अभिनव भ. श्रीसोमसेनस्येदं पुस्तकं ॥

[म. ५३]

लेखांक ४१ – धर्मरसिक त्रैवर्णिकाचार

अब्दे तत्त्वरसर्तुचंद्रकलिते श्रीविक्रमादित्यजे
मासे कार्तिकनामनीह धवले पक्षे शरत्संभवे ।
वारे भास्वति सिद्धनामनि तथा योगे सुपूर्णातिथौ
नक्षत्रेश्विनिनाम्नि धर्मरसिको ग्रंथश्च पूर्णीकृत ॥ २१६
श्रीमूलसंघे वरपुष्कराख्ये गच्छे सुजातो गुणभद्रसूरिः ।
तस्यात्र पट्टे मुनिसोमसेनो भट्टारकोभूद्विदुषां वरेण्य. ॥ २१२
धर्मार्थकामाय कृतं सुशास्त्रं श्रीसोमसेनेन शिवार्थिनापि ।
गृहस्थधर्मेषु सदा रता ये कुर्वंतु तेभ्यासमहो सुभव्या ॥ २१३

[जैनेन्द्र प्रेस, कोल्हापुर १९१०]

लेखांक ४२ – पार्श्वनाथ मूर्ति

शके १५६१ वर्षे प्रमाथीनामसंवत्सरे फाल्गुण सुदी द्वितीया मूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे भ. श्रीसोमसेन उपदेशात् प्रतिष्ठितं ॥

[सैतवाल मन्दिर, नागपुर]

लेखांक ४३ – संभवनाथ मूर्ति

शक १५६१ प्रमाथीसंवत्सरे फाल्गुन शुद्ध ५ भ श्रीसोमसेनेन प्रतिष्ठापितं ॥

(कारंजा, भा. १३ पृ १२८)

लेखांक ४४ – रविव्रत कथा

पुष्करगछे अभिनव रग ॥ ७२
गुणभद्र पटे पामे जय संघ सोमसेन गुरु दान दाता ।
तत्शिष्य अभयपंडित चंग करी कथा मनतनी रंग ॥ ७३

[ना. ५५]

लेखांक ४५ – पार्श्वनाथ मूर्ति　　जिनसेन

शके १५७७ क्रोधनामसंवत्सरे मार्गशिर्ष सुदी १० बुधे मूलसंघे पुष्करगच्छे सेनगणे भ. सोमसेनदेवा तत्पट्टे भ श्रीजिनसेनगुरूपदेशात बघेरवाल ज्ञात सावला गोत्रे वीरासाह भार्या हिराई . ॥

[पा १]

लेखांक ४६ – पद्मावती मूर्ति

शके १५८० मूलसघे सेनगणे भ जिनसेनोपदेशात् कारजाग्रामे सा रतन.. ॥

(पा. ने जोहरापुरकर, नागपुर)

लेखांक ४७ – (समवशरणपीठिका–रत्नाकर)

शके १५८१ विकारीनामसवत्सरे फाल्गुण शुदि १३ दिने श्रीमूलसघे पुष्करगच्छे सेनगणे वृषभसेनान्वये भ. श्रीसोमसेन तत्पट्टे भ. श्रीजिनसेनोपदेशात् कारजाग्रामे सुपार्श्वनाथचैत्यालये चवर्या गोत्रे स. श्रीमाणिकभार्ये पदमाई अंबाई पुत्र मं श्रीमोयरा भा रूपाई एतैर्ज्ञानावर्णिकर्मक्षयार्थ लिखाप्य दत्त पुस्तक ॥

(ना ८०)

लेखांक ४८ – पार्श्वनाथ मूर्ति

सके १५८२ फालगुण शुद्ध ७ तिलक सेन भ श्रीजिनसेन बघेरवालज्ञातौ चवरिया गोत्रे सा.. ॥

(मा. म. महाजन, नागपुर)

लेखांक ५६ – पार्श्वनाथ पूजा

इन्याद्यगणिन अतिशय क्षेत्रं पार्श्वजिनं वंदे सुपवित्रं ।
पूज्य सेनगणे वरचित्रं छत्रसेनसततवरामित्रं ॥

(ना. ७८)

लेखांक ५७ – झूलना

महबूब शरीर सहरमे जी पातिसाहि बडा परब्रह्म है रे ।
पातिसा अंदर बैठि रहा अपने रस रंगमें खेलत रे ॥
मनराय बुलाय दीवान किया अखत्यार दिया सब तिसके रे ।
छत्रसेन जती बारबार कहे बडा सोर हुवा सब नगरमें रे ॥ १ ॥

(म. ७९)

लेखांक ५८ – अनंतनाथ स्तोत्र

भुवनविदितभाव देवदेवेंद्रवंद्य परमजिनमनंत स्तौति यो शुद्धभावैः ।
भवति सुभगसर्गी मुक्तिनाथश्च नित्य स्तवनमिदमनिंद्यं भाषितं छत्रसेनै ॥११

(कारंजा)

लेखांक ५९ – पद्मावती स्तोत्र

पुत्रोहं तव मात मामक परि कृत्वा कृपासंचिके
देयं वाछितवस्तु चिंतितफलं यत्प्रार्थनेयं मम ।
विघ्नानिष्टकरान् स्वपापजनितान् दुःखप्रदान् सतत
शीघ्र संहर संहर प्रियतमे श्रीछत्रसेनस्य वै ॥ १४

(उपर्युक्त)

लेखांक ६० – अनिरुद्ध छप्पय

कारंज रंजक नगरमें मूल जिनेश्वर देव ।
छत्रसेन गछपति कहे हीर करे तस सेव ॥ १
चतुर पंच मातंक वामगति गणिजो दक्षं ।

संवत एतु जाणि माघ असिताष्टमी वर्षं ॥
वृषणपुर सुभ नगर चोक माणिक तहा सोभे ।
मणिमाणिकमुक्तादि देखता जनमन थोभे ॥
कडतसाह वचणे कन्यो अनिरुद्ध हरण उदार ।
श्रीछत्रसेन पंडित कहे हीरा जगि जयकार ॥ ९९

(ना. १४)

लेखांक ६१ – छत्रसेन गुरु आरती

मूलसघाचे शृंगार पुष्कर गछ मनोहार ।
सुरस्थ गण विस्तार ऋषभसेनान्वय सार ॥ २
सेनसंघाचे आभूषण समंतभद्र जाण ।
तयाच्या पटी छत्रसेन वादीमदभंजन ॥ ३

(ना. ८७)

लेखांक ६२ –

श्रीमूलसंघमे गछ मनोहर सोभत हे जु अतिही रसाला ।
पुष्करगछ सुसेनगणाश्रित पूज रचे जिनकी गुणमाला ॥
समतजुभद्रके पट प्रगट भयो छत्रसेन सुवादि विसाला ।
अर्जुनसुत कहे भवि सु परवादीको मान मिटे ततकाला ॥

(ना. ८७)

लेखांक ६३ –

सेनगणेश गणेश महामुनि उज्ज्वल कीरति है अतिभारी ।
सुंदर रूप सुजान मनोहर संजम वीर धुरंधरकारी ॥
काव्य पुराण महाशुभ भासित आगम ग्रंथ कथे सुविचारी ।
छत्रयति छत्रसेन विराजित दास विहारी कहे गुणधारी ॥१२

(म. ११९)

लेखांक ४९ – १ मूर्ति

शके १६०७ क्रोधनामसंवत्सरे सुदि १० बुधे पुष्करगच्छे सेनगणे वृषभसेनान्वये भ सोमसेनदेवाः तत्पट्टे भ. जिनसेनगुरूपदेशात् जालीग्रामे धाकडज्ञातीय कन्हा नित्य प्रणमति ॥ (कोंडाळी, अ. ४ पृ. ५०५)

लेखांक ५० –

नगर अचलपुरमांहि जैन सासन गछनायक ।
कीयो चउमास आइ कहत सिद्धांत सुलायक ॥
रुसी सरप पग डस्यो खस्यो विष सर्व सरीरह ।
ध्यान धरी मुनिराइ पढ्यो पुनि विषापहारह ॥
निर्विष तन छिनमें भयो सकल विघ्न दूरे कर्‍यो ।
भट्टारक जिनसेनको प्रताप भारी धर्‍यो ॥ १ ॥
श्रावकके घर जाइ भावरी भोजन कीन्हो ।
शाक परोस वचनाग नाग धोके बहु लीनो ॥
ज्याण्यो जब सर्वांग सावधानी मन आनी ।
विषापहार सुचिंति चित्त नहि चिंता मानी ॥
वमन करी विष टालियो सहियो परिसह जोर ।
भट्टारक जिनसेनकी कीरति भइ बहु ठौर ॥ २ ॥
रायमलसा पुत्र वस हुंवड वडमडन ।
राना देस विख्यात नगर सावलि सुभ स्तंभन ॥
पद्मनदि गुरु राय पाय सेवे बालापन ।
चौदह विद्यानिधान वहोतरी कलाभूषण ॥
कारंजे नगरे सुभग सोमसेन पट उद्धर्‍यो ।
जिनसेन नाम परगट भयो भट्टारक जग उद्धर्‍यो ॥ ३ ॥
संघप्रतिष्ठा पाच धर्म उपदेस सु कारी ।
श्रीगिरनारि समेदशिखर तीरथ कियो भारी ॥
सघपति सोयरासाह निंबासा माधवसंगवी ।
गनबा सगवी रामटेकमा कान्हा सगवी ॥
जिनसेन नाम गुरुरायणे सघतिलक एते दिय ।
माणिक्यस्वामी यात्रा सफल धर्म काम बहु बहु किय ॥ ४ ॥

(ना. ६३)

लेखांक ५१ –

मूलसघ कुळतिलक गछ पुष्करमे सोहे ।
चारित्र गणमे मुख्य सेनगण महिमा मोहे ॥
भट्टारक जिनसेन गुरु मोरपींछ हस्ते धरे ।
पूरनमल यों कहे भव्यलोक तारण तरण ॥

(ना ६३)

लेखांक ५२ – पार्श्वनाथ मूर्ति छत्रसेन

संवत १७५४ मूलमघे सेनगणे पुष्करगच्छे भ छत्रसेनोपदेशात् प्रतिष्ठितं ॥

(केळीबाग मन्दिर नागपुर)

लेखांक ५३ – द्रौपदीहरण

उत्तम देश वराड मझारमे कारज रजक है पुर नीको ।
सत्य सुपारसदेव महा मूलनायक मूलसुसंघ सजीको ॥
सेनगणाश्रीत पुष्करगच्छ प्रधान सदा अति ग्राह गुणीको ।
श्रीछत्रसेन रचै कवि चौपद द्रौपदीहरण चरित्र सुलीको ॥ २६

(ना. ६१)

लेखांक ५४ – समवशरणपट्पदी

कारजा शुभ नगरमे श्रीपार्श्वनाथ चैत्यालये ।
छत्रसेन गछपति कहे खैरासा वचने किये ॥ ५१

(ना ८७)

लेखांक ५५ – मेरुपूजा

इति त्रिभुवनसस्थ श्रीजिनबिंब योर्चति पुण्यभृताजलिकै ।
सो ना जगतीष्टं लभति विशिष्ट छत्रसेनमुनिना कथित ॥

(म. १०)

लेखांक ६४ – ज्ञानयंत्र　　　　नरेंद्रसेन

शके १६५२ साधारण संवत्सरे भ. श्रीनरेंद्रसेनाज्ञया गोपालजी गंगरडा सेनगणे पुष्करगच्छे आश्विनमासे ॥

(कळमेश्वर, जिल्हा नागपुर)

लेखांक ६५ – (यशोधरचरित–पुष्पदंत)

शके १६५६ मिति आसोज वदि मंगलात्रयोदश्यां बुधवासरे श्रीमूलसंघे सूरस्थगणे पुष्करगच्छे ऋषभसेनगणधरान्वये पारंपर्यागते भ. श्री १०८ सोमसेन तत्पट्टे भ जिनसेन तत्पट्टे भ. समंतभद्र तत्पट्टे भ श्री १०८ छत्रसेन तत्पट्टोदयाद्रिवर्तमान भ. नरेंद्रसेनैर्लिखितोयं जसोधरचरित्रं श्रीसूरतबंदरे आदिनाथचैत्यालये । संवत १७९० ॥

(म. प्रा. पृ. ७४७)

लेखांक ६६ – नरेंद्रसेन गुरु पूजा

श्रीमज्जैनमते पुरंदरनुते श्रीमूलसंघे वरे ।
श्रीशूरस्थगणे प्रतापसहिते सद्भूपवृंदस्तुते ॥
गच्छे पुष्करनामके समभवत् श्रीसोमसेनो गुरुः ।
तत्पट्टे जिनसेनसन्मतिरभूत् धर्मामृतादेशकः ॥ १
तज्जोभूद्धि समंतभद्रगुणवत् शास्त्रार्थपारंगत ।
तत्पट्टोदयतर्कशास्त्रकुशलो ध्यानप्रमोदान्वित ॥
सद्विद्यामृतवर्षणैकजलद. श्रीछत्रसेनो गुरु ।
तत्पट्टे हि नरेंद्रसेनचरणौ सपूजयेह मुदा ॥ २

(ना. ८७)

लेखांक ६७ – पार्श्वनाथ पूजा

नगर कारंजा सेनगणेसी श्रीमूलसंघ जयो गुणदेसी ।
मंगलपूरण ज्ञान सुभारी भविजनको बहु संपतिकारी ॥

अमरावलि पूजे सदा जिनवरके पद जाम ।
नरेंद्रसेन इम स्तुति करे हम हिरदे तुम नाम ॥

(ना ७८)

लेखांक ६८ – वृषभनाथ पाळणा

गछपति मुनियों कहे मनुजेंद्रसुसेन ।
आवागमन निवारियो कर्मक्षय करि दीन ॥ १९

(म. १२१)

लेखांक ६९ – कैलास छप्पय–सोयरा

तस पट्टे सुखकार नाम भट्टारक जानो ।
नरेंद्रसेन पट्टधार तेजे मार्तंड वखानो ॥
जीती वाद पवित्र नगर चपापुरमाहे ।
करियो जिनप्रासाद ध्वजा गगने जइ सोहै ॥ २६
देवलगाव पवित्र तिहा जिनमदिर सोहे ।
चंद्रनाथनी मूर्ति देखि सुर नर मन मोहे ॥
सोलहसंतित्तर अष्टापद वर्णन कियो ।
अर्जुनसुत इम उचरे सुगंधदशमी पुरो थयो ॥ २७

(ना. १४)

लेखांक ७० – चंद्रप्रभ मूर्ति　　शांतिसेन

शके १६७३ फाल्गुण वदी १२ रविवारे सेनगणे वृषभसेनगणधरान्वये भ. शांतिसेनोपदेशात् कारंजा महानगरे प्रतिष्ठापित ॥

(कारंजा, भा १३ पृ.१२८)

लेखांक ७१ – षोडशकारण यंत्र

शके १६७५ वर्षे भाद्रपद मासे सीन १२ मूलसंघे पुष्करगच्छे सेन-

गणे भ. श्रीशांतिसेनोपदेशतः का. व. चितामण ॥

(ना. ६१)

लेखांक ७२ – पार्श्वनाथ मूर्ति

शक १६७८ माघ सुद १४ मूलसंघे भ. शांतिसेनोपदेशात् प्रतिष्ठितं कारंजा ग्रामवास्तव्येन नेवाज्ञाति फु गोत्र पु चितामणसा नित्यं प्रणमंति ॥

(पा. ५०)

लेखांक ७३ – [हरिवंश रास]

संवत १८१६ परमाथी नाम संवत्सरे श्रीदेवलग्राम श्रीचंद्रप्रभ-चैत्यालये श्री भ. श्रीनरेंद्रसेन तत्पट्टे श्रीशातिसेनजी भ. सार्थकनामधेय तस्य शिष्य श्री अर्जका श्री शिखरश्रीजी तस्य शिष्य पंडित वानाशिंदासजी स्वहस्ते लिख्यतं पठनार्थ श्रीरस्तु ॥

(ना. २०)

लेखांक ७४ – शांतिनाथ विनंति

झारखंड एसो हर देस तस मध्य ए नगरी विसेस ।
अमरपुरी सम सोभे ठाम रामटेक दिसे अभिराम ॥ २
हमा सुत सितलसा नाम खटवड गोत धरमको धाम ।
सकल स्वन्यात कुटुंब सहित यात्रा करि मनमा धरि प्रीत ॥ १४
मूलसंघ पुष्करगछ धनी शातिसेन विद्यागुणमनी ।
तत सेवक नित चरने रहे गोमासा सुत रतन कहे ॥ १६
सके मोलसेन उसार चइत्र कृष्ण नवमी रविवार ।
ए विनती जे भणे नरनार तेह घर मंगल जयजयकार ॥ १७

(ना. ६३)

लेखांक ७५ –

तानु कहे शांतिसेन गछपति संघ चतुर्विध सोभत पासे ॥ २
पाट नरेंद्रसुमेनके राजन दर्शनथी सुखसंपति पावे ॥ ३

मूलकि वेदरीके जिनमंदिर वदतही मन हर्ख न माये ।
सागरस्नान करायो महामुनि पुण्यप्रताप भले जु तहाये ॥ ५
...फटान सेठिको नंदन धन्य सु मात चदावाई कूख विराजे ॥ ६

(म. १२३)

लेखांक ७६ – विरुदावली

अनेकदेशाधिपतिपारसेकेश्वरसभारंजितविद्वज्जनसेवितचरणारविंद-श्रीगुणभद्र-वीरसेन-श्रुतवीर-माणिकसेन-गुणसेन-लक्ष्मीसेनभट्टारकाणाम् ॥ निखिलतार्किकशिरोमणि -श्रीसोमसेन-माणिक्यसेन-गुणभद्र-अभिनवसोम-सेनभट्टारकाणाम् ॥ तत्पट्टे निखिलजनरंजनगुणात्मविद्यानिधिश्रीजिनसेन-भट्टारकाणाम् ॥ तदन्वये श्रीसमतभद्रभट्टारकाणाम् ॥ तद्वंशे श्रीछत्रसेनभट्टारकाणाम् ॥ तत्पट्टे श्रीमन्नरेंद्रसेनभट्टारकाणाम ॥ स्वस्तिश्रीमद्रायराजगुरु-श्रीमदभिनवशातिसेनतपोराज्याभ्युदयसमृद्धयर्थं ॥

(प. ८)

लेखांक ७७ – १ मूर्ति सिद्धसेन

सवत १८२६ (शाके १६९८) वैसाख वदि ११ सेनगणे श्रीसिद्ध-सेनगुरूपदेशात ॥

(आर्वी अ ४ पृ. ५०५)

लेखांक ७८ – सिद्धसेन गुरु आरती

श्रीमूळसघाचे मडन सकळकळापरिपूर्ण ।
पुष्करगच्छाचे निधान गुरुगौतमसम जाण ॥ २
शातिसेनजींचे कर सिरी करवीर कोलापुरी ।
तेथुन चालले निरधारी कार्यरंजकपुरी ॥ ३
सेनगणाचे पटधारी सर्वांसी अधिकारी ।
श्रीसिद्धसेन गुरु सुखकारी तत्त्वातत्त्व विचारी ॥ ४
समत अठरासे सवीस वैशाख कृष्ण पक्ष ।
द्वादशि तिथीस चरणासी रतनचा लय लक्ष ॥१०

(ना १२६)

लेखांक ७९ – पार्श्वनाथ मूर्ति

शके १६९२ श्रीसिद्धसेनगुरूपदेशात् वैशाख वदि १२ सेनगण ॥

(कारंजा, भा. १४ पृ. २८)

लेखांक ८० – मुनिसुव्रत मूर्ति

संवत १८४६ कार्तिक सुद १४ मूलसंघे सेनगणे पुष्करगच्छे भ. शांतिसेनजी तत्पट्टे भ. सिद्धसेनजी प्रतिष्ठित मा भिकासा जोहरापुरकर प्रणमितं ॥

(ना. ६२)

लेखांक ८१ – उपदेशरत्नमाळा

. शुभचंद्र भट्टारक थोरी ॥ ४४
तत्पट्टधारी दिव्यमूर्ति । नाम असे सुमतिकीर्ति ॥ ४५
तद्गुरुभ्रात सकलभूषण । उपदेशरत्नमालाभिधान ॥
संस्कृत केले असे पुराण । ते ज्ञानिया कारण सुगम असे ॥ ४६
या पंचमकालामाजि मती । उत्तरोत्तरहीन होती ॥ ४८
या संस्कृताचे नाव्हि जाति वाटे । म्हणोनिया श्लोक करी मऱ्हाटे ॥ ४९
अमरावती पुण्यनगरी । श्रीआदिनाथ जिनमंदिरी ॥
ग्रंथ आरंभिला थोरी । साह्यकारी असे शारदा ॥ ६३
समत अठरासे एकोन्याहत्तर । श्रीमुखनामे संवत्सर ॥
चैत्र शुद्ध नवमी शुक्रवार । पावला ग्रंथ सार पूर्णता ॥ ६४

इति श्रीभट्टारक श्रीसिद्धसेन प्रियसिष्याचार्यरत्नकीर्तिरचित उपदेशरत्नमाळा ग्रंथे षट्कर्मधर्मनिरूपण नाम प्रसंग चाळिसावा ॥ ४० ॥

(ना. ९१)

लेखांक ८२ – सिद्धसेनगुरु पूजा–माधव

विद्वज्जनाभीष्टतमप्रमेय गुणाकर सर्वजनैकवंद्यं ।
श्रीशांतिसेनस्य पदाधिसेव श्रीसिद्धसेनाख्यगुरु यजेहं ॥

(ना. ६१)

लेखांक ८३ – सिद्धसेन स्तुति

महानगर कारंजकपूर मनोहर विश्राती ।
भट्टारक श्रीसिद्धयती महत अधिपती ॥
सेनगणाम्नाये पट्टधारि जो परम गुरू निपुन ।
पुष्करगच्छ निवासे नामे पार्श्वनाथ जिन ॥
शांतिसेन पट्टांबुज महिवरि जाला उद्योत ।
षट्शास्त्रादिक पूर्ण मनोहर गुणस्थानी श्रुत ॥
मिळोनिया श्रीसंघ सदोदित जिनभुवना जाती ।
त्रिकाळ पूजा विधिविधान न्हवनासी करिती ॥
सहस्रकूट चैत्यालय माडन काढोनि रंगविती ।
ॐ ऱ्हीं बीजाक्षर हे दोन्ही अक्षर मध्ये वरती ॥
या दो वचने जे प्रियकर ते वदा कृपामूर्ती ।
कर जोडोनि म्हणे राघव करुणा असु द्यावी चित्ती ॥

(म. ९८)

लेखांक ८४ –

कामधेनुको ध्यान कामना पूर्णज कहि है ।
ऐसे श्रीसिद्धसेन सेनगण गच्छपति है ॥
पुष्कर सागर नगर कारंजा खासा ।
अर्जुनसा हीरेका पारखी साच कहे येमासा ॥

(ना. ६३)

लेखांक ८५ – चरणपादुका लक्ष्मीसेन

म. १८९९ का वर्षे मित्ति चैत्र सुदि १० सौम्यवासरे गौतमस्वामी गणधरजीकी चरणपादुका स्थापिता नागपुरमध्ये कारंजा पट्टाधीश भ. श्रीलक्ष्मीसेनजी प्रतिष्ठापिता सेनगणे ॥

(ना. ६२)

सेनगण

सेनगण भट्टारक–परपरा के दो प्राचीनतम रूपोमे से एक है[1]। इस का सर्व प्रथम स्पष्ट उल्लेख उत्तरपुराण की प्रशस्ति मे पाया जाता है [लेखाक ८]। इस प्रशस्ति के साथ पूर्ववर्ती साधनो की तुलना करने से स्पष्ट होता है कि सेन गण का पूर्वरूप पचस्तूपान्वय था [ले. १]। कुछ उत्तर कालीन लेखो मे सूरस्थ या शूरस्थ गण ऐसा इस का नामान्तर मिलता है [ले. ६१, ६५]। यदि शूरस्थ का अर्थ शूरसेन देश अर्थात् मथुरा के पास से निकला हुआ लिया जाय तो मथुरा के पाच स्तूपो के आधार पर पचस्तूपान्वय नाम से इस का सामजस्य हो सकता है। किन्तु सूरस्थ गण के प्राचीन उल्लेखो से वह एक पृथक् ही गण मालूम होता है [ले. १०, १५] जिस का सबध सभवत सौराष्ट्र से है [ले १३]।

प्राचीन लेखो मे सेन गण के साथ पोगरि गच्छ का उल्लेख आता है [ले. ११, १२]। उत्तर कालीन लेखो मे इस का स्थान पुष्कर गच्छ ने लिया है [ले. २१, २४, ३२ आदि]। ये दोनो नाम एक ही नाम के दो रूप है। पुष्कर शुद्ध सस्कृत रूप है, और पोगरि कनडी रूप है। आध्र प्रदेश मे पोगिरि नामक स्थान है किन्तु उस के पुरातत्त्व का सशोधन नही हुआ है। राजस्थान के पुष्कर सरोवर का लोकभाषा मे पोखर ऐसा रूपातर हुआ है। इन दोनो मे मूल रूप कौन सा है यह अनुसधान की अपेक्षा रखता है।

सेनगण के साथ जुडा हुआ एक विशेषण ऋषभसेनान्वय है [ले. २१, २४, ३२ आदि] जो स्पष्टत कुदकुदाचार्यान्वय का अनुकरण मात्र है। इतिहास से ज्ञातकालमे ऋषभसेन नाम के कोई प्रसिद्ध आचार्य सेनगण मे नही हुए है।

इस परपरा का पहला उल्लेख आचार्य वीरसेन विरचित धवला टीका

---

१ दूसरा प्राचीन रूप पुन्नाट सघ है।

की प्रशस्ति में आता है [ले. १]। आचार्य धरसेन से उपदेश पाकर आचार्य पुष्पदन्त और भूतबलिने दूसरी सदीमे महाकर्मप्रकृतिप्राभृत अथवा षट्खडागम की रचना की थी। इस पर कुदकुद, समतभद्र, तुम्बुलूर, शामकुण्ड, वप्पदेव आदि आचार्योंने व्याख्याए लिखी थीं। चित्रकूट पुर के आचार्य एलाचार्यसे इस सिद्धान्तशास्त्र का अध्ययन कर के तथा अनेक सूत्र पुस्तको का अवलोकन कर के उस के पहले पाच खडों पर आचार्य वीरसेन ने सस्कृत तथा प्राकृत की मिश्र शैली मे विशाल टीका लिखी तथा उपरितम निबधन आदि प्रकरणो का एक छठा खण्ड उसे जोड दिया। इस पूरे ग्रथ का विस्तार ७२ सहस्र श्लोकों जितना हुआ। आचार्य वीरसेन के प्रगुरु आचार्य चद्रसेन थे और गुरु आर्य आर्यनन्दि थे। उन के इस ग्रथ की समाप्ति शक ७३८ की कार्तिक शुक्ल १३ को हुई जब महाराज बोद्दणराय सम्राट थे[२]।

आचार्य वीरसेन के बाद सभवत: आचार्य पद्मनदि पट्टाधीश हुए थे [ले. ५]। इन का कोई दूसरा उल्लेख नही मिलता।

वीरसेन के ज्येष्ठ शिष्य विनयसेन थे [ले ४]। किन्तु उन के प्रमुख शिष्य जिनसेन थे। आप की तीन कृतिया उपलब्ध है। आचार्य गुणधर ने दूसरी सदी मे लिखे हुए कसायपाहुड ग्रंथ पर आचार्य वीरसेन ने टीका लिखना आरभ किया था जिसे वे पूरी नही कर सके। जिनसेन ने शक ७५९ की फाल्गुन शुक्ल १० को नदीश्वर महोत्सव मे वाटग्राम मे रहते हुए सम्राट अमोघवर्ष के राजत्व काल मे उसे समाप्त किया और आचार्य श्रीपाल द्वारा उस का सपादन कराया [ले २]। इस की संज्ञा जयधवला है।

२ प्रशस्ति का पाठ अशुद्ध है जिस का सपादक डॉ. जैन द्वारा किया गया रूपान्तर यहा दिया है। आप के अनुसार उस समय राष्ट्रकूट सम्राट जगत्तुग का साम्राज्य काल पूरा हो कर सम्राट अमोघवर्ष ने हाल ही राज्य भार ग्रहण किया था तथा बोद्दणराय अमोघवर्ष का ही नामान्तर था। बाबू ज्योतिप्रसाद जैन ने प्रशस्ति का दूसरा अर्थ प्रस्तुत करते हुए उस का समाप्ति काल सवत ८३८ माना है तथा उस समय जगत्तुग गोविन्द सम्राट थे ऐसा सूचित किया है (अनेकान्त ८ पृ ९७)।

आ. जिनसेन की दूसरी महत्त्वपूर्ण कृति आदिपुराण है जो महापुराण का पूर्वार्ध है। भगवान् ऋषभदेव और चक्रवर्ती भरत के इस पुराण के ४३ पर्व लिखने के बाद आप का स्वर्गवास हुआ था। इस पुराण के तीसरे पर्व मे आप ने उस के उपदेश की परपरा का विस्तार से वर्णन किया है जिस से प्रतीत होता है कि आप की रचना का मुख्य आधार कवि परमेश्वर रचित वागर्थसग्रह पुराण रहा था [ले. ३]। आदिपुराण बहुत महत्त्वपूर्ण ग्रथ है। पुराण, काव्य, धर्मशास्त्र, योगशास्त्र आदि का इस मे सुदर समन्वय मिलता है। समकालीन समाजजीवनका नेतृत्व करने की क्षमता उस मे पद पद पर व्यक्त हुई है।[3]

कालिदास विरचित मेघदूत के चरणो की समस्यापूर्ति कर के भगवान् पार्श्वनाथ की केवलज्ञान प्राप्ति का वर्णन करनेवाला पार्श्वाभ्युदय काव्य आ. जिनसेनने गुरुबधु विनयसेन की प्रेरणा से लिखा। तब अमोघवर्ष सम्राट थे [ले ४]।

आ. जिनसेन की अधूरी कृति महापुराण उन के शिष्य गुणभद्र ने पूरी की [ले ७]। आदिपुराण के ५ और उत्तरपुराण के ३० पर्व इतना उन की रचना का विस्तार है। आत्मानुशासन यह आप की दूसरी रचना है जो वैराग्यपर सुभाषितो का अच्छा सग्रह है [ले ६]।[4] देवसेन कृत दर्शनसार के अनुसार आप महातपस्वी, पक्षोपवासी और भावलिगी मुनि थे [ले. ५]। उत्तर पुराण की प्रशस्ति मे आप के गुरु के रूप मे जिनसेन और दशरथगुरु का स्मरण किया गया है [ले. ८]।

आचार्य गुणभद्र के शिष्य लोकसेन थे। उत्तर पुराण की प्रशस्ति सभवत आप की ही रची हुई है। यह प्रशस्ति शक ८२० के आश्विन

---

३ आ. वीरसेन, जिनसेन और गुणभद्र का विस्तृत परिचय प नाथूरामजी प्रेमी द्वारा दिया गया है (जैन साहित्य और इतिहास)।

४ गुणभद्र की एक और रचना जिनदत्तचरित्र, जो ९ सर्गो का सस्कृत काव्य है, प्रकाशित हो चुकी है (मा दि जै ग्रथमाला ७, बम्बई १९१६)।

शुक्ल ५ को अकालवर्ष के सामन्त लोकादित्य की राजधानी बंकापुर में लिखी गई थी [ले. ८]। इस के अनुसार उत्तर पुराण की रचना में लोकसेन का भी साहाय्य मिला था।

लोकसेन के बाद सेनसंघ का उल्लेख शक ८२४ के एक दान शासन में हुआ है [ले. ९]। यह दान श्रीकृष्ण वल्लभ के सामन्त विनयाबुधि के प्रदेश धवल में मुळगुंद नगर के जिनमंदिर के लिए अरसार्य ने दिया था। यह मंदिर उस के पिता चिकार्य ने बनाया था। दान कुमारसेन के प्रशिष्य तथा वीरसेन के शिष्य कनकसेन को दिया गया था।

सूरस्थ गण के वज्रपाणि पंडितदेव को पोयसळ वंशीय विनयादित्य के राजत्व काल में शक ९.२४ की चैत्र शुक्ल १० को कुछ दान दिया गया था वह इस परंपरा का अगला उल्लेख है [ले. १०]।

इस के अनंतर ब्रह्मसेन के प्रशिष्य तथा आर्यसेन के शिष्य महासेन का उल्लेख मिलता है। इन्हे कोम्मराज के पुत्र चाकिराज ने पोन्नवाड नगर में स्वनिर्मित शांतिनाथमंदिर के लिए चालुक्य वंशीय त्रैलोक्यमल्ल महाराज की सम्राज्ञी केतलदेवी से विज्ञप्ति कर के शक ९७६ की वैशाख अमावास्या को सूर्यग्रहण के निमित्त कुछ दान दिया [ले. ११]।

इन के अनंतर चालुक्य वंशीय राजा त्रिभुवनमल्ल के समय संवत् ११२४ की पौष शुक्ल ७ को उत्तरायण संक्राति के दिन चालुक्य-गंग-पेर्मानडि जिनालय के लिए राजधानी बळ्ळिगावे में सेनगण के रामसेन पंडितदेव को कुछ दान दिया गया [ले. १२]। इसी लेख में किन्ही गुणभद्रदेव की मूर्ति का उल्लेख है।

सुराष्ट गण के रामचंद्रदेव की शिष्या अरसब्बे का उल्लेख शक १०१७ की भाद्रपद शुक्ल ७ के एक लेख में किया है [ले १३]।

सेन गण के चंद्रप्रभ सिद्धान्तदेव के शिष्य माधवसेन भट्टारक को संवत् ११८१ की माघ शुद्ध ५ को कुछ दान दिया गया था [ले १४]।

सूरस्थ गण के पल्लपडित का उल्लेख शक १०४६ के एक लेख मे हुआ है जिस मे उन्हे पाल्यकीर्ति[५] के समान प्रसिद्ध कहा है [ले. १५]। इन की गुरुपरपरा अनतवीर्य–बालचंद्र–प्रभाचद्र–कल्नेलेदेव–अष्टोपवासी–हेमनदि–विनयनदि–एकवीर ऐसी है। पल्लपंडित एकवीर के गुरुबधु थे।

मुनिसेन के शिष्य श्रीधरसेन ने सस्कृत शब्दो का एक कोष लिखा है जिस का नाम मुक्तावली या विश्वलोचन कोष है [ले १६]। इस कोश की विशेषता यह है कि इस मे अकारान्त क्रम से शब्दो की रचना की गई है। श्रीधरसेन का समय सभवत. १४ वीं सदी है।

सेन गण की पट्टावली[७] मे उल्लिखित आचार्यों मे सोमसेन से कुछ ऐतिहासिक स्वरूप दिखाई देता है[८]। सोमसेन का वर्णन कर्णाटकराज द्वारा पूजित ऐसा किया गया है [ले. १७]।

इन के बाद श्रुतवीर का उल्लेख है [ले. १८]। आप अलकेश्वरपुर से भडौच गये थे जहा आप ने महमदशाह की सभा मे समस्यापूर्ति की थी। इस के कारण सारे लोगों की नजर लग जाने से सिर्फ अठारह साल की आयु मे ही आप स्वर्गस्थ हो गये।[९]

---

५ शाकटायण व्याकरण, स्त्रीमुक्तिकेवलिभुक्ति प्रकरण आदि के कर्ता जो ९ वीं सदी मे हुए थे।

६ इन के समय तथा मेदिनी और हेमचद्र के प्रभाव के लिए देखिए जैन सि. भा. वर्ष पृ. ९ मे श्री गोडे का लेख।

७ इस की प्रकाशित प्रति के लिए देखिए जैन सि. भा. वर्ष १ पृ. ३८। यहॉ उपयुक्त प्रति कुछ भिन्न और अधिक अच्छी मालूम होने से उसी का उपयोग किया गया है।

८ पहले जिन का उल्लेख आ चुका है उन के अतिरिक्त पट्टावली मे इस के पहले लक्ष्मीसेन, रविषेण, रामसेन, कनकसेन, बधुषेण, विष्णुसेन, मल्लिषेण, शिवायन, महावीर, भावसेन, अरिष्टनेमि, अर्हद्वलि, अजितसेन, गुणसेन, सिद्धसेन, समन्तभद्र, शिवकोटि, नेमिसेन, छत्रसेन, लोहसेन, सूरसेन, कमलभद्र, देवेंद्रसेन, दुर्लभसेन, श्रीषेण और लक्ष्मीसेन इन का वर्णन किया गया है।

९ अलकेश्वर शायद अकलेसर का रूपान्तर है जो गुजरात मे है। उल्लिखित

इन के अनंतर धारसेन का उल्लेख है [ले. १९]। इन का भमेरी के धनेश्वर भट्ट के साथ कुछ विवाद हुआ था।[१०]

इन के बाद देवसेन का उल्लेख है। इन के एक शिष्य ने समयसार की एक प्रति लिखि थी[११]। इस का लेखन स्थान खानदेश जिले का वरणगाव था [ले. २०]।

इन के पट्ट पर सोमसेन अधिष्टित हुए [ले. २१; २२]। विदर्भ स्थित कारंजा शहर मे इन के शिष्य बघेरवाल ज्ञातीय साह पूनाजी खटोड रहते थे। आप ने १०८ मंदिर बनवाये थे और १८ स्थानो पर शास्त्र भांडार स्थापित किये थे। चित्तौड किले पर चद्रप्रभमंदिर के सामने आप ने एक कीर्तिस्तम्भ स्थापित किया था।[१२] आप का यह वृत्तान्त जिस लेख से मिलता है उस मे संवत १५४१ और शक १४९१ के अक हैं जो गलत हैं क्यों कि इन दोनो मे उक्त क्रोधित सवत्सर नही आता है। यह विषय अनुसधान की अपेक्षा रखता है।

इन के पट्ट पर गुणभद्र विराजमान हुए [ले. २३, २४]। आप ने सवत् १५७९ मे एक जलयत्र प्रतिष्ठापित किया था।

आप के बाद क्रमश वीरसेन और युक्तवीर पट्ट पर आए। वीरसेन ने कर्णाटक मे उपदेश दिया था[१३] [ले. २५, २६]।

शासक संभवत. सुलतान महमदशाह बेगडा है जिसका राज्य काल सन १४५८–१५११ ईसवी है।

१० यह गाव विदर्भ के अकोला जिले मे है।

११ यह प्रति सवत १५१० की लिखी है। उस के ८० वें पृष्ठ पर यह लेख है। इस की पूरी प्रशस्ति के लिए (ले. ५६५) देखिए।

१२ इस के विषय मे मतान्तरों की चर्चा के लिए अनेकान्त वर्ष ८ पृ. १४२ में मुनि कान्तिसागर का लेख देखिए।

१३ सभवत. इन्ही का उल्लेख भ. सोमकीर्ति के एक लेख में हुआ है (ले. ६५१)। इनके एक और सम्भव उल्लेख के लिए देखिए नोट ८४।

युक्तवीर के पट्ट पर माणिकसेन प्रतिष्ठित हुए। इन ने शक १४२४ मे एक अरहत मूर्ति स्थापित की [ले २७, २८]।

इन के बाद क्रमशः गुणसेन और लक्ष्मीसेन पट्टाधीश हुए। गुणसेन का नामान्तर गुणभद्र था। लक्ष्मीसेन ने एक नंदीश्वर मूर्ति और एक अनंत यंत्र प्रतिष्ठापित किया किन्तु इन दोनो पर सवत् का निर्देश ठीक नहीं है [ले. २९–३३]। सोमविजय ने आप की स्तुति की है।

आप के बाद सोमसेन पट्टाधीश हुए। कृष्णपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र इन्ही की रचना है[१४]। इन ने सवत १५९७ मे कोई मूर्ति प्रतिष्ठापित की (ले. ३४–३६)।

इन के बाद क्रमश माणिक्यसेन और गुणभद्र भट्टारक हुए (ले. ३७–३८)।

गुणभद्र के शिष्य सोमसेन दीर्घकाल तक पट्टाधीश रहे। इन ने सवत १६५६ के श्रावणमे रविषेण कृत पद्मचरित के आधार पर सस्कृत मे रामपुराण की रचना की (ले ३९)। शब्दरत्नप्रदीप नामक संस्कृत कोश की सवत् १६६६ मे उदयपुर मे लिखी गई एक प्रति पर आप का नाम अकित है (ले. ४०)। धर्मरसिक त्रैवर्णिकाचार नामक संस्कृत ग्रथ आप ने सवत १६६७ की कार्तिक पौर्णिमा को पूरा किया (ले. ४१)। शक १५६१ की फाल्गुन शुक्ल ५ को आप ने पार्श्वनाथ और सभवनाथ की मूर्तिया प्रतिष्ठापित की (ले. ४२, ४३)। आप के शिष्य अभय पडित ने रविव्रत कथा लिखी है (ले ४४)।

सोमसेन के पट्ट पर जिनसेन आसीन हुए। आप ने शक १५७७ की मार्गशीर्ष शुक्ल १० को पार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित की (ले. ४५)। शक १५८० मे आप ने पद्मावती की मूर्ति प्रतिष्ठित की (ले. ४६)। यह

---

१४ अगले लेख को देखते हुए कृष्णपुर कालवाडा का सस्कृत रूप प्रतीत होता है। यह सूरत जिले मे है।

प्रतिष्ठा कारजा मे हुई थी। शक १५८१ की फाल्गुन शुक्ल १३ को चवर्या माणिक ने रत्नाकर विरचित समवशरण पाठ की एक प्रति आप को अर्पण की (ले. ४७)। शक १५८२ की फाल्गुन शुक्ल ७ को आपने एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की (ले ४८)। इसी प्रकार शक १६०७ मे जाली ग्राम मे आप ने एक मूर्ति प्रतिष्ठित की (ले ४९.)। अचलपुर मे आप को एक वार सर्पदश हुआ और दूसरी वार धोखे से भोजन मे वचनाग की बाधा हुई किन्तु दोनो वार विषापहार स्तोत्र के पठन से ही आप नीरोग हो गये। आप हूंबड जाति के रायमल साह के पुत्र थे। आप की जन्मभूमि खंभात थी। आप का विद्याभ्यास पद्मनदिजी[१५] के पास और पट्टाभिषेक कारजा मे हुआ था। आप ने गिरनार, सम्मेद शिखर, माणिक्यस्वामी आदि यात्राए की। आप के द्वारा सोयरासाह, निवासाह, माधवसाह, गनबासाह और कान्हासाह इन पाच व्यक्तियों को सघपति पद प्राप्त हुआ। अतिम समारोह रामटेक मे हुआ था (ले ५०)। पूरनमल ने आप की स्तुति की है (ले. ५१) और आप की मयूरपिच्छी का उल्लेख किया है।

जिनसेन के उत्तराधिकारी समन्तभद्र हुए। इन का कोई उल्लेख नही मिला है। इन के बाद छत्रसेन भट्टारक हुए। आप ने सवत १७५४ मे एक पार्श्वनाथमूर्ति स्थापित की (ले. ५२)। आप का निवास कारजा मे था (ले. ५३)। द्रौपदीहरण, समवशरण षट्पदी, मेरुपूजा, पार्श्वनाथपूजा, झूलना, अनतनाथ स्तोत्र और पद्मावती स्तोत्र ये कृतिया आप ने लिखीं (ले.५३-५९)। आप के शिष्य हीरा ने सवत् १७५४मे कडतसाह से प्रेरणा पाकर वृषणपुर[१६] मे अनिरुद्धहरण की रचना की (ले. ६०)। छत्रसेन की एक आरती भी उपलब्ध है (ले. ६१)। अर्जुनसुत और बिहारीदास ने आप की प्रशसा की है (ले ६२, ६३)।

---

१५ संभवत बलात्कार गण–ईडर शाखा के रामकीर्ति के पट्टशिष्य पद्मनदि ही यहा उल्लिखित है।

१६ यह सभवत. बुर्हानपुर का सस्कृत रूपातर है।

इन के अनतर नरेंद्रसेन पट्टाधीश हुए। आप ने शक १६५२ मे एक ज्ञानयंत्र प्रतिष्ठित किया [ले. ६४]। सूरत मे रहते हुए आप ने संवत् १७९० मे आश्विन कृष्ण १३ को यशोधरचरित की प्रति लिखी [ले. ६५]। आप की पूजा से आप की गुरुपरपरा की नामावली मिलती है [ले. ६६]। आप ने पार्श्वनाथ पूजा और वृषभनाथ पाळणा ये रचनाए लिखी [ले. ६७, ६८]। आप के शिष्य अर्जुनसुत सोयरा ने कैलास छप्पय लिखे[१७] जिन मे आप की चपापुर यात्रा का भी उल्लेख है। कैलास छप्पय की रचना देवलगाव मे हुई थी [ले. ६९]।

नरेन्द्रसेन के पट्ट पर शान्तिसेन प्रतिष्ठित हुए। आप ने कारजा मे शक १६७३ की फाल्गुन कृष्ण १२ को एक चद्रप्रभ मूर्ति स्थापित की (ले. ७०)। शक १६७५ की भाद्रपद शुक्ल १२ को आप ने एक षोडश कारण यंत्र प्रतिष्ठित किया (ले. ७१)। शक १६७८ की माघ शुक्ल १४ को पार्श्वनाथ की एक मूर्ति आप के द्वारा प्रतिष्ठित हुई (ले ७२)। आप की शिष्या शिखरश्री के शिष्य वानार्शिदास ने सवत् १८१६ मे देवलगाव मे हरिवंश रास की एक प्रति लिखी (ले ७३)। आप के शिष्य रतन ने रामटेक यात्रा के समय[१८] शान्तिनाथ की एक विनती बनाई थी (ले ७४)। आप के एक शिष्य तानू के कवित्तो से पता चलता है कि आप फूटानसेठ और चदाबाई के पुत्र थे तथा आप ने सागरस्नान किया और विदर के जिन मदिर के दर्शन किये थे (ले ७५)।

शान्तिसेन के बाद सिद्धसेन पट्टाधीश हुए। आप ने सवत् १८२६ की वैशाख कृष्ण ११ को कोई मूर्ति प्रतिष्ठित की (ले. ७७)।[१९] इस के दूसरे ही दिन साह रतन ने आप की एक आरती बनाई जिस मे कहा

१७ इन की रचना का शक प्रशस्ति मे दिया है। किन्तु उस का अर्थ स्पष्ट नही है।

१८ इस का शक निर्देश भी स्पष्ट नही है।

१९ इस का शक निर्देश गलत है।

गया है कि शान्तिसेन से आप की मुलाकात कोल्हापुर मे हुई और वहा से आप कारजा पधारे थे (ले. ७८)। इसी समय आप के द्वारा एक पार्श्वनाथ मूर्ति भी स्थापित हुई थी (ले. ७९)। सवत् १८४६ की कार्तिक शुक्ल १४ को आप ने एक मुनिसुव्रत मूर्ति स्थापित की (ले. ८०)। आप के प्रिय शिष्य रत्नकीर्ति ने सवत् १८६९ की चैत्र शुक्ल ९ को सकलभूषण कृत षट्कर्मोपदेश रत्नमाला ग्रन्थ का मराठी श्लोकबद्ध अनुवाद अमरावती मे पूरा किया (ले. ८१)। आप की एक पूजा माधव द्वारा और एक स्तुति राघव द्वारा बनाई गई है (ले. ८२–८३)। येमासाह ने आप की प्रशसा की है (ले. ८४)।

सिद्धसेन के पट्ट पर लक्ष्मीसेन अभिषिक्त हुए। आप ने सवत् १८९९ की चैत्र शुक्ल १० को नागपुर मे गौतम गणधर पादुकाओ की स्थापना की।[20]

---

२० स्थानिक अनुश्रुति से पता चलता है कि लक्ष्मीसेन का स्वर्गवास सवत् १९२२ मे हुआ। उन के कोई तेरह वर्ष बाद मुडबिद्री से आए हुए कुमार चंद्रय्या पट्टाभिषिक्त किये गये तथा आप का नूतन नाम वीरसेन रखा गया। आप की आयु उस समय २८ वर्ष थी। कोई ६० वर्ष तक पट्टाधीश रह कर आप ने कई मूर्ति प्रतिष्ठाए कीं। इन मे नागपुर, कलमेश्वर, कारजा, पिपरी, भातकुली आदि स्थानों की प्रतिष्ठाए विशेष महत्त्वपूर्ण रहीं। आचार्य कुदकुद कृत समयसार पर आप की बहुत श्रद्धा थी तथा उस विषय पर आप के प्रवचन बहुत अच्छे हुआ करते थे। आप का स्वर्गवास ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया सवत् १९९५ मे हुआ। आप की समाधि कारजा मे है।

(सेनगण—कालानुक्रम)

१ चन्द्रसेन

२ आर्यनन्दि

३ वीरसेन (संवत् ८७३)

४ विनयसेन ५ जिनसेन (संवत् ८९४)

६ गुणभद्र

७ लोकसेन (संवत् ९५४)

८ कुमारसेन

९ वीरसेन

१० कनकसेन (संवत् ९५८)

११ वज्रपाणि (संवत् १०५८)

१२ ब्रह्मसेन

१३ आर्यसेन

१४ महासेन (संवत् १११०)

१५ रामसेन (संवत् ११३४)

१६ रामचंद्र (संवत् ११५१)

१७ चंद्रप्रभ

१८ माधवसेन (संवत् ११८१)

१९ अनन्तवीर्य

२० बालचन्द्र
|
२१ प्रभाचन्द्र
|
२२ कल्नेले देव
|
२३ अष्टोपवासि देव
|
२४ हेमनन्दि
|
२५ विनयनन्दि
|
२६ एकवीर
२७ पल्ल पण्डित (संवत् ११८०)
____
२८ मुनिसेन
|
२९ श्रीधरसेन
____
३० सोमसेन
|
३१ श्रुतवीर
|
३२ वीरसेन
|
३३ देवसेन (संवत् १५१०)
|
३४ सोमसेन (संवत् १५४१)
|
३५ गुणभद्र (संवत १५७९)
|
३६ वीरसेन
|
३७ युक्तवीर
|

३८ माणिकसेन (सवत् १५५८ ,
|
३९ गुणसेन (गुणभद्र)
|
४० लक्ष्मीसेन
|
४१ सोमसेन (सवत् १५९७)
|
४२ माणिक्यसेन
|
४३ गुणभद्र
|
४४ सोमसेन (स. १६५६--१६९६)
|
४५ जिनसेन (स.१७१२--१७४२)
|
४६ समन्तभद्र
|
४७ छत्रसेन (संवत् १७५४)
|
४८ नरेन्द्रसेन (स.१७८७ -१७९०)
|
४९ शान्तिसेन (स १८०८-१८१६)
|
५० सिद्धसेन (स १८२६--१८६९)
|
५१ लक्ष्मीसेन (स १८९९--१९२२)
|
५२ वीरसेन (स १९३६--१९९५)

लेखांक ८६ – पुराणसार श्रीचंद्र

धाराया पुरि भोजदेवनृपते राज्ये जयत्युच्चकै
श्रीमत्सागरसेनतो यतिपतेर्ज्ञात्वा पुराण महत् ।
मुक्त्यर्थं भवभीतिभीतजगतां श्रीनंदिशिष्यो बुधो
कुर्वे चारु पुराणसारममल श्रीचंद्रनामा मुनि. ॥
श्रीविक्रमादित्यसंवत्सरे सप्तत्यधिकवर्षसहस्रे
पुराणसाराभिधान समाप्तम् ॥

[अ. २ पृ ५८]

लेखांक ८७ – उत्तरपुराण टिप्पण

श्रीविक्रमादित्यसंवत्सरे वर्षाणामशीत्यधिकसहस्रे महापुराणविषमपद-विवरणं सागरसेन परिज्ञाय मूलटिप्पण चालोक्य कृतमिदं समुच्चयटिप्पणं आज्ञापातभीतेन श्रीमद् बलात्कारगणश्रीनंद्याचार्यसत्कविशिष्येण श्रीचंद्र-मुनिना निजदोर्दण्डाभिभूतरिपुराज्यविजयिन श्रीभोजदेवस्य राज्ये ॥

[उपर्युक्त]

लेखांक ८८ – पद्मचरित टिप्पण

बलात्कारगणश्रीश्रीनंद्याचार्यसत्कविशिष्येण श्रीचंद्रमुनिना श्रीमद्वि-क्रमादित्यसंवत्सरे सप्ताशीत्यधिकवर्षसहस्रे श्रीमद्धाराया श्रीमतो भोजदेवस्य राज्ये पद्मचरिते.. ॥

[उपर्युक्त]

लेखांक ८९ – बेळगामि शिलालेख केशवनंदि

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयश्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराजपरमेश्वर भट्टा-रक-सत्याश्रयकुलतिलकं-चालुक्याभरणं श्रीमत् त्रैलोक्यमल्लदेवर विजयराज्य प्रवर्तिसे तत्पादपद्मोपशोभितोत्तमाग स्वस्ति समधिगतपंचमहाशब्द-महा-मंडलेश्वरं बनवासिपुरवरेश्वर महालक्ष्मीलब्धवरप्रसादं श्रीमन्महामंडलेश्वरं चा-ण्डरायरसर् बनवासिपन्निर् छासिरमनाळुत्तमिरल राजधानियक्लिगावेय

नेले वीडिनोळ् शक वर्ष ९७० नेय सर्वधारीसंवत्सरद ज्येष्ठशुद्धत्रयोदशी आदित्यवारदन्दु जज्जाहुति-श्रीशांतिनाथसंबंधियप्प बळगारगणद मेघनंदि-भट्टारक शिष्यरप्प केशवनंदि अष्टोपवासिभट्टारर बसदिगे पूजानिमित्तदि धारापूर्वक जिड्डुलिगे ७० र बळिय राजधानिबंळिळगावेय पुळेय बयलोळ् भेरुण्डगळेयोळ् कोट्ट गळदे मत्तरग्दु अदर सीमे · ॥

[जैन शिलालेख संग्रह भा. २ पृ. २२०]

लेखांक ९० – बलगाम्बे शिलालेख　　केशवदेव

स्वस्ति श्रीचित्रकूटाम्नायदावलि मालवद शांतिनाथदेवसंबंध श्रीबला-त्कारगण मुनिचंद्रसिद्धांतदेवर शिसिनु अनंतकीर्तिदेवरु हेग्गडे केसवदेवंगे धारापूर्वक माडिकोटेवु प्रथिष्टे पुण्य साति ·· ॥

[उपर्युक्त पृ. २६५]

लेखांक ९१ – कोणूर शिलालेख　　पद्मप्रभ

श्रीरमणीभासि बळत्कारगणांभोधि कोण्डनूरोळ् निधिगं ।
भूरमणीमकुटाळंकारदि नेसेदोप्पि तोर्प जिनमंदिरमं ॥ १२
उदयगिरींद्रदोळेसेवग्तुदितोदयवागिबळेप चद्रन तेरद–
न्तुदियिसिदं कुवळयकभ्युदयकर तद्गणाद्रियोळ् गणचद्र ॥ १७
पक्षोपवासिदेवनघक्षय तन्मुनिपदाब्जमधुकरशीलं ।
रक्षितगुणगणनिळयमुमुक्षुजनानंदियप्प नयनंदिबुधं ॥ १८
आ नयनंदिय शिष्य नानाविद्याविलासनूर्जिततेजं ।
श्रीनारीनाथनवोल् भूनुतना श्रीधरार्ययतिपतितिळकं ॥ १९
तन्मुनिपदाब्जमधुकरनुन्मदमिथ्याकथाविमथन मुनिपं ।
सन्मार्गिचंद्रकीर्ति बियन्मार्गद चद्रनंते कुवळयपूज्य ॥ २०
अतिचतुरकविचकोर प्रततिदरस्मेरनयनमीटिदपुदुदं–
चितकर्णचचुपुटदिं श्रुतिकीर्तिमुनींद्रचंद्रवाक्चंद्रिकेय ॥ २१
श्रीवरदेवं सुयश श्रीधरनविगतमसस्तजिनपतितत्त्व–
श्रीवरनेसेद सद्वाक् श्रीधरना चंद्रकीर्तिदेवन तनय ॥ २२
आ मुनिमुख्यन शिष्यं श्रीमच्चारित्रचक्रिसुजनविळासं

भूमिपकिरीटताडितकोमळनखरश्मिनेमिचंद्रमुनींद्र ॥ २३
श्रीधरवनजदसिरियं साधिपेनेवतिरेसेव मधुपन तेरनं
श्रीधरपदसरसिजदोळ् साधिपवोलेसेद्दु वासुपूज्य पोल्त ॥२४
बृंहितपरमतमदकरिसिंहं त्रैविद्यवासुपूज्यानुजनुद्
घांसस्संहरनेसेदं संहृतकामं यशस्विमळयावुधं ॥ २७
अतिचतुरकविकदंबकनुतपद्मप्रभमुनीशराद्धांतेशं ।
श्रुतकीर्तिप्रियनेसेसं यतिपत्रैविद्यवासुपूज्यतनुजं ॥ २८

स्वस्ति श्रीमच्चालुक्यविक्रमकालद १२ नेय प्रभवसंवत्सरद पौषकृष्ण-चतुर्दशी वड्ड वारदुत्तरायण संक्रांतियंदु ॥

(उपर्युक्त पृ. ३३६)

लेखांक ९२ – नेसर्गी शिलालेख   कुमुदचंद्र

श्रीमूलसंघद बलात्कारगणद श्रीपार्श्वनाथदेवर श्रीकुमुदचंद्रभट्टारक-देवर गुड्ड बाडिगसात्ति सेट्टियरु मुख्यवागिनखरंगळु माडिसिद नखर जिनालय ॥

(उपर्युक्त पृ ३६४)

लेखांक ९३ – संभवनाथ मूर्ति   देशनंदी

संवत १२५८ श्रीबलात्कारगणे पंडित श्रीदेशनंदी गुरुवर्यवरान्वये साधु सीलेण तस्य भार्या हर्षिणी तयो सुत साधु गासूल सांतेण प्रणमति नित्यं ॥

(पावागिरि अ १२ पृ. १९२)

लेखांक ९४ – सोनागिरि शिलालेख   कनकसेन

मंदिर सह राजत भये चन्द्रनाथ जिन ईस ।
पोश सुदी पूनम दिना तीन सतक पैंतीस ॥
मूलसंघ अर गण करो बलात्कार समुझाय ।
श्रवणसेन अरु दूसरे कनकसेन दुइ भाय ॥
बीजक अक्षर बांचके कियो सुनिश्चय राय ।
और लिख्यो तो बहुतसो नहि पन्यो लखाय ॥

(भा. ५ पृ १९५)

लेखांक ९५ -- विंध्यगिरि शिलालेख वर्धमान

श्रीमूलसघपयःपयोधिवर्धनसुधाकराः श्रीवलात्कारगणकमलकलिका-कलापविकचनदिवाकराः वनवा त कीर्तिदेवाः तत्शिष्या' रायभुजसुदाम ' 'आचार्यमहावादिवादीश्वर-रायवादिपितामह-सकलविद्वज्जनचक्रवर्ति-देवेंद्र-विशालकीर्तिदेवा. तत्शिष्या. भट्टारकश्रीशुभकीर्तिदेवास्ततशिष्याः कलिकाल-सर्वज्ञभट्टारक-धर्मभूषणदेवाः तत्शिष्या. श्रीअमरकीर्त्याचार्या. तत्शिष्या. मालिर्वा तिनृपाणां प्रथमानल रसित ' नुतपा' ' 'यमुल्लासक' ' 'देमक ' ' 'चार्यपट्टविपुलाचला करणमार्तण्डमण्डलानां भट्टारकधर्मभूषणदेवानां' ' ' तत्त्वार्थवार्धिवर्धमानहिमांशुना वर्धमान-स्वामिना कारितोहं आचार्याणां ' ' 'स्वस्ति शकवर्ष १२८५ परिधावि संवत्सरे वैशाख शुद्ध ३ बुधवारे ॥

(जैन शिलालेख सग्रह १ पृ. २२३)

लेखांक ९६ -- विजयनगर शिलालेख धर्मभूषण

श्रीमूलसंघेजनि नदिसघस्तस्मिन् वलात्कारगणोतिरम्यः ।
तत्रापि सारस्वतनाम्नि गच्छे स्वच्छाशयोभूदिह पद्मनंदी ॥ ३
केचित्तदन्वये चारुमुनयः खनयो गिराम् ।
जलधाविव रत्नानि वभूवुर्दिव्यतेजसः ॥ ५
तत्रासीच्चारुचारित्ररत्नरत्नाकरो गुरु ।
धर्मभूषणयोगीन्द्रो भट्टारकपदाचित ॥ ६
शिष्यस्तस्य मुनेरासीदनर्गलतपोनिधि. ।
श्रीमानमरकीर्त्यार्यो देशिकाग्रेसर शमी ॥ ८
श्रीधर्मभूपोजनि तस्य पट्टे श्रीसिंहनंद्यार्यगुरो. सधर्मा ।
भट्टारक श्रीजिनधर्महर्म्यस्तम्भायमानः कुमुदेंदुकीर्तिः ॥ ११
पट्टे तस्य मुनेरासीद् वर्धमानमुनीश्वर ।
श्रीसिंहनंदियोगींद्रचरणाभोजषट्पद. ॥ १२
शिष्यस्तस्य गुरोरासीद् धर्मभूषणदेशिक ।
भट्टारकमुनि श्रीमान् शल्यत्रयविवर्जित ॥ १३
आसीदसीममहिमा वंशे यादवभूभृताम ।
अखंडितगुणोदार श्रीमान वुक्कमहीपति. ॥ १५

उद्भूद् भूभृतस्तस्माद् राजा हरिहरेश्वरः ।
कलाकलापनिलयो विधु' क्षीरनिधेरिव ॥ १६
आसीत्तस्य महीजानेः शक्तित्रयसमन्वित' ।
कुलक्रमागतो मंत्री चैचदण्डाधिनायकः ॥ १९
तस्य श्रीचैचदण्डाधिनायकस्योर्जितश्रिय. ।
आसीदिरुगदण्डेशो नदनो लोकनंदनः ॥ २०
स्वस्ति शकवर्षे १३०७ प्रवर्तमाने क्रोधनवत्सरे फाल्गुनमासे
कृष्णपक्षे द्वितीयायां तिथौ शुक्रवासरे।
अस्ति विस्तीर्णकर्णाटधरामंडलमध्यगः ।
विषयः कुतलो नाम्ना भूकांताकुंतलोपमः ॥ २५
विचित्ररत्नरुचिरं तत्रास्ति विजयाभिधं ।
नगरं सौधसंदोहदर्शिताकांडचंद्रिकम् ॥ २६
तस्मिन्निरुगदंडेशः पुरे चारु शिलामयम् ।
श्रीकुन्थुजिननाथस्य चैत्यालयमचीकरत् ॥ २८
भद्रमस्तु जिनशासनाय ।

(भा. १ कि. ४ पृ. ९०)

लेखांक ९७ – न्यायदीपिका

मद्गुरोर्वर्धमानेशो वर्धमानदयानिधे. ।
श्रीपादस्नेहसंबंधात् सिद्धेय न्यायदीपिका ॥ १

इति श्रीमद्वर्धमानभट्टारकाचार्यगुरुकारुण्यसिद्ध-सारस्वतोदयश्रीमद-भिनवधर्मभूषणाचार्यविरचितायां न्यायदीपिकायामागमप्रकाश' समाप्तः ।

(अ. १ पृ. २७२)

बलात्कार गण–प्राचीन

इस गण का नामकरण सबसे प्राचीन लेखोंमे [ले ८७,८८] बलात्कार गण यही पाया जाता है। किन्तु इस का मूल रूप वळगार गण यही मालूम पडता है [ले ८९]। इसके दूसरे रूप वळात्कार और वळत्कार भी है [ले. ९१] इस गण के प्राचीन उल्लेख ज्यादातर कर्णाटक के मिले है किन्तु इन्ही मे एकसे इस का सम्बन्ध चित्रकूट और मालवसे जोडा गया है [ले ९०]। चौदहवी सदी से इस के साथ सरस्वती गच्छ और उस के पर्यायवाची भारती, वागेश्वरी, शारदा आदि नाम जुडे है [ले. ९६,१६७,१८१, आदि]। इस नाम का सम्बन्ध उस वादसे जोडा जाता है जिसमे दिगम्बर संघ के आचार्य पद्मनन्दिने श्वेताम्बरोसे विवाद कर पाषाणकी सरस्वती मूर्तिसे मन्त्रशक्ति द्वारा निर्णय कराया था। यह वाद गिरनार पर्वत पर हुआ कहा जाता है। ये पद्मनन्दि सम्भवत आचार्य कुदकुद ही है। इन्हीं से इस गण का तीसरा विशेषण कुदकुदान्वय प्रचलित हुआ है [ले १०८ आदि]। कहीं कहीं इसे नन्दिसघ या नद्याम्नाय भी कहा है (ले. २६७ आदि)।

बलात्कार गण का सब से प्राचीन उल्लेख आचार्य श्रीचन्द्र ने किया है। आप के दीक्षागुरु आ श्रीनन्दि और विद्यागुरु आ सागरसेन थे। आप का निवास धारा नगरी मे था जहा उस समय महाराज भोज राज्य कर रहे थे। आपने सवत १०७० मे पुराणसार, सवत् १०८० में उत्तरपुराण टिप्पण और सवत् १०८७ मे पद्मचरित टिप्पण की रचना की [ले. ८६–८८]।

इस गण के दूसरे आचार्य केशवनन्दि थे। चालुक्य वंशीय त्रैलोक्यमल्ल देव के राज्यकाल मे शक ९७० की ज्येष्ठ शुक्ल १२ को जजाहुति के शान्तिनाथ मन्दिर के लिए मडलेश्वर चावुण्डराय ने राजधानी वळ्ळिगावे से आप को कुछ दान दिया। आप अष्टोपवासी थे तथा मेघनन्दि भट्टारक के शिष्य थे (ले ८९)।

इन के अनतर चित्रकूटाम्नाय के मुनिचद्र के प्रशिष्य तथा अनन्तकीर्ति के शिष्य केशवदेव को दिये गये दान का उल्लेख मिलता है। इस लेखका समय १२ वीं शताब्दी माना गया है [ले. ९०]।

इन के बाद पद्मप्रभ आचार्य का उल्लेख आता है। आप की गुरु-परम्परा पक्षोपवासिमुनि-नयनन्दि-श्रीधर-चन्द्रकीर्ति-श्रीधर-नेमिचन्द्र-सहपाठी वासुपूज्य-पद्मप्रभ इस प्रकार कही गई है। सवत ११४४ की पौष कृष्ण १४ को उत्तरायण सक्रान्ति के अवसर पर आप को कुछ दान दिया गया था [ले. ९१]।[21]

अगला उल्लेख भट्टारक कुमुदचद्र की एक मूर्ति का है। जो पार्श्वनाथ के नगरजिनालय मे स्थापित की गई थी। इस का समय भी बारहवीं सदी माना गया है [ले. ९२]।

इन के बाद पडित देशनदि का उल्लेख मिलता है। आप ने सवत् १२५८ मे एक संभवनाथ मूर्ति प्रतिष्ठापित की [ले. ९३]।

श्रवणसेन और कनकसेन इन दो बन्धुओ के द्वारा सवत् ३२५ की पौष शुक्ल १५ को प्रतिष्ठापित किये गये चन्द्रप्रभ मन्दिर का उल्लेख एक उत्तरकालीन लेख में मिलता है [ले. ९४] पं. प्रेमीजी का अनुमान है कि ये अक १३३५ होगे।[22]

इन के अनन्तर स्वामी वर्धमान का शक १२८५ का उल्लेख प्राप्त होता है [ले. ९५]। आप की गुरुपरम्परा वनवा(सिवस)तकीर्ति-देवेंद्र-विशालकीर्ति-शुभकीर्ति-धर्मभूषण-अमरकीर्ति धर्मभूषण वर्धमान इस प्रकार है।[23]

२१ कुदकुदाचार्य विरचित नियमसार की सस्कृत टीका सम्भवतः इन्ही पद्मप्रभदेव की रचना है।

२२ बलात्कार गण म सनान्त नाम नहीं पाये जाते। सभवतः ये गृहस्थो के नाम है।

२३ वर्धमान विरचित वरागचरित के परिचय के लिये जटासिंहनदि कृत वरागचरित की डॉ उपाध्ये लिखित प्रस्तावना देखिए।

वर्धमान के शिष्य धर्मभूषण हुए। इन के समय शक १३०७ की फाल्गुन कृष्ण द्वितीया को राजा हरिहर के मंत्री चैच दंडनायक के पुत्र इरुगप्प ने विजयनगर में कुन्थुनाथ का एक मन्दिर बनवाया [ले. ९६]। धर्मभूषण ने न्यायशास्त्रमे प्रवेश पाने के इच्छुक विद्यार्थियो के लिए न्याय-दीपिका नामक ग्रंथ की रचना की। इस के प्रथम प्रकाश मे प्रमाणलक्षण का, दूसरे प्रकाश में प्रत्यक्ष प्रमाणों का तथा तीसरे प्रकाशमे परोक्ष प्रमाणो का अच्छा विवेचन किया गया है [ले. ९७]।

बलात्कार गण–प्राचीन–कालपट

१ श्रीनन्दि
|
२ श्रीचन्द्र [सवत् १०७०–१०८७]
___
३ मेघनन्दि
|
४ केशवनन्दि (सवत् ११०४)
___
५ मुनिचन्द्र
|
६ अनन्तकीर्ति
|
७ केशवदेव
___
८ पक्षोपवासी
|

९ नयनन्दि
|
१० श्रीधर
|
११ चन्द्रकीर्ति
|
१२ श्रीधर
|
१३ वासुपूज्य १४ नेमिचन्द्र
|
१५ पद्मप्रभ [संवत् ११४४]
१६ कुमुदचन्द्र
१७ देशनन्दी [संवत् १२५८]
१८ श्रवणसेन-कनकसेन [स.१३३५]
१९ वनवासि वसन्तकीर्ति
|
२० देवेन्द्र विशालकीर्ति
|
२१ शुभकीर्ति
|
२२ धर्मभूषण
|
२३ अमरकीर्ति
|
२४ सिंहनन्दि २५ धर्मभूषण
|
२६ वर्धमान [संवत् १४१९]
|
२७ धर्मभूषण [संवत् १४४२]

३. बलात्कार गण – कारंजा शाखा

लेखांक ९८ – पट्टावली अमरकीर्ति

श्रीनंदिसंघ-सरस्वतीगच्छ-बलात्कारगणाग्रगण्यानां आचार्यवरेण्यानां परंपराप्रवर्तितमहासिंहासनयोग्यानां श्रीमदमरकीर्तिराउलप्रियाग्रमुख्यानां ।

[ना. ८८]

लेखांक ९९ – दशभक्त्यादि महाशास्त्र विशालकीर्ति

भट्टारको बलात्कारगणाधीशो महाता. ।
विशालकीर्तिवादींद्र परमागमकोविदः ॥
सिकंदरसुरित्राणप्राप्तसत्कारवैभवः ।
महावादिजयोद्भूतयशोभूपितविष्टप. ॥
श्रीविरूपाक्षरायस्य श्रीविद्यानगरेशिन. ।
सभायां वादिसंदोहं निर्जित्य जयपत्रकम् ॥
स्वीकृत्य च महाप्रज्ञावलेन बुधभूभुजैः ।
मतं सरस्वतीमूलशासन वा सदोज्ज्वलम् ॥
देवप्पदंडनाथस्य नगरे श्रीमदारगे ।
प्रकाशितमहाजैनधर्मोभाद्भूसुरार्चितः ॥

(भा. ग्र. पृ. १२५)

लेखांक १०० – पट्टावली विद्यानंद

प्रचंडाशेषतुरखराजाधिराजअल्लावदीनसुलतानमान्यश्रीमदभिनववादि-विद्यानंदस्वामिना ।

(म. ५७)

लेखांक १०१ – दशभक्त्यादि महाशास्त्र

विशालकीर्ते. श्रीविद्यानदस्वामीति गद्रितः ।
अभवत्तनय. साधुर्मल्लिरायनृपार्चित ॥
कावेरीमरिदंबुवेष्टनलसच्छ्रीरंगसत्पत्तने

लक्ष्मीवल्लभरंगनाथमहिते श्रीवीरपृथ्वीपतेः ।
आस्थाने विबुधव्रजं विजयवाग्वृत्तैर्विजित्यावनौ
विद्यानंदमुनीश्वरो विजयते साहित्यचूडामणिः ॥
वीरश्रीवरदेवरायनृपतेः सद्भागिनेयेन वै
पद्मांबाकलगर्भवार्धिविधुना राजेंद्रवद्याग्रिणा ।
श्रीमत्सालुवकृष्णदेवधरणीकांतेन भक्त्यार्चितो
विद्यानंदमुनीश्वरो विजयते स्याद्वादविद्यापतिः ॥
यो विद्यानगरीधुरीणविजयश्रीकृष्णरायप्रभो-
रास्थाने विदुषां गणं समजयत्पंचाननो वा गजम् ।
सद्वाग्भिर्नखरैरुदात्तविमलज्ञानाय तस्मै नमो
विद्यानंदसुधीश्वराय जगति प्रख्यानसत्कीर्तये ॥
शाके वह्निखराब्धिचद्रकलिते संवत्सरे शार्वरे
शुद्धश्रावणभाक्कृतान्तधरणीतुग्मैत्रमेषे रवौ ।
कर्किस्थे सुगुरौ जिनस्मरणतो वादींद्रवृन्दार्चितः
विद्यानंदमुनीश्वरः स गतवान् स्वर्गं चिदानदकः ॥

(भा अ. पृ. १२६)

लेखांक १०२ – दशभक्त्यादि महाशास्त्र देवेंद्रकीर्ति

स्वामिविद्यादिनंदस्य भारतीभाललोचनं ।
सूनुर्देवेंद्रकीर्त्यार्यो जातो भट्टारकाग्रणीः ॥
बलात्कारगणांभोजभास्करस्य महाद्युते ।
श्रीमद्देवेंद्रकीर्त्याख्यभट्टारकशिरोमणेः ॥
शिष्येण ज्ञातशास्त्रार्थस्वरूपेण सुधीमता ।
जिनेंद्रचरणाद्वैतस्मरणाधीनचेतसा ॥
वर्धमानमुनींद्रेण विद्यानदार्यबधुना ।
कथितं दशभक्त्यादिशासनं भव्यसौख्यद ॥
शाके वेदखराब्धिचंद्रकलिते सवत्सरे श्रीप्लवे
सिंहश्रावणिके प्रभाकरशिवे कृष्णाष्टमीवासरे ।
रोहिण्यां दशभक्तिपूर्वकमहाशास्त्रं पदार्थोज्ज्वलं
विद्यानदमुनिस्तुतं व्यरचयत् सद्वर्धमानो मुनिः ॥

(भा. अ पृ १२२)

लेखांक १०३ – पट्टावली

तत्पट्टोदयाद्रिदिवाकरायमान-नित्याद्येकांतवादि-प्रथमवचनखंडन-प्रवचनरचनाडंबर-षड्दर्शनस्थापनाचार्यपट्टतर्कचक्रेश्वरश्रीमद्देवेंद्रकीर्तिदेवानां ॥

(म. ५७)

लेखांक १०४ – पट्टावली धर्मचंद्र

तत्पट्टोदयदेवगिरिपरमताभिव्यजनतिमिरनिर्नाशनदिनकरसमानानां सार्थकनामभट्टारकश्रीमद्धर्मचंद्रदेवाना ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक १०५ – पद्मावती मूर्ति

सक १४८७ प्रजापत संवत्सरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे भ. धर्मचंद्राणाम उपदेशात् ज्ञाति वघेरवाल भुरा गोत्रे सा रतन भार्या पुतली ··॥·

(र सु. खेडकर, नागपुर)

लेखांक १०६ – पट्टावली धर्मभूषण

तत्पट्टोदयाचलदिवाकरायमान ·भट्टारकश्रीधर्मभूषणदेवानां ॥

[म. ५७]

लेखांक १०७ – चंद्रप्रभ मूर्ति

सके १५०३ वृषनाम सवत्सरे फागुण सुदि ७ श्रीमूलसघे वलात्कारगणे भ धर्मभूषणोपदेशात् वघेरवालज्ञाति ठवला गोत्रे स. पासुसा · ॥

[अ गु. मिश्रीकोटकर, नागपुर]

लेखांक १०८ – नेमिनाथ मूर्ति देवेंद्रकीर्ति

शके १५०३ वृषनाम्नि सवत्सरे फाल्गुणमासे शुक्लपक्षे ६ बुधवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ श्रीधर्म-

चंद्रस्तत्पट्टे भ. श्रीधर्मभूषणस्तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्त्युपदेशात् श्रीव्याघ्रेरवाल-ज्ञातीय खंडोरियागोत्रे · ॥

(ब १)

लेखांक १०९ – अंबिका रास

· संवत १६४१ वर्षे कार्तग वदि ५ दिने श्रीएरडवेलसुभस्थाने श्रीधर्म-नाथचैत्यालये मुनिश्रीदेवेंद्रकीर्ति लक्षित बाई हरषमती पठनार्थं ॥

[ना. ३५]

लेखांक ११० – द्वादशानुप्रेक्षा

शके १५१४ नदननाम संवत्सरे पौषमासे शुक्लपक्षे त्रयोदशितिथौ गुरुवारे वराडदेशे श्रीमूलसंघे · भ धर्मचंद्र तत्पट्टे भ. धर्मभूषण तत्पट्टे भ. देवेंद्रकीर्ति · गगराडाज्ञाति लघु नदिग्रामे आदशेटी · ·· ताभ्यां स्वहस्ते लिखितं ॥

[ना. १५]

लेखांक १११ – नेमिनाथ पूजा

जलाद्यैर्यजेहं मुदार्घेण देव
सुधर्मादिभूप गुरुं भूपसेवं ।
परं प्राप्तकैवल्यराज्यं विशाल
सुदेवेंद्रकीर्तिस्तुत शर्मशालं ॥

(म. १०)

लेखांक ११२ – नंदीश्वर पूजा

सुभक्तिभाव पूजये परापर जिणालये ।
सुधर्मभूषमायरं सुरेंद्रकीर्तिचर्चित ॥

(म ८)

लेखांक ११३ – ? मूर्ति　　कुमुदचंद्र

शक १५२२ सर्वरि नाम संवत्सरे मूलसघे वैसाख सुदि १३ दिने श्रीमूलसंघे · भ. धर्मचंद्र तत्पट्टे भ श्रीधर्मभूषण तत्पट्टे भ श्रीदेवेंद्रकीर्ति

तत्पट्टे भ. श्रीकुमुदचंद्र । भ. श्रीदेवेंद्रकीर्ति उपदेशात् सं. वसराज नित्यं प्रणमंति ॥

(आर्वी, अ. ४ पृ. ५०२)

लेखांक ११४ – १ मूर्ति

शक १५३५ प्रमादि संवत्सरे फाल्गुण सुदि ५ श्रीमूलसंघे … भ. श्रीधर्मचंद्र. धर्मभूषण: देवेंद्रकीर्ति तत्पट्टे कुमुदचंद्रोपदेशात् सैतवालज्ञातीय रत्नसाह समरासाह नित्यं प्रणमंति ॥

(बाळापुर, अ. ४ पृ. ५०२)

लेखांक ११५ – पार्श्वनाथ पूजा

मलयादिमृगपतिपीठमंडितधर्मभूषणवंदितं
देवेंद्रकीर्तिमुनींद्रसंभवकुमुदचंद्रसुवंदितं ।
श्रीसंघसारविशेषवरकृतभावभूतिविभूवरं
भजतु भावजनागकारणपार्श्वनाथजिनेश्वरं ॥

[ना. ७८]

लेखांक ११६ – (पंचस्तवनावचूरि)

भ. श्रीकुमुदचंद्रैः ब्रह्मश्रीवीरदासाय दत्तमिदं पुस्तकं ॥

[ना. ४८]

लेखांक ११७ – सुदर्शन चरित्र धर्मचंद्र

श्रीमूलसंघ वलात्कारगण । सरस्वतिगछ प्रमाण ॥
विश्वास वंश कुळ मंडन । वृषभ चिन्ह गोत्रासी ॥ ५३
सोहितवाल प्रथम याती । ते वसी जया जन्म स्थिती ॥
धर्मचंद्र गुरु दीक्षापती । नाम स्थिती वीरदास ॥ ५४
पुढती दीक्षा महाव्रती । गुरु धर्मचंद्र समर्थ ॥
मस्तकीं ठेऊनी हस्त । पासकीर्ति नामना ॥ ५५
शके पंधरासे एकुनवचास । प्रभव संवत्सर नाम वर्षे ॥
फाल्गुण वद्य दशमी दिवस । गुरु वासर ते दिनी ॥ ५६

श्रवण नक्षत्र ते प्रमाण । सिद्धयोग तो शुद्ध जाण ॥
भद्रा सप्त नाम करण । ग्रंथ जाण समाप्त ॥ ५७

प्रसग २५ [ना. ४]

लेखांक ११८ – बहुतरी

नमिला म्या गुरु । सत्य धर्मचंद्रु ॥
त्रीसुद्धी हा वरु । मज त्याचा ॥ ४०
येने पंथे पासकीर्ति म्हने जना ॥
सिद्ध सोहं गुना । सुअष्टभावे ॥ ४५

[ना. ५३]

लेखांक ११९ – कलिकुंड यंत्र

संवत १६८६ श्रीमूलसघे ··भ. श्रीधर्मचंद्र तदाम्नीय आ. पासकीर्ति तदुपदेशात् संघवी वरहरसाह गोलसिंघारा रामटेक सांतिनाथ प्रसादेनू ज्येष्ठ वद्य ५·· ॥

(पा. २७)

लेखांक १२० – पद्मावती मूर्ति

समत १६९२ मिती वैशाख वदी ११ सोमवासरे भ. धर्मचंद्रजी · ॥

(सैतवाल मन्दिर, नागपुर)

लेखांक १२१ – चरणपादुका

सं. १६९३ वर्षे शके १५५९ मनु नाम सवत्सरे मागसिर शुक्ला २ शनै शुभमुहूर्ते श्रीमूलसंघे · भ. कुमुदचंद्रास्तत्पट्टे भ श्रीधर्मचद्रोपदेशात् जयपुर-शुभस्थाने बघेरवालज्ञाति सं. श्रीपासा ॥

[चम्पापुर, भा. १९ पृ. ५९]

लेखांक १२२ – पार्श्वनाथ मूर्ति

शके १५६१ प्रमाथीनाम सवत्सरे फाल्गुण शुदि २ बृहस्पतिवार

श्रीमूलसंघे ··भ. श्रीधर्मचंद्रोपदेशात् बघेरवालज्ञातीय · ॥

(का. ४)

लेखांक १२३ – चौवीसी मूर्ति

शके १५६७ पार्थिव नाम संवत्सरे श्रीमूलसंघे भ धर्मचंद्रोपदेशात् बघेरवालज्ञातीय खंडारिया गोत्रे श्रावण ॥

(टे. मा. दर्यापुरकर, नागपुर)

लेखांक १२४ – ? मूर्ति

शके १५६९ सर्व जेष्ठ श्रीमूलसंघे भ. श्रीधर्मभूषण तत्पट्टे भ. देवेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ कुमुदचंद्र तत्पट्टे भ श्रीधर्मचंद्र तदाम्नाये धर्माचार्य पासकीर्ति तदुपदेशात् साहितवालज्ञातीय ॥

(बाळापुर, अ. ४ पृ. ५०४)

लेखांक १२५ – चौवीसी मूर्ति

वो नम सिद्धेभ्य गोमटस्वामी आदीश्वरमूलनाईक चोवीस तीर्थंकरकि परतीमा चारुकीरति पंडित धरमचंद्र वलातकार उपदसा शके १५७० सर्वधारी नाम संवत्सरे वैशाख वदी २ सुकुरवार देहराकी पती स्यहै · गेरवाल चवंर गोत्र जीनासा ·॥

श्रवणबेल्गुल, [जैनशिलालेख संग्रह १ पृ. २२९]

लेखांक १२६ – धर्मचंद्र गुरु पूजा

(पूजा–) कुमुदचंद्रपदे प्रयजे वरं ।
सुगुणधर्मसुचंद्रमुनीश्वरं ॥ १ ॥
(स्तुति–) स भवतु वरभूत्यै धर्मचंद्रो मुनींद्रो
द्विजकुलमहितोसौ वासुदेवेन वंद्य ॥ १० ॥

[म. ६३]

लेखांक १२७ – पार्श्वनाथ मूर्ति　　धर्मभूषण

शाके १५७२ विकृती संवत्सरे फाल्गुण शुद्ध ११ शुक्रे भ. श्रीधर्मभूषणे प्रतिष्ठितं ॥

[का. ५]

लेखांक १२८ – षोडशकारण यंत्र

शक १५७६ वर्षे जयनाम संवत्सरे मार्गशिर्ष सुद १० श्रीमूलसंघे · श्रीधर्मचंद्र भ. श्रीधर्मभूषणोपदेशात् नेवाज्ञातीय नहिया गोत्रे सा गणसा सुत ढदुसा एते षोडशकारण यंत्र नित्य प्रणमंति ॥

[अ ४ पृ ५०३]

लेखांक १२९ – ? मूर्ति

शके १५७७ वैसाख सुदि ९ शुक्रे मूलसंघे भ. कुमुदचंद्र तत्पट्टे भ. धर्मचंद्र तत्पट्टे भ. धर्मभूषणोपदेशात् भीन सेठ भार्या चाणइ · ॥

[कोंढाळी, अ ४ पृ. ५०५]

लेखांक १३० – पार्श्वनाथ मूर्ति

सक १५७८ मूलसंघे भ धर्मभूषण ।

[सुं. हि जोहरापुरकर, नागपुर]

लेखांक १३१ – चौवीसी मूर्ति

शके १५७९ वर्षे मार्गसिर सुदि १४ बुधे श्रीमूलसंघे भ देवेंद्रकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ. कुमुदचंद्रदेवा. तत्पट्टे भ धर्मचंद्रदेवा. तत्पट्टे भ धर्मभूषणगुरूपदेशात् बघेरवालज्ञातीय हरसौरा गोत्रे सा गंगासा भार्या चांगावाई ॥

[नादगाव, अ. ४ पृ ५०५]

लेखांक १३२ – नेमिनाथ मूर्ति

सके १५८० वर्षे विरोधिनाम संवत्सरे मार्गशिर शुदि ५ शुक्रे श्रीमूलसंघे ··भ. श्रीदेवेंद्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ. कुमुदचंद्रदेवा तत्पट्टे भ धर्मचंद्रदेवा

तत्पट्टे भ. श्रीधर्मभूषणोपदेशात् बघेरवालज्ञातीय हरसौरा गोत्रे सं. मेघ तस्य भार्या... ॥

[का २]

लेखांक १३३ – पार्श्वनाथ मूर्ति

शके १५८६ वर्षे क्रोधनाम संवत्सरे तिथी फागुण सुद ५ श्रीमूलसंघे ·· भ. धर्मचंद्र तत्पट्टे भ. धर्मभूषण महाराज प. नेमाजी भार्या राजाई पुत्र सोकराजी ता प्रतिष्ठितं ॥

[पा. ४३]

लेखांक १३४ – श्रेयांस मूर्ति

शके १५९७ मूलसंघे बलात्कारगणे भ. धर्मभूषण ··ॐ हरीसाव पुत्र फकीचंद प्रणमंति ॥

[पा. १०६]

लेखांक १३५ – रत्नत्रयउद्यापन

दृग्बोधादिकशुद्धवृत्तजनित रत्नत्रयं सद्व्रतं
तत्पूजा रचिता मुनेद्रगणिना पुण्यात्मना सूरिणा ।
सद्भट्टारकधर्मचद्रपदभृद् धर्मादिभूषात्मना
भव्योपासकशीतलेशविहितप्रश्नात् निजार्थात् वरं ॥

[ना. ९]

लेखांक १३६ – चौवीसी मूर्ति धर्मचंद्र

शके १६०७ प्रभाव नाम संवत्सरे फाल्गुण वदि १० भ. धर्मचंद्र उपदेशात् · नगरे ज्ञाते उज्नेली पल्लीवार गोदसा भार्या सेमाई ··प्रणमंति ॥

(पा १७)

लेखांक १३७ – [श्रुतस्कंध कथा]

स. १७४३ वर्षे श्रावण शुदि ७ शुक्रे भ. श्री ६ धर्मचंद्र तस्य पंडित गंगादास लिखित । श्रीकार्यरजकनगरे श्रीचद्रप्रभचैत्यालये ॥

(प. १)

लेखांक १३८ – पद्मावती मूर्ति

शके १६१२ ज्येष्ट वदि ७ श्रीमूलसंघे भ. धर्मभूषण तत्पट्टे भ. विशालकीर्ति तत्पट्टे भ. धर्मचंद्रोपदेशात् बघेरवालज्ञाति खडासो गोत्रे सा राघुसा सुत लपुसा अंबिकां नित्य प्रणमंति ॥

(मा बा. आगरकर, नागपुर)

लेखांक १३९ – पार्श्वनाथ भवांतर

सके सोलाशे वर बारा सुध पुस मास ।
प्रमोद संवत्सरे सुक्रवार त्रयोदस ॥
कीर्तन पूर्ण जाले धर्मचंद्रचा आदेस ।
त्याहाचा पंडित मेती गंगादास ॥
जिनगुणाचे कीर्तन । भवांतर केले डफगाण ॥
कवित्व केले गगादासान । तुम्ही आयिका चित्त देऊन ॥ ४७

(ना. ६)

लेखांक १४० – आदितवार कथा

विशालकीर्ति विमलगुण जाण जिनशासनकज प्रगट्यो भाण ।
तत्पदकमलदलमित्र धर्मचंद्र धृतधर्म पवित्र ॥ ११२
तेहनो पडित गंगादास कथा करी भवियण उल्लास ।
शक सोला शत पन्नर सार शुदि आषाढ बीज रविवार ॥ ११३

[ना ५४]

लेखांक १४१ – मेरुपूजा

जलचंदनशालिजपुष्पचरुप्रमुखेन सदर्घभरेण वर ।
वृषचद्रपदांबुजभृंगसुगंगबुधेन सदा नमितं सुकरं ॥

(म. १२)

लेखांक १४२ – क्षेत्रपाल पूजा

सूरिश्रीधर्मचंद्रप्रवरपदपयोजाग्रभृंगोपमानः
श्रीमान् सोभाभिधानो जिनभजनरत. पद्मसंघेशपुत्र ।

तद्वाक्याद्गगदासैः प्रविरचितमिदं क्षेत्रपालार्चनं तत्
भक्त्या कुर्वंतु तेषां वरतरकुशलं क्षेत्रपाला दिशंतु ॥

(ना. ८५)

लेखांक १४३ – संमेदाचलपूजा

ततोभवत् सूरिविशालकीर्ति
पट्टे तदीये गुरुधर्मचंद्र ॥
तत्पादाब्जयरागलोलुपलसद्भृंगोतिभक्तेर्भरात्
चक्रे स्वापरचितितार्थफलदां गंगादिदासो बुधः ॥

(व. ३०)

लेखांक १४४ – त्रेपन क्रिया विनती

कारंजे सुख करण चंद्र जिन गेह विभूषण ।
मूलसंघ मुनिराय धर्मभूषण गतदूषण ॥
विशालकीर्ति तस पाट निखिलवंदितनरनाथक ।
तस पट्टांबुजसूर धर्मचंद्रह सुखदायक ॥
तस पत्कज पट्पद मुदा गंगदास वाणी वदे ।
त्रिपंचास क्रिया सदा भवियन जन राखो हृदे ॥ ११

(ना. ४२)

लेखांक १४५ – जटामुकुट

धर्मचंद्र गुरु पद नमी गंगादास वानी वदे ।
संघपति मेघा वचनथी जिन चितन चिंत्यो हृदे ॥ ६

(म. ९९)

लेखांक १४६ – कैलास छप्पय

कीर्ति विशाल विशाल पदपंकज दल भासन ।
धर्मचंद्र भवतार सार शोभित जिनशासन ॥

कारंजे करुणानिधान चंद्रनाथ चित्ते धरी ।
हीरासाह आग्रह थकी अष्टापदनी स्तुति करी ॥ २१

(ना. ६७)

लेखांक १४७ – विरुदावली

⋯भट्टारकश्रीविशालकीर्तिदेवानां । तत्पट्टे ⋯श्रीमलयखेडसिंहासनाधीश्वरभट्टारकश्रीधर्मचद्रदेवानां तपोराज्याभ्युदयसिद्धिरस्तु श्रीखोलापूरग्रामे श्रीसुपार्श्वनाथचैत्यालये श्रीसघपुण्यार्थ ⋯ ॥

(च. १३)

लेखांक १४८ – चौवीसी मूर्ति　　देवेंद्रकीर्ति

समत १७५६ मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे देवेद्रकीर्ति प्रतिष्ठा मिती माघ सुद ५ ॥

(पा. ३७)

लेखांक १४९ – यात्रापूर्ति लेख

सके १६४३ पौस वदि १२ शुक्रवारे भ देवेद्रकीर्ति सहित बघेरवाल जाती हिरासाह सुत हाससा सुत चागेवा सोनाबाई राजाई गोमाई राधाई मन्नाई सहित जात्रा सफल करी कारज कर ॥

श्रवणबेलगुल (जैन शिलालेख सग्रह १ पृ. ३४५)

लेखांक १५० – कल्याणमंदिर पूजा

गुणवेदांगचंद्राब्दे शाके १६४३ फाल्गुनमास्यदं ।
कारंजाख्यपुरे दृष्टं चंद्रनाथदेवार्चन ॥
इति श्रीबलात्कारगणेय भ देवेंद्रकीर्ति विरचितं ।
कल्याणमंदिरपूजा सपूर्ण ॥

(ना ७४)

लेखांक १५१ – विषापहारपूजा

साहारे निर्मितचारुशुभ्रा सद्विठलाख्याग्रहतो विचित्रा ।

श्रीशांतिनाथस्य गृहे गुणाढ्य जीयात्सुपूज्या गुणधामसुद्धा ॥
इति भ देवेंद्रकीर्तिकृत विषापहारस्तोत्रपूजा संपूर्णा ॥

(ना. ७४)

लेखांक १५२ –

नासिक त्रिंबक गाम समीप महागजपंथ धराधर सारं ।
ध्यान बले वसु कोडि मुनीस गया जिह कर्मजिती भवपारं ॥
षोडश पन्नास पोस समुज्ज्वल बीज तिथी दिननायकवारं ।
देवेंद्रकीर्ति नमे जिनरत्नचंद्रांबुधिरूपविद्यार्थी सवारं ॥

(म. ७८)

लेखांक १५३ –

भागलदेस महेंद्रपुरी तस संनिधि मांगि गिरी तुंगि तुंगं ।
हलधर माधव कोडि तपोधन मुक्ति वरी करी कल्मषभंगं ॥
शून्यशरान्वितषड्विधु पौष त्रयोदश शुक्ल गुरूदिन चंगं ।
देवेंद्रकीर्ति नमे जिनरत्नचंद्रांबुधिरूपवीरादिकसंगं ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक १५४ – णायकुमार चरिउ

संवत १७८५ वर्षे शाके १६५० कीलक नाम संवत्सरे माघमासि प्रतिपत्तिथौ सोमधूसे नवमससंपदे सूरति बंदिरे वासुपूज्यचैत्यालये गिरनार-यात्रागमनसमये भ. श्रीधरमचंद्रपट्टधारिदेवेंद्रकीर्तिभ्यः रामजी संघाधिप पुत्र आणंदनाम्ना हूंबड श्रावकेण दत्तमिदं पुस्तकम् ॥

(प्रस्तावना पृ १३, कारंजा जैन सीरीज)

लेखांक १५५ –

देश खडक्कमे धूलिय गाम युगादि जिनाधिप पुण्यपवित्रा ।
जाकी दिगंतर विश्रुतउज्वलकीर्ति जपे नर देव कलत्र ॥
रूप शरान्वित षोडश वैशाख कृष्ण त्रयोदशि चंद्रमपुत्रं ।
देवेंद्रकीर्ति नमे जिनरत्नचंद्रांबुधि रूपजी वीरजी छात्रं ॥

(म. ७८)

लेखांक १५६ –

गुज्जर देश सु तारंग पर्वत कोडिशिलोपरि कोडि मुनीसा ।
कोडि अडट्ठ वली वरदत्त पुर सर भेदि जवजव खासा ॥
चंद्र शराधिक षोडश उज्ज्वल पंचमि भार्गव मार्गक वासा ।
देवेंद्रकीर्ति भट्टारक संग समेत नमे करि भूतल सीसा ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक १५७ –

सोरट देश सुरेवतकाचल नेमि मुनीश बहत्तर कोडी ।
काम पुरोग ऋषीशत योगी शिवंगय संसृति वल्लरि तोडी ॥
पुष्य रवी वद बारसि इंदुशरर्तुकलेश समा अतिरूढी ।
देवेंद्रकीर्ति भट्टारक संग समेत नमे करपंकज जोडी ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक १५८ –

सोरट देश अरिंजय भूधर भूरिजिनेश्वर बिंब अनूपा ।
पांडु सुत त्रय मोक्ष गया वसु कोडि तथा वर लाड सुभूपा ॥
एकशरान्वित षोडश वत्सर कालिम माघ चतुर्थि ञडूपा ।
देवेंद्रकीर्ति भट्टारक भाव समेत नमे शांतिसागररूपा ॥

[उपर्युक्त]

लेखांक १५९ – कथाकोष　　　श्रीचंद्र

संवत १७८७ वर्षे भादवा शुदि ५ शुक्रे ॥ श्रीरस्तु ॥ श्रीसुरति बदरे वासुपूज्यचैत्यालये लिखापितमिदं पुस्तकं श्रीमूलसंघे मलयखेडसिंहासनाधीश्वर-कार्यरंजक-पुरवासि भ. श्रीधर्मचंद्रदेवास्तत्पट्टे भ देवेंद्रकीर्तयस्तैर्लिखापितं आर्यिका श्रीपासमतिपरोक्षदत्तवित्तेन ॥

[म प्रा. पृ. ७२७]

लेखांक १६० – नंदीश्वर आरती

नर्तंत पूजन सहित इंद्रादिक यात्रा प्रति वर्षे ।
श्रीवृषचंद्र पदेश्वर देवेंद्रकीर्ति नमे हर्षे ॥ ३

(आरती संग्रह २, च. १९२५)

लेखांक १६१ – देवेंद्रकीर्ति गुरु पूजा

सत्शब्दागमशास्त्रपाटनपटुश्रीकुंदकुंदो यती
तत्पट्टान्वयके वृषेंदुरभवद्धर्मादिभूपस्तत' ।
विख्यात' सुविशालकीर्तिरतुल श्रीधर्मचंद्रस्ततः
तत्पट्टे जयति प्रसन्नहृदयो देवेंद्रकीर्तिर्मुनि' ॥
••धर्मचंद्र पटि रयन गणित सुभ शास्त्र वखाणो ।
देवेंद्रकीर्ति गछराज आंगि तृणांवर धरण ॥
वाग्वादिनी कंठी वसी गोतम सम गुरु अवतऱ्यो ।
बुद्धिसागर एवं वदति विकट भवार्णवते तऱ्यो ॥
•••देवेंद्रकीर्ति मुनिपति परिग्रह तसु बहु अंगे ।
कह गुणवर्णन करू नही आवे मन सगे ॥
आत्मध्यान मोहित सदा सिव साधन आशा करी ।
सुरत शहर चवमासमे रूपचदने स्तुति करी ॥
ज्याको पिता वनारसी आगराको वासी
सुरत शहरमे उदीमके लीयते ।
वराडके मुनिंद आये रहे वरखाकालमाहे
वदना नही कीनेही देखी परीग्रहते ॥
सुद्धज्ञानसो निहार तुर्य काल मन विचार
काय मन वचनसो चिदानद लहेते ।
ऐसे देवेंद्रकीर्ति जिवनदास करत बिनती
सभाल लेवो परभवमे मोह निकट आयते ॥

(म. १२७)

लेखांक १६२ – अनंत आरती

रस सिंधु षट् चद्र शकेसी ।

शीतचतुर्दशीसी भाद्रपद मासी ।
शशिप्रभु भुवनी । रतली जिनचरणी ॥ ४ ॥
पंचमकाली सम यती । गुरु देवेंद्रकीर्ति ।
लघुशिष्य श्रीमानिकनंदि । मंडलाचार्यपदी ॥ ५

(आरतीसंग्रह २, च. १९२५)

लेखांक १६३ – आदित्यव्रत कथा

श्रीमत् सुकारंजकपूरवासी देवेंद्रकीर्ति प्रिय सज्जनासी ।
त्याचा लघू पंडित जैनदास त्याने कथेचा रचिला विलास ॥ ४३
रसाब्धिषट्चंद्र जदा सकासी तई मधू मास सुकृष्णपक्षी ।
सुपंचमी तो गुरुवार जेव्हा कथा असी हे परिपूर्ण तेव्हा ॥ ४४

(ना. १६)

लेखांक १६४ – जिनकथा

श्रीमत्कारंजपुरवासी । देवेंद्रकीर्ति गुरुसी ॥
अंतरी स्मरोनी आदरेसी । रचिली कथा ॥ २०७
नृप सालिवाहन सके गनित । सोळासे एकोन पचाशत ॥
प्लवंग नाम संवत्सरांत । पूर्ण कथा ॥ २०८
वराड देस कारंजनगर । श्रीमच्चंद्रनाथ मंदिर ॥
तेथ कथा हे सुंदर । संपूर्ण केली ॥ २१०

(ना १२)

लेखांक १६५ – पद्मावती कथा

…श्रीकुंदकुंदान्वय वंशि जाला ।
देवेंद्रकीर्ति जिनसागराला ॥ ६४
नेत्र बाण रस इंदु सकेसी आश्विनात सित द्वादशि दीसी ।
पूर्ण हे कथन माझे मतिने अधिक ते करि या जनि शाहने ॥ ६५

(व. ५२)

लेखांक १६६ – पुष्पांजलि कथा

श्रीकुंदकुंदान्वय त्याच वंसी देवेंद्रकीर्ति प्रिय सज्जनासी ।

ऐसी कथा हे वरवी विधीने सागीतली हो जिनसागराने ॥ १०२
इति श्रीदेवेंद्रकीर्तिप्रिय सिष्य जिनसागर कृत
पुस्पांजलि व्रतकथा संपुर्ण ॥ शके सोलाशे साठ १६६० ॥

(म. ११)

लेखांक १६७ – लवणांकुश कथा

स्वस्तिश्री वर मूलसंघ गन हा श्रीकुंदकुंदाग्रनी
श्रीमच्छारद गच्छ मंगल बलात्कारादि नामाग्रनी ।
त्या वंसी सुभ सक्रकीर्ति मुनि हा जाला जसा हो रवी
त्याचे सेवक जैनसागर कथा सांगे बुधाला नवी ॥ ७८
आहे बरा सीरड ग्राम जेथे राहे बहू श्रावक लोक तेथे ।
त्रिपुत्रषट्चंद्र शकासि जेव्हा कथा असी हे परिपूर्ण तेव्हा ॥ ७९

(म. १०)

लेखांक १६८ – अनंत कथा

उपर्युक्त प्रशस्ति के समान ।

(ना. ८)

लेखांक १६९ – सुगंधदशमी कथा

देवेंद्रकीर्ति गुरु पुण्यराशी जैनादि हो सागर शिष्य त्यासी ।
ऐसी कथा परिपूर्ण सांगे श्रोत्यासि द्या चित्त म्हणोनि मागे ॥ १३६

(ना. ८)

लेखांक १७० – जीवंधर पुराण

श्रीमत् देवेंद्रकीर्ति मुनि । भावे वंदिला कर जोडूनि ॥
जिनसागराच्या ध्यानी मनी । जिवाहून आवडे ॥ १९०
कांही गुजराती रास । पाहून केले कथेस ॥
काही उत्तरपुराणास । पाहोनि ग्रथास रचिले ॥ १९२
शके सोळाशे सहासष्ट जाण । आनद नाम सवत्सर महान ॥
वैशाखमास द्वादशी दिन । कथा पूर्ण ही झाली ॥ १९३
जेथे शिरड नाम नगर । शांतिनाथाचे मदिर ॥

श्रावक लोक वसती अपार । सांगे जिनसागर श्रोतियांसी ।। १९४

[अध्याय १०, च. १९०४]

लेखांक १७१ – नंदीश्वर उद्यापन

इति जैनेश्वरीं पूजा द्वीपे नदीश्वराभिधे ।
देवेंद्रकीर्तिप्राप्त्यर्थं करोति जिनसागरः ।।

(म. ५४)

लेखांक १७२ – आदिनाथ स्तोत्र

या परी जिनराज चिंतुनि शक्रकीर्तिहि वंदिला ।
जाहला जिनसागराप्रति तोष अंतरि दाटला ।। १०

(अष्टकपूजासंग्रह, प्र. गो. ग राऊळ, कारजा)

लेखांक १७३ – शांतिनाथ स्तोत्र

या स्तोत्रपाठासि विसेस घोका । तुटेल हो संसृति पाप धोका ।।
पावाल त्यानंतर सक्रकीर्ति । जैनाब्धि पापासि करा निवृत्ती ।।१०

(ना. ६४)

लेखांक १७४ – पार्श्वनाथ स्तोत्र

श्रीशक्रकीर्ति गुरु पत्कजपट्पदाने ।
केली स्तुती न कळता मतिमंदनेने ।। ।।१७
अत्यंत तोष हृदयी जिनपंडितासी ।।
श्रीपार्श्वनाथ विभु दे वर सज्जनासी ।। १८

(म. १२६)

लेखांक १७५ – पद्मावती स्तोत्र

आतामौन्य धरे विचार विसरे मी तो नसे शाहना ।
ऐसे हे जिनसागरे विनविले माझी असो वंदना ।। १४

(उपर्युक्त)

लेखांक १७६ – क्षेत्रपाळ स्तोत्र

हे जो स्तोत्र पढे अहो प्रतिदिनी काळत्रये जागृती
याचे दुर्घट रोग शोक पळती हे मी वदू पा किती ।
ऐसे सांगतसे जिनाब्धि सुजना सद्भाव जे आदरी
शास्त्री देव गुरूसि भाव धरितो तोही फळे त्यापरी ॥ ९

(ना. ६४)

लेखांक १७७ – ज्येष्ठजिनवर पूजा

द्रव्य पूजा सुपरि स्तुति छंद रचू मनसा ।
देवेंद्रकीर्ति म्हणे जिनसिंधु धीहीन पिसा ॥

(च १९०५)

लेखांक १७८ – शांतिनाथ आरती

सुंदर गिरडपूर जिनभुवनी शांतीश्वर मूर्ती ।
सद्गुणकीर्ति दिगंतरि व्यापक मुनि वासवकीर्ति ॥
देव गुरू वंदुनि जिनसागर मन भावे गाती ।
दारिद्रभंजन कमलारंजन ऐसी आरती ॥ ३

(आरतीसग्रह २, च. १९२५)

लेखांक १७९ – पद्मावती मूर्ति धर्मचंद्र

संमत १७९३ प्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ. श्रीधर्मचंद्रना उपदेशात् ज्ञातबघेरवाल भोजसा भार्या नावाई ॥

(हि प खोरणे, नागपुर)

लेखांक १८० – पार्श्वनाथ मूर्ति

सके १६९२ मिती वैसाख वद ११ श्रीमूलसघे भ धर्मचद्र प्रतिष्ठित ॥

(केळीबाग मन्दिर, नागपुर)

लेखांक १८१ – रविव्रत कथा

मूलसंघ भारति गळराज कुंदकुंदान्वय क्षितिनल गाज ।

शक्रकीर्ति गनधर सम मुनी तत्पट धर्मचंद्र गुनमनी ॥ २३
शातमतींदुमती अर्जिका इन आग्रह वृपभे करी कथा ।
संवत अठरासे विस आठ केतुत्साह तिथी दिन पाट ॥ २४

(म. ९३)

लेखांक १८२ – निर्दोष सप्तमी कथा

" नानाशास्त्रविशारद. परप्रवादीभेंद्रपंचानन
श्रीभट्टारककुंजरो गुणनिधि सद्धर्मचंद्रोजनि ॥
वर्षे शून्यकृशानुनागविधुसख्ये नीलपक्षे तिथौ
पंचम्या शुचि मासि चंद्रजदिने श्रुत्यक्षसंस्थे विधौ ॥
सद्भव्याश्रितकार्यरंजकपुरेनल्पोपमालंकृते
श्रीचंद्रप्रभदेवचैत्यनिलये पापौघविध्वंसिनि ॥
तच्छिष्यर्षभदासनामविदुषातीवाल्पबुद्ध्या शुभं
यन्निर्दूषणसप्तमीव्रतवरिष्टोद्यापन निर्मित ॥

(प. २)

लेखांक १८३ – ऋषिमंडल यंत्र

संवत् १८३१ शके १६९६ श्रावण सुदि १३ शुक्र वासरे श्रीमूलसंघे भ श्रीधर्मचंद्रदेवा. तत्पट्टे भ. देवेंद्रकीर्तिदेवा तत्पट्टधुरधरश्रीमद्भट्टारकधर्मचंद्रजि उपदेशात् " ॥

(व. ३)

लेखांक १८४ – नववाडी

कुंदकुंदमुनिवंश वास कारज इक पुरी ।
धर्मचंद्रपदमित्र शक्रकीरति अनगारी ॥
तस पट्टे गुणसद्म धर्मचंद्राभिध स्वामी ।
तेह शिष्य मतिमंद विशद बुध वृषभ सुनामी ॥
तिणे शील छप्पय मुदा रच्या भाद्र सुदि पचमी ।
नग नव रस चंद्रम शके पढत भव्य सुखसंगमी ॥ २५

(म. ७२)

लेखांक १८५ – रविवारव्रतकथा

विषय वराड मझारि सुनग्र कर्णखेट धनधान्य समग्र ।
सुपार्श्वदेव चैत्यालय तुंग दर्शन पेखत पातकभंग ॥ १२०
तपपट्टोदयशिखरि सूर्य शक्रकीर्ति भूमंडल वर्य ।
तत्पट्टभूषण श्रीगुरुराज धर्मचंद्र गछपति क्षिति गाज ॥ १२२
तस सेवक बुध ऋषभ धुरीन रची कथा व्यंजन स्वर हीन ।
संवत अष्टादश तेतीस श्रावण सुदि बारसि रवि दीस ॥ १२३
गंगेरवाल सु आवड्या हीरवा रघुजी भ्रात ।
ते वचने कीधी कथा सुणता मंगल ख्यात ॥ १२५

[व ५२]

लेखांक १८६ – अकृत्रिम चैत्यालय जयमाला देवेंद्रकीर्ति

श्रीमद्धर्मसुचंद्रपट्टविलसद्देवेंद्रकीर्तिस्तुतान्
ये ध्यायंति सदार्चयंति च बुधास्ते स्यु शिवश्रीप्रिया ॥ ६४
वर्षे नभोजलधिनागहिमांशुमाने
सार्धे सिते प्रवरपंचमिकां तिथौ वै ।
कर्तांद्यसाख्यसदुपासकपुत्रवाक्यात्
संनिर्मितावतु जनान् जयमालिकेयम् ॥ ६५

(ना. १२०)

लेखांक १८७ – नंदीश्वरपूजा

संमत १८४१ शके १७०६ मिति कार्तिक कृष्ण एकादशी तिथौ सोमवारे भ देवेंद्रकीर्तिना लिखितेयं पूजा स्वहस्तेन ॥

[ना. ४३]

लेखांक १८८ – अकृत्रिम चैत्यपूजा

शाके रसाभ्रनगचंद्रमिते सहूर्जे
मासे सिताष्टमितिथौ गुरुवासराद्यें ।
श्रीधर्मचंद्रमुनिशक्रसुकीर्तिनामा

स्रनिर्ममेस्तु सुखदा जयमालिकेयम् ॥ ४८

(म. १०३)

लेखांक १८९ – चरणपादुका

संवत १८५० शके १७१५ कार्तिकमासे कृष्णपक्षे १० वुद्ध माध्याह्ने उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रे प्रीतियोगे अस्या शुभवेलाया श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये मलखेडसिंहासनाधीश्वरकार्यरंजकपुरवासी भ. श्रीधर्मचंद्रस्तत्पट्टे भ. श्रीमद्देवेंद्रकीर्तिना देवलोकप्राप्ति जाता तत्पादुकेदं प्रतिष्ठापिता ॥

(का. ८)

लेखांक १९० – लावणी

मलयखेड सिंहासनपति जनतारक सन्मूर्ति ।
पंचमकाळी अवतरला श्रीमुनि शक्रकीर्ति ॥ धृ ॥
तौलव देशामध्ये शोभे लवनपुरी टीका ।
श्रेष्ठि असे पायापा त्याची वनिता नेमाका ॥
तिचे उदरीं उद्भवला जो ताराया लोका ।
बाळदशा मग गेली असता पाहे विवेका ॥
धर्मचंद्र भट्टारक पदि तो करि सेवा भक्ति ॥ पंचम. ॥ १
ब्रह्मचारी तो कुशल कवि गुणसागर जाणून ।
मुहूर्त पाहुनि चतुर्विध श्रीसंघ मिळवून ॥
उत्सव करुनी कळश ढाळुनी निज पदि सद्गुरुन ।
स्थापुनिया भट्टारक केला जनानंदपूर्ण ॥
वळात्कारगणनायक नामे देवेंद्रकीर्ति ॥ पंचम. ॥ ३
कवित्व करुनी कथिला ज्याने पूजादिक धर्म ।
बोधुनिया जन मार्गि लाविला दिधले व्रत नेम ॥
हारुनि पंडित वादी ज्यासी भजती सप्रेम ।
देश विदेश विजयी होउनि सज्जन विश्राम ॥
करोनिया जिनयात्रा जाला उदास तो चित्ती ॥ पंचम ॥ ५
सिरड ग्रामोद्यानी वैसुनि करि संयमवृत्ति ॥ पंचम ॥ ६
वस्त्ररहित नग्न मुद्रा पद्मासन युक्त ।

धूळि करोनि धूमर दीसे दिगंबर ज्ञान ॥
आत्मस्वरूपी मन लावुनी वचन करी गुप्त ॥
निश्चळ काया केली ते सत्तपा करुनी लग्न ॥
मृगादि वनचर विस्मय करुनी पाहाया येती ॥ पचम. ॥ ७
समाधि साधुनि धर्मध्यानी देह विसर्जीला ।
देवगतीशी जाउनि उत्तम देव तो जाला ॥
भक्तजनाचे वांछित सर्वहि पुरवू लागला ।
जन दूर दूरचे येति पादुका वदावयाला ॥
महतिसागर म्हणितो धन्य गुरुपद संप्राप्ति ॥ पचम. ॥ १०

(महतिकाव्यकुंज पृ. ९२)

लेखांक १९१ – रविवारव्रतकथा

शक्रकीर्ति गुरु मज भेटला तो कृपा करुनी वदवी मला ॥ २७
हे कथा महती जलधी वदे ऐकिता सुजना सुख ठाव दे ॥
आग्रहा करि पूतळसंघवी त्यास्तवे कथिली अतिलाघवी ॥ २८
रिद्धिपूर शिवांगजधामनी शाक वन्हियमाद्रिनिशामणी ।
मास भाद्रव शुक्ल सुपचमी अर्कवारि कथा करि पूर्ण मी ॥ २९

(उपर्युक्त पृ ११८)

लेखांक १९२ – पंचकल्याणक कथा

मलयखेड सुकेशरिविष्टरी अधिप भारति गच्छपति सुरी ।
सुगुरु तो मज वासवकीर्तिही वदवि भारति देउन उक्ति ही ॥ १४३
महतिजलनिधीने पंचकल्याणिकाची ।
शुभ कथिलि कथा हे पूर्ण त्या उत्सवाची ॥ ॥ १४६
वाळापुरी नाभिजमंदिराते यमाग्निसप्तेंदु शकाब्द पाते ।
माघांध चातुर्दशि जीववारी केली कथा हे परिपूर्ण सारी ॥ १४७

(उपर्युक्त पृ ६१)

बलात्कार गण–कारंजा शाखा

कारंजा शाखा की उपलब्ध पट्टावलीमे पहले उल्लेख योग्य आचार्य अमरकीर्ति है[24] [ले ९८]

इन के शिष्य वादीन्द्र विशालकीर्ति हुए। आपने सुलतान सिकन्दर[25], विजयनगर के महाराज विरूपाक्ष और आरगनगर के दण्डनायक देवप्प की सभाओ मे सत्कार पाया था [ले. ९९]

विशालकीर्ति के शिष्य विद्यानन्द हुए। आपने श्रीरगपट्टण के वीर पृथ्वीपति, साल्व कृष्णदेव, विजयनगर के सम्राट् श्रीकृष्णराय आदि शासको से सम्मान पाया था। आप का सम्मान सुलतान अल्लाउद्दीन ने भी किया था[25]। आप का स्वर्गवास शक १४६३ मे हुआ। [ले. १००,१०१]

विद्यानद के शिष्य देवेंद्रकीर्ति हुए। आप के शिष्य वर्धमान ने शक १४६४ में दशभक्त्यादि महाशास्त्र की रचना की।[26] [ले. १०२-३]

देवेंद्रकीर्ति के पट्टशिष्य धर्मचन्द्र हुए। आप ने शक १४८७ मे एक पद्मावती मूर्ति स्थापित की [ले. १०४–५]।

इन के अनन्तर धर्मभूषण भट्टारक हुए। आप ने शक १५०३ की फाल्गुन शुक्ल ७ को एक चन्द्रप्रभ मूर्ति स्थापित की [ले. १०६-७]।

इन के पट्टशिष्य देवेंद्रकीर्ति हुए। उपर्युक्त प्रतिष्ठा मे आप ने भी नेमिनाथ की एक मूर्ति स्थापित की [ले १०८]। एरडवेल में रहते हुए संवत् १६४१ मे आपने हर्षमती के लिए आम्बिका रास की एक प्रति

२४ इन के पूर्व गुप्तिगुप्त, कुदकुद, मयूरपिच्छ, गृध्रपिच्छ, जटासिंहनदि, लोहाचार्य, उमास्वाति, माघनदि, मेघनदि, जिनचद्र, प्रभाचन्द्र, विद्यानद, अकलंक, अनतकीर्ति, माणिक्यनंदि, नेमिचन्द्र और चारुकीर्ति का उल्लेख है।

२५ ये दोनों लोदी वश के दिल्ली के सुल्तान थे। विद्यानद के विषय मे एक अन्य शिलालेख के विवेचन के लिए देखिए Jain Antiquary IV P 1ff

२६ वर्धमान ने इस ग्रन्थ मे कोणूर गण, देशीय गण आदि अन्य परम्पराओं के विषय में भी पर्याप्त लिखा है।

लिखी [ले. १०९]। इन के शिष्य आदशेटी ने नंदिग्राम मे शक १५१४ की पौष शुक्ल १३ को मराठी द्वादशानुप्रेक्षा की एक प्रति लिखी (ले. ११०)। इन के लिखे हुए नेमिनाथ पूजा और नन्दीश्वरपूजा ये दो पाठ उपलब्ध है (ले १११-१२)।

इन के पट्टशिष्य कुमुदचन्द्र हुए। आप ने शक १५२२ की वैशाख सुदी १३ को तथा शक १५२५ की फाल्गुन शुक्ल ५ को कोई मूर्तियां स्थापित कीं (ले. ११३-१४)।[27] आप की पार्श्वनाथ पूजा मे मलयखेड के भट्टारकपीठ का उल्लेख है (ले. ११५)। आप ने ब्रह्म वीरदास को पचस्तवनावचूरि की एक प्रति दी थी (ले. ११६)।

इन के बाद धर्मचन्द्र भट्टारक हुए। इन के शिष्य पार्श्वकीर्ति ने शक १५४९ की फाल्गुन वद्य १० को मराठी ग्रन्थ सुदर्शनचरित पूरा किया (ले ११७)। पार्श्वकीर्ति का पहला नाम वीरदास था। उन की दूसरी रचना बहुतरी नामक मराठी कविता है (ले. ११८)। उन ने संवत् १६८६ मे एक कलिकुड यत्र स्थापित किया था (ले. ११९) इन ने एक और प्रतिष्ठा शक १५६९ मे कराई थी (ले १२४)। भ. धर्मचन्द्र ने संवत् १६९२ की वैशाख कृष्ण १२ को एक पद्मावती मूर्ति स्थापित की, संवत् १६९३ की मार्गशीर्ष शुक्ल २ को जयपुर मे किन्ही चरणपादुकाओ की स्थापना की, शक १५६१ की फाल्गुन शुक्ल २ को एक पार्श्वनाथमूर्ति स्थापित की, शक १५६७ मे एक चौवीसी मूर्ति प्रतिष्ठित की, तथा शक १५७० मे श्रवणबेलगोल मे एक चौवीसी मूर्ति प्रतिष्ठित की। अन्तिम प्रतिष्ठा के समय पडिताचार्य चारुकीर्ति भी उपस्थित थे [ले १२०-१२५]। द्विज वासुदेव ने आप की एक पूजा लिखी है [ले. १२६]।

---

२७ मुनि कान्तिसागरजी ने इन दोनो मे गलती से संवत् शब्द लिखा है। संवत्सरो के नामो मे ये दोनो शक ही सिद्ध होते है।

धर्मचन्द्र के बाद धर्मभूषण पट्टाधीश हुए। आप ने शक १५७२ की फाल्गुन शुक्ल ११ को एक पार्श्वनाथ मूर्ति प्रतिष्ठित की, शक १५७६ की मार्गशीर्ष शुक्ल १० को एक षोडशकारण यंत्र स्थापित किया, शक १५७७ की वैशाख शुक्ल ९ को कोई मूर्ति स्थापित की, शक १५७८ में एक पार्श्वनाथमूर्ति स्थापित की, शक १५७९ में मार्गशीर्ष शुक्ल १४ को एक चौबीसी मूर्ति स्थापित की, शक १५८० की मार्गशीर्ष शुक्ल ५ को एक नेमिनाथमूर्ति स्थापित की, शक १५८६ की फाल्गुन शुक्ल ५ को एक पार्श्वनाथमूर्ति स्थापित की तथा शक १५९७ में एक श्रेयांसमूर्ति स्थापित की। (ले. १२७–१३४)। शीतलेश की प्रार्थना पर आप ने रत्नत्रय व्रत के उद्यापन की रचना की [ले १३५]।

भट्टारक धर्मभूषण के पट्ट पर विशालकीर्ति अभिषिक्त हुए। इन का कोई स्वतन्त्र उल्लेख नहीं मिला है। इन के गुरुबन्धु अजितकीर्ति तथा शिष्य पद्मकीर्ति और इन दोनों की शिष्यपरम्परा का वृत्तान्त लातूर शाखा के प्रकरणमें संगृहीत किया है।

विशालकीर्ति के पट्टशिष्य धर्मचन्द्र हुए। आप ने शक १६०७ की फाल्गुन कृष्ण १० को एक चौबीसी मूर्ति स्थापित की, शक १६१२ की ज्येष्ठ कृष्ण ७ को एक पद्मावती मूर्ति स्थापित की [ले १३६,१३८]। आप के शिष्य गंगादास ने संवत् १७४३ की श्रावण शुक्ल ७ को श्रुतस्कन्ध कथा की एक प्रति लिखी [ले. १३७]। उन ने शक १६१२ की पौष शुक्ल १३ को पार्श्वनाथ भवान्तर की तथा शक १६१५ की आषाढ शुक्ल २ को आदित्वार कथा की रचना की [ले. १३९–४०]। सम्मेदाचलपूजा, त्रेपनक्रियाविनती, जटामुकुट और क्षेत्रपालपूजा ये गंगादास की अन्य रचनाएं हैं। इन में अन्तिम दो संघपति मेघा और शोभा की प्रार्थना पर लिखी गई थीं [ले १४२–४५]। धर्मचन्द्र ने हीरासाह के आग्रह से कैलास पर्वत की स्तुति रची [ले १४६]। उन के खोलापुर निवासी शिष्यों के लिए लिखी गई विरुदावली में उन्हें मलयखेड सिंहासन के आचार्य कहा है [ले. १४७] किन्तु यह पुराने विरुद

का अनुकरण मात्र है। वास्तव मे इन के प्रगुरु धर्मभूषण के समय से ही भट्टारक पीठ कारंजा मे स्थापित हो चुका था।

धर्मचन्द्र के बाद देवेन्द्रकीर्ति पट्टाधीश हुए। आप ने संवत् १७५६ मे एक चौबीसी मूर्ति स्थापित की [ले. १४८]। कारंजा-निवासी बघेरवाल शिष्यो के साथ आप ने शक १६४३ की पौष कृष्ण १२ को श्रवणबेलगोल की यात्रा की [ले १४९]। इसी वर्ष आप ने कल्याणमन्दिर पूजा लिखी तथा विट्ठल के आग्रह से विषापहार पूजा भी लिखी। ये रचनाए क्रमश कारंजा और साहार मे हुई [ले. १५०–५१]। शक १६५० की पौष शुक्ल २ को आप ने नासिक के पास त्रिबक ग्राम के पास के गजपथ पर्वत की वदना की [ले १५२] व ग्यारह दिन के बाद मागीतुगी पर्वत की यात्रा की [ले. १५३]। इस समय जिनसागर, रत्नसागर, चद्रसागर, रूपजी, वीरजी आदि छात्र आप के साथ थे। इस के बाद गिरनार की यात्राके लिए जाते हुए आप सूरत ठहरे जहा माघ शुक्ल १ को आणद नामक श्रावकने णायकुमार चरिउ की एक प्रति आपको अर्पित की [ले १५४]। शक १६५१ की वैशाख कृष्ण १३ को आपने केशरियाजी की वदना की [ले. १५५] तथा उसी वर्ष मार्गशीर्ष शुक्ल ५ को तारगा पर्वत और कोटिशिला की वदना की (ले. १५६)। इसी वर्ष पौष कृष्ण १२ को गिरनारकी और माघ कृष्ण ४ को शत्रुजय पर्वतकी यात्रा आपने पूरी की [ले. १५७-५८]। सूरत मे आप ठहरे थे उस समय सवत् १७८७ की भाद्रपद शुक्ल ५ को आर्यिका पासमती के लिए आपने श्रीचन्द्र विरचित कथाकोष की एक प्रति लिखवाई [ले १५९]। आपकी लिखी एक नन्दीश्वर आरती उपलब्ध है [ले १६०]। आगरा निवासी बनारसीदास के पुत्र जीवन-दास को पहले आपके विषय मे अनादर था, किन्तु सूरत के चातुर्मास मे आप की विद्वत्ता देख कर वे आप के शिष्य बन गये। बुद्धिसागर और रूपचद ने भी आपकी स्तुति की [ले १६१]। आप के शिष्य

माणिकनन्दि ने शक १६४६ की भाद्रपद शुक्ल १४ को अनन्तनाथ आरती की रचना की [ले. १६२]।

भ. देवेन्द्रकीर्ति के शिष्यों में जिनसागर प्रमुख थे। इनने शक १६४६ की चैत्र कृष्ण ५ को आदित्यव्रत कथा लिखी. शक १६४९ में कारंजामें जिनकथा की रचना की, शक १६५२ की आश्विन शुक्ल १२ को पद्मावती कथा तथा शक १६६० में पुष्पांजलि कथा पूरी की [ले. १६३–६६]। लवणांकुश कथा, अनन्त कथा और सुगन्धदशमी कथा ये इनकी अन्य कथाएं गिरड ग्राम में लिखी गई थीं [ले. १६०–६९][२८]। वहीं शक १६६६ की वैशाख शुद्ध द्वादशी को आप ने जीवंधरपुराण लिखा [ले. १७०]। नन्दीश्वर उद्यापन, आदिनाथ स्तोत्र, शान्तिनाथ-स्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, क्षेत्रपालस्तोत्र, ज्येष्ठ जिनवर पूजा, और शान्तिनाथ आरती ये आप की अन्य रचनाएं हैं [ले. १७१-१७८]।

देवेन्द्रकीर्ति के पट्ट पर धर्मचन्द्र भट्टारक हुए। आप ने संवत् १७९३ में एक पद्मावती मूर्ति स्थापित की तथा शक १६९२ की वैशाख कृष्ण १२ को एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की (ले १७९–८०)। संवत् १८३१ की श्रावण शुक्ल १३ को एक ऋषिमंडल यंत्र भी आप ने स्थापित किया [ले १८३]। आप के शिष्य वृषभ ने शांतमती और इंदुमती के आग्रह पर संवत् १८२८ में रविव्रत कथा लिखी तथा संवत् १८३० की ज्येष्ठ कृष्ण ५ को निर्दोषसप्तमीव्रत का उद्यापन लिखा (ले. १८१–८२)। इन ने शक १६९६ की भाद्रपद शुक्ल ५ को नववाडी नामक स्फुट कविता रची तथा संवत् १८३३ में कर्णखेट में पुनः रविवार व्रत कथा की रचना की [ले १८४–८५]।

---

२८ पहली दो कथाओंमें रचनाशक दिया है किन्तु पुत्र शब्द से कौनसा अंक लिया जाय यह स्पष्ट नहीं है।

धर्मचन्द्र के पट्ट शिष्य देवेंद्रकीर्ति हुए। आप ने कडतासाह के पुत्र की प्रार्थना पर अकृत्रिम चैत्यालय जयमाला की रचना सवत् १८४० मे की [ले १८६]। आप ने शक १७०६ मे नन्दीश्वर पूजा और अकृत्रिम चैत्यपूजा की रचना की [ले. १८७--८८]। आप के पिता पायापा और माता नेमाका तौलव देश के लवनपुर मे रहते थे। अन्त समय शिरड ग्राम मे रहते हुए आपने दिगम्बर मुद्रा धारण की थी [ले. १९०]। आप का स्वर्गवास सवत् १८५० की कार्तिक कृष्ण १० को हुआ (ले १८९)। आप के प्रमुख शिष्य महतिसागर थे। आपकी मराठी रचनाओका एक सग्रह ' महति काव्यकुज ' नाम से प्रकाशित हो चुका है। आप ने रिद्धिपुर मे शक १७२३ की भाद्रपद शुक्ल ५ को पुतळमघवी के आग्रह पर रविवार व्रत कथा लिखी तथा शक १७३२ की माघ कृष्ण १४ को आदिनाथ पचकल्याणिक कथाकी रचना पूर्ण की (ले. १९१-९२)[२९]।

---

२९ स्थानिक अनुश्रुति से पता चलता है कि देवेंद्रकीर्ति के बाद भ. पद्मनन्दि पट्टाधीश हुए। सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि की वन्दना करते हुए अपघात से इन की मृत्यु हुई। इन की समाधि मुक्तागिरि के पास ही खरपी नामक गाव मे है। इन ने सवत् १८७९ में ही कालुराम नामक शिष्यका पट्टाभिषेक कर उन का नाम देवेन्द्रकीर्ति रखा था। देवेन्द्रकीर्ति कोई साठ वर्ष पट्टाधीश रहे। नागपुर, विदर्भ और मराठवाडाकी बघेरवाल, खडेलवाल, परवार, नेवी, सैतवाल आदि सभी जैन जातियों के प्रमुख व्यक्तियोंसे आपका सम्पर्क रहा। नागपुर, रामटेक, कारजा आदि स्थानोंमे आप के द्वारा विशाल मूर्तियो की स्थापना हुई थी। तेरापथी सम्प्रदाय के क्षुल्लक धर्मदासजी अमरावती मे आप से मिलकर बडे प्रभावित हुए। बाद मे उनने सम्यग्ज्ञानदीपिका आदि आध्यात्मिक ग्रन्थों का निर्माण किया। देवेन्द्रकीर्ति ने सवत् १९३६ मे रुखबदास नामक शिष्यका पट्टाभिषेक कर उन का नाम रत्नकीर्ति रखा था। इस के कोई ५ वर्ष बाद सवत् १९४१ मे उन का स्वर्गवास हुआ। भ. रत्नकीर्ति ने गुरु की समाधि अच्छी तरह निर्माण कर उसके चारों ओर बगीचा लगाने की व्यवस्था की थी। रत्नकीर्तिका स्वर्गवास अचलपुर मे सवत् १९५३ मे हुआ। उन के कोई चार वर्ष बाद देवेन्द्रकीर्ति

बलात्कार गण–कारंजा–कालपट

१ अमरकीर्ति
|
२ विशालकीर्ति
|
३ विद्यानंद [संवत् १५९८]
|
४ देवेन्द्रकीर्ति (संवत् १५९९)
|
५ धर्मचन्द्र [संवत् १६२२]
|
६ धर्मभूषण [संवत् १६३८]
|
७ देवेन्द्रकीर्ति [सं. १६३८–१६४९]
|
८ कुमुदचन्द्र [सं १६५६–१६७०]
|
९ धर्मचन्द्र [सं. १६८४–१७०४]
|
१० धर्मभूषण [स १७०७–१७३२]

११ विशालकीर्ति | अजितकीर्ति, [लातूर शाखा]

१२ धर्मचन्द्र [सं.१७४२–१७४९] | पद्मकीर्ति [लातूर शाखा]
|
१३. देवेन्द्रकीर्ति [सं.१७५६–१७८६]
|

इस पट्टपर संवत् १९५७ में अभिषिक्त हुए। इन का स्वर्गवास संवत् १९७३ मे हुआ। इन के बाद कारंजाकी भट्टारक पीठ पर कोई भट्टारक नहीं हुए। कारंजाका बलात्कार गण मन्दिर का शास्त्र भाण्डार बडा समृद्ध है।

१४ धर्मचन्द्र [स. १७९३–१८३३]

|

१५ देवेंद्रकीर्ति (स. १८४०–१८५०)

|

१६ पद्मनन्दि [स. १८५०–१८७९]

|

१७ देवेंद्रकीर्ति [स १८७९–१९४१]

|

१८ रत्नकीर्ति (स. १९३६–१९५३)

|

१९ देवेंद्रकीर्ति (स. १९५७–१९७३)

४. बलात्कार गण – लातूर शाखा

लेखांक १९३ – ? मूर्ति अजितकीर्ति

शके १५७३ खर नाम संवत्सरे फाल्गुणमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिलकदान श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीधर्मचंद्र तत्पट्टे भ. धर्मभूषण तदाम्नाये भ अजितकीर्तिउपदेशात् जैन ज्ञाति कनयातुक सेटी च ताहु सेटी कुटुंबसहितेन नित्य प्रणमंति ॥

(बाळापुर,अ ४ पृ ५०५)

लेखांक १९४ – नंदीश्वर मूर्ति विशालकीर्ति

शके १५९२ वैसाख · मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ कुमुदचंद्र तत्पट्टे भ. अजितकीर्ति तत्पट्टे भ. विशालकीर्ति उपदेशात् सोनो पंडित रोडे ॥

(पा. ४)

लेखांक – १९५ आदिपुराण महीचंद्र

शके सोळाशे अष्टादश । धाता नाम संवत्सर सुरस ॥
माघ वद्य पंचमी तिथीस । वार रवि पै ॥
भरतक्षेत्रामध्ये जाण । आशापुर पुण्यपावन ॥
मूळनायक शांतिजिन । चैत्याला पै ॥
विशाळकीर्तिचे कृपेण । महीचंद्रे अज्ञानपण ॥
ग्रंथ केला संपूर्ण । स्वहस्ते पै ॥

[त्रिविध ज्ञान विस्तार, मे १९२४]

लेखांक १९६ – गरुडपंचमीकथा

कुंदकुंदाचार्यान्वय सूरि । धर्मचंद्र पटाचारि ॥
तदा आम्नाय धर्माचारी । अजितकीर्ति पै ॥ ८६
तत्पट्टोधर विशालकीर्ति । विशाळ आहे तयाची मति ॥
तत्पदपंकजसेवक यति । महिचंद्र ॥ ८७

कथा केली अज्ञानपने । मज नाही वाचा ज्ञान ॥
श्रोते असती जे सज्ञान । तेहि सोधिजे ॥ ८९

[ना. ८]

लेखांक १९७ – अठाईव्रतकथा

तदाम्नाय गुरु अजितकीर्ति । तत्पटी सूरि विशालकीर्ति ॥
महाविशाल तयाची मति । धर्म स्थापिला ॥ १४६
महीचंद्र म्हणे मी रंक ।

(ना. ८)

लेखांक १९८ – नेमिनाथ भवांतर

सूरि विशालकीर्ति । धर्मस्थापक मूर्ति ॥
तस्य सिप्य महीचद्र । म्हने हो तया प्रति ॥
नेमिनाथभवांतर । याची आयका फलश्रुती ॥
निश्चय श्रवण केलिया । अपुत्रिका पुत्रप्राप्ति ॥ ७१

[ना. १७]

लेखांक १९९ – काली गोरी संवाद

आदि अंत नमूं जिन चतुर्विंशति जान
चौदासे वावन गण वंदे भाव धरिके ।
सारदा स्वामिनी मोरी अज्ञान तिमिर हरि
पूजे मन भाव धरि भ्रांति दूर करिके ॥
गुरुचरण सिर धरि ध्याय चित सुद्ध करि
विशालकीर्ति सूरि महामुनिरायके ॥
कालि गोरी सांवलीको वाद सुनो ताको
महीचद्र सूरि नीको कहे भव्यलोकके ॥ १

[म ७३]

लेखांक २०० – [कौतुक सार]

सके १६३३ खर नाम समस्रे भाद्रपदमासे वद पक्षे पचमी वार गुरु आसापुरनगरे श्रीशांतिनाथचैत्यालये भ श्रीमहिचद्र तस्य सीसे ब्रह्म गोमट-

सागर लीखीत स्वयं पठनार्थ सुभं भवतु ॥

[पा. १]

लेखांक २०१ – शीलपताका

कुंदकुंदाचार्यान्वये वोलती । अजितकीर्ति महायती ॥
तत्पटी विसालकीर्ती । धर्मस्थिति चालवी सदा ॥ ५४६
तत्पटी महीचंद्र महामुनी । सदा समताभाव त्याहाचे मनीं ॥
अवोध जिवासी धर्म ठेवनी । दाविती सदा ॥ ५४७
महीचंद्र माझी माउली । थोर कृपेची साउली ॥
महाकीर्तिस ठेवणी दाविली । शीलपताकेची ॥ ५५१

(म. ८९)

लेखांक २०२ – [पद्मावती सहस्रनाम] महीभूषण

सके १६४० विलंवि नाम संवत्सरे वैसाक वद पंचमि ५ गुरुवारे संपूर्ण लिखितं । कारंजा माहानगरे श्रीचद्रप्रभचैत्यालय लिखितं । श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुदाचार्यान्वये भ. श्री५महीभूसनगुरुः ॥

[पा. २]

लेखांक २०३ – (बाला पूजा)

सक १६४३ पल्लव नाम संवत्सरे माघ वदि चउति बुधवार तद्दिने भ श्रीमहिभूषण तस्य सिस्य गौतमसागर स्वहस्तेन लिखित स्वयं पठनार्थं ॥ सुभमस्तु ॥

[पा. ३]

लेखांक २०४ – श्रेणिक चरित्र चंद्रकीर्ति

श्रीशीलाचार्यांचे अंशी । विशाळकीर्ति ज्ञानराशी ॥ २६७
त्याचे अंशी महिचद्र । इंदु दुजा करविंद्र ॥
महीभूषण शांतींद्र । शिष्य होती जयाचे ॥ २६८
शांतिकीर्तीचे अंशी । कल्याणकीर्ति महाऋषी ॥

त्याचे अंशी ज्ञानराशी । गुणकीर्ति सागर ॥ २६९
त्याचा शिष्य क्षमाशील । जो चंद्रकीर्ति विशाळ ॥
त्याचे मम माथा करकमळ । गुरु दयाळ तो माझा ॥ २७०
त्याचे अंशी महारत्न । मानिकनंदी निर्ग्रंथ पूर्ण ॥
त्याचा सजन जनार्दन । श्रावक जैन गृहाश्रमी ॥ २७१
शके सोळाशे सत्याण्णव । वद्य पक्ष माघ अपूर्व ॥
सप्तमी वार शनि राव । तिसरा याम जाण पा ॥ २७८

[अध्याय ४०, च १९०४]

लेखांक २०५ – हरिवंशपुराण अजितकीर्ति

गुरु अन्वय झाले भट्टारक । मुनि देवेंद्रकीर्ति सुरेख ॥
त्याचे पट्टी जाले भट्टारक । कुमुदचंद्र ॥ ५५
कुमुदचंद्राचे पटधारी । धर्मचंद्र झाले वागेस्वरी ॥
तयाचे पट्टी उद्योतकारी । जाहाले गुरु ॥ ५६
गुरु जाले हो धर्मभूषण । तयाची आम्नाय विचक्षण ॥
भट्टारक विशाळकीर्ति जाण । गुरु आमुचे ॥ ५७
तयाचे पटी हो ज्ञानजोती । भट्टारक श्रीअजितकीर्ती ॥
माउली आमुची पुण्यमूर्ती । ते व्हावी आम्हा ॥ ५८
तयाचा शिष्य जो ब्रह्मचारी । पुण्यसागर कवित्व करी ॥
मान्हाष्ट भाषा टीका उच्चारी । हरिवंश कथा ॥ ५९

(ना १)

लेखांक २०६ – आदितवार कथा

श्रीमूलसंघ वागेश्वरी गछ । बलात्कार गण जाणिजे प्रत्यक्ष ॥
गुरु अजितकीर्तीने केली साक्ष । श्रवणमात्रे ॥ १७९
सिक्ष विनति करितो तुम्हा । कवि बोले पुण्य ब्रह्मा ॥
स्वामी कृपा करावी आम्हा । जन्मोजन्मी ॥ १८०

[ना. १६]

लेखांक २०७ – सम्यग्दर्शन यंत्र　　पद्मकीर्ति

सके १६०१ फाल्गुन सुदि ११ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे भ. श्रीपद्मकीर्ति सदुपदेशात् श्रीपद्मावतीपल्लीवालज्ञातौ अडनाव कुस्तानी पानसी भार्या मगनाई .....॥

(पा. १२५)

लेखांक २०८ – ? मूर्ति

शके १६०७ वर्षे मार्गसिर सुद १० मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ. विशालकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ पद्मकीर्तिगुरूपदेशात् पाससा सेठ भार्या पसाई ... ॥

(नादगाव, अ. ४ पृ. ५०५)

लेखांक २०९ – ? यंत्र

शक १६०७ मार्गशिर शुक्ल १० बुधे श्रीमूलसघे . भ. श्रीविशालकीर्तितत्पट्टे भ श्रीपद्मकीर्ति तयोः उपदेशात् जाती सोहितवाल .....॥

(अहार, अ. १० पृ. १५६)

लेखांक २१० – चारित्र यंत्र　　विद्याभूषण

सके १६०८ फागण वदी १० श्रीमूलसंघे . भ. श्रीविशालकीर्ति तत्पट्टे भ श्रीपद्मकीर्ति तत्पट्टे भ श्रीविद्याभूषण .... ॥

(पा. १२०)

लेखांक २११ – आदिनाथ मूर्ति　　हेमकीर्ति

स १७५२ माघ वदी ८ श्रीमूलसघे भ श्रीहेमकीर्ति.. ॥

(ति. वे. खेडकर, नागपुर)

लेखांक २१२ – चौवीसी मूर्ति

शक १६२६ तारण संवत्सरे माह सुद १३ मूलसघ बलात्कारगण भ. हेमकीर्ति उपदेशात् सितळसगई प्रतिष्ठित ॥

[पा. १६]

लेखांक २१३ – चौवीसी मूर्ति

शक १६२६ तारण नाम सवत्सरे माहो सुद १३ शुक्रे मूलसंघे भ. पद्मकीर्ति तत्पट्टे भ. विद्याभूषण तत्पट्टे भ. हेमकीर्तिउपदेशात् उज्जैनी पल्लीवाल ज्ञातीय सिंगवी लखमप्रसादजी भार्या गोमाई 'प्रतिष्ठितं भीसीनगरे चंद्रनाथचैत्यालये··· ·॥

[पा ४८]

लेखांक २१४ – जिनपूजा छप्पय

सोलसके अडतालिसमे सुध आपाढमे छठिके दिन रगं ।
हेमसुकीरति की कृति येह जिनेश्वर अष्ट प्रकारिय चंगं ॥ ९

[ना. १२४]

लेखांक २१५ – दशलक्षण यंत्र

सक १६५३ वैसाख सुद १४ श्रीमूलसघे वलात्कारगणे भ हेमकीर्तिउपदेशात् श्रीश्रीमालज्ञातौ महासा नित्यं प्रणमंति ॥

(गो. स. नाकाडे, नागपुर)

लेखांक २१६– षोडशकारण यंत्र

शक १६५३ वर्षे वैसाख सुदि १ मूलसघे वलात्कारगणे भ. पद्मकीर्ति तत्पट्टे भ. विद्याभूषण तत्पट्टे भ हेमकीर्ति उपदेशात् · ॥

[सिंदी, अ. ४ पृ ५०४]

लेखांक २१७ – रामटेक छंद

देवगडचा दहे परगणा । विद्याभूसनाचि आमना ॥
गछ वाळात्कार जाना । समस्त लोक ॥ १४
पाछाव झाडीचा म्हनती । धन्य धन्य हेमकीर्ति ॥
मकरंद पाड्या त्याहचे चित्ती । नाव धारक ॥ १५

(म १२५)

लेखांक २१८ - शांतिनाथ मूर्ति अजितकीर्ति

संमत १८३२ मन्मथ नाम संवत्सरे मूलसंघे बलात्कारगणे··· · भ. पद्मकीर्ति तत्पट्टे भ. विद्याभूषण तत्पट्टे भ हेमकीर्ति तत्पट्टे भ. अजितकीर्ति फाल्गुण मासे शुद २ ॥

[पा. १०२]

लेखांक २१९ - पार्श्वनाथ मूर्ति

शक १६९७· · नाम संवत्सरे भ. अजितकीर्ति उपदेशात् फाल्गुण सुद २ ॥

(पा. ३९)

लेखांक २२० - पार्श्वनाथ मूर्ति

समत १८५७ शके १७२२ भादवा सुदी १० सोमवासरे कुंदकुंदाचार्यान्वये सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ. श्रीअजितकीर्ति तस्य उपदेशात् · परवारज्ञाते ·· ॥

(परवार मन्दिर, नागपुर)

लेखांक २२१ - नागेन्द्रकीर्ति

नाम घेतले गुरु दाखले चद्रकीर्ति पदी लीन झाला ।
नागेंद्रकीर्ति पद करोनी सभेमाजी बोलिला ॥ ४

(जिन पद्यरत्नावली, पृ. २०)

लेखांक २२२ -

चद्रकीर्ति निर्वाण स्वामी जग वंदनीय झाला ।
नागेंद्रकीर्ति दीक्षित होउनि नमोकार त्या दिधला ॥ ४

(उपर्युक्त, पृ. २१)

बलात्कार गण – लातूर शाखा

इस शाखा का आरम्भ भ. अजितकीर्ति से हुआ। इन के दीक्षागुरु कारंजा शाखा के भ. कुमुदचन्द्र थे (ले. १९४)। किन्तु कुमुदचन्द्र की मुख्य पट्टपरम्परा मे धर्मचन्द्र और धर्मभूषण ये भट्टारक हुए इस लिए अजितकीर्ति ने धर्मभूषण का भी आचार्यरूप में उल्लेख किया है (ले. १९३)। अजितकीर्ति ने शक १५७३ की फाल्गुन शु. ५ को कोई मूर्ति स्थापित की (ले. १९३)।

इनके बाद विशालकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने शक १५९२ के वैशाख मे एक नन्दीश्वर मूर्ति स्थापित की (ले. १९४)।

विशालकीर्ति के पट्टशिष्य महीचन्द्र हुए। आप ने शक १६१८ की माघ वद्य ५ को आशापुर मे मराठी ग्रन्थ आदिपुराण पूर्ण किया (ले. १९५)। गरुडपंचमी कथा, अठाई व्रत कथा, नेमिनाथ भवातर और काली गोरी संवाद ये इन की अन्य रचनाए है (ले. १९६–९९)। इन के शिष्य गोमटसागर ने शक १६२३ की भाद्रपद कृ. ५ को कौतुकसार नामक ग्रन्थ की एक प्रति लिखी (ले. २००)। इन के दूसरे शिष्य महाकीर्ति ने शीलपताका नामक कथाग्रन्थकी रचना की थी (ले. २०१)।

महीचन्द्र के पट्टशिष्य महीभूषण हुए। इन ने शक १६४० की वैशाख कृ. ५ को पद्मावती सहस्रनाम की एक प्रति कारंजा मे लिखी (ले २०२)। इन के शिष्य गौतमसागर ने शक १६४३ की माघ कृ. ४ को बाला पूजा की प्रति लिखी (ले २०३)।

महीभूषण के बाद इस परम्परा में क्रमश शान्तिकीर्ति, कल्याणकीर्ति, गुणकीर्ति, चद्रकीर्ति और माणिकनन्दि ये भट्टारक हुए। चद्रकीर्ति के शिष्य जनार्दन ने शक १६९७ की माघ कृ. ७ को मराठी श्रेणिक चरित्र पूरा किया (ले २०४)।

लातूर शाखा की दूसरी परम्परा कारंजा शाखा के भ. विशालकीर्ति (द्वितीय) से आरभ होती है। इन के शिष्य अजितकीर्ति के शिष्य पुण्य-

सागर ने मराठी हरिवंशपुराण पूर्ण किया[२०] (ले. २०५)। पुण्यसागर की दूसरी रचना आदितवार कथा है (ले २०६)।

विशालकीर्ति के दूसरे शिष्य पद्मकीर्ति हुए। आप ने शक १६०१ की फाल्गुन शु. ११ को एक सम्यग्दर्शन यन्त्र स्थापित किया (ले.२०७), शक १६०७ में एक मूर्ति तथा एक यन्त्र स्थापित किया (ले. २०८-९)।

पद्मकीर्ति के बाद विद्याभूषण पट्टाधीश हुए। इन ने शक १६०८ की फाल्गुन व. १० को एक सम्यक्चारित्र यत्र स्थापित किया (ले. २१०)।

विद्याभूषण के पट्टशिष्य हेमकीर्ति हुए। आपने संवत् १७५२ की माघ व. ८ को एक आदिनाथ मूर्ति तथा शक १६२६ की माघ शु. १३ को दो चौबीसी मूर्ति स्थापित की (ले. २११-१३)। शक १६४८ की आषाढ शु. ६ को आप ने जिनपूजा की रचना की (ले. २१४)। शक १६५३ के वैशाख मे आपने एक षोडशकारण यत्र और एक दशलक्षण यंत्र भी स्थापित किया (ले २१५-१६)। मकरन्द की एक कविता से ज्ञात होता है कि रामटेक क्षेत्र के विभाग मे हेमकीर्ति का शिष्यवर्ग रहता था (ले. २१७) तथा यह क्षेत्र उस समय देवगढ राज्य के अन्तर्गत था।

हेमकीर्ति के बाद अजितकीर्ति पट्टाधीश हुए। आप ने शक १६९७ की फाल्गुन शु. २ को एक शान्तिनाथ मूर्ति तथा एक पार्श्वनाथ मूर्ति प्रतिष्ठित की (ले २१८-१९)। आप ने शक १७२२ की भाद्रपद शु १० को एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की (ले २२०)।

अजितकीर्ति के बाद चन्द्रकीर्ति पट्टाधीश हुए। इन के पट्टशिष्य नागेन्द्रकीर्ति ने मराठीमें कई पदोकी रचना की है (ले. २२१-२२)।[२१]

---

२० यह पुराण उज्जतकीर्ति के शिष्य जिनदास ने देवगिरिपर आरंभ किया था लेकिन उनका बीच मे ही स्वर्गवास हो जानेसे पुण्यसागरने उसे पूरा किया।

२१ नागेन्द्रकीर्ति के बाद विशालकीर्ति भट्टारक हुए। तक्त लातूर, गादी नागपुर, मठ पूना ऐसी इन की व्यवस्था थी। इन का स्वर्गवास संवत् १९४८ की

बलात्कार गण–लातूर शाखा–काल पट

धर्मभूषण

१	अजितकीर्ति [संवत् १७०८]	विशालकीर्ति
२	विशालकीर्ति [संवत् १७२६]	पद्मकीर्ति[स.१७३६-४३]अजितकीर्ति
३	महीचन्द्र [संवत् १७५३]	विद्याभूषण [संवत् १७४४]
४	महीभूषण [संवत् १७७४]	हेमकीर्ति [स. १७५२–१७८७]
५	शान्तिकीर्ति	अजितकीर्ति [संवत् १८३२-१८५७]
६	कल्याणकीर्ति	चन्द्रकीर्ति
७	गुणकीर्ति	नागेन्द्रकीर्ति
८	चन्द्रकीर्ति	विशालकीर्ति
९	माणिकनन्दि [संवत् १८३२]	विशालकीर्ति [वर्तमान]

दीपावली को हुआ। इस के २२ वर्ष बाद संवत् १९७१ की कार्तिक शु. १ को वर्तमान भ. विशालकीर्तिजी का पट्टाभिषेक हुआ। आप ने 'भावांकुर' नामक संस्कृत और मराठी कविताओं का एक संग्रह लिखा है। इस समय लातूर पीठ सैतवाल जैन समाज का गुरुपीठ माना जाता है।



स्व भ विशालकीर्तिजी (लातूर)
(स्वर्गवास स. १९४८)

संदर्भ-पृष्ठ ८८



वलात्कार गण–लातूर शाखा के वर्तमान भट्टारक
श्रीविशालकीर्ति (पट्टाभिषेक संवत् १९७१)

संदर्भ–पृष्ठ ८८

५. बलात्कार गण – उत्तर शाखा

लेखांक २२३ – पट्टावली वसंतकीर्ति

संवत १२६४ माह सुदि ५ वसंतकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष १२ दीक्षा वर्ष २० पट्ट वर्ष १ मास ४ दिवस २२ अंतर दिवस ८ सर्व वर्ष ३३ मास ५ बघेरवाल जाति पट्ट अजमेर ॥

(ब. १०)

लेखांक २२४ – गुर्वावली

सैद्धान्तिकोभयकीर्तिर्वनवासी महातपाः ।
वसंतकीर्तिर्व्याघ्रांह्रिसेवितः शीलसागरः ॥ २१

(भा १ कि. ४ पृ. ५२)

लेखांक २२५ –

कलौ किल म्लेच्छादयो नग्नं दृष्ट्वोपद्रवं यतीनां कुर्वन्ति तेन मण्डपदुर्गे श्रीवसन्तकीर्तिना स्वामिना चर्यादिवेलाया तट्टीसादरादिकेन शरीरमाच्छाद्य चर्यादिकं कृत्वा पुनस्तन्मुञ्चन्तीत्युपदेशः कृत संयमिनां इत्यपवादवेषः ।

[षट्प्राभृतटीका पृ. २१]

लेखांक २२६ – गुर्वावली विशालकीर्ति

तस्य श्रीवनवासिनस्त्रिभुवनप्रख्यातकीर्तेरभूत्
शिष्योनेकगुणालयः शमयमध्यानापसागरः ।
वादीन्द्रः परवादिवारणगणप्रागल्भ्यविद्रावण.
सिंहः श्रीमति मण्डपेतिविदितस्त्रैविद्यविद्यास्पदम् ॥ २२
विशालकीर्तिर्वरवृत्तमूर्ति. ।

(भा. १ कि. ४ पृ. ५२)

लेखांक २२७ – गुर्वावली शुभकीर्ति

ततो महात्मा शुभकीर्तिदेव. ।

एकान्तरा‌द्युग्रतपोविधाता धातेव सन्मार्गविधेर्विधाने ॥ २३

(उपर्युक्त)

लेखांक २२८ – ? मूर्ति

संवत् १३८० वर्षे माघ सुदि ७ सनौ श्रीनंदिसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे मूलसघे कुदकुंदाचार्यान्वये भ. शुभकीर्तिदेव तत्शिष्य सर्वाति ॥

(चूलगिरि, अ. १२ पृ. १९२)

लेखांक २२९ – गुर्वावली धर्मचंद्र

श्रीधर्मचन्द्रोजनि तस्य पट्टे हमीरभूपालसमर्चनीय. ।
सैद्धान्तिकः सयमासिन्धुचन्द्र. प्रख्यातमाहात्म्यकृतावतारः ॥ २४

[भा १ कि. ४ पृ. ५३]

लेखांक २३० – पट्टावली

सवत १२७१ श्रावण सुदि १५ धर्मचंद्रजी गृहस्थ वर्ष १८ दीक्षा वर्ष २४ पट्ट वर्ष २५ दिवस ५ अतर दिवस ८ सर्व वर्ष ६५ दिवस १२ जाति हूंवड पट्ट अजमेर ॥

(व. १९)

लेखांक २३१ – गुर्वावली रत्नकीर्ति

तत्पट्टेजनि रत्नकीर्तिरनघ' स्याद्वादविद्यांबुधि. ।
नानादेशविवृत्तशिष्यनिवह. प्राच्यांघ्रियुग्मो गुरुः ॥

(भा. १ कि. ४ पृ. ५३)

लेखांक २३२ – पट्टावली

संवत १२९६ भादवा वदि १३ रत्नकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष १९ दीक्षा वर्ष २५ पट्ट वर्ष १४ दिवस ११ अंतर दिवस ६ सर्व वर्ष ५५ दिवस १९ हूंवड जाति पट्ट अजमेर ॥

(व. १०)

लेखांक २३३ – पट्टावली प्रभाचंद्र

संवत १३१० पौष सुदि १५ प्रभाचद्रजी गृहस्थ वर्ष १२ दीक्षा वर्ष १२ पट्ट वर्ष ७४ मास ११ दिवस १५ अतर दिवस ८ सर्व वर्ष ९८ मास ११ दिवस २३ प्रभाचद्रजीकै आचार्य गुजरातमै छो सो वठै एकै श्रावक प्रतिष्टानै प्रभाचद्रजीनै बुलाया सो वै नाया तदि आचार्यनै सूरिमंत्र दे भट्टारककरि प्रतिष्टा कराई तदि भ पद्मनंदिजी हुवा पाषाणकी सरस्वती मुढै बुलाई। जाति ब्राह्मण पट्ट अजमेर ॥

(ब. १०)

लेखांक २३४ – गुर्वावली

पट्टे श्रीरत्नकीर्तेरनुपमतपस. पूज्यपादीयशास्त्र–
व्याख्याविख्यातकीर्तिर्गुणगणनिधिप' सत्क्रियाचारुचंचुः।
श्रीमानानन्दधाम प्रतिबुधनुतमामानसंदायिवादो
जीयादाचन्द्रतारं नरपतिविदित. श्रीप्रभाचंद्रदेव' ॥ २७

[भा १ कि ४ पृ. ५३]

लेखांक २३५ – (आराधना पंजिका)

संवत १४१६ वर्षे चैत्र सुदि पचम्यां सोमवासरे सकलराजशिरोमुकुट-माणिक्यमरीचिपिंजरीकृतचरणकमलपादपीठस्य · श्रीपेरोजसाहे. सकल--साम्राज्यधुरीविभ्राणस्य समये श्रीदिल्ल्यां श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये सरस्वती-गच्छे बलात्कारगणे भ. श्रीरत्नकीर्तिदेवपट्टोदयाद्रितरुणतरणित्वमुर्वीकुर्वाण भ. श्रीप्रभाचंद्रदेव तत्सिष्याणा ब्रह्म नाथूराम इत्याराधनापंजिकाया ग्रन्थ आत्मपठनार्थं लिखापितं ॥

[पूना, अ. १ पृ २१३]

लेखांक २३६ –

सिरि पहचंदु महागणि पावणु बहुसीसेंहि सहिउ य विरावणु।
···पट्टणे खभायच्चे धारणयरि देवगिरि।
मिच्छामय विहुणंतु गणि पत्तउ जोइणिपुरि ॥
तहिं भव्वहिं सुमहोच्छउ विहियउ सिरिरयणकित्तिपट्टे णिहियउ।

महमदसाहिमणु रंजियउ विज्जहि वाइयमणु भंजियउ ॥

(बाहुबलिचरित of धनपाल, अ ७ पृ ८३)

लेखांक २३७ – पट्टावली

पद्मनंदी

सवत १३८५ पोस सुदि ७ पद्मनंदीजी गृहस्थ वर्ष १५ मास ७ दीक्षा वर्ष १३ मास ५ पट्ट वर्ष ६५ दिवस १८ अतर दिवस १० सर्व वर्ष ९९ दिवस २८ जाति ब्राह्मण पट्ट दिल्ली ॥

[ब. १०]

लेखांक २३८ – गुर्वावली

श्रीमत्प्रभाचंद्रमुनींद्रपट्टे शश्वत्प्रतिष्ठ. प्रतिभागरिष्ठ ।
विशुद्धसिद्धान्तरहस्यरत्न–रत्नाकरो नंदतु पद्मनंदी ॥ २८

(भा. १ कि ४ पृ. ५३)

लेखांक २३९ – आदिनाथ मूर्ति

ॐ सवत १४५० वर्षे वैशाख सुदी १२ गुरौ श्रीचाहुवानवंशकुशेशय-मार्तण्डसारवै विक्रमन्य श्रीमत् सरूप भूपग्वान्वय झुडदेवात्मजस्य भूवज-शक्रस्य श्रीसुवरन्नृपते. राज्ये वर्तमान श्रीमूलसंघे भ. श्रीप्रभाचंद्रदेव तत्पदे श्रीपद्मनदिदेव तदुपदेशे गोलाराडान्वये ॥

(भा. प्र. पृ. ८)

लेखांक २४० – भावनापद्धति

श्रीमत्प्रभेन्दुप्रभुवाक्यरश्मिविकाशिचेतःकुमुदप्रमोदात् ।
श्रीभावनापद्धतिमात्मशुद्ध्यै श्रीपद्मनंदी रचयांचकार ॥ ३४

[अ. ११ पृ. २५९]

लेखांक २४१ – जीरापल्ली–पार्श्वनाथ स्तोत्र

श्रीमत्प्रभेन्दुचरणाम्बुजयुग्मभृंगश्चारित्रनिर्मलमतिर्मुनिपद्मनंदी ।
पार्श्वप्रभोर्विनयनिर्भरचित्तवृत्तिर्भक्त्या स्तवं रचितवान् मुनिपद्मनंदी ॥१०

[अ ९ पृ २५०]

बलात्कार गण – उत्तर शाखा

बलात्कार गण की उत्तर भारत की पीठो की पट्टावलियोमें वसन्तकीर्ति पहले ऐतिहासिक भट्टारक प्रतीत होते है।[32] पट्टावलियो के अनुसार ये संवत् १२६४ की माघ शु. ५ को पट्टारूढ हुए [ले. २२३] तथा १ वर्ष ४ मास पट्ट पर रहे। इन्हें वनवासी और शेर द्वारा नमस्कृत कहा गया है [ले. २२४]। श्रुतसागर सूरि के कथनानुसार ये ही मुनियोके वस्त्रधारणके प्रवर्तक थे। यह प्रथा इन ने मण्डपदुर्ग[33] मे आरम्भ की (ले. २२५)। इनकी जाति बघेरवाल और निवासस्थान अजमेर कहा गया है (ले. २२३)। इनका बिजौलियाके शिलालेखमे भी उल्लेख हुआ है (ले. २४४)।

वसन्तकीर्ति के बाद विशालकीर्ति[34] और उन के बाद शुभकीर्ति पट्टाधीश हुए [ले. २२६–२७] शुभकीर्ति एकान्तर उपवास आदि कठोर

३२ इनके पहले क्रमशः गुप्तिगुप्त, माघनन्दि, जिनचन्द्र, पद्मनन्दि कुन्दकुन्द, उमास्वाति, लोहाचार्य, यशःकीर्ति, यशोनन्दि, देवनन्दि, गुणनन्दि, वज्रनन्दि, कुमारनन्दि, लोकचन्द्र, प्रभाचन्द्र, नेमिचन्द्र, भानुनन्दि, जटासिंहनन्दि, वसुनन्दि, वीरनन्दि, रत्ननन्दि, माणिक्यनन्दि, मेघचन्द्र, शान्तिकीर्ति, मेरुकीर्ति, महाकीर्ति, विश्वनन्दि, श्रीभूषण, शीलचन्द्र, श्रीनन्दि, देशभूषण, अनन्तकीर्ति, धर्मनन्दि, विद्यानन्दि, रामचन्द्र, रामकीर्ति, अभयचन्द्र, नरचन्द्र, नागचन्द्र, नयनन्दि, हरिश्चन्द्र, महीचन्द्र, माधवचन्द्र, लक्ष्मीचन्द्र, गुणकीर्ति, गुणचन्द्र, वासवचन्द्र, लोकचन्द्र, श्रुतकीर्ति, भानुचन्द्र, महाचन्द्र, माघचन्द्र, ब्रह्मनन्दि, शिवनन्दि, विश्वचन्द्र, हरिनन्दि, भावनन्दि, सुरकीर्ति, विद्याचन्द्र, सुरचन्द्र, माघनन्दि, ज्ञाननन्दि, गगनन्दि, सिंहकीर्ति, हेमकीर्ति, चारुनन्दी, नेमिनन्दी, नाभिकीर्ति, नरेन्द्रकीर्ति, श्रीचन्द्र, पद्मकीर्ति, वर्धमान, अकलंक, ललितकीर्ति, केशवचन्द्र, चारुकीर्ति और अभयकीर्ति का उल्लेख हुआ है।

३३ राजस्थानके अन्तर्गत माण्डलगढ।

३४ पट्टावलियोमे वसन्तकीर्तिके बाद प्रख्यातकीर्तिका उल्लेख है किन्तु (ले २४४) में इनका नाम नहीं है। शायद गुर्वावलीके श्लोकके विशेषणको विशेष नाम मान लेनेसे पट्टावलीमे यह गलती हुई है।

तपश्चर्या करते थे। इनने सवत् १३८० मे कोई मूर्ति स्थापित की थी (ले. २२८)।[35]

शुभकीर्ति के बाद धर्मचन्द्र पट्टाधीश हुए। ये संवत् १२७१ की श्रावण शुक्ल ७ को पट्टारूढ हुए तथा २५ वर्ष पट्ट पर रहे। इनकी जाति हूवड और निवास स्थान अजमेर था। हमीर राजाने इन्हे प्रणाम किया था (ले. २२९–३०)।[36]

इनके बाद रत्नकीर्ति सवत् १२९६ की भाद्रपद कृ. १३ को पट्टारूढ हुए। ये १४ वर्ष पट्ट पर रहे। ये भी हूवड जाति के और अजमेर निवासी थे (ले. २३१–३२)।

रत्नकीर्तिके पट्ट पर दिल्लीमे सवत् १३१० की पौष शु. १५ को भट्टारक प्रभाचन्द्रका अभिषेक किया गया। ये ब्राह्मण जातिके थे। खभात, धारा, देवगिरि आदि स्थानोमें आपने विहार किया तथा दिल्लीमे महमदशाह[37]को प्रसन्न किया (ले. २३३, २३६)। गुर्वावलीके अनुसार आपहीने पूज्यपादकृत समाधितन्त्रपर टीका लिखी थी किन्तु यह प्रश्न विवादास्पद है (ले. २३४)।[38] प्रभाचन्द्र ७४ वर्ष तक पट्टाधीश रहे। आप के शिष्य ब्रह्म नाथूरामने दिल्लीमे सवत् १४१६ की माघ शु. ५ को फिरोजसाह[39]के राज्यकालमे आराधनापजिकाकी एक प्रति लिखी (ले.२३५)।

३५ सम्भवतः सवत्का अंक यहा गलत है।

३६ सस्कृत साहित्यमे हमीर शब्दका प्रयोग मुसलमान राजा इस सामान्य अर्थमे हुआ है उसीका यह उदाहरण है। चित्तौडके राणा हमीर सन् १३०१ मे अधिकारारूढ हुए इस लिए यह उनका उल्लेख नही हो सकता।

३७ नासिरुद्दीन महम्मदशाह (सन् १२४६–६६)

३८ इस प्रश्नकी चर्चाके लिए न्यायकुमुदचन्द्रकी प्रस्तावना देखिए। एक मतके अनुसार प्रमेयकमलमार्तण्ड, न्यायकुमुदचन्द्र तथा समाधितन्त्रटीका, रत्नकरण्डटीका और प्राभृतत्रयटीकाके कर्ता एक ही प्रभाचन्द्र है जो ११ वीं सदीमे हुए। दूसरे मतके अनुसार इन टीकाग्रन्थोंके कर्ता ही प्रस्तुत प्रभाचन्द्र है।

३९ फिरोजशाह तुघलक [सन् १३५१–८८]

एक बार एक प्रतिष्ठा महोत्सवके समय व्यवस्थापक गृहस्थ उपस्थित नहीं रहे तब प्रभाचन्द्रने उसी उत्सवको पट्टाभिषेकका रूप देकर भ. पद्मनन्दिको अपने पद पर स्थापित किया (ले. २३३)। पद्मनन्दि सवत् १३८५ की पौष शु. ७ से ६५ वर्ष तक पट्टाधीश रहे। ये ब्राह्मण जातिके थे (ले. २३७)। भावनापद्धति और जीरापल्ली-पार्श्वनाथ-स्तोत्र ये आपकी कृतिया हैं (ले. २४०–४१)।[40] आपने सवत् १४५० की वैशाख शु १२ को एक आदिनाथ मूर्ति प्रतिष्ठित की [ले. २३९]।[41]

भ. पद्मनन्दिके तीन प्रमुख शिष्योद्वारा तीन भट्टारकपरम्पराए आरभ हुईं जिनका आगे अनेक प्रशाखाओमे विस्तार हुआ। इनमे शुभचन्द्रका वृत्तान्त दिल्ली—जयपुर शाखामे, सकलकीर्तिका वृत्तान्त ईडर शाखामे तथा देवेन्द्रकीर्तिका वृत्तान्त सूरत शाखामे देखना चाहिए। इनके अतिरिक्त मदनदेव (ले २४५), नयनन्दि (ले. २५१), तथा मदनकीर्ति (ले. २५५) ये पद्मनन्दिके अन्य शिष्योके उल्लेख मिले हैं। इनमे मदनदेव और मदनकीर्ति सम्भवत. एक ही हैं।

---

४० पद्मनन्दीकी एक और कृति वर्धमानचरित है। आपके शिष्य हरिचन्द्रने मल्लिनाथ काव्य लिखा है। [अनेकान्त वर्ष १२, पृष्ठ २९५]

४१ इस प्रतिष्ठाके समयके शासकका नाम मूलमें बहुत ही अशुद्ध छपा है इस लिए उसका इतिहासमें निर्देश नहीं पाया गया।

बलात्कार गण – उत्तर शाखा – काल पट

१ वसन्तकीर्ति [संवत् १२६४]
|
२ विशालकीर्ति [सवत् १२६६]
|
३ शुभकीर्ति
|
४ धर्मचन्द्र [स. १२७१–१२९६]
|
५ रत्नकीर्ति [स. १२९६–१३१०]
|
६ प्रभाचन्द्र [स. १३१०–१३८४]
|
७ पद्मनन्दी [स १३८५–१४५०]

८ शुभचन्द्र [दिल्ली-जयपुर शाखा] | ९ सकलकीर्ति [ईडर शाखा] | १० देवेंद्रकीर्ति [सूरत शाखा]

६. बलात्कार गण – दिल्ली-जयपुर शाखा

लेखांक २४२ – शारदास्तवन   शुभचंद्र

श्रीपद्मनंदींद्रमुनींद्रपट्टे शुभोपदेशी शुभचंद्रदेवः ।
विदां विनोदाय विशारदायाः श्रीशारदायाः स्तवनं चकार ॥ १

[अ. १२ पृ. ३०३]

लेखांक २४३ – शिलालेख

·· श्रीमत्प्रभेन्दुपट्टेस्मिन् पद्मनंदी यतीश्वर ।
तत्पट्टांबुधिसेवीव शुभचद्रो विराजते ॥
···शिष्योयं शुभचंद्रस्य हेमकीर्तिर्महान् सुधी ।
येन वाक्यामृतेनापि पोषिता भव्यपादपा. ॥
·विशुद्धा श्रीहेमकीर्तियतिन. सुसिद्ध. ।
आस्ता च तावज्जगतीतलेस्मिन् यावत्स्थिरौ चंद्रदिवाकरौ च ॥
सवत् १४६५ वर्षे फाल्गुण सुदि २ बुधौ ॥

बिजौलिया [अ. ११, पृ. ३६६]

लेखांक २४४ – निषीदिका लेख

श्रीबलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीमहि(नंदि) सघे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीवसतकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ श्रीविशालकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीदमन(?) कीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ श्रीधर्मचद्रदेवा. तत्पट्टे भ श्रीरत्नकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीप्रभाचंद्रदेवा तत्पट्टे भ. श्रीपद्मनदिदेवा तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेवा. ॥

···पद्मनदिमुनेः पट्टे शुभचंद्रो यतीश्वर ।
तर्कादिकविद्यासु (पद)धारोस्ति सांप्रतम् ॥

· आर्या बाई लोकसिरि विनयसिरि तस्या. शिक्षणी बाई चारित्रसिरि बाई चारित्रकी शिक्षणी बाई आगमसिरि · तस्या इय निषेधिका आचंद्रतारका-क्षय संवत् १४८३ वर्षे फाल्गुन सुदि ३ गुरौ ॥

[उपर्युक्त पृ ३६५]

लेखांक २४५ – (प्रवचनसार)

अथ संवत्सरे श्रीविक्रमादित्यगताब्दाः संवत् १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शनिवासरे श्रीटोडा महादुर्गे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे भ. पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेवा गुरुभ्राता श्रीमदनदेवास्तत्सिष्य ब्रह्म नरसिंह तत् पुस्तकात् मया सुंदरलालेन लिपिकृता इंदोरमध्ये स्वपठनार्थ. संवत् १९३० ॥

(रायचन्द्र शास्त्रमाला, बम्बई, १९३५, प्रशस्ति)

लेखांक २४६ – पट्टावली

संवत् १४५० माह सुदि ५ भ शुभचंद्रजी गृहस्थ वर्ष १६ दिक्षा वर्ष २४ पट्ट वर्ष ५६ मास ३ दिवस ४ अतर दिवस ११ सर्व वर्ष ९६ मास ३ दिवस २५ ब्राह्मण जाति पट्ट दिल्ली ॥

(व. १०)

लेखांक २४७ – सिद्धांतसार जिनचंद्र

पवयणपमाणलक्खणछंदालकाररहियहियएण ।
जिणइंदेण पउत्तं इणमागमभत्तिजुत्तेण ॥ ७८

(माणिकचद्र ग्रथमाला, बम्बई)

लेखांक २४८ – पट्टावली

संवत् १५०७ जेष्ट वदि ५ भ जिनचंद्रजी गृहस्थ वर्ष १२ दिक्षा वर्ष १५ पट्ट वर्ष ६४ मास ८ दिवस १७ अंतर दिवस १० सर्व वर्ष ९१ मास ८ दिवस २७ बघेरवाल जाति पट्ट दिल्ली ॥

[व. १०]

लेखांक २४९ – पार्श्वनाथ मूर्ति

सं. १५०२ वर्षे वैसाख सुदी ३ श्रीमूलसंघे भ श्रीजिनचंद्र वाकुलिया गोत्रे साहु प्रमसी तत्पुत्र राजदेव नित्यं प्रणमंति ॥

(भा. प्र. पृ. १३)

लेखांक २५० – शांतिनाथ मूर्ति

सं. १५०९ वर्षे चैत्र सुदी १३ रविवासरे श्रीमूलसंघे भ. पद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे श्रीशुभचंद्रदेवाः तत्पट्टे श्रीजिनचंद्रदेवा. श्रीधौपे ग्राम स्थाने महाराजाधिराज श्रीप्रतापचंद्रदेव राज्ये प्रवर्तमाने यदुवंशे लंवकंचुकान्वये साधु श्रीउद्धर्ण तत्पुत्र असौ · ··॥

(उपर्युक्त)

लेखांक २५१ – [नेमिनाथचरित]

सवत १५१२ आषाढ वदि ११ वर्षे शाका १३७७ प्रवर्तमाने फा वसंतऋतौ पारवानुमासं शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ सोमदिने श्रीघोघा वेलाकूले श्रीनेमिसुर चरिमइ लिखित। श्रीमूलसघे · भ. श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ. शुभचद्रदेवाः तत्पट्टे भ जिनचंद्रदेवा. तत्र भ पद्मनदिदेवाः तत्शिष्य नयणंदिदेव तस्मै श्रीहूंवडवंश ज्ञातीय गोत्र खरीयान श्रेष्ठि गजभाई ····· श्रीजिनदास धनदत्तेन श्रीनेमिनाथचरित लिखापितं श्रीनयनंदिमुनये दत्तं ॥

[अ. ११ पृ. ४१४]

लेखांक २५२ – पार्श्वनाथ मूर्ति

सं. १५१५ वर्षे माघ सुदी ५ भौमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे भ. जिनचद्रदेव गोलाराडान्वये सा. अभू भार्या हडो · ·· ॥

(भा. प्र. पृ ८)

लेखांक २५३ – [मूलाचार]

वर्षे षडेकपचैकपूरणे विक्रमे नतः।
शुक्ले भाद्रपदे मासे नवम्यां गुरुवासरे ॥
श्रीमद्वट्टेरकाचार्यकृतसूत्रस्य सद्विधे.।
मूलाचारस्य सद्वृत्तेर्दातुर्नामावलीं ब्रुवे ॥
···विद्यते तत्समीपस्था श्रीमती योगिनीपुरी।
यां पाति पातिसाहिश्रीवहलोलाभिधो नृपः॥
तस्या. प्रत्यग्दिशि ख्यातं श्रीहिसारपिरोजकं।

नगरं नगरंभादिवल्लीराजिविराजितं ॥
तत्र राज्यं करोत्येष श्रीमान् कुतवखानकः ।
तथा हैबतिखानश्च दाता भोक्ता प्रतापवान् ॥
अथ श्रीमूलसंघेस्मिन् नंदिसघेनघेजनि ।
वलात्कारगणस्तत्र गच्छ. सारस्वतस्त्वभूत् ॥
तत्राजनि प्रभाचंद्र' सूरिचंद्रो जितांगज. ।
दर्शनज्ञानचारित्रतपोवीर्यसमन्वित ॥
श्रीमान् वभूव मार्तंडस्तत्पट्टोदयभूवरे ।
पद्मनदी वुधानंदी तमश्छेदी मुनिप्रभु. ॥
तत्पट्टांबुधिसच्चद्र शुभचंद्र. सता वर. ।
पंचाक्षवनदावाग्नि कषायक्ष्माधराशनिः ॥
तदीयपट्टांवरभानुमाली क्षमादिनानागुणरत्नशाली ।
भट्टारकश्रीजिनचंद्रनामा सैद्धांतिकाना भुवि योस्ति सीमा ॥
...तच्छिष्या वहुशास्त्रज्ञा हेयादेयविचारका' ।
शयसंयमसपूर्णा मूलोत्तरगुणान्विता' ॥
जयकीर्तिश्चारुकीर्तिर्जयनंदी मुनीश्वर' ।
भीमसेनादयोन्ये च दशधर्मधरा वरा ॥
...श्रीमान् पडितदेवोस्ति दाक्षिणात्यो द्विजोत्तम ।
यो योग्य. सूरिमंत्राय वैयाकरणतार्किक ॥
अग्रोतवंशज' साधुर्लेवदेवाभिधानक ।
तत्सुतो धरण' सज्ञा तद्भार्या भीपुही मता ॥ २५
तत्पुत्रो जिनचंद्रस्य पादपंकजषट्पद. ।
मीहाख्य. पंडितस्त्वस्ति श्रावकव्रतभावक' ॥ २६
तदन्वयेथ खडेलवशे श्रेष्ठीयगोत्रके ।
पद्मावत्या. समाम्नाये यक्ष्या' पार्श्वजिनेशिन. ॥ २७
साधु. श्रीमोहणाख्योभूत्सघभारधुरंधर ।
...एतै श्रीसाधुपार्श्वस्य चोषाख्यस्य च कायजै ।
वसद्भिर्झूंझणूस्थाने रम्ये चैत्यालयैर्वरै ॥ ५०
चाहमानकुलोत्पन्ने राज्य कुर्वति भूपतौ ।
श्रीमत्समसखानाख्ये न्यायान्यायविचारके ॥ ५१

कारित श्रुतपंचम्या मह्दुद्यापनं च तैः ।
श्रीमद्देशव्रतावारिनरसिंहोपदेशत ॥ ५३
एतच्छास्त्रं लेखयित्वा हिसारा–
दानाय्य स्वोपार्जितेन स्वराया ।
संघेशश्रीपद्मसिंहेन भक्त्या
सिंहान्ताय श्रीनराय प्रदत्त ॥ ६०
· सूरिश्रीजिनचद्राह्रिस्मरणाधीनचेतसा ।
प्रशस्तिर्विहिता चासौ मीहाख्येन सुधीमता ॥ ६९

[माणिकचन्द्र ग्रथमाला, २३, बम्बई १९२२]

लेखांक २५४ – (तिलोयपण्णत्ती)

स्वस्तिश्रीसंवत् १५१७ वर्षे मार्ग सुदि ५ भौमवारे श्रीमूलसंघे ··भ. श्रीपद्मनंदिदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेवा· मुनिश्रीमदनकीर्ति तच्छिष्य ब्रह्म नरसिंहकस्य । · श्रीझूंझुणपुरे लिखितमेतत्पुस्तकम् ॥

(जीवराज ग्रथमाला, शोलापुर १९५१)

लेखांक २५५ – [पउमचरिय]

सवत १५२१ वर्षे ज्येष्टमासे सुदि १० बुधवारे श्रीगोपाचलदुर्गे श्रीमूलसंघे ···· भ श्रीप्रभाचंद्रदेवा तत्पट्टे भ पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेवा तत्पट्टे भ. जिनचद्रदेवा । तत्र श्रीपद्मनदिशिष्यश्रीमदन-कीर्तिदेवा· तत्शिष्य श्रीनेत्रनंदिदेवा तन्निमित्ते खडेलवाल लुहाडिया गोत्रे संगही धामा भार्या धनश्री · ॥

(अ. ४ पृ. ५४०)

लेखांक २५६ – (अध्यात्मतरंगिणी टीका)

त्रयस्त्रिंशाधिके वर्षे शतपचदशप्रमे ।
शुक्लपक्षेश्विने मासे द्वितीयायां सुवासरे ।
श्रीहिसाराभिधे रम्ये नगरे ऊनसकुले ।
राज्ये कुतुवखानस्य वर्तमानेथ पावने ॥

अथ श्रीमूलसंघेस्मिन्ननघे मुनिकुंजर. ।
सूरिः श्रीशुभचंद्राख्यः पद्मनंदिपदास्थित ॥
तत्पट्टे जिनचंद्रोभूत् स्याद्वादांबुधिचंद्रमाः ।
तदंतेवासिमेहाख्यः पडितो गुणमंडित. ॥
तदाम्नाये सदाचारक्षेत्रपालीयगोत्रके ।
सुनामपुरवास्तव्ये खंडेलान्वयकेजनि ॥
··एतन्मध्ये धनश्रीर्या श्राविका परमा तया ।
लिखापितमिद शास्त्रं निजाज्ञानतमोहृतौ ॥
पूजयित्वा पुनर्भक्त्या पठनाय समर्पित ।
मेहाख्याय सुशास्त्रज्ञपंडिताय सुमेधसे ॥

(झालरापाटन, अ. १२ पृ. ३१)

लेखांक २५७ – महावीर मूर्ति

स. १५३७ वर्षे वैसाख सुदि १० गुरौ श्रीमूलसंघे भ. जिनचंद्राम्नाये मंडलाचार्यविद्यानंदी तदुपदेशं गोलारारान्वये पियू पुत्र ·· ॥

(भा. प्र. पृ. ५)

लेखांक २५८ – [नीतिवाक्यामृत]

अथ संवत्सरेस्मिन् विक्रमादित्यराज्यात् सवत् १५४१ वर्षे कार्तिक सुदि ५ शुभदिने श्रीचंद्रप्रभचैत्यालयविराजमाने श्रीहिसारपेरोजाभिधानपत्तने सुलतानबहलोलसाहिराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे ·· भ. जिनचंद्रदेवाः। तच्छिष्योष्टाविंशतिमूलगुणरत्नरत्नाकरमडलाचार्यमुनिश्रीरत्नकीर्ति. । तस्य शिष्यो निष्प्रावरणमूर्तिर्मुनिश्रीविमलकीर्ति । भ श्रीजिनचंद्रांतेवासि पं. श्रीमेहाख्य. । एतदाम्नाये क्षेत्रपालीयगोत्रे खडेलवालान्वये सुनामपुरवास्तव्ये ··एतेषां मध्ये या साध्वी कमलश्रीस्तया निजपुत्रस भीवावच्छूकयोर्न्यायोपार्जितवित्तेनेद सोमनीतिटीकापुस्तकं लिखापित। पुन पंडितमेहाख्याय पठनार्थ भावनया प्रदत्त निजज्ञानावरणकर्मक्षयाय ॥

(माणिकचद ग्रथमाला, बम्बई १९२२)

लेखांक २५९ – धर्मसंग्रह

सूरिश्रीजिनचंद्रकस्य समभूद्रत्नादिकीर्तिर्मुनि
शिष्यस्तत्त्वविचारसारमतिमान् सद्‌ब्रह्मचर्यान्वितः।
· तच्छिष्यो विमलादिकीर्तिरभवन्निर्ग्रथचूडामणिः
यो नानातपसा जितेंद्रियगण· क्रोधेभकुंभे शृणिः।
··दीक्षां श्रौतमुनीं बभार नितरां सत्क्षुल्लकः साधक.
आर्यो दीपद आख्ययात्र भुवनेसौ दीप्यतां दीपवत्॥ १६
छात्रोभूज्जैनचंद्रो विमलतरमति· श्रावकाचारभव्यः
खग्रोतानूकजातोद्धरणतनुरुहो भीषुहीमातृसूतः।
मीहाख्यः पडितो वै जिनमतनयनः श्रीहिसारे पुरेस्मिन्
ग्रंथः प्रारंभि तेन श्रीमहति वसता नूनमेष प्रसिद्धे॥ १७
सपादलक्षे विषयेतिसुंदरे श्रिया पुरं नागपुरं समस्ति तत्।
पेरोजखानो नृपति प्रपाति यन्न्यायेन शौर्येण रिपून्निहन्ति च ॥१८
· मेधाविनामा निवसन्नहं बुध.
पूर्वा व्यधा ग्रंथमिमं तु कार्तिके।
चंद्राब्धिवाणैकमितेत्र वत्सरे
' कृष्णे त्रयोदश्यहनि स्वभक्तित ॥ २१

(प्रकाशक– उदयलाल काशलीवाल, बनारस १९१०)

लेखांक २६० – १ मूर्ति

संवत १५४२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ८ शनौ भ. श्रीजिनचंद्र रा. भ श्रीज्ञान-भूषण सा. ऊहड · · · ॥

(भा ७ पृ १६)

लेखांक २६१ – दर्शन यंत्र

सं. १५४३ मगसर वदि १३ गुरुवार श्रीमूलसंघे श्रीकुंदकुंदान्वये भ. श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ श्रीशुभचद्रदेवाः तत्पट्टे भ श्रीजिनचद्रदेवाः तद आम्नाये सेतवालान्वये नवग्रामपुरवारतव्य · एतेषां मध्ये चौधरी सुरजवने श्रीसम्यग्दर्शन यंत्र करापित प्रतिष्ठापितं॥

(फतेहपुर, अ. ११ पृ. ४०८)

लेखांक २६२ – ऋषभ मूर्ति

संवत् १५४५ वर्षे वैशाख सुदि १० चंद्रदिने श्रीमूलसंघे ··भ. श्रीजिनचंद्रदेवाः वरहिया कुलोद्भव साहु लखे भार्या कसुमा ·तेन अर्जुनेनेद आदीश्वरबिंबं स्वपूजनार्थं करापितं ॥

(भा. प्र. पृ. १)

लेखांक २६३ – पार्श्वमूर्ति

सं. १५४८ वैशाख सुदि ३ श्रीमूलसघे भ जिनचंद्रदेव साहु जीवराज पापडीवाल नित्य प्रणमंति सौख्यं शहर मुडासा श्रीराजा स्योसिंघ रावल ॥

(फतेहपुर, अ. ११ पृ. ४०६)

लेखांक २६४ – [नागकुमारचरित]

संवत १५५८ वर्षे श्रावण सुदि १२ भौमे श्रीगोपाचलगढदुर्गे तोमरवंशे ··श्रीमानसिंघदेवा. तद्राज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसघे · भ श्रीशुभचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीजिनचद्रदेवा. तदाम्नाये जैसवालान्वये · एतेषा मध्ये घोमा इंद नागकुमारपंचमी लिखापितं ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थ ॥

[प्र. पृ. १४, कारंजा जैन सीरीज १९३३]

लेखांक २६५ – पट्टावली प्रभाचंद्र

संवत् १५७१ फाल्गुन वदि २ भ. प्रभाचंद्रजी गृहस्थ वर्ष १५ दिक्षा वर्ष ३५ पट्ट वर्ष ९ मास ४ दिवस २५ अतर दिवस ८ सर्व वर्ष ५९ मास ५ दिवस २ एकै वार गछ दोय हुवा चीतोड अर नागोरका सं १५७२ का अष्वाल ॥

(ब. १०)

लेखांक २६६ – दशलक्षण यंत्र

सं. १५७३ फाल्गुन वदि ३ श्रीमूलसघे कुंदकुदाचार्यान्वये भ. जिनचद्रदेवाः तत्पट्टे भ श्रीप्रभाचद्रदेवा तदाम्नाये खडेलवालान्वये ठोल्या गोत्रे

पं. मूना भार्या सामू ' नित्यं प्रणमति ।

(फतेहपुर, अ. ११ पृ. ४०८)

लेखांक २६७ – (नागकुमारचरित)

संवत १६०३ वर्षे शाके १४६७ प्रवर्तमाने महामांगल्य आषाढमासे कृष्णपक्षे द्वितीयातिथौ उत्तराषाढनक्षत्रे तैतलकरणे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये ···भ. श्रीजिनचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीप्रभाचंद्रदेवाः तत् शिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मचंद्रदेवास्तदाम्नाये तक्षकपुरवास्तव्ये सोलंकीराजाधिराज श्रीरामचंद्रराज्ये श्रीआदिनाथचैत्यालये खंडेलवालान्वये···सा. ठाकुर भार्या दाडिमदे तया इदं शास्त्रं पंचमीव्रतं उद्योतनार्थं लिखापितं धर्मचंद्राय दत्त ॥

[प्र. पृ. १५, कारजा जैन सीरीज, १९३३]

लेखांक २६८ – [यशोधर चरित]

संवत १६१५ वर्षे भादव सुदि ५ वी सप्त (?) वारे पुष्यनक्षत्रे तोडागढमहादुर्गे महाराजाधिराजराउश्रीकल्याणराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे ···भ. श्रीजिनचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीप्र (भाचंद्र)

(प्र. पृ. १५, कारजा जैन सीरीज १९३१)

लेखांक २६९ – [मूलाचार] नरेंद्रकीर्ति

श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ श्रीचंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीमन्नरेंद्रकीर्तिजी तत् भ्रात पं. राजश्रीतेजपाल तस्य वर्णी चोखचंद्रेण आत्मपठनीयनिमित्तं लिखापितं। श्रीसमरपुरमध्ये। श्रीरस्तु। श्रीसंवत् १७३० मिति मार्गसिर सित त्रयोदस्या लिपीकृतं ॥

(का. ५२९)

लेखांक २७०– पार्श्वनाथ मूर्ति जगत्कीर्ति

स. १७४६ माह सुदी श्रीमूलसघे भ श्रीजगत्कीर्ति संघई श्रीकृष्णदास ··· ॥

(भा. प्र. पृ. ६)

लेखांक २७१ – हरिवंशपुराण देवेंद्रकीर्ति

तहा श्रीजिनदास जू ग्रथ रच्यो इह सार।
सो अनुसार खुस्याल ले कह्यौ भविक सुखकार ॥
देश ढुंढाहढ जानौ सार तामे धर्मतनो विस्तार।
विसनसिह सुत जैसिहराय राज करै सबको सुखदाय ॥
...जामै पुर शांगावति जानि धर्म उपावनकौ वर थान।
.. संघ मूलसंघ जानि गछ सारदा वखानि गण जु
बलात्कार जाणौ मन लायके ॥
कुंदकुंद मुनीकी आमनाय मांहि भये देवइंद्रकीरत
सुपट्टसार पायके।
पंडित सु भए तहां नाम लछिमीसुदास चतुर विवेकी
श्रुतज्ञानकौ उपायके ॥
तिनै थकी मै भी कछू अलपसो सुज्ञान लयो फेरि मै
वस्यौ जिहानावाद मध्य आयकै ॥
..महमदशा पातिशाह राज करि है सुचकत्थौ।
नीतिवंत बलवान न्याय विन ले न अरत्थौ ॥
..संवत सतरासै अरु असी सुदि वैसाख तीज वर लसी।
सुक्रवार अतिही शुभ जोग सार नखत्तरकौ संजोग ॥

(भा. ६ पृ. १२७)

लेखांक २७२ – १ मूर्ति

संवत्सरे वह्विवसुमुनींदुमिते १७८३ वैशाखमासे कृष्णपक्षे अष्टमीतिथौ बुधवारे श्रवणनक्षत्रे बांसखोहनगरे अंबावती सामी कुछाहागोत्रीय महाराजाधिराज श्रीजयसिंघजित्तत्सामंत कुभाणीगोत्रीय राजिश्री चूहडसिहजी राज्य प्रवर्तमाने श्रीमूलसघे नंद्याम्नाये भ. श्रीजगत्कीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीदेवेद्रकीर्तिदेवा' तदाम्नाये खडेलवालान्वये लुहाड्या गोत्रे साहश्री रामदासजी तद्भार्या रायवदे .. ॥

[भा. ७ पृ. १३]

लेखांक २७३ – षोडशकारण यंत्र

सं १७८३ वर्षे वैशाख वदि ८ बुधवार श्रीमूलसंघे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्ति-स्तदाम्नाये धासषाह कर्वटे लुहाड्या गोत्रे संघही श्रीहृदयराम बिंबप्रतिष्ठा प. भामनि ॥

(भा. प्र. पृ. १२)

लेखांक २७४ – [षट्कर्मोपदेशरत्नमाला] महेंद्रकीर्ति

सवत् १७९७ वर्षे श्रावण सुदि १४ शनिवासरे श्रीमूलसंघे ..... भ. श्रीदेवेंद्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ. श्रीमहेंद्रकीर्तिस्तदाम्नाये सवाईजयपुरमध्ये श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये बिलालागोत्रे साह श्रीहरराम तस्य भार्या हीरादे ... एतेषां मध्ये साहजीश्रीगोपीरामजी इदं पुस्तकं षट्कर्मोपदेशरत्नमालानामकं आचार्यश्रीक्षेमकीर्तिजी तच्छिष्य पंडित गोवर्धनदासाय लिखापि घटापितं ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं ॥

(जैन साहित्य और इतिहास पृ. ५४२)

लेखांक २७५ – ? मूर्ति सुखेंद्रकीर्ति

संवत् १८६१ वर्षे वैशाखशुक्लपंचम्यां श्रीसवाईजयसिंहनगरे भ. श्रीसुखेंद्रकीर्तिगुरुवर्युपदेशात् छावडा गोत्रे संग(ही) दी(वान) रायचंद्रेण प्रतिष्ठा कारिता ॥

(जयपुर, अ. १२ पृ. ३८)

लेखांक २७६ – बृहत् कथाकोष

संवत १८६८ मासोत्तममासे जेठ मास शुक्ल पक्ष चतुर्थ्यां तिथौ सूर्यवारे श्रीमूलसघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुंदाचार्या-न्वये भ. श्रीमहेंद्रकीर्तिजी तत्पट्टे भ. श्रीक्षेमेंद्रकीर्तिजी तत्पट्टे भ. श्रीसुरेंद्र-कीर्तिजी तत्पट्टे भ. श्रीसुखेंद्रकीर्तिजी तदाम्नाये सवाईजयनगरे श्रीमन्नेमिनाथ-चैत्यालये गोधाख्यमंदिरे बखतरामकृष्णचंद्राभ्यां ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं बृहदाराधनाकथाकोशाख्यं ग्रथं स्वशयेन लिखितं ॥

(प्रस्तावना पृ. १, सिंघी जैन ग्रथमाला, १९४३)

इस शाखा का आरम्भ भ. शुभचन्द्र से होता है। इन के गुरु पद्मनन्दी थे जिन का वृत्तान्त उत्तर शाखा के प्रकरण में आ चुका है। शुभचन्द्र का पट्टाभिषेक सवत् १४५० की माघ शु. ५ को हुआ और वे ५६ वर्ष पट्ट पर रहे। वे ब्राह्मण जाति के थे [ले. २४६]। शारदा स्तवन यह उन की एक कृति है [ले. २४२]। उन के शिष्य हेमकीर्ति की प्रशसा सवत् १४६५ के बिजौलिया लेख मे की गई है। संवत् १४८३ की फाल्गुन शु. ३ को उन की परम्परा की आर्यिका आगमश्री की समाधि बनाई गई [ले. २४३, २४४]। सवत् १४९७ की ज्येष्ठ शु. १३ को उन के गुरुबन्धु मदनदेव के शिष्य ब्रह्म नरसिह ने प्रवचनसार की एक प्रति लिखी थी [ले. २४५]।

शुभचन्द्र के बाद जिनचन्द्र भट्टारक हुए। सवत् १५०७ की ज्येष्ठ कृ. ५ को आप का पट्टाभिषेक हुआ तथा आप ६४ वर्ष पट्टाधीश रहे। आप बघेरवाल जाति के थे [ले. २४८]। सिद्धान्तसार यह आप की एक कृति है [ले. २४७]। प्रतापचन्द्र के राज्य काल मे[४२] सवत् १५०९ की चैत्र शु. १३ को धौपे ग्राम मे आप ने एक शान्तिनाथ मूर्ति स्थापित की [ले. २५०]। आप की आम्नाय मे सवत् १५१२ की आषाढ कृ. ११ को नेमिनाथ चरित की एक प्रति लिखाई गई जो जिनदास ने घोघा बदरगाह मे नयनन्दि मुनि को अर्पित की [ले. २५१]। सवत् १५१५ की माघ शु. ५ को आप ने एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की [ले. २५२]। आप की आम्नाय मे सवत् १५१७ की मार्गशीर्ष शु. ५ को झूंझुणपुर मे तिलोयपण्णत्ती की एक प्रति लिखाई गई [ले. २५४]। इसी प्रकार सवत् १५२१ की ज्येष्ठ शु. ११ को ग्वालियर मे पउमचरिय की प्रति लिखाई गई जो नेत्रनन्दि मुनि को अर्पण की गई [ले. २५५]। सवत् १५३७ वैशाख शु. १० को जिनचन्द्र की आम्नाय मे विद्यानन्दि ने एक महावीर

४२ प्रतापचन्द्र का राज्य काल ज्ञात नही हो सका। इस समय के करीब झासी विभाग मे रुद्रप्रताप नामक राजा का उल्लेख मिलता है।

मूर्ति स्थापित की [ले. २५७]।[43] इसी प्रकार सवत् १५४२ की ज्येष्ठ शु. ८ को आप की आम्नाय मे भ. ज्ञानभूषण ने एक मूर्ति स्थापित की [ले. २६०]।[44] सवत् १५४३ की मार्गशीर्ष कृ. १३ को जिनचन्द्र ने सम्यग्दर्शन यन्त्र स्थापित किया तथा सवत् १५४५ की वैशाख शु. १० को ऋषभदेव की एक मूर्ति स्थापित की [ले. २६१-६२]। मुडासा शहर में सेठ जीवराज पापडीवाल ने सवत् १५४८ की वैशाख शु. ३ को भ. जिनचन्द्र के द्वारा कई मूर्तियो की प्रतिष्ठा कराई [ले. २६३]।[45] सवत् १५५८ की श्रावण शु. १२ को आप की आम्नाय मे ग्वालियर मे मानसिंह तोमर के राज्यकाल में नागकुमारचरित की एक प्रति लिखी गई [ले. २६४]।

भ. जिनचन्द्र के शिष्यो मे पण्डित मीहा या मेधावी प्रमुख थे। ये अग्रवाल जाति के सेठ उद्धरण और उन की पत्नी भीपुही के पुत्र थे। सवत् १५१६ की भाद्रपद शु. ९ को दिल्ली मे बहलोलशाह और हिसार मे कुतुबखॉ का राज्य था तब झुझुणपुर मे साह पार्श्व के पुत्रो ने श्रुतपचमी उद्यापन किया और उस अवसर पर वट्टकेर कृत मूलाचार की एक प्रति ब्रह्म नरसिंह को अर्पित की। इस शास्त्रदान की प्रशस्ति पण्डित मेधावी ने लिखी [ले. २५३]। सवत् १५३३ की आश्विन शु. २ को हिसार मे खडेलवाल साध्वी धनश्री ने अध्यात्मतरगिणी टीका की एक प्रति मेधावी को अर्पित की [ले. २५६] इसी प्रकार सवत् १५४१ को कार्तिक शु. ५ को खडेलवाल साध्वी कमलश्री ने नीतिवाक्यामृत टीका की एक प्रति आप को अर्पित की

४३ ये विद्यानन्दि सम्भवतः सूरत शाखा के दूसरे भट्टारक हैं। किन्तु उन से पृथक् भी हो सकते है। इस दशा में [ले. ५२३] में उल्लिखित विद्यानन्दि ये ही है।

४४ ये ज्ञानभूषण ईडर शाखा के भ भुवनकीर्ति के शिष्य है।

४५ ये मूर्तिया अमृतसर से मद्रास तक प्राय: सभी गावों के दिगम्बर जैन मन्दिरों में पाई जाती है। सिर्फ नागपुर के जैन मन्दिरों में ही इन की सख्या सौ से अधिक है। यहा यह लेख सिर्फ नमूने के तौर पर लिया गया है। इस प्रतिष्ठा में भानुचन्द्र और गुणभद्र इन भट्टारकों के भी उल्लेख मिलते हैं।

[ले. २५८]। मेधावी ने संवत् १५४१ की कार्तिक कृ. १३ को नागौर मे फिरोजखान के राज्य काल मे धर्मसग्रह श्रावकाचार नामक संस्कृत ग्रन्थ की रचना पूर्ण की [ले. २५९]।

प. मेधावी की इन प्रशस्तियों से भ. जिनचन्द्र के शिष्य परिवार पर अच्छा प्रकाश पडता है। इन मे रत्नकीर्ति और सिंहकीर्ति इन का वृत्तान्त क्रमशः नागौर तथा अटेर शाखा मे सगृहीत किया गया है। इन के अतिरिक्त जयकीर्ति, चारुकीर्ति, जयनन्दी, भीमसेन, दक्षिण के पण्डितदेव, [ले. २५३], विमलकीर्ति [ले. २५८], श्रुतमुनि द्वारा दीक्षित आर्य दीपद [ले. २५९] आदि शिष्यो का उल्लेख मेधावी ने किया है।

भ. जिनचन्द्र के बाद प्रभाचन्द्र पट्ट पर बैठे। सवत् १५७१ की फाल्गुन कृ. २ को उन का अभिषेक हुआ तथा वे ९ वर्ष भट्टारक पद पर रहे। इन के समय मुख्य पट्ट दिल्ली से चित्तौड मे स्थानान्तरित हुआ तथा संवत् १५७२ से नागौर पट्ट के मडलाचार्य रत्नकीर्ति मुख्य परम्परा से पृथक् हुए (ले. २६५)। प्रभाचन्द्र ने सवत् १५७३ की फाल्गुन कृ. ३ को एक दशलक्षण यन्त्र स्थापित किया (ले. २६६)। संवत् १६०३ की आषाढ कृ. २ को रामचन्द्र सोलकी के राज्य काल मे तक्षकपुर निवासी साह ठाकुर ने नागकुमारचरित की एक प्रति आप के शिष्य धर्मचन्द्र को अर्पित की (ले. २६७)। इसी प्रकार तोडागढ मे कल्याणराज के राज्यकाल में सवत् १६१५ की भाद्रपद शु. ५ को आप की आम्नाय मे यशोधरचरित की एक प्रति लिखी गई (ले. २६८)।[४६]

प्रभाचन्द्र के बाद क्रमशः चन्द्रकीर्ति और देवेन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए। इन का कोई स्वतन्त्र उल्लेख नही मिला है[४७]। इन के बाद नरेन्द्रकीर्ति

४६ रामचद्र का राज्यकाल सन् १५५५–१५९२ था। कल्याणराज का राज्यकाल ज्ञात नहीं हो सका।

४७ चन्द्रकीर्ति के समय का एक उल्लेख (ले २८६) मिला है। यह सवत् १६५४ का है।

हुए। इन के आम्नाय मे सवत् १७३० की मार्गशीर्ष शु. १३ को वर्णी चोखचन्द्र ने समरपुर मे मूलाचार की एक प्रति लिखी (ले. २६९)।

नरेन्द्रकीर्ति के पट्टशिष्य सुरेन्द्रकीर्ति सवत् १७२२ की श्रावण शु. ८ को पट्टारूढ हुए।[४८] इन का कोई स्वतन्त्र उल्लेख नहीं मिला है।

इन के अनन्तर सवत् १७३३ की श्रावण कृ. ५ को भ. जगत्-कीर्ति पट्टाधीश हुए। आपने सवत् १७४६ की माघ मे एक पार्श्वनाथ मूर्ति प्रतिष्ठित की [ले. २७०]।

इन के बाद सवत् १७७० की श्रावण कृ. ५ को भ. देवेन्द्रकीर्ति पट्टाधीश हुए। इन की आम्नाय में जयसिंह के राज्यकाल मे सागावत शहर मे पण्डित लक्ष्मीदास हुए।[४९] इन के उपदेश से कवि खुशालचद ने सवत १७८० मे जहानाबाद में[५०] महमदशाह के राज्यकाल मे हिन्दी हरिवंश-पुराण की रचना की [ले. २७१]। सवत् १७८३ की वैशाख कृ. ८ को बासखोह नगर मे जयसिंह के राज्यकाल मे देवेद्रकीर्ति के द्वारा एक प्रतिष्ठामहोत्सव हुआ [ले. २७२]।

देवेन्द्रकीर्ति के बाद सवत् १७९० की श्रावण कृ. ५ को महेन्द्र-कीर्ति पट्टाधीश हुए। इन की आम्नाय में सवत् १७९७ की श्रावण शु. १४ को साह गोपीराम ने सवाईजयपुर मे षट्कर्मोपदेशरत्नमाला की एक प्रति पडित गोवर्धनदास को अर्पित की [ले. २७४]।

महेन्द्रकीर्ति के बाद सवत् १८१५ की श्रावण कृ. ५ को क्षेमेन्द्र-कीर्ति पट्टाधीश हुए। उन के बाद सवत् १८२२ की फाल्गुन शु ४ को सुरेन्द्रकीर्ति का पट्टाभिषेक हुआ। इन के समय भट्टारकपीठ जयपुर में

४८ यहाँ से इस शाखा के भट्टारकों की पट्टाभिषेक तिथियाँ ' बृहद् महावीर कीर्तन ' पृ. ७९७ के आधार पर दी गई हैं।

४९ जयसिंह का राज्यकाल १६६९–१७४३ था।

५० दिल्ली के बादशाह–राज्यकाल १७१९–४८ ई.।

स्थानान्तरित हुआ तथा अतिशय क्षेत्र महावीरजी से इस पीठ का सम्बन्ध स्थापित हुआ।

सुरेन्द्रकीर्ति के बाद संवत् १८५२ की फाल्गुन शु. ४ को पट्टाधीश हुए। आपने संवत् १८६१ की वैशाख शु. ५ को सवाईजयपुर मे कोई मूर्ति स्थापित की [ले. २७५]। इन्ही के समय संवत् १८६८ की ज्येष्ठ शु. ४ को बृहत् कथाकोष की एक प्रति वहीं लिखी गई (ले. २७६)।

सुरेन्द्रकीर्ति के बाद क्रमश संवत् १८८० मे नरेन्द्रकीर्ति, संवत् १८८३ मे देवेन्द्रकीर्ति, संवत् १९३० मे महेन्द्रकीर्ति और संवत् १९७५ मे चन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए।

बलात्कार गण–दिल्लीजयपुर शाखा–कालपट

१ पद्मनन्दी
|
२ शुभचन्द्र(संवत१४५०–१५०७)
|
३ जिनचन्द्र(संवत१५०७–१५७१)

रत्नकीर्ति (नागौर शाखा) सिंहकीर्ति (अटेर शाखा)

४ प्रभाचन्द्र [संवत् १५७१–८०]
|
५ चन्द्रकीर्ति [संवत् १६५४]
|
६ देवेन्द्रकीर्ति
|

७ नरेन्द्रकीर्ति
|
८ सुरेन्द्रकीर्ति [सवत् १७२२]
|
९ जगत्कीर्ति [सवत् १७३३]
|
१० देवेन्द्रकीर्ति [सवत् १७७०]
|
११ महेन्द्रकीर्ति [सवत् १७९०]
|
१२ क्षेमेन्द्रकीर्ति [सवत् १८१५]
|
१३ सुरेन्द्रकीर्ति [सवत् १८२२]
|
१४ सुखेन्द्रकीर्ति [सवत् १८५२]
|
१५ नरेन्द्रकीर्ति [सवत् १८८०]
|
१६ देवेन्द्रकीर्ति [सवत् १८८३]
|
१७ महेन्द्रकीर्ति [सवत् १९३९]
|
१८ चन्द्रकीर्ति [सवत् १९७५]

---

७. बलात्कार गण–नागौर शाखा

लेखांक २७७– पट्टावली रत्नकीर्ति

संवत् १५८१ श्रावण सुदि ५ भ. रत्नकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ९ दीक्षा वर्ष ३१ पट्ट वर्ष २१ मास ८ दिवस १३ अंतर दिवस ५ सर्व वर्ष ६१ मास ८ दिवस १८ पट्ट दिल्ली ॥

(व. १०)

लेखांक २७८ – पट्टावली भुवनकीर्ति

संवत् १५८६ माह वदि ३ भुवनकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ११ दीक्षा वर्ष २६ पट्ट वर्ष ४ मास ९ दिवस २६ अंतर मास २ दिवस ४ सर्व वर्ष ४२ दिवस २१ जाति छावडा पट्ट अजमेर ॥

(व. १०)

लेखांक २७९ – [अणुव्रत रत्न प्रदीप]

सं. १५९५ वर्षे वइसाख सुदि द्वइज सोमवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वती-गच्छे बलात्कारगणे श्रीकुदकुदाचार्यान्वये भ. श्रीपद्मनंदिदेव तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेव तत्पट्टे भ. श्रीजिणचद्रदेव मुनि मंडलाचार्य श्रीरत्नकीर्ति देव तत् सिक्ष मुनि मंडलाचार्य श्रीहेमचद्रदेव द्वितीय सिक्ष मुनि मंडलाचार्य श्रीभुवनकीर्ति देव तत्सिक्ष मुनि पुण्यकीर्ति मेडता सुभस्थानात् राजश्री मालदे राठ्ठउड राजे खंडेलवालान्वये पाटणीगोत्रे संघभारधुरंधरान् साह दोदा...इद सास्त्रं अणोव्रतरत्नप्रदीपकं लिखावितं कर्मक्षयनिमित ॥

(भा. ६ पृ. १५५)

लेखांक २८० – पट्टावली धर्मकीर्ति

संवत १५९० चैत्र वदि ७ भ. धर्मकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष १३ दीक्षा वर्ष ३१ पट्ट वर्ष १० मास १ दिवस २० अतर मास १ दिवस १० सर्व वर्ष ५५ मास १ दिवस ४ जाति सेठी पट्ट अजमेर ॥

(व. १०)

लेखांक २८१ – चंद्रप्रभ मूर्ति

सं. १६०१ फाल्गुन सुदि ९ मूलसंघे धर्मकीर्ति आचार्य सा. महन भार्या भानुमती पुत्र सर्वन···॥

(भा. प्र पृ. ६)

लेखांक २८२ – पट्टावली विशालकीर्ति

संवत १६०१ वैशाख सुदि १ विशालकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ९ दिक्षा वर्ष ५८ पट्ट वर्ष ९ मास १० दिवस २० अंतर मास १ दिवस १० सर्व वर्ष ७७ दिवस २३ जाति पाटोधी पट्ट जोवनेर॥

[व. १०]

लेखांक २८३ – पट्टावली लक्ष्मीचंद्र

संवत् १६११ असौज वदि ४ लक्ष्मीचंद्रजी गृहस्थ वर्ष ७ दिक्षा वर्ष ३७ पट्ट वर्ष १९ मास ११ दिवस २० अंतर दिवस १० सर्व वर्ष ६४ मास २ दिवस १ जाति छावडा पट्ट जोवनेर ॥

(व. १०)

लेखांक २८४ – पट्टावली सहस्रकीर्ति

संवत् १६३१ जेष्ठ सुदि ५ सहस्रकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ७ दिक्षा वर्ष २५ पट्ट वर्ष १८ मास २ दिवस ८ अतर मास ९ दिवस २२ सर्व वर्ष ५१ मास ११ दिवस ७ जाति पाटणी पट्ट जोवनेर॥

(व. १०)

लेखांक २८५ – पट्टावली नेमिचंद्र

संवत् १६५० श्रावण सुदि १३ नेमिचद्रजी गृहस्थ वर्ष ११ दिक्षा वर्ष ५२ पट्ट वर्ष ११ मास ६ दिवस २२ अंतर मास ५ दिवस ८ सर्व वर्ष ९५ मास १ दिवस २५ जाति ठोल्या पट्ट जोवनेर॥

(व. १०)

लेखांक २८६ – (वसुनंदि श्रावकाचार)

सं.१६५४ वर्षे आषाढमासे कृष्णपक्षे एकादश्यां तिथौ ११ भौमवासरे अजमेरगढमध्ये श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंद-कुंदाचार्यान्वये भ. श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीजिनचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीप्रभाचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीचंद्रकीर्तिदेवाः तदाम्नाये मंडलाचार्यश्रीभुवनकीर्तिदेवा. तत्पट्टे मंडलाचार्यश्रीधर्मकीर्ति तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीविशालकीर्ति तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीलिखिमीचंद्र तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीसहस्रकीर्ति तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीनेमिचद्र तदाम्नाये खंडेल-वालान्वये पहाड्या गोत्रे साह नानिग ··एतेषां मध्ये शाह श्रीरंग तेन इदं वसुनंदि उपासकाचार ग्रंथ ज्ञानावरणी कर्म क्षयनिमित्त लिखापितं मंडला-चार्य श्रीनेमिचंद्र तस्य शिष्यणी वाई सवीरा जोग्य घटापितं ॥

(प्र. पृ. १५, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी १९४४)

लेखांक २८७ – (पांडवपुराण)

श्रीमूलसंघे ··भ. श्रीपद्मनंदिदेवा. तत्पट्टे भ श्रीशुभचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीजिनचंद्रदेवा तत्पट्टे भ श्रीप्रभाचंद्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीधर्म-कीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. विशालकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ लक्ष्मीचंद्रदेवा. तत्पट्टे भ. सहस्रकीर्तिदेवाः तत्पट्टे मडलाचार्य श्रीनेमिचंद्रस्तस्मै सत्पात्राय पुराणमिदं लेखित्वा प्रदत्तं ॥

(भा. १ कि. ४ पृ. ३९)

लेखांक २८८ – पट्टावली यशःकीर्ति

संवत् १६७२ फागुन सुदि ५ यश कीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ९ दिक्षा वर्ष ४० पट्ट वर्ष १७ मास ११ दिवस ८ अंतर दिवस २ सर्व वर्ष ६७ जाति पाटणी पट्ट रेवा ॥

(च. १०)

लेखांक २८९ – पट्टावली भानुकीर्ति

सवत् १६९० भानुकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ७ दिक्षा वर्ष ३७ पट्ट वर्ष

१४ मास ७ दिवस २१ सर्व वर्ष ५९ मास ४ दिवस ३ अंतर दिवस ७ जाति गंगवाल पट्ट नागौर ॥

(ब. १०)

लेखांक २९० – रविवार व्रत कथा

आठ सात सोला के अंग रविदिन कथा रचियो अकलंक ।
'''भावसहित सत सुख लहे भानुकीर्ति मुनिवर जो कहे ॥ २५

(म. ६६)

लेखांक २९१ – पट्टावली श्रीभूषण

संवत् १७०५ आश्विन सुदि ३ श्रीभूषणजी गृहस्थ वर्ष १३ दिक्षा वर्ष १५ पट्ट वर्ष ७ पाछै धर्मचंद्रजीनै पट्ट दीयो पाछै १२ वर्ष जीया संवत् १७२४ ताई जाति पाटणी पट्ट नागौर ॥

[ब. १०]

लेखांक २९२ – पट्टावली धर्मचंद्र

संवत १७१२ चैत्र सुदि ११ धर्मचंद्रजी गृहस्थ वर्ष ९ दिक्षा वर्ष २० पट्ट वर्ष १५ सर्व वर्ष ४४ दिवस २४ जाति सेठी पट्ट महरोठ ॥

[ब १०]

लेखांक २९३ – गौतम चरित्र

गच्छेशो नेमिचंद्रोखिलकलुहपरोभूद् यश कीर्तिनामा
तत्पट्टे पुण्यमूर्तिर्मुनिनृपतिगणे सेव्यमानाह्रियुग्म. ।
श्रीसिद्धांतप्रवेत्ता मदनभटजयी श्रीष्मसूर्यप्रताप:
श्रीमच्छ्रीभानुकीर्ति: प्रशमभरधरो मानस्तोभादिजेता ॥ २६५
'' सिद्धध्याननुतिप्रणामनिरत क्रोधादिशैलाशनि.
श्रीमच्छूरिगणाधिपो विजयतां श्रीभूषणाख्यो मुनि ॥ २६६
पट्टे तदीये मुनिधर्मचंद्रोभूच्छ्रीवलात्कारगणे प्रधान. ।
श्रीमूलसंघे प्रविराजमान. श्रीभारतीगच्छसुदीप्तिभानु ॥ २६७

राजच्छ्रीरघुनाथनामनृपतौ ग्रामे महाराष्ट्रके
नाभेयस्य निकेतन शुभतरं भाति प्रसौख्याकरम् ।
श्रीपूजादिमहोत्सवव्रजयुतं भूरिप्रशोभास्पदं
सद्धर्मान्वितयोगिमानुपगणैः सेव्यं प्रमोदाकरं ॥ २६८
तस्मिन् विक्रमपार्थिवाद् रसयुगाद्रींदुप्रमे वर्षके
ज्येष्ठे मासि सितद्वितीयदिवसे काते हि शुक्रान्विते ।
श्रीमच्छूरिकदवकाधिपतिना श्रीधर्मचंद्रेण च ।
तद्भक्त्या चरितं शुभ कृतमिदं श्रेयस्करं प्राणिनां ॥ २६९

[सर्ग ५. प्र. मू. कि. कापडिया, सूरत १९२६]

लेखांक २९४ – पट्टावली देवेंद्रकीर्ति

संवत् १७२७ देवेद्रकीर्तिजी गृहस्थवर्ष ९ दिक्षा वर्ष १९ पट्ट वर्ष १० मास ७ दिवस ९ अंतर मास ४ दिवस २१ सर्व वर्ष ३९ मास ३ दिवस ४ जाति सेठी पट्ट महरोठ ॥

[ब. १०]

लेखांक २९५ – पट्टावली सुरेंद्रकीर्ति

संवत् १७३८ जेष्ट सुदि ११ अमरेद्रकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष १५ दिक्षा वर्ष २९ पट्ट वर्ष ६ मास ११ अतर मास १ दिवस २ सर्व वर्ष ५१ मास २ दिवस ७ जाति पाटणी पट्ट महरोठ ॥

(ब. १०)

लेखांक २९६ – रविवार व्रतकथा

गढ गोपाचल नगर भलो शुभथान वखानो ।
देवेद्रकीर्ति मुनिराज भये तपतेज निधानो ॥
तिनके पट्ट विराजहि सुरेद्रकीर्ति जु मुनींद्र ।
कलश धरे पनियार मे सकल सिद्धि आनंद ॥ ९३
सवत विक्रम राय भले सत्रह मानो ।
ता ऊपर चालीस जेष्ठ सुदि दशमी जानो ॥

वार जु मंगलवार हस्त नक्षत्र जु परियो ।
रविव्रतकथा सुरेंद्रकीर्ति रचना यह करियो ॥ ९४

[प्रकाशक– वीरसिंह जैन, इटावा १९०६]

लेखांक २९७ – पट्टावली रत्नकीर्ति

संवत् १७४५ वैशाख सुदि ९ रत्नकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ३० दिक्षा वर्ष ४७ पट्ट वर्ष २१ सर्व वर्ष ९८ मास १ दिवस ४ अंतर मास १ दिवस ३ जाति गोधा पट्ट काला डहरा ॥

[ब. १०]

लेखांक २९८ – पट्टावली विद्यानंद

सवत् १७६६ फागुन वदि ४ विद्यानंदजी गृहस्थ वर्ष ११ दिक्षा वर्ष २५ पट्ट वर्ष २ मास ९ अंतर दिवस ४ सर्व वर्ष ३९ मास १ दिवस ३ जाति झाझरी पट्ट रूपनगर ॥

(ब. १०)

लेखांक २९९ – पट्टावली महेंद्रकीर्ति

संवत् १७६९ मगसिर वदि ८ महेंद्रकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ९ दिक्षा वर्ष २८ पट्ट वर्ष ४ मास २ दिवस २८ सर्व वर्ष ४१ अंतर मास २ दिवस २६ जाति झाझरी पट्ट काला डहरा ॥

(ब. १०)

लेखांक ३०० – पट्टावली अनंतकीर्ति

संवत् १७७३ फागुन वदि ३ अनंतकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष १७ दिक्षा वर्ष १७ पट्ट वर्ष २४ मास ४ दिवस १२ सर्व वर्ष ४९ दिवस ३ जाति पाटणी पट्ट अजमेर ॥

(ब १०)

लेखांक ३०१ – पट्टावली भवनभूषण

सवत् १७९७ असाढ सुदि १० भवनभूषणजी गृहस्थ वर्ष ११ दिक्षा वर्ष २५ पट्ट वर्ष ४ मास ६ दिवस १२ अंतर मास ४ दिवस १६ सर्व वर्ष ४१ जाति छावडा पट्ट काला डहरा ॥

[व. १०]

लेखांक ३०२ – पट्टावली विजयकीर्ति

सवत् १८०२ असाढ सुदि १ विजयकीर्तिजी गृहस्थ वर्ष ९ दिक्षा वर्ष २८ पटस्थ विराजमान छै अजमेर ॥

[व. १०]

बलात्कार गण—नागौर शाखा

इस शाखा का आरम्भ भ. रत्नकीर्ति से होता है। आप भ. जिनचन्द्र के शिष्य थे जिन का वृत्तान्त दिल्ली–जयपुर शाखा में आ चुका है। आप का पट्टाभिषेक सवत् १५८१ की श्रावण शु. ५ को हुआ तथा आप २१ वर्ष पट्ट पर रहे (ले. २७७)।

इन के बाद भ. भुवनकीर्ति सवत् १५८६ की माघ कृ. ३ को पट्टारूढ हुए तथा ४ वर्ष पट्ट पर रहे। आप जाति से छावडा थे (ले. २७८)। आप के शिष्य मुनि पुण्यकीर्ति के लिए सवत् १५९५ की वैशाख शु. २ को मेडता शहर में राठौड राव मालदेव के राज्यकाल में[५१] अणुव्रतरत्नप्रदीप की एक प्रति लिखाई गई (ले. २७९)।

इन के बाद भ. धर्मकीर्ति सवत् १५९० की चैत्र कृ. ७ को पट्टारूढ हुए तथा १० वर्ष पट्ट पर रहे। आप जाति से सेठी थे (ले. २८०)। सवत् १६०१ की फाल्गुन शु. ९ को आप ने एक चद्रप्रभ मूर्ति स्थापित की (ले. २८१)।

आप के बाद सवत् १६०१ की वैशाख शु. १ को भ. विशालकीर्ति पट्टारूढ हुए तथा ९ वर्ष पट्ट पर रहे। आप जाति से पाटोदी थे तथा आप का निवास जोवनेर मे था (ले. २८२)। आप के पट्टशिष्य भ. लक्ष्मीचन्द्र संवत् १६११ की आश्विन कृ. ४ को पट्टाधीश हुए तथा २० वर्ष पट्ट पर रहे। ये जाति से छावडा थे (ले. २८३)। इन के बाद संवत् १६२१ की ज्येष्ठ शु ५ को भ. सहस्रकीर्ति पट्टाधीश हुए तथा १८ वर्ष भट्टारक पद पर रहे। ये पाटणी गोत्र के थे (ले. २८४)। इन तीनो भट्टारको के कोई स्वतन्त्र उल्लेख नहीं मिले है।

सहस्रकीर्ति के पट्ट पर सवत् १६५० की श्रावण शु. १३ को नेमिचन्द्र अभिषिक्त हुए जो ११ वर्ष भट्टारक पद पर रहे। इन का गोत्र ठोल्या था (ले. २८५)। सवत् १६५४ की आषाढ कृ. ११ को

५१ जोधपुर के राजा—सन १५११–१५६२।

अजमेर मे इन की शिष्या बाई सबीरा के लिए वसुनदि श्रावकाचार की एक प्रति लिखाई गई। इस समय दिल्ली–जयपुर शाखा में भ. चन्द्रकीर्ति पट्टाधीश थे (ले. २८६)। नेमिचन्द्र के लिए पाडवपुराण की भी एक प्रति लिखी गई थी (ले. २८७)।

नेमिचन्द्र के बाद संवत् १६७२ की फाल्गुन शु. ५ को पाटणी गोत्र के भ. यश.कीर्ति रेवा शहर मे पट्टाधीश हुए तथा १८ वर्ष पट्ट पर रहे (ले. २८८)।

इन के शिष्य भानुकीर्ति सवत् १६९० मे पट्टारूढ हुए तथा १४ वर्ष भट्टारक पद पर रहे। ये गंगवाल जाति के तथा नागौर निवासी थे (ले. २८९)। सवत् १६७८ मे इन ने रविव्रत कथा की रचना की (ले. २९०)।

भानुकीर्ति के शिष्य भ. श्रीभूषण सवत् १७०५ की आश्विन शु. ३ को पट्टाधीश हुए और १९ वर्ष पद पर रहे। ये पाटणी गोत्र के थे। पदप्राप्ति के बाद ७ वे वर्ष मे सवत् १७१२ की चैत्र शु. ११ को इन ने अपने शिष्य धर्मचन्द्र को भट्टारक पद पर स्थापित कर दिया था। धर्मचन्द्र सेठी गोत्र के थे और १५ वर्ष पट्ट पर रहे। इन का निवास-महरोठ मे था (ले. २९१–२)। इन ने सवत् १७२६ की ज्येष्ठ शु. २ को गौतमचरित्र की रचना पूर्ण की। उस समय महरोठ मे रघुनाथ का राज्य था (ले. २९३)[५२]।

धर्मचन्द्र के पट्ट पर सवत् १७२७ मे देवेन्द्रकीर्ति अभिषिक्त हुए ये १० वर्ष पट्टाधीश रहे। इनका गोत्र सेठी तथा निवासस्थान महरोठ था (ले. २९४)। इन के बाद सवत् १७३८ की ज्येष्ठ शु. ११ को सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए तथा ७ वर्ष पद पर रहे। ये पाटणी गोत्र के थे। ग्वालियर मे सवत् १७४० की ज्येष्ठ शु १० को आप ने रविवार व्रत कथा लिखी (ले २९५–९६)।

५२ महाराष्ट्रक महरोठ का सस्कृत रूपान्तर है।

इन के बाद संवत् १७४५ में भ. रत्नकीर्ति पट्टाधीश हुए तथा २१ वर्ष पट्ट पर रहे। ये गोधा गोत्र के तथा काला डहरा के निवासी थे (ले. २९७)। इन के उत्तराधिकारी भ. विद्यानंद झाझरी गोत्र के तथा रूपनगर निवासी थे। ये संवत् १७६६ से २ वर्ष पट्ट पर रहे (ले. २९८)। इन के शिष्य महेन्द्रकीर्ति संवत् १७६९ से ४ वर्ष तक पट्टाधीश रहे। ये झाझरी गोत्र के तथा काला डहरा के निवासी थे (ले. २९९)। इन के बाद अनन्तकीर्ति संवत् १७७३ से २४ वर्ष तक भट्टारक पद पर रहे। ये पाटणी गोत्र के तथा अजमेर निवासी थे। इन के अनंतर भ. भवनभूषण संवत् १७९७ से ४ वर्ष तक पट्टाधीश रहे। ये छावडा गोत्र के तथा काला डहरा निवासी थे (ले. ३००–१)। इन के शिष्य विजयकीर्ति अजमेर में संवत् १८०२ की आषाढ शु. १ को पट्टाभिषिक्त हुए थे (ले. ३०२)।[५२]

---

५२ नागौर के पट्टाधीशों की प्रकाशित नामावली (जैन सि. भा. १ पृ. ८०) में रत्नकीर्ति (द्वितीय) के बाद क्रमशः ज्ञानभूषण, चन्द्रकीर्ति, पद्मनन्दी, सकलभूषण, सहस्रकीर्ति, अनन्तकीर्ति, हर्षकीर्ति, विद्याभूषण, हेमकीर्ति, क्षेमेन्द्रकीर्ति, मुनीन्द्रकीर्ति तथा कनककीर्ति के नाम दिये हैं। इन के कोई स्वतन्त्र उल्लेख प्राप्त नहीं हो सके। वर्तमान समय में इस गद्दी पर भ. देवेन्द्रकीर्तिजी विराजमान हैं। आप ने नागपुर, अमरावती आदि विदर्भ के नगरों में भी विहार किया है।

बलात्कार गण–नागौर शाखा–काल पट

१ जिनचन्द्र [दिल्ली जयपुर शाखा]

|

२ रत्नकीर्ति [संवत् १५८१]

|

३ भुवनकीर्ति [संवत् १५८६]

|

४ धर्मकीर्ति [संवत् १५९०]

|

५ विशालकीर्ति [संवत् १६०१]

|

६ लक्ष्मीचन्द्र [संवत् १६११]

|

७ सहस्रकीर्ति [संवत् १६३१]

|

८ नेमिचन्द्र [संवत् १६५०]

|

९ यशःकीर्ति [संवत् १६७२]

|

१० भानुकीर्ति [संवत् १६९०]

|

११ श्रीभूषण [संवत् १७०५]

|

१२ धर्मचन्द्र [संवत् १७१२]

|

१३ देवेन्द्रकीर्ति [संवत् १७२७]

|

१४ सुरेन्द्रकीर्ति [संवत् १७३८]

|

१५ रत्नकीर्ति [संवत् १७४५]

१ विद्यानन्द [सवत् १७६६]	ज्ञानभूषण
२ महेन्द्रकीर्ति [सवत् १७६९]	चन्द्रकीर्ति
३ अनन्तकीर्ति [सवत् १७७३]	पद्मनन्दी
४ भवनभूषण [सवत् १७९७]	सकलभूषण
५ विजयकीर्ति [सवत् १८०२]	सहस्रकीर्ति

अनन्तकीर्ति
|
हर्षकीर्ति
|
विद्याभूषण
|
हेमकीर्ति
|
क्षेमेन्द्रकीर्ति
|
मुनीन्द्रकीर्ति
|
कनककीर्ति
|
देवेन्द्रकीर्ति (वर्तमान)

८. बलात्कार गण – अटेर शाखा

लेखांक ३०३ – महावीर मूर्ति सिंहकीर्ति

सं. १५२० वर्षे आषाढ सुदी ७ गुरौ श्रीमूलसंघे भ. श्रीजिनचंद्र तत्पट्टे भ. श्रीसिंहकीर्ति लंवकंचुकान्वये अउलीवास्तव्ये साहु श्रीदिपौ भार्या इंदा ' इष्टिकापथ प्रतिष्ठितं ॥

(भा. प्र. पृ. १३)

लेखांक ३०४ – श्रेयांस मूर्ति

सं. १५२५ चैत्र शुक्ले ३ बुधे श्रीमूलसंघे भ. श्रीसिंहकीर्ति प. ह. पु. लंबकंचुकान्वये साये मिण्डे भार्या सोना पुत्र सा. जल्लू भार्या मना प्रणमंति ॥

(भा. प्र. पृ. ५)

लेखांक ३०५ – ? मूर्ति

सं. १५२७ माघ वदि ५ श्रीमूलसंघे भ. सिहकीर्ति नित्यं प्रणमति ॥

[नादगाव, अ. ४ पृ. ५०२]

लेखांक ३०६ – पार्श्वनाथ मूर्ति

सं. १५२८ वर्षे वैशाख सुदी ७ श्रीमूलसंघे भ. श्रीजिनचंद्र तत्पट्टे श्रीसिंहकीर्तिदेव महियवंश साधु ह्यू भार्या वैसा ॥

(भा. प्र. पृ. २)

लेखांक ३०७ – महावीर मूर्ति

सं १५२९ वर्षे वैसाख सुदि २ बुधे मूलसंघे भ सिंहकीर्तिदेवा सा सहरदा पुत्र मोदिक लल्लू दिगंबर मूर्ति जू सदा सहाई विलसी ॥

[भा. प्र. पृ. ४]

लेखांक ३०८ – कलिकुंड यंत्र

सं १५३१ वर्षे फागुण सुदि ५ श्रीमूलसंघे भ. श्रीजिणचंद श्रीसिंह-कीर्तिदेवा प्रतिष्ठित। श्रीआगमसिरि क्षुल्लकी कमी सहित श्रीकलिकुंड यंत्र कारापितं। श्रीकल्याण भूयात्।

(भा. ७ पृ. १३)

लेखांक ३०९ – [यशोधरचरित] शीलभूषण

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६२१ वर्षे श्रावण वदि २ सोमवासरे श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीजिनचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ श्रीसिंहकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीधर्मकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीशीलभूषणदेवाः तदाम्नाये आर्या श्रीचारित्रश्री तत्सिष्यणी व्रत गुणसुदरी एकादशप्रतिपालिका तपगुणराजीमती शीलतोयप्रक्षालितपापपटला। बाई हीरा तथा चंदा पठनार्थं इदं यशोधरचरित्रं लिखापितं कर्मक्षयनिमित्तं लिखितं पंडित वीणासुत गरीबा अलवरवासिन. ॥

[प्रस्तावना पृ. १५, कारजा जैन सीरीज १९३१]

लेखांक ३१० – सम्यक्चारित्र यंत्र जगद्भूषण

संवत् १६८६ ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रे श्रीमूलसंघे ·भ श्रीधर्मकीर्तिदेवा. भ. श्रीशीलभूषणदेवाः भ श्रीज्ञानभूषणदेवा· भ. श्रीजगद्भूषणदेवा. तदाम्नाये गोलाराम्वये खरौआ जातीये कुलहा गोत्रे पडिताचार्य पं. भोजराज भार्या प्यारो · ॥

[भा प्र. पृ. १७]

लेखांक ३११ – ? मूर्ति

सं. १६८८ वैशाख सुदी ३ श्रीमूलसंघे भ. जगतभूषण· तदाम्नाये सभासिंघ प्रणमति ॥

(आगरा, भा. १९ पृ ६३)

लेखांक ३१२ – श्रेयांस मूर्ति

स १६८८ वर्षे फाल्गुण सुदी ८ शनौ श्रीमूलसंघे भ श्रीज्ञानभूषणदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीजगद्भूषणदेवाः तदाम्नाये पुले ज्ञातिये खेमिल गोत्रे साधु तारण तद्भार्या मैना · ॥

[भा. प्र. पृ. १५]

लेखांक ३१३ – हरिवंश पुराण

संवत् सोरहिसै तहां भये तापरि अधिक पचानवै गये ।
माघ मास किसन पक्ष जानि सोमवार सुभवार वखानि ।।
भट्टारक जगभूषण देव गनधर सादृस वाकि जु एह ।
नगर आगिरौ उत्तम थानु साहिजहां तपै दूजो भानु ।।
वाहन करी चौपई वंधु हीनबुधि मेरी मति अंधु ।।

(भा ६ पृ. १२६)

लेखांक ३१४ – सम्यग्दर्शन यंत्र विश्वभूषण

सं. १७२२ वर्षे माघ वदि ५ सौमे श्रीमूलसंघे भ. श्रीजगद्भूषण तत्पट्टे भ. श्रीविश्वभूषण तदाम्नाये यदुवंशे लंवकंचुक पचोलने गोत्रे सा भावते हीरामणि ।।

[भा. प्र. पृ. १८]

लेखांक ३१५ – मंदिर लेख

श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुदकुंदाचार्यान्वये श्रीजगत्-भूषण श्रीभ. विश्वभूषणदेवा. स्वरीपुरमै जिनमंदिरप्रतिष्ठा सं. १७२४ वैशाख वदि १३ कौ करापिता ।।

(भा. १९ पृ. ६४)

लेखांक ३१६ – ज्योतिप्रकाश

श्रीजैनदृष्टितिथिपत्रमिह प्रणष्ट
स्पष्टीचकार भगवान् करुणाधुरीण ।
वालाववोधविधिना विनयं प्रपद्य
श्रीज्ञानभूषणगणेशमभिष्टुमस्त ।।

ज्ञानभूषण जगदिभूषण विश्वभूषण गणाग्रणी त्रयी चिन्मयी स्त्रवित्रयी हिताश्रयी स्ताद् यतो भवति मे विधिर्जयी

(भा. २१ पृ. १३)

लेखांक ३१७ – सुगंधदशमी कथा

व्रत सुगंध दशमी विख्यात ता फल भयो सुरभियुत गात्र ॥ ३७
शहर गहेली उत्तम वास जैनधर्मको जहां प्रकास ॥ ३८
उपदेशो विश्वभूषण सही हेमराज पंडितने कही ॥ ३९

(प्र. हीरालाल प. जैन, दिल्ली १९२१)

## लेखांक ३१८ – ऋषिपंचमी कथा		सुरेंद्रभूषण

सत्रहसौ सत्तावन जान मिती पौष सुदि दशमी मान ॥ ७८
हती कतपुरमे रचि कथा श्रीसुरेंद्रभूषण मुनि यथा ।
श्रावक पढो सुनो धर ध्यान जासे होइ परम कल्याण ॥ ७९

(प्र. हीरालाल प. जैन, दिल्ली १९२१)

लेखांक ३१९ – सम्यग्ज्ञान यंत्र

सं १७६० वर्षे फाल्गुण सुदी १ गुरौ श्रीमूलसंघे · भ श्रीसुरेंद्रभूषणदेव तदाम्नाए लंवकंचुकान्वये रपरियागोत्रे सा कुमारसेनि भार्या जीवनदे ॥

[भा. प्र पृ. १८]

लेखांक ३२० – षोडशकारण यंत्र

सं १७६६ वर्षे माघ सुदी ५ सोमवासरे श्रीमूलसंघे ··भ श्रीविश्वभूषणदेवा तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रभूषणदेवा· तत्पट्टे श्रीसुरेंद्रभूषणदेवाः तदाम्नाए लंवकंचुकान्वये वुढेलेज्ञातीये रावत गोत्रे साहु वदलूदास भार्या सुधी ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ३२१ – सम्यग्दर्शन यंत्र

स. १७७२ वर्षे फाल्गुण वदि ९ चंद्रे श्री मूलसंघे · भ.श्रीदेवेंद्रभूषणदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीसुरेंद्रभूषणदेवाः तस्मात् ब्रह्म जगतसिंह गुरूपदेशात् तदाम्नाए लंवकंचुकान्वये वुढेले ज्ञातीये ककौआ गोत्रे श्री सा सिवरामदास भार्या देवजावी · ॥

(भा. प्र पृ १९)

लेखांक ३२२ – दशलक्षण यंत्र

सं. १७९१ वर्षे फागुण सुदी ९ बुधवासरे शुभ दिने मूलसंघे ··भ. श्रीविश्वभूषणदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रभूषणदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीसुरेंद्रभूषणदेवाः तदाम्नाए बुढेलान्वये गृगगोत्रे साहु तुलाराम··अटेरपुरे साहु तुलारामेण यंत्रप्रतिष्ठा कारित तत्र प्रतिष्ठितम् ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ३२३ – (मूलाचार) मुनींद्रभूषण

संवत् १८४२ वर्षे मासोत्तममासे वैसाखमासे शुक्लपक्षे तिथौ १० भौमवासरे ग्राम पलाइथा मध्ये श्रीमत् पार्श्वनाथचैत्यालये वा श्रीवर्धमानचैत्यालये श्रीमूलसंघे ··हस्तनागपुरपटे तदुत्तरभदावरदेशात् भ. श्री. १०८ श्रीविस्वभूषण तत्पट्टे भ श्रीदेविंद्रभूषण तत्पट्टे श्रीसुरिंद्रभूषण तत्पट्टे भ. श्रीलक्ष्मीभूषण तत्पट्टे भ. श्रीमुनिंद्रभूषणजीकुं पुस्तक दान ग्रंथ मूलाचार समर्पयेत् साहजी श्रीलालचंदजी ··पुस्तकदान दातव्यं ज्ञानप्राप्तार्थे ज्ञात बघेरवाल गोत्र सेठ्या इदं शुभं ॥

[का. ५२७]

लेखांक ३२४ – मुनींद्रभूषण पूजा

पापतापनाशनाय सर्वसौख्यसिद्धये ।
श्रीलक्ष्मीभूषणपट्टे मुनींद्रभूषणं यजे ॥

(ना. ८७)

लेखांक ३२५ – जिनेंद्रमाहात्म्य महेंद्रभूषण

संवत् १८५२ कार्तिक शुक्ल १ गुरुवार श्रीमूलसंघे ··श्री भ. विश्वभूषणदेवा तत्शिष्य ब्रह्म श्रीविनासागरजी ·एतेषां मध्ये भ. जिनेद्रभूषणस्य शिष्य श्री भ. महेद्रभूषणेन इयं पुस्तिका लिखावितं ॥

[वीर ३ पृ. ३६४]

लेखांक ३२६ – (पद्मनंदि पंचविंशति)

संवत् १८५८ श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये गढगोपाचले श्रीमूलसंघे···भ. ज्ञानभूषणजीदेवाः तत्पट्टे भ. जगद्भूषणजीदेवाः तत्पट्टे भ. विश्वभूषणजी-देवाः तत्पट्टे भ. देवेंद्रभूषणजीदेवाः तत्पट्टे भ. सुरेंद्रभूषणजीदेवाः तत्पट्टे भ. लक्ष्मीभूषणजीदेवाः तत्पट्टे भ. जिनेंद्रभूषणजीदेवाः तत्पट्टे भ. महेंद्रभूषणेन लिखापितं श्रीआचार्यदेवेंद्रकीर्तेरध्ययनार्थं ॥

[B. O. R. I., 567 of 1875-76]

लेखांक ३२७ – पार्श्वमूर्ति

संवत् १८७६ वैशाख शुक्ल ६ शुक्रे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. विश्व-भूषण···तदाम्नाये भ. जिनेंद्रभूषणजी भ. महेंद्रभूषण अग्रोतकारान्वये कांसिल गोत्रे शाहजी दवनावरसिंघस्य पुत्रश्रीजी तस्य पुत्राश्चत्वारः ··· ॥

(मसाढ, भा. १ कि. ४ पृ. ३५)

लेखांक ३२८ – नेमिनाथ मूर्ति राजेंद्रभूषण

शुभ सं. १९२० फाल्गुण वदि ३ गुरुवासरे श्रीमूलसंघे···श्रीमद्भ-ट्टारकजिनेंद्रभूषणजिदेव तत्पट्टे श्रीमहेंद्रभूषणजिदेव तत्पट्टे श्रीराजेंद्रभूषणजिदेव तदुपदेशात् ··प्रतिष्ठाकर्ता आरानगर्या केलिरामस्तत्पुत्र डालचंद अग्रवार गरगगोत्रोत्पन्नस्य मस्तके कृता ॥

(भा. प्र. पृ. ९)

बलात्कार गण – अटेर शाखा

इस शाखा का आरम्भ भ सिंहकीर्ति से होता है। ये भ. जिनचन्द्र के शिष्य थे जिन का वृत्तान्त दिल्ली-जयपुर शाखा में आ चुका है। आप ने सवत् १५२० की आषाढ शु. ७ को एक महावीर मूर्ति प्रतिष्ठापित की (ले. २०३)। यह प्रतिष्ठा इष्टिकापथ[५४] में हुई। आप ने सवत् १५२५ की चैत्र शु. ३ को एक श्रेयांस मूर्ति, संवत् १५२७ की माघ कृ. ५ को एक अन्य मूर्ति, संवत् १५२८ की वैशाख शु. ७ को एक पार्श्वनाथ मूर्ति तथा संवत् १५२९ की वैशाख शु २ को एक महावीर मूर्ति स्थापित की (ले. २०४–७)। सवत् १५३१ की फाल्गुन शु. ५ को क्षुल्लिका आगमश्री के लिए आप ने एक कलिकुंड यन्त्र स्थापित किया (ले. ३०८)।

सिंहकीर्ति के बाद धर्मकीर्ति और उन के बाद शीलभूषण भट्टारक हुए। आप के अम्नाय मे सवत् १६२१ की श्रावण कृ. २ को अलवर निवासी गरीबदास ने हीराबाई के लिए यशोधरचरित की एक प्रति लिखी (ले ३०९)।

शीलभूषण के पट्टशिष्य ज्ञानभूषण हुए। ज्योतिःप्रकाश के एक उल्लेख से पता चलता है कि आप ने चिरकाल से लुप्त हुए जैन तिथिपत्र की पद्धति को स्पष्ट किया (ले ३१६)।

इन के बाद जगद्भूषण भट्टारक हुए। आप ने सवत् १६८६ की ज्येष्ठ कृ. ११ को एक सम्यक्चारित्र यत्र, सवत् १६८८ की फाल्गुन शु ८ को एक श्रेयास मूर्ति तथा इसी वर्ष की वैशाख शु ३ को एक अन्य मूर्ति स्थापित की (ले ३१०–१२)। आप की आम्नाय मे संवत् १६९५ की माघ मे शाहजहाँ के राज्य काल मे आगरा शहर मे शालिवाहन ने हिन्दी हरिवंशपुराण की रचना की (ले ३१३)।

५४ यह सम्भवतः इटावा का सस्कृत रूपान्तर है।

इन के बाद विश्वभूषण भट्टारक हुए। आप ने संवत् १७२२ की माघ कृ. ५ को एक सम्यग्दर्शन यत्र स्थापित किया (ले. ३१४)। सवत् १७२४ की वैशाख कृ. १३ को आप ने शौरीपुर मे एक मन्दिर की प्रतिष्ठा की (ले. ३१५)।[५५] ज्योति.प्रकाश के उक्त उल्लेख मे विश्वभूषण की भी प्रशसा की गई है (ले. ३१६)। आप के उपदेश से पडित हेमराज ने गहेली शहर मे सुगधदशमी कथा लिखी (ले. ३१७)

इन के बाद देवेन्द्रभूषण और उन के बाद सुरेन्द्रभूषण भट्टारक हुए। आप ने सवत् १७५७ मे ऋषिपंचमी कथा की रचना की (ले. ३१८)। आप ने सवत १७६० की फाल्गुन शु. १ को एक सम्यग्ज्ञान यत्र, सवत् १७६६ की माघ शु. ५ को एक षोडशकारण यत्र, सवत् १७७२ की फाल्गुन कृ. ९ को एक सम्यग्दर्शन यत्र तथा सवत् १७९१ की फाल्गुन कृ. ९ को अटेर मे एक दशलक्षण यत्र की स्थापना की (ले. ३१९–२२)।

सुरेन्द्रभूषण के शिष्य लक्ष्मीभूषण हुए। इन के शिष्य मुनीन्द्र-भूषण को सवत् १८४२ की वैशाख शु १० को साहु लालचद ने मूला-चार की एक प्रति अर्पित की (ले ३२३)।[५६]

लक्ष्मीभूषण के दूसरे शिष्य जिनेन्द्रभूषण हुए। इन के शिष्य महेन्द्र-भूषण ने सवत् १८५२ की कार्तिक शु. १ को जिनेन्द्रमाहात्म्य की एक प्रति लिखी (ले ३२५), सवत् १८५८ मे ग्वालियर मे इन ने पद्मनन्दि पंचविंशति की एक प्रति आचार्य देवेन्द्रकीर्ति के लिए लिखी (ले ३२६)। संवत् १८७६ की वैशाख शु. ६ को आप ने एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की (ले. ३२७)।

---

५५ मूल में सवत् १२२४ छपा है जो स्पष्टत· गलत है।

५६ इन की परम्परा में सोनागिरि के पट्ट पर क्रमश, जिनेन्द्रभूषण, देवेन्द्र-भूषण, नरेन्द्रभूषण, सुरेन्द्रभूषण, चन्द्रभूषण, चारुचन्द्रभूषण, हरेन्द्रभूषण, जिनेन्द्र-भूषण और चन्द्रभूषण भट्टारक हुए (अनेकान्त व १० पृ ३७१)।

इन के बाद भ. राजेन्द्रभूषण हुए। इन के उपदेश से आरा मे केलिराम के पुत्र डालचंद ने संवत् १९२० में एक नेमिनाथ मूर्ति की प्रतिष्ठा कराई (ले. ३२८)।

बलात्कार गण– अटेर शाखा–काल पट

१ जिनचन्द्र (दिल्ली जयपुर शाखा)
|
२ सिंहकीर्ति (सवत् १५२०–१५३१)
|
३ धर्मकीर्ति
|
४ शीलभूषण (सवत् १६२१)
|
५ ज्ञानभूषण
|
६ जगद्भूषण (सवत् १६८६–१६९५)
|
७ विश्वभूषण (सवत् १७२२–१७२४)
|
८ देवेन्द्रभूषण
|
९ सुरेन्द्रभूषण (संवत् १७५७–१७९१)
|

१० लक्ष्मीभूषण

११ जिनेन्द्रभूषण

१२ महेन्द्रभूषण (सं. १८५२-१८७६)

१३ राजेन्द्रभूषण (स. १९२०)

मुनीन्द्रभूषण (सवत् १८४२)
(सोनागिरि शाखा)

जिनेन्द्रभूषण

देवेन्द्रभूषण

नरेन्द्रभूपण

सुरेन्द्रभूषण

चन्द्रभूपण

चारुचन्द्रभूषण

हरेन्द्रभूपण

जिनेन्द्रभूपण

चन्द्रभूपण

९. बलात्कार गण – ईडर शाखा

लेखांक ३२९ – पट्टावली सकलकीर्ति

श्रीकुदकुंदान्वयभूपणाम. भट्टारकाणां शिरस किरीट. ।
पट्तर्कसिद्धांतरहस्यवेत्ता पयोजनुर्नद्यभवद्धरित्र्याम् ॥ ३२ ॥
तत्पट्टभागी जिनवर्मरागी गुरूपवासी कुसुमेपुनागी ।
तपोनुरक्त. समभूद्विरक्त पुण्यस्य मूर्ति सकलादिकीर्तिः ॥ ३३ ॥

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५८)

लेखांक ३३० – ऐतिहासिक पत्र

आचार्य श्रीसकलकीर्ति वर्ष २५ छविसनी संस्याह तथा तीवारे सयम लेई वर्ष ८ गुरा पासे रहीने व्याकरण २ तथा ४ भण्या श्रीवाग्वर गुजरात माहे गाम खोडेणे पधान्या वर्ष ३४ नी सस्था थई तीवारे सं. १४७१ ने वर्षे ''साहा श्रीयौचाने गृहे आहार लीधो'' वर्ष २२ पर्यंत स्वामी नम्र हता जुमले वर्ष ५६ छप्पन ''सं १४९९ श्रीसागवाड जुने देहरे आदिनाथनो प्रसाद करावीने पीछे श्रीनोगामे सघे पदस्थापन करीने सागवाडे जईने पोताना पुत्रकने प्रतिष्टा करावी पोते सूरमंत्र दीधो ते धर्मकीर्तिए वर्ष २४ पाट भोगव्यो ॥

[भा. १३ पृ. ११३]

लेखांक ३३१ – चौवीसी मूर्ति

सं १४९० वर्षे वैसाख सुदी ९ सनौ श्रीमूलसंघे नंदीसघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुदकुंदाचार्यान्वये भ. पद्मनदी तत्पट्टे श्रीशुभचंद्र तस्य भ्राता जगत्रयविख्यात मुनि श्रीमकलकीर्ति उपदेशात् हुवडज्ञातीय ठा. नरवद भार्या वला तयो. पुत्र ठा. देपाल अर्जुन भीमा कूपा चासण चांपा कान्हा श्रीआदिनाथप्रतिमेय ॥

(सूरत, दा. ५२)

लेखांक ३३२– पार्श्वनाथ मूर्ति

संवत् १४९२ वर्षे वैशाख वदि १० गुरु श्रीमूलसघे · भ. श्रीपद्मनदिदेवा तत्पट्टे श्रीशुभचंद्रदेवा· तत्भ्राता श्रीसकलकीर्ति उपदेशात् हुवड

न्याति उत्रेश्वर गोत्रे ठा. लींवा भार्या फह श्रीपार्श्वनाथ नित्यं प्रणमति सं. तेजा टोई श्रा. ठाकरसी हीरा देवा मूडलि वास्तव्य प्रतिष्ठिता ॥

[भा. ७ पृ. १५]

लेखांक ३३३ – शिलालेख

स्वस्तिश्री १४९४ वर्षे वैशाख सुदी १३ गुरौ मूलसघे · भ. श्रीपद्मनंदी तत्पट्टे श्रीशुभचद्र भ. श्रीसकलकीर्ति उपदेशे द्यौव्याव (?) कृत्वा संघवै नरपाल ·· ··समस्तश्रीसंघ दिगंवर श्रीअर्वदाचले आगिह तीर्थ सीतांवरु प्रासाद दिगवर पाछि दछाव्या श्रीआदिनाथ वडा दीकीजी श्रीनेमिनाथजी जिह श्रीसीतल हरखुधप्रसाद दिगंवर पाछिह पेहरी तिन वहणरी महापूज धज अवास करी संघवी गोव्यंद प्रशस्ति लिखाती ·· ॥

(आबू, जैनमित्र ३–२–१९२१)

लेखांक ३३४ – आदिनाथ मूर्ति

सं. १४९७ मूलसघे श्रीसकलकीर्ति हुबड ज्ञातीय शाह-कर्णा भार्या भोली सुता सोमा भात्री भोदी भार्या पासी आदिनाथं प्रणमति ॥

[सूरत, दा. पृ. ५२]

लेखांक ३३५ – प्रश्नोत्तर श्रावकाचार

उपासकाख्यो विवुधैः प्रपूज्यो ग्रंथो महाधर्मकरो गुणाढ्यः ।
समस्तकीर्त्यादिमुनीश्वरोक्तः सुपुण्यहेतुर्जयताद्धरित्र्याम् ॥ १४२

(अध्याय २४, प्र. मू. कि. कापडिया, सूरत १९२६)

लेखांक ३३६ – पार्श्वपुराण

अवगमजलधिश्रीपार्श्वनाथस्य दिव्यं
सकलविशदकीर्ते प्रादुरासीन्मुनींद्रात ।
यदिह वरचरित्रं तद्धि दक्षा. स्मरतु
यतिसुजनसुसेव्यं जैनधर्मोस्ति यावत् ॥

(आ. प. प. ११८)

लेखांक ३३७ – सुकुमार चरित्र

सच्चरित्रमिदमाप्तयतींद्रा ज्ञानिनो निहतदोषसमग्राः ।
शोधयंतु तनुशास्त्रभरेण सर्वकीर्तिगणिना कृतमत्र ॥ ८८ ॥
सुकुमारचरित्रस्यास्य श्लोकाः पिडिता बुधैः ।
विज्ञेया लेखकैः सर्वे ह्येकादशशतप्रमा ॥ ९४ ॥

(अध्याय ९, प्र. रा. स. दोशी, सोलापुर)

लेखांक ३३८ – मूलाचार प्रदीप

रहितसकलदोषा ज्ञानपूर्णा ऋषींद्रा-
स्त्रिभुवनपतिपूज्याः शोधयंत्वेव यत्नात् ।
विशदसकलकीर्त्याख्येम चाचारशास्त्र-
मिदमिह गणिना संकीर्तितं धर्मसिद्ध्यै ॥ २२३ ॥

(अध्याय १२, का. ५२८)

लेखांक ३३९ – आराधना

जे भणे सुणे नरनारी ते जाए भवतरि पार ।
श्रीसकलकीरति कह्यो आराधना प्रतिबोध सार ॥ ५४ ॥

(ना. ९४)

लेखांक ३४० – पंचपरमेष्ठि मूर्ति

संवत् १५१० वर्षे माह मासे शुक्लपक्षे ५ रवौ श्रीमूलसंघे ··भ. पद्म-नंदि तत्पट्टे भ श्रीसकलकीर्ति तत्शिष्य ब्र. जिनदास हुबडज्ञातीय सा. तेजु भा. मलाई · ॥

[ना. ५३]

लेखांक ३४१ – गुणस्थान गुणमाला

श्रीसकलकीरति पाय पणमीने कियो रास मै सार ।
गुणस्थानक गुण वरणव्या त्रिभुवनतारणहार ॥ ४३
दुइ कर जोडि विनवे ब्रह्मचारि जिनदास ।

भविभविनि ग्रंथ सेविसुं मागिसुं चरणेहु वास ॥ ४४

(म. ४५)

लेखांक ३४२ – ज्येष्ठ जिनवर पूजा

श्रीसकलकीरति गुरु प्रणमिने जिनवर पूज रयं ।
ब्रह्म भणे जिनदास तो आतमा निर्मलयं ॥ १४

[च. १९०५]

लेखांक ३४३ – पार्श्वनाथ मूर्ति भुवनकीर्ति

संवत् १५२७ वर्षे वैशाख वदि ११ बुधे श्रीमूलसंघे भ. श्रीसकलकीर्तिस्तत्पट्टे भ. श्रीभुवनकीर्ति उपदेशात् हुंबुध गोत्रे ·· ॥

(भा. ७ पृ. १६)

लेखांक ३४४ – रामायण रास

श्रीमूलसंघ अति निरमलो सरसतीगछ गुणवंत ।
श्रीसकलकीरति गुरु जाणीइ जिणसासणि जयवंत ॥
तास पाटि अति रूवडा श्रीभुवनकीर्ति भवतार ।
गुणवंत मुनि गुणि आगला तप तणा भंडार ।
तीहु मुनिवर पाय प्रणमीने किया रास ए सार ।
ब्रह्म जिनदास भणे रूवडो पढतां पुण्य अपार ॥
शिष्य मनोहर रूवडा ब्रह्म मलिदास गुणदास ।
पढो पढावो विस्तरे जिम होइ सौख्य निवास ॥
संवत पंनर अठोत्तरा मागसिर मास विशाल ।
शुक्ल पक्ष चउ दिन रास कियो गुणमाल ॥

(ना. २२)

लेखांक ३४५ – हरिवंश रास

उपर्युक्त के समान, सिर्फ अन्तिम पद्य भिन्न है–

संवत पंनर वीसोत्तरा वैशाख मास विशाल ।
सुकल पक्ष चौदसि दिन रास कियो गुणमाल ॥

[ना. २०]

लेखांक ३४६ – कर्मविपाक रास

सरस्वति स्वामिणि सरस्वति स्वामिणि तणइ पसाइ ।
रास कियो मि निरमलो करमविपाकतणो निरमलो ।
ते कर्मक्षय कारणि ॥

सुणो भवियण तम्हे मनोहार ।
श्रीसकलकीरति पाय प्रणमीनि मुनि भुवनकीरति भवतार ।
ब्रम्ह जिणदास म्हणे वादिस्यु मागिस्यु तम्ह गुण सार ॥

[ना. ७]

लेखांक ३४७ – धर्मपरीक्षा रास

श्रीगणधर स्वामी नमसकरू श्रीसकलकीरति भवतार ।
मुनि भुवनकीरति पाय प्रणमीनि कहिसूं रासहु सार ॥ १
धरमपरीक्षा करूं निरमली भवियण सुणो तम्हे सार ।
ब्रम्ह जिणदास कहि निरमलो जिम जाणो विचार ॥ २

[ना. ३८]

लेखांक ३४८ – जंबूस्वामी रास

श्रीसकलकीरति गुरु प्रणमीने हो भुवनकीरति गुरु वांदि ।
रास कियो मइं निरमलो हो जबूकुंअरनु आदि ॥
पढइ गुणइ जे सांभलि तेह घरि ऋद्धि अनत ।
ब्रम्ह जिणदास इणि परि भणि मुगति रमणी होइ कंत ॥

[ना. ३७]

लेखांक ३४९ – जीवंधर रास

जीवधर स्वामी तणो मि रास कीधो सरस सोहावणो ।
सरस्वति तणइ पसाइ निरमल कामदेव गुरु वरणव्या ॥
श्रीसकलकीरति गुरु प्रणमीने वली भुवनकीरति भवतार ।
ब्रम्ह जिणदास भणे निरमलो पढो तम्हे भवियण सार ॥

[ना. ३६]

लेखांक ३५० – जसोधर रास

गणधरस्वामि नमसकरु श्रीसकलकीरति भवतार ।
भुवनकीरति गुरु प्रणमीने ब्रम्ह जिणदास भणे सार ॥
भवियण भावइ सुणउ आज मनि निश्चयो आणि ।
राय जसोधर तणउ रास हुं कहिसु वखाणि ॥

(ना. ३९)

लेखांक ३५१ – श्रेणिकचरित्र

शिष्यु सकलकीर्ति देवाचा । तो जीणदासु गुरु आमुचा ।
प्रसादु लाधला त्याचा । गुणदासे खा ॥ ९५ ॥
त्या जिनब्रम्हाच्या चरनी । गुणब्रम्हे नमन करौनि ।
वोवीबध ग्रंथु करुनि । वेगळा ठेला ॥ ९६ ॥

[अ. ४, ना. ७]

लेखांक ३५२ – चारित्र यंत्र ज्ञानभूषण

सं १५३४ श्रीमूलसंघे भ जिनचद्राम्नाये भ. श्रीभुवनकीर्तिस्तत्पट्टे श्रीज्ञानभूषणगुरूपदेशात् लंवेचू सा उजागर ·· ॥

(भा. प्र. पृ. १७)

लेखांक ३५३ – रत्नत्रय मूर्ति

संवत १५३५ श्रीमूलसंघे भ श्रीभुवनकीर्ति तत्पट्टे भ श्रीज्ञानभूषणोपदेशात्·· ॥

(बालापुर, अ ४ पृ ५०२)

लेखांक ३५४ – पद्मप्रभ मूर्ति

संवत १५४२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ८ शनौ श्रीमूलसघे भ सकलकीर्ति तत्पट्टे भ श्रीभुवनकीर्ति तत्पट्टे भ श्रीज्ञानभूपणगुरूपदेशात् जांगडा पोरवाडज्ञातीय स वाजु मानेजु ॥

(अ. ४ पृ. ५०२)

लेखांक ३५५ – रत्नत्रय मूर्ति

सं. १५४३ श्रीमूलसंघे भ. श्रीभुवनकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीज्ञानभूषण-गुरूपदेशात् · ॥

(सु. हि. जोहरापुरकर, नागपुर)

लेखांक ३५६ – १ मूर्ति

संवत १५४४ वर्षे वैसाख सुदि ३ सोमे श्रीमूलसंघे भ. श्रीविद्यानंदि भ. श्रीभुवनकीर्ति भ. श्रीज्ञानभूषण गुरूपदेशात् हूंवड साह चांदा भार्या रेमाई·· ॥

(अ. ४ पृ. ५०३)

लेखांक ३५७ – सुमतिनाथ मूर्ति

सं १५५२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ शुक्रे श्रीमूलसंघे भ. भुवनकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीज्ञानभूषण गुरूपदेशात् हुंवड श्रेष्ठी पर्वत भार्या देऊ··· ॥

(ना. ५१)

लेखांक ३५८ – तत्त्वज्ञान तरंगिणी

जातः श्रीसकलादिकीर्तिमुनिपः श्रीमूलसंघेग्रणी–
स्तत्पट्टोदयपर्वते रविरभूद्भव्यांबुजानंदकृत् ।
विख्यातो भुवनादिकीर्तिरथ यस्तत्पादकंजे रतः ।
तत्त्वज्ञानतरंगिणीं स कृतवानेतां हि चिद्भूषण· ॥ २१
यदैव विक्रमातीता शतपंचदशाधिका ।
षष्टि· संवत्सरा जातास्तदेयं निर्मिता कृति· ॥ २३

(अध्याय १८, सनातन ग्रथमाला, कलकत्ता १९१६)

लेखांक ३५९ – पट्टावली

··दिल्लीसिंहासनाधीश्वराणां, प्रतापाक्रान्तदिङ्मण्डलाखण्डनसमान-भैरवनरेन्द्रविहितातिभक्तिभाराणां, अष्टाङ्गसम्यक्त्वाद्यनेकगुणगणालंकृत-

श्रीमदिन्द्रभूपालमस्तकन्यस्तचरणसरोरुहाणां, ···श्रीदेवरायसमाराधितचरण-वारिजानां, जिनधर्माराधकमुदिपालराय–रामनाथराय–बोमरसराय–कलप-राय–पाण्डुरायप्रभृतिअनेकमहीपालार्चितक्रमकमलयुगलानाम् ···· भट्टारक-वर्यश्रीज्ञानभूषण–भट्टारकदेवानाम् ॥

(भा. १ कि. ४ पृ. ४४)

लेखांक ३६० – विषापहार टीका

······विषापहार इति व्यपदेशभाजोतिगहनगंभीरस्य सुखावबोधार्थं बागडदेशमंडलाचार्यज्ञानभूषणदेवैर्मुहुरुपरुद्ध. कर्णाटादिराजसभाप्रसिद्धः प्रवादिगजकेसरी विरुदकविमदविदारी सद्दर्शनज्ञानधारी नागचंद्रसूरिः धनंजयसूर्येभिमतार्थं व्यक्तीकर्तुमशक्नुवन्नपि गुरुवचनमलंघनीयमिति न्यायेन तदभिप्रायं विवरीतु प्रतिजानीते ॥

(हि. १२ पृ. ८७)

लेखांक ३६१ – ऋषिमंडलपूजा

श्रीमच्चारुचरित्रपात्रगुणवच्छ्रीज्ञानभूषांघ्रिभाग् ।
अर्हच्छामनभक्तिनिर्मलरुचि. पद्माजनुर्वा शुचि ॥
वीरांत करणश्च चारुचरणे बुद्धिप्रवीणोरचत् ।
पूजां श्रीऋषिमंडलस्य महतीं नंदी गुणादिर्मुनिः ॥

(जैन ग्रंथ रत्नाकर, बम्बई १९२६)

लेखांक ३६२ – शांतिनाथ मूर्ति　　विजयकीर्ति

सं. १५५७ वर्षे माघ वदि ५ गुरौ श्रीमूलसंघे · भ. श्रीसकलकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीभुवनकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीज्ञानभूषण तत्पट्टे भ. श्रीविजयकीर्ति-गुरूपदेशात् हूंबडज्ञातीय ·· ॥

(वीसनगर, जैन साहित्य और इतिहास पृ. ५३१)

लेखांक ३६३ – शांतिनाथ मूर्ति

संवत १५६० वैसाख सुदि २ बुधे श्रीमूलसंघे···भ. ज्ञानभूषण तत्पट्टे

भ. विजयकीर्तिगुरूपदेशात् हूंवड ज्ञातीय श्रेष्ठी सालिंग भार्या ताकू··· ॥

(अ. ४ पृ. ५०३)

लेखांक ३६४ – रत्नत्रय मूर्ति

संवत १५६१ वर्षे वैसाख सुदि १० वुधे श्रीमूलसंघे भ. श्रीज्ञानभूषण तत्पट्टे भ. श्रीविजयकीर्तिगुरूपदेशात् लाडण ·· ॥

(ना. ५४)

लेखांक ३६५ – [पद्मनंदि पंचविंशतिका]

सं. १५६८ वर्षे फागुणमासे शुक्लपक्षे १० दिन गुरौ श्रीगिरिपुरे श्रीआदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे भ श्रीज्ञानभूषण तत्पट्टे भ. श्रीविजयकीर्ति तत्भगिनि आर्यिका देवश्री तस्यै पद्मनंदिपंचविंशतिका श्रीसंघेन लिखाप्य दत्ता ॥

(बडौदा, दा. पृ. ३४)

लेखांक ३६६ – पट्टावली

यः पूज्यो नृपमल्लिभैरवमहादेवेंद्रमुख्यैर्नृपैः
षट्तर्कागमशास्त्रकोविदमतिर्जाग्रद्यशश्चंद्रमा ।
भव्यांभोरुहभास्करः शुभकरः संसारविच्छेदक.
सोव्याच्छ्रीविजयादिकीर्तिमुनिपो भट्टारकाधीश्वरः ॥ ३६

(भा १ कि. ४ पृ. ५४)

लेखांक ३६७ – अध्यात्मतरंगिणी टीका शुभचंद्र

विजयकीर्तियतिर्जगता गुरुर्विधृतधर्मधुरोध्दृतिधारकः ।
जयतु शासनभासनभारतीमयमतिर्दलितापरवादिक. ॥
शिष्यस्तस्य विशिष्टशास्त्रविशद. ससारभीताशयो
भावाभावविवेकवारिवितरः स्याद्वादविद्यानिधि ।
टीकां नाटकपद्यजा वरगुणाध्यात्मादिस्रोतस्विनीं
श्रीमच्छ्रीशुभचद्र एप विधिवत् सचर्करीति स्म वै ॥
त्रिभुवनवरकीर्तेर्जातरूपात्तमूर्ते. शमदमयमपूर्तेराग्रहान्नाटकस्य ।

विशदविभववृत्तो वृत्तिमाविश्चकार गतनयशुभचंद्रो ध्यानसिद्ध्यर्थमेव॥
विक्रमवरभूपालात् पंचत्रिशते त्रिसप्ततिव्याधिके ।
वर्षेऽप्याश्विनमासे शुक्ले पक्षेथ पंचमीदिवसे ॥

[सनातन ग्रंथमाला, १५, कलकत्ता]

लेखांक ३६८ – पंचपरमेष्ठि मूर्ति

संवत १६०७ वर्षे वैसाख वदी ३ गुरु श्रीमूलसंघे भ. श्रीशुभचद्रगुरूपदेशात् हुंबड संखेस्वरा गोत्रे सा जिना ·· ॥

(पा. ने. जोहरापुरकर, नागपुर)

लेखांक ३६९ – करकंडुचरित्र

द्व्यष्टे विक्रमतः शते समइते चैकादशाब्दाधिके
भाद्रे मासि समुज्ज्वले समतिथौ खंगेजवाछे पुरे ।
श्रीमच्छ्रीवृषभेश्वरस्य सदने चक्रे चरित्रं त्विदं
राज्ञः श्रीशुभचंद्रसूरियतिपश्चंपाधिपस्याद्भुतम् ॥

[अ ११, पृ. २६५]

लेखांक ३७० – कार्तिकेयानुप्रेक्षा टीका

श्रीमद्विक्रमभूपतेः परिमिते वर्षे शते षोडशे
माघे मासि दशाग्रवह्निसहिते ख्याते दशम्यां तिथौ ।
श्रीमच्छ्रीमहिसारसारनगरे चैत्यालये श्रीगुरोः
श्रीमच्छ्रीशुभचंद्रदेवविहिता टीका सदा नंदतु ॥ ६
वर्णिश्रीक्षेमचंद्रेण विनयेनाकृत प्रार्थना ।
शुभचंद्रगुरो स्वामिन् कुरु टीकां मनोहराम् ॥ ७
तथा साधुसुमत्यादिकीर्तिनाकृत प्रार्थना ।
सार्थीकृता समर्थेन शुभचद्रेण सूरिणा ॥ ९
भट्टारकपदाधीशा मूलसघे विदा वराः ।
रमावीरेन्दुचिद्रूपगुरवो हि गणेशिन ॥ १०

[जैन साहित्य और इतिहास पृ. ५२८]

लेखांक ३७१ – संशयिवदनविदारण

अ. १ क्षुद्बाधारहितत्वं हि जिनस्यानंतशर्मणः ।
एष्टव्यं भव्यसद्वर्गैः शुभचंद्रैस्त्रिदावहैः ॥
अ. २ इत्यवादि च संवादात् स्त्रीनिर्वाणनिवारणम् ।
शुभचद्रेण संक्षेपाद् विस्तारोन्यत्र लोक्यताम् ॥
अ. ३ श्रीमतो वर्धमानस्याहृतेर्भ्रूणस्य वारणम् ।
प्रणीतं शुभचंद्रेण जीयादाचंद्रतारकम् ॥

(हरीभाई देवकरण ग्रथमाला, कलकत्ता १९२२)

लेखांक ३७२ – षड्दर्शनप्रमाणप्रमेयानुप्रवेश

जयति शुभचंद्रदेव· कंडूगणपुंडरीकवनमार्तंडः ।
चंडत्रिदंडदूरो राद्धांतपयोधिपारगो बुधविनुत. ॥

(भा. ग्र. पृ. २१)

लेखांक ३७३ – अंगपण्णत्ती

सिरिसयकलकित्तिपट्टे आसेसी भुवणकित्तिपरमगुरु ।
तप्पट्टकमलभाणू भडारओ बोहभूसणओ ॥
सिरिविजयकित्तिदेओ णाणासत्थप्पयासओ धीरो ।
बुहसेवियपयजुअलो तप्पयवरकलभसत्तो य ॥
तप्पयसेवणसत्तो तेवेज्जो उहयभासपरिवेई ।
सुहचंदो तेण इणं रइयं सत्थं समासेण ॥

[सिद्धातसारादिसंग्रह, माणिकचंद्र ग्रथमाला, बम्बई]

लेखांक ३७४ – नंदीश्वर कथा

जगति जयति दक्ष· पालितानेकपक्ष·
सुगुरुविजयकीर्ति प्रस्फुरत्सूरिमूर्तिः ।
चरणनलिनरक्तस्तस्य सद्भक्तियुक्त·
समकृत शुभचंद्र सत्कथा भव्यचंद्र ॥

(ना. २५)

लेखांक ३७५ – पांडवपुराण

विजयकीर्तियतिर्मुदितात्मको जितनतान्यमनःसुगतैः स्तुतः ।
अवतु जैनमतं सुमतो मतो नृपतिभिर्भवतो भवतो विभुः ॥ ७०
पट्टे तस्य गुणांबुधिर्व्रतधरो धीमान् गरीयान् वरः
श्रीमच्छ्रीशुभचंद्र एष विदितो वादीभसिंहो महान् ।
तेनेदं चरितं विचारसुकरं चाकारि चंचद्रुचा
पाण्डोः श्रीशुभसिद्धिसातजनकं सिद्ध्यै सुतानां सदा ॥ ७१
चंद्रनाथचरितं चरितार्थं पद्मनाभचरितं शुभचंद्रम् ।
मन्मथस्य महिमानमतंद्रो जीवकस्य चरितं च चकार ॥ ७२
चंदनायाः कथा येन दृब्धा नांदीश्वरी तथा ।
आशाधरकृताचारवृत्तिः सद्वृत्तिशालिनी ॥ ७३
त्रिंशच्चतुर्विंशतिपूजनं च सद्वृत्तसिद्धार्चनमाव्यधत्त ।
सारस्वतीयार्चनमत्र शुद्धं चिंतामणीयार्चनमुच्चरिष्णुः ॥ ७४
श्रीकर्मदाहविधिवधुरसिद्धसेवां नानागुणौघगणनाथसमर्चनं च ।
श्रीपार्श्वनाथवरकाव्यसुपंजिकां च यः संचकार शुभचंद्रयतींद्रचंद्रः ॥
उद्यापनमदीपिष्ट पल्योपमविधेश्च यः ।
चारित्रशुद्धितपसश्चतुस्त्रिद्वादशात्मनः ॥ ७६
संशयवदनविदारणमपशब्दसुखंडनं परमतर्के ।
सत्तत्त्वनिर्णयं वरस्वरूपसंबोधिनीं वृत्तिं ॥ ७७
अध्यात्मपद्यवृत्तिं सर्वार्थापूर्वसर्वतोभद्रम् ।
योऽकृत सद्व्याकरणं चिंतामणिनामधेयं च ॥ ७८
कृता येनांगप्रज्ञप्तिः सर्वांगार्थप्ररूपिका ।
स्तोत्राणि च पवित्राणि षड्वादाः श्रीजिनेशिनाम् ॥ ७९
श्रीमद्विक्रमभूपतेर्द्विकहते स्पष्टाष्टसंख्ये शते
रम्येऽष्टाधिकवत्सरे सुखकरे भाद्रे द्वितीयातिथौ ।
श्रीमद्वाग्वरनिर्वृतीदमतुले श्रीशाकवाटे पुरे
श्रीमच्छ्रीपुरुपाभिधे विरचितं स्थेयात् पुराणं चिरम् ॥ ८६

श्रीपालवर्णिना येनाकारि शास्त्रार्थसंग्रहे।
साहाय्यं स चिर जीयाद् वरविद्याविभूषणः॥ ८२

(भा. १ कि. ४ पृ. ३७)

लेखांक ३७६ – १ मूर्ति सुमतिकीर्ति

संवत १६२२ वैशाख सुदि ३ सोमे श्रीकुंदकुंदान्वये…भ. श्रीविजयकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ श्रीशुभचद्रदेवाः तत्पट्टे भ. सुमतिकीर्तिगुरूपदेशात हूमडज्ञातीय गां. रामा भार्या वीरा ‥ ॥

[अ. ४ पृ. ५०३]

लेखांक ३७७ – वेदी लेख

सं. १६२५ वर्षे पौप वदी ५ शुक्रे श्रीमूलसंघे…भ. शुभचंद्र तत्पट्टे भ. श्रीसुमतिकीर्तिगुरूपदेशात् हूमडज्ञातीय गांधी नरपति ‥ ॥

[तारंगा, दा. पृ. ७५]

लेखांक ३७८ – अजितनाथ मूर्ति गुणकीर्ति

श्रीमूलसंघे संमत १६३१ वर्षे फाग सुदी १० सोमे भ. श्रीगुणकीर्तिगुरूपदेशात् सं. ॥

(परवार मन्दिर, नागपुर)

लेखांक ३७९ १ मूर्ति

सं. १६३७ वर्षे वैसाख वदि ८ श्रीमूलसंघे भ. श्रीगुणकीर्तिउपदेशात् ब्र. अलवा भार्या शहा सुत कदूवा नाकरठा ‥प्रणमति॥

[भा. ७ पृ. १४]

लेखांक ३८० – (जीवंधर रास)

सं. १६३९ वर्षे कार्तिकमासे सुक्लपक्षे पंचमी रवौ। श्रीवाग्वरदेशे श्रीसागवाडाशुभस्थाने श्रीआदिनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीपद्मनंदीदेवा तत्पट्टे भ. श्रीसकल-

कीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीभुवनकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीज्ञानभूषणदेवाः तत्पट्टे भ. विजयकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेवा. तत्पट्टे श्रीसुमतिकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. गुणकीर्तिदेवाः तत्शिष्य ब्रम्ह श्रीहरषा तत्शिष्य ब्रम्ह श्रीशंकर लख्यतं आत्मपठनार्थं ॥

[ना. ३६]

लेखांक ३८१ – श्रेणिकपृच्छा कर्मविपाक

शुभचंद्र-जशचंद्रज कही सुमतिकीरति गुरु वंदू सही।
श्रीगुनकीरति भट्टारक भने भणे सुणे इच्छित तेहने ॥ ७१

(ना. ६)

लेखांक ३८२ – [अध्यात्मतरंगिणी] वादिभूषण

संवत् १६५२ वर्षे ज्येष्ठ द्वितीय कृष्ण दशम्यां शुक्रे मूलसंघे··· भ. श्रीसुमतिकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीवादिभूषणगुरुस्तच्छिष्य प. देवजी पठनार्थं ॥

[जैन साहित्य और इतिहास पृ. ५२९]

लेखांक ३८३ – वासुपूज्य मूर्ति

सवत १६५५ वर्षे वैसाख शुदी ६ शुक्रे भ श्रीवादीभूषण गुरु उपदेशात् · ॥

(का. १)

लेखांक ३८४ – ? मूर्ति

सं. १६५६ फागुण शुदि ३ गुरौ श्रीमूलसंघे भ श्रीवादिभूषणोपदेशात् श्रीमालज्ञातौ···

[का. ३]

लेखांक ३८५ – सुपार्श्वनाथ मूर्ति रामकीर्ति

संमत १६७० वर्षे फाल्गुण वदी ५ शुभे श्रीमूलसंघे भ श्रीरामकीर्ति

प्रतिष्ठितं सेनगणे वघेरवाल ज्ञातिय चवरिया गोत्रे सा. धाऊजी भार्या चोपाई ·· ॥

(परवार मन्दिर, नागपुर)

लेखांक ३८६ – पद्मप्रभ मूर्ति

संमत १६७० वर्षे फागुन वदी ५ शुक्रे श्रीमूलसघे भ. श्रीवादीभूषण तत्पट्टे भ. श्रीरामकीर्तिगुरूपदेशात् अगरवालज्ञातियि सं. · ॥

(भा. १३ पृ. १३०)

लेखांक ३८७ – पार्श्वनाथ मूर्ति पद्मनंदी

संवत १६८३ वर्षे माघ शु. ५ गुरौ श्रीमूलसघे भ. श्रीरामकीर्ति तत्पट्टे पद्मनंदिगुरूपदेशात् हूमड ज्ञातीय लघुशाखा खरजा गोत्रे सं. नाकर ॥

(भा. १४ पृ. २९)

लेखांक ३८८ – शांतिनाथ मूर्ति

संवत १६८६ वर्षे वैशाख सुदी ५ बुधे शाके १५५१ वर्तमाने श्रीमूलसंघे ·····भ. श्रीवादिभूषणदेवा· तत्पट्टे भ. श्रीरामकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीपद्मनंदिगुरूपदेशात् पादशाह श्रीसाहजहां विजयराज्ये श्रीगुर्जरदेशे श्रीअहमदावादवास्तव्य–हुवड--ज्ञातीय–बृहच्छाखीय–वाग्वरदेशख्यातरीय–नगर–नौतनभद्र–प्रासादोद्धरणधीर–जाज स. भोजा भार्या लकु ··एतेषां महासिद्धक्षेत्र–श्रीसेत्रुंजयरत्नगिरी–श्रीजिनप्रासाद–श्रीशांतिनाथबिंब कारयित्वा नित्य प्रणमति । शुभं भवतु ॥

(जैनमित्र, २७–१–१९२०)

लेखांक ३८९ – (गणितसार संग्रह)

सवत १७०२ वर्षे माह शुदि ३ शुक्रे श्रीमूलसंघे ··भ. श्रीसकलकीर्तिदेवा. तदन्वये भ श्रीवादिभूषण तत्पट्टे भ. श्रीरामकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीपद्मनंदी विराजमाने आचार्यश्रीनरेंद्रकीर्ति तच्छिष्य ब्रम्ह श्रीलाडचका तच्छिष्य ब्रम्ह कामराज तच्छिष्य ब्रम्ह लालजी ताभ्यां श्रीरायदेशे श्रीभीलोडानगरे श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये दोसी कुहा · दत्तं श्रीरस्तु ॥

[का. ६३]

लेखांक ३९० – [शब्दार्णवचंद्रिका]   देवेंद्रकीर्ति

संवत् १७१३ वर्षे कार्तिक शुदि अष्टमी बुधे वाग्वरदेशे सागवाडा-नगरे श्रीआदीश्वरनवीनचैत्यालये राउल–श्रीपुंजराजविजयराज्ये श्रीमूलसंघे भ. श्रीरामकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्ति-देवाः तदाम्नाये मुनि श्रीश्रुतकीर्तिस्तच्छिष्य–मुनि श्रीदेवकीर्तिस्तच्छिष्या–चार्यश्रीकल्याणकीर्ति तच्छिष्य ब्रम्ह तेजपालेन स्वज्ञानावरणीयकर्मक्षयार्थं स्वपरपठनार्थं जैनेंद्रमहाव्याकरणं सवृत्तिकं लिखितं शोधितं च ॥

[सनातन ग्रन्थमाला, बनारस १९१५]

लेखांक ३९१ – [गणितसारसंग्रह]

संवत १७२५ वर्षे कार्तिक सुदि १० भौमे श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ. श्रीसकलकीर्त्यन्वये भ. श्रीवादिभूषणदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्तिगुरूपदेशात् मुनिश्रीश्रुतकीर्ति तच्छिष्य मुनिश्रीदेवकीर्ति तच्छिष्याचार्य–श्रीकल्याणकीर्ति तच्छिष्य मुनिश्री त्रिभुवनचंद्रेणेदं षट्त्रिंशतिका गणितशास्त्रं कर्मक्षयार्थं लिखितं ॥

(का. ६५)

लेखांक ३९२ – १ मूर्ति   क्षेमकीर्ति

सं. १७३४ वर्षे मूलसघे श्रीपद्मनदी तत्पट्टे भ श्रीदेवेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीक्षेमकीर्ति शुद्धाम्नाये वागड देश शीतलवाडानगरे हूमड ज्ञातीय लघु-साखाया कमलेश्वरगोत्रे दोशीश्रीसूरदास ॥

[दा. पृ. ७४]

लेखांक ३९३ – [अष्टसहस्री]   नरेंद्रकीर्ति

वत्से नेत्रषडश्वसोम १७६२ निहिते ज्येष्ठे च मासेनघे
शुभ्रे पक्ष इति त्रयोदशदिने श्रीतक्षकाख्ये पुरे ।
नेमिस्वामिगृहे व्यलीलिखदिदं देवागमालंकृते
पुस्तं पूज्यनरेंद्रकीर्तिसुगुरोः श्रीलालचंद्रो वटु ॥

[अ. १० पृ. ७३]

लेखांक ३९४ – चरण पादुका चंद्रकीर्ति

स्वस्तिश्री संवत १८३२ शाके १६८७ प्रवर्तमाने शुभकारक कल्याणमासे कृष्णपक्षे ३ तृतीया शुभस्थ तिथि शुक्रवासेर श्रीखडुदेश धूलेवग्रामे श्रीऋषभदेवचैत्यालये श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीसकलकीर्ति तत्पट्टे भुवनकीर्ति तदनुक्रमेण भ. श्रीक्षेमकीर्ति तत्पट्टे श्रीनरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीविजयकीर्ति तत्पट्टे भ नेमिचंद्र तत्पट्टे भ. श्री १०८ श्रीचंद्रकीर्ति प्रतिष्ठिते 'बाईजी श्रीसजूबाईके चतुरविंशति जिनपादुका स्थापितं शुभं।

(केशरियाजी, वीर २ पृ. ४६०)

लेखांक ३९५ – शिलालेख यशःकीर्ति

देडारग देश मेवाडमे उदयापुर सुजान।
राज करे तिह राजवी भीमसिंह राजान॥
संवत १८६३ मे अषाढ सुदी ३ तीज।
गुरुवारे मुहूर्तज कर्‍यो भली तरे पूजा कीध॥
मूलसंघ गछ सरस्वती बलात्कार गण धरखुदो।
कुदकुंद सूरिवर भलो सकलकीर्ति गछ॥
ते पाटे गुरु शोभतो भुवनकीर्ति नमूं पाय।
ज्ञानभूषण ते पाटे प्रगट विजयकीर्ति सूरि हृदय॥
शुभचंद्र सूरिवर सदा सुमतिकीर्ति गुणकीर्ति गुरु।
गुपातिलु वादिभूषण तस पाट रामकीर्ति पाट शोभतो॥
राख्यो धर्मन ठाठ पद्मनंदि पाटे सुजस।
देवेंद्रकीर्ति गुणधार खेमकीर्ति पर उज्ज्वलो॥
नरेंद्रकीर्ति मनुहार विजयकीर्ति पट्टे गुरु।
नेमिचंद्र भवतार चंद्रकीर्ति चद्र समो॥
रामकीर्ति सुखकार यश कीर्ति सूरिवर सिंह।
उदयो पुन्य अंकुर करी प्रतिष्ठा दुर्ग तणी॥
जस व्याप्यो भरपूर वागडदेश सुहावनो।
सागलपुर वर ग्राम सघपति साहर लिया॥

(केशरियाजी, वीर २ पृ. ४६१)

इस शाखा का आरम्भ भ. सकलकीर्ति से हुआ। आप भ. पद्मनन्दी के शिष्य थे जिन का वृत्तान्त उत्तर शाखा मे आ चुका है। आप ने आयु के २५ वे वर्ष मे दीक्षा ग्रहण की तथा २२ वर्ष दिगम्बर मुनि के रूप में रहे। आप ने सवत् १४९० की वैशाख शु. ९ को एक चौवीसी मूर्ति, सवत् १४९२ की वैशाख कृ. १० को एक पार्श्वनाथ मूर्ति, सवत् १४९४ की वैशाख शु. १३ को अबू पर्वत पर एक मन्दिर, सवत् १४९७ मे एक आदिनाथ मूर्ति तथा सवत् १४९९ मे सागवाडा मे आदिनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा की। सागवाडा मे ही आप ने भ. धर्मकीर्ति का पट्टाभिषेक किया [ले. ३२९–३४]। आप ने प्रश्नोत्तर श्रावकाचार, पार्श्वपुराण, सुकुमारचरित मूलाचारप्रदीप, आराधना आदि ग्रन्थो की रचना की [ले. ३३५–३९]।[५७] आप के शिष्य ब्रह्म जिनदास ने सवत् १५१० की माघ शु ५ को एक पचपरमेष्ठी मूर्ति स्थापित की तथा गुणस्थान गुणमाला और ज्येष्ठ–जिनवरपूजा की रचना की [ले. ३४०–४२]।

सकलकीर्ति के पट्ट पर भुवनकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने संवत् १५२७ की वैशाख कृ ११ को एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की [ले. ३४३]। आप के शिष्य ब्रह्म जिनदास ने सवत १५०८ की मार्गशीर्ष शु. ४ को रामायणरास की, तथा सवत् १५२० की वैशाख शु. १४ को हरिवंशरास की रचना की। इन रचनाओ मे आप ने मल्लिदास और गुणदास इन शिष्यो का भी उल्लेख किया है [ले. ३४४–४५]। कर्मविपाकरास, धर्मपरीक्षारास, जम्बूस्वामीरास, जीवन्धररास, जसोधररास,

---

५७ सकलकीर्तिकृत महावीरपुराण और सुदर्शनचरित्र के हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित हुए हैं। इन के अलावा ग्रन्थसूचियों मे इन के अनेक ग्रन्थो के नाम मिलते हैं। किन्तु निश्चितता के खयाल से यहा उन का उल्लेख छोड दिया है। सकलकीर्ति ने किसी ग्रन्थ में लेखनकाल या गुरुपरम्परा का उल्लेख नहीं किया है।

ये आप की अन्य रचनाएं हैं। [58]आप के शिष्य ब्रह्म गुणदास ने मराठी श्रेणिकचरित्र लिखा है [ले. ३५१]।[59]

भ. भुवनकीर्ति के बाद भ. ज्ञानभूषण पट्टाधीश हुए। आप ने सवत् १५३४ में एक चारित्रयंत्र, संवत् १५३५ में एक रत्नत्रय मूर्ति, सवत् १५४२ की ज्येष्ठ शु. ८ को एक पद्मप्रभ मूर्ति, सवत् १५४३ में एक रत्नत्रय मूर्ति, सवत् १५४४ में एक अन्य मूर्ति, तथा सवत् १५५२ की ज्येष्ठ कृ. ७ को एक सुमतिनाथ मूर्ति की स्थापना की (ले. ३५२–५७)। सवत् १५६० में आप ने तत्त्वज्ञानतरंगिणी की रचना की (ले. ३५८)। पट्टावली के अनुसार इन्द्रभूपाल, देवराय, मुदिपालराय, रामनाथराय, बोमरसराय, कलपराय तथा पाण्डुराय ने [60]आप का सन्मान किया था [ले. ३५९]। आप के शिष्य नागचन्द्रसूरि ने विषापहारटीका की तथा गुणनन्दि ने ऋषिमंडलपूजा की रचना की [ले. ३६०–६१]।[61]

भ. ज्ञानभूषण के पट्टशिष्य भ. विजयकीर्ति हुए। आप ने संवत् १५५७ की माघ कृ. ५ को तथा संवत् १५६० की वैशाख शु. २ को शान्तिनाथ मूर्तियां तथा सवत् १५६१ की वैशाख शु. १० को रत्नत्रय मूर्ति स्थापित की [ले. ३६२–६४]। सवत् १५६८ की फाल्गुन शु.

---

५८ सकलकीर्ति के समान ब्रह्म जिनदास के ग्रन्थों की संख्या भी काफी अधिक है। इन के विषय में पं. परमानन्द का एक लेख अनेकान्त वर्ष ११ पृ. ३३३ पर देखिए।

५९ भ. भुवनकीर्ति के शिष्य ज्ञानकीर्ति से मानपुर परम्परा का आरम्भ हुआ था इस लिए उनका वृत्तान्त अगले प्रकरण में संगृहीत किया है।

६० ये कर्णाटक के स्थानीय शासक थे किन्तु इन के पृथक् निश्चित राज्यकाल ज्ञात नहीं हो सके।

६१ ज्ञानभूषण के विषय में देखिए– पं. नाथूराम प्रेमी का लेख (जैन साहित्य और इतिहास पृ ५२६) तथा पं. परमानन्द का लेख (अनेकान्त वर्ष १३ पृ. ११९)

१० को श्रीसघ ने आप की भगिनी आर्यिका देवश्री के लिए पद्मनन्दि पंचविंशति की प्रति लिखवाई थी [ले ३६५]। पट्टावली के अनुसार मल्लिराय, भैरवराय और देवेन्द्रराय ने [६२]विजयकीर्ति का सन्मान किया था [ले. ३६६]।

विजयकीर्ति के शिष्य शुभचन्द्र भट्टारक हुए। आप ने त्रिभुवन-कीर्ति[६३] के आग्रह से संवत् १५७३ की आश्विन शु. ५ को अमृतचन्द्र कृत समयसार कलशो पर परमाध्यात्मतरगिणी नामक टीका लिखी।

आप ने सवत् १६०७ की वैशाख कृ. ३ को एक पचपरमेष्ठी मूर्ति स्थापित की। सवत् १६११ की भाद्रपद में आप ने करकण्डु चरित्र लिखा। क्षेमचद्र और सुमतिकीर्ति के आग्रह से सवत् १६१३ की माघ शु. १० को आप ने हिसार मे कार्तिकेयानुप्रेक्षा पर टीका लिखी। इस समय लक्ष्मीचन्द्र, वीरचन्द्र और ज्ञानभूषण भट्टारक वलात्कार गण के विभिन्न पीठो पर विराजमान थे [ले. ३६७-७०]।[६४]

सशयिवदनविदारण, षड्दर्शनप्रमाणप्रमेयानुप्रवेश, अगपण्णत्ती तथा नन्दीश्वर कथा ये आप की अन्य रचनाए हैं [ले. ३७१-७४]। संवत् १६०८ की भाद्रपद द्वितीया को सागवाडा मे आप ने पाण्डवपुराण की रचना पूरी की। इस में वर्णी श्रीपाल ने आप को सहायता दी थी [ले. ३७५]। इस पुराण की प्रशस्ति से उपर्युक्त रचनाओ के अतिरिक्त आप की १८ अन्य रचनाओ का पता चलता है जो इस प्रकार है— चन्द्रनाथचरित, पद्मनाथचरित, प्रद्युम्नचरित, जीवन्धरचरित, चन्दना कथा,

---

६२ ये तीनों कर्णाटक के स्थानीय शासक होंगे। इन का निश्चित राज्यकाल ज्ञात नहीं हो सका।

६३ ये सम्भवतः जेरहट शाखा के पहले भट्टारक त्रिभुवनकीर्ति ही है।

६४ ये तीनों क्रमशः सूरत के भट्टारक हुए हैं। किन्तु एक ही समय एक ही शाखा के तीन भट्टारकों का उल्लेख होना स्वाभाविक नहीं। अतः ज्ञानभूषण से यहा अटेर शाखा के ज्ञानभूषण का अभिप्राय समझना चाहिए।

आशाधर कृत धर्मामृत की वृत्ति, तीस चौबीसी पूजा, सिद्ध पूजा, सरस्वती पूजा, चिन्तामणि पूजा, कर्मदहनविधान, गणधरवलयपूजा, पार्श्वनाथकाव्य की पंजिका, पल्योपमविधान, चारित्रशुद्धि के १२३४ उपवासों का विधान, स्वरूपसम्बोधन की वृत्ति, चिन्तामणि सर्वतोभद्रव्याकरण, तथा अंगप्रज्ञप्ति।

शुभचन्द्र के पट्ट पर सुमतिकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने संवत् १६२२ की वैशाख शु. ३ को कोई मूर्ति तथा संवत् १६२५ की पौष कृ. ५ को तारगा क्षेत्र पर एक वेदी की प्रतिष्ठा की [ले. ३७६–७७]।

इन के बाद गुणकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने संवत् १६३१ की फाल्गुन शु. १० को एक अजितनाथ मूर्ति तथा संवत् १६३७ की वैशाख कृ. ८ को एक अन्य मूर्ति प्रतिष्ठित की (ले. ३७८–७९)। आप के प्रशिष्य शंकर ने सागवाडा में संवत् १६३९ की कार्तिक शु. ५ को जीवंधर रास की एक प्रति लिखी [ले. ३८०]। गुणकीर्ति रचित श्रेणिकपृच्छा कर्मविपाक नामक रचना उपलब्ध है [ले. ३८१]।

गुणकीर्ति के पट्ट पर वादिभूषण भट्टारक हुए। आप के शिष्य देवजी के लिए संवत् १६५२ की ज्येष्ठ कृ. १० को अध्यात्मतरंगिणी की एक प्रति लिखी गई [ले. ३८२]। आप ने संवत् १६५५ की वैशाख शु. ६ को एक वासुपूज्य मूर्ति तथा संवत् १६५६ की फाल्गुन शु. ३ को एक अन्य मूर्ति स्थापित की [ले. ३८३–८४]।

वादिभूषण के बाद रामकीर्ति पट्टाधीश हुए। आप ने संवत् १६७० की फाल्गुन कृ. ५ को एक सुपार्श्व मूर्ति तथा एक पद्मप्रभ मूर्ति प्रतिष्ठित की [ले. ३८५–८६]।

रामकीर्ति के पट्ट पर पद्मनन्दि भट्टारक हुए। आप ने संवत् १६८३ की माघ शु. ५ को पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की [ले. ३८७]। संवत् १६८६ की वैशाख शु. ५ को शाहजहाँ के राज्य काल में शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र पर आप ने शान्तिनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा की [ले. ३८८]।

आप की आम्नाय में ब्रह्मलालजी ने संवत् १७०२ की माघ शु॰ ३ को भीलोडा शहर मे गणितसारसग्रह की एक प्रति लिखी [ले. ३८९]।

पद्मनन्दि के पट्ट पर देवेन्द्रकीर्ति आरूढ हुए। आप की आम्नाय में ब्रह्म तेजपाल ने सवत् १७१३ की कार्तिक शु. ८ को सागवाडा में रावल पुंजराज के राज्यकाल मे[६५] शव्दार्णवचन्द्रिका की प्रति लिखी [ले. ३९०]। तथा मुनि त्रिभुवनचन्द्र ने संवत् १७२५ की कार्तिक शु १० को गणितसारसंग्रह की प्रति लिखी [ले. ३९१]।

देवेन्द्रकीर्ति के वाद क्षेमकीर्ति पट्टाधीश हुए। आप ने सवत् १७३४ मे सेटलवाड में एक मूर्ति स्थापित की [ले. ३९२]। आप के पट्टशिष्य नरेन्द्रकीर्ति हुए। इन के शिष्य लालचद ने सवत् १७६२ में तक्षकपुर मे अष्टसहस्री की प्रति लिखी [ले ३९३]।

नरेन्द्रकीर्ति के पट्ट पर क्रमश विजयकीर्ति. नेमिचन्द्र और चन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए। चन्द्रकीर्ति ने सवत् १८३२ मे केशरियाजी तीर्थक्षेत्र में चौवीस तीर्थंकरो की चरणपादुकाएं स्थापित कीं [ले ३९४]।

चन्द्रकीर्ति के वाद रामकीर्ति और उन के वाद यश कीर्ति भट्टारक हुए। आप के उपदेश से सवत् १८६३ की आपाढ शु. २ को केशरियाजी मन्दिर के परकोट का निर्माण पूरा हुआ (ले. ३९५)।[६६]

६५ पुजराज कोई स्थानीय शासक थे। इन का निश्चित राज्यकाल ज्ञात नहीं।

६६ ब्र. शीतलप्रसादजी ने ईडर के भट्टारकों का जो वृत्तान्त दिया है उस में यशःकीर्ति के वाद क्रमश. सुरेन्द्रकीर्ति, रामकीर्ति कनककीर्ति और विजयकीर्ति का उल्लेख किया है। ईडर का हस्तलिखित शास्त्र भाण्डार वडा समृद्ध है। (दानवीर माणिकचद्र पृ. ३३)

बलात्कार गण–ईडर शाखा–कालपट

१ पद्मनन्दि [उत्तर शाखा]
|
२ सकलकीर्ति [संवत् १४५०–१५१०]
|
३ भुवनकीर्ति [संवत् १५०८–१५२७]
|
४ ज्ञानभूषण [संवत् १५३४–१५६० — ज्ञानकीर्ति [भानपुर शाखा]
|
५ विजयकीर्ति [संवत् १५५७–१५६८]
|
६ शुभचन्द्र [संवत् १५७३–१६१३]
|
७ सुमतिकीर्ति [संवत् १६२२–१६२५]
|
८ गुणकीर्ति [संवत् १६३१–१६३९]
|
९ वादिभूषण [संवत् १६५२–१६५६]
|
१० रामकीर्ति संवत् [१६७०]
|
११ पद्मनन्दि [संवत् १६८३–१७०२]
|
१२ देवेन्द्रकीर्ति [संवत् १७१३–१७२५]
|
१३ क्षेमकीर्ति [संवत् १७३४]
|
१४ नरेन्द्रकीर्ति [संवत् १७६२]
|
१५ विजयकीर्ति
|
१६ नेमिचन्द्र
|
१७ चन्द्रकीर्ति [संवत् १८३२]
|
१८ रामकीर्ति
|
१९ यशःकीर्ति [संवत् १८६३]

१०. बलात्कार गण–भानपुर शाखा

लेखांक ३९६ – [पुण्यास्रव कथाकोष] ज्ञानकीर्ति

संवत् १५३४ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे पंचमीदिवसे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीसकलकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ. श्रीभुवनकीर्तिदेवास्तच्छिष्य स्थिवराचार्यश्रीज्ञानकीर्तिस्तदंते निवासी ब्रह्मदेवदासस्य पठनार्थं चीतुडा वास्तव्य नागद्रा ज्ञातीय श्रेष्ठि मदा भार्या पांचू··· ॥

(पा. ५,१६४)

लेखांक ३९७ –

वागड देश मे देश सुहामणा जी खडक देश है बहुत ए गुलजारी ।
जिहां रेणुपुर नग्रवी सोभता है व्हां रिषभनाथका देहरा बहुत भारी ॥
च्यार दिस के संघ ए नित्य आवे मंगल गावत है बहुत नर नारी ।
ज्ञानकीर्ति का सिष्य कुवेर बोले तीन लोकसु गत अद्भुत थारी ॥

[ना. १७]

लेखांक ३९८ – पट्टावली

जयति बोधसुकीर्तियतीश्वरो भुवनकीर्तिगुरुप्रियदीक्षितः ।
सकलशास्त्रसुशल्यनकोविदोमलदर्शनादिमणित्रयराजित ॥ ३५

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५८)

लेखांक ३९९ – ऐतिहासिक पत्र रत्नकीर्ति

रत्नकीर्ति हता तेणे सं १५३५ वर्षे श्रीनोगामे दीक्षा लीधी हती··· त्यारे रत्नकीर्तिने भट्टारक पदवी आपवानु स्थापन करी ॥

(भा. १३ पृ ११३)

लेखांक ४०० – पट्टावली

तच्छिष्योभाद् रत्नकीर्ति. प्रवृद्धाचार्यो वर्यौदार्यगांभीर्ययुक्तः ।
ग्रंथैर्मुक्तो योवतीर्ण श्रुताब्धि सोयं भव्यान् पातु संसारवार्द्धौ ॥ ३६

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५८)

लेखांक ४०१ – पट्टावली यशःकीर्ति

श्रीरत्नकीर्तिपदपुष्करालिरादिष्टमुख्यो यशकीर्तिसूरिः ।
पादौ भजामि सुहृचेष्टमूर्तिर्देदीप्यातां कौ मुनिचक्रवर्ती ॥ ३८

(उपर्युक्त)

लेखांक ४०२ – ऐतिहासिक पत्र

तार पुठे तेणानेक पाटे आचार्य यसकीर्ति नोगामे थाप्या तार पुठे केटलाक मास दिवसे अनंतकीर्ति आदि लेईने जण ६३ ··· दक्षिणदेसे गुरु पासे आज्ञा लेईने विहार कर्यो ते आज दिवस सुदी दक्षिणदेशमाही रत्नकीर्तिना पाटधर कहावे छे तेणाना पाट सुदी नग्न चाल्या आवे छे ·· सं. १६१३ वर्षे जसकीर्तिये वागड माहे गाम भीलोडे काल कर्यो ॥

(भा. १३ पृ. ११३)

लेखांक ४०३ – पट्टावली गुणचंद्र

जीयाच्छ्रीकीर्तिकीर्तिस्फुरतरगुणयुक् सिंहनंदी यतींद्रो ।
व्याख्याव्यामोहितार्थैस्त्रिभुवनपतिभिः सेव्यपादारविंद ॥ ३९
तच्छिष्यसूरिर्गुणचंद्रनामा न्यायागमाध्यात्मगुणैकधाम ।
साहित्यसल्लक्षणशास्त्रसीम जीयाद्धरित्र्यां गुणरत्नवेश्म ॥ ४०

[जैन सिद्धात १७ पृ. ५८]

लेखांक ४०४ – अनंतनाथ पूजा

संवत् षोडशत्रिशतैष्यपलके पक्षेवदाते तिथौ
पक्षत्यां गुरुवासरे पुरजिनेद्र् श्रीशाकमार्गे पुरे ।
श्रीमध्दुंबडवंशपद्मसविता हर्षाख्यदुर्गी वणिक्
सोयं कारितवाननंतजिनसत्पूजां वरे वाग्वरे ॥
श्रीरत्नकीर्तिभगवज्जगतां वरेण्यश्चारित्ररत्ननिवहस्य वभार भारं ।
तद्दीक्षितो यतिवरो यशकीर्तिकीर्तिश्चारित्ररंजितजनोद्वहितासुकीर्ति ॥
तच्छिष्यो गुणचंद्रसूरिरभवच्चारित्रचेतोहर–
स्तेनेदं वरपूजनं जिनवरानंतस्य युक्त्यारचि ॥

(हि. १४ पृ. ९६)

लेखांक ४०५ - ऐतिहासिक पत्र

तेणानो पाटे गाम सावले ... समस्त संघ मिली आचार्य गुणचंद्र स्थापना करवानी ... सं १६५३ वर्षे आचार्यश्रीगुणचंद्रजी सागवाडे काल कऱ्यो ॥

[भा. १३ पृ. ११३]

लेखांक ४०६ - (षडावश्यक)

संवत १६३९ वर्षे मार्गसिर शुदि १ शुक्रे जेष्ठा नक्षत्रे वागडदेसे सागवाडानगरे श्रीसंभवनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे ... श्रीज्ञानकीर्ति तत् शिष्याचार्य श्रीरत्नकीर्ति तत् शिष्याचार्य श्रीयशकीर्ति तत् शिष्याचार्य श्रीगुणचंद्रेणेदं पुस्तकं षडावश्यकस्य स्वशिष्य ब्र. डुंगरा पठनार्थं दत्तं ॥

[वीर २ पृ. ४७३]

लेखांक ४०७ - पट्टावली　　सकलचंद्र

श्रीमूलसंघे गुणवान् गुणज्ञ' श्रीवंशश्रीमान् गुणचंद्रसूरी ।
तत्पट्टधारी जिनचद्रदेव. तस्येह पट्टे सकलेंदुसूरी ॥ ४५

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५९)

लेखांक ४०८ - भक्तामरवृत्ति

सकलेंदोर्गुरोर्भ्रातुर्यस्येति वर्णिनः सत' ।
पादस्नेहेन सिद्धेयं वृत्ति सारसमुच्चया ॥
सप्तषष्ट्यंकिते वर्षे षोडशाख्ये हि सवते ।
आषाढश्वेतपक्षस्य पंचम्यां बुधवारके ॥
ग्रीवापुरे महीसिंधोस्तटभागं समाश्रिते ।
प्रोत्तुंगदुर्गसयुक्ते श्रीचद्रप्रभसद्मनि ॥
वर्णिन कर्मसीनाम्नो वचनान्मयकारचि ।
भक्तामरस्य सद्वृत्ति. रायमल्लेन वर्णिना ॥

[ना ४६]

लेखांक ४०९ – ऐतिहासिक पत्र

गाम नोगामे लघु साजनामो संघ मलीनो आचार्य सकलचंद्र पाट थाप्या सं. १६७० वर्षे आसोज सुदी ८ दिवसे आचार्य सकलचंद्र सागवाडे समाधी मरण कर्यो ॥

(भा. १३ पृ ११२)

लेखांक ४१० – जिनचौवीसी रत्नचंद्र

संवत सोल चोत्तरे कवित रच्या संघारे पंचमी शुकर वारे
ज्येष्ट वदि जाण रे ।
मूलसंघ गुणचंद्र जिनेंदु सकलचंद्र भट्टारक रत्नचंद्र
बुद्धि गच्छ भाण रे ॥
त्रिपुरो पुर विराज खेतु नेतु अमराज भामा सो मोलख सज
त्रिपुरो वखाण रे ।
पीथो छाजू ताराचंद छीतर मरी बुनंद नाकु खेतु देव
छद एहां के कल्याण रे ॥ २५

(प. १०)

लेखांक ४११ – १ मूर्ति

सं. १६७६ मूलसंघे भ. रत्नचंद्रोपदेशेन सीखप्प पा भाणिक भार्या पाचली सुत पदारथ भार्या दत्ता सुत नोवा हेमा रत्ना प्रणमति ॥

(भा. ७ पृ. १४)

लेखांक ४१२ – पुष्पांजलि पूजा

विधुवसुरसचंद्राकौ प्रयुक्तैक्षतोर्चा
शरदि नभसि मासे रत्नचंद्रैश्चतुर्थ्यां ।
धवलभृगुसुवारे सागवाडे युस्वः
जिनवृषभगणादिश्रावकादेशतोऽयात् ॥

(ना. ८७)

लेखांक ४१३– पार्श्वनाथ मूर्ति

सं. १६९२ वर्षे वैसाख सुदि ५ गुरु श्रीमूलसंघे भ. श्रीरत्नचंद्रोपदेशात् घोराया गोत्रे सं. रामा भार्या सोनादे ·· ॥

(प. १)

लेखांक ४१४ – ऐतिहासिक पत्र

त्यार पुठे सं. १६७० वैशाख सुदी ५ दिवसे श्रीसागवाडे समस्त संघ मलीने पाट आचार्यनु आपता हता देहरा जुना मध्ये तेणे समे बडे साजने जती तथा श्रावके राजवट करी जे हवे आचार्यनो पाट आपवा देशुं नही··· भ. रतनचंद्र जी नता थई फणा महोत्सवसु वीहार कर्‍यो त्यार पुठे सं. १६९९ वर्षे जेठ सुदी ५ सोमवार भ रत्नचंद्र जीवता भ. हर्षचंद्र थाप्या गाम परतापोरे त्यार पुठे सं १७०७ भ. रत्नचंद्रजी वैशाख वदी ४ ते नोगामे परोक्ष थया ॥

(भा. १३ पृ. ११३)

लेखांक ४१५ – पट्टावली

श्रीमूलसंघेजनि रत्नचंद्रो भट्टारकाणामधिपः कृतज्ञः ।
श्रीहेमकीर्तेर्वरलब्धपट्टः संस्नापितश्चामरजित्प्रमुख्यैः ॥ ४९

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५९)

लेखांक ४१६ – पट्टावली   हर्षचंद्र

पट्टे तदीये जयताज्जिताक्षो भट्टारको हर्षसुचंद्रनाम ।
षट्शास्त्रवेत्ता गुणरत्नवेश्म खडेरवालान्वयजो व्रतात्मा ॥ ५१

(उपर्युक्त)

लेखांक ४१७ – ऐतिहासिक पत्र   शुभचंद्र

त्यार पुठे शुभचंद्र थाप्या सं १७२३ वैशाख वदी ५ श्रीघांटोल भ. शुभचद्र थाप्या सं. १७४९ वर्षे आश्विज वदी १३ गाम मेलुडे भ. शुभचंद्र परोक्ष थया ॥

(भा. १३ पृ. ११३)

लेखांक ४१८ – पट्टावली

श्रीहर्षचंद्रस्य मुनेः सुपट्टे जिनागमात्प्राप्तसमस्ततत्त्वः ।
शुद्धेन शीलेन विराजमानो भट्टारकः श्रीशुभचंद्र आसीत् ॥ ५२

[जैन सिद्धात १७ पृ. ५९]

लेखांक ४१९ – पट्टावली अमरचंद्र

ज्ञानेश्वरस्य शुभचंद्रमुनीश्वरस्य सिंहासनेमरनरेश्वरवंद्यमाने ।
सर्वागमार्थसुमहार्णवपारगामी दिव्यत्यसौ अमरचंद्रमहामुनींद्रः ॥५३

(उपर्युक्त)

लेखांक ४२० – ऐतिहासिक पत्र

सं. १७४८ वर्षे माहा शुदी १० सोमवारे गाम मेलुडे भ. अमरचंद्रजी गाम घाटयोल थाप्या ॥

(भा. १३ पृ. ११३)

लेखांक ४२१ – पट्टावली रत्नचंद्र

मणिहर्षशुभेंदूनां पट्टेभूदमरेंदुजित् ।
तत्पादांभोजहंसोस्ति रत्नचंद्रो यतीश्वरः ॥ ५५

(जैन सिद्धात १७ पृ. ६०)

लेखांक ४२२ – मंदिर लेख

ॐ स्वस्ति विक्रमादित्यसमयातीत संवत् १७७४ वर्षे शाके १६३९ प्रवर्तमाने माह सुदी १३ रवि श्रीदेवगढ नगरे महाराजाधिराज महारावत श्रीपृथ्वीसिंहजी विजयराज्ये कुंवर श्रीपहाडसिंघ विराजमाने श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ रत्नचद्र.तत्पट्टे भ हर्षचंद्र तत्पट्टे भ शुभचद्र तत्पट्टे भ. श्रीअमरचंद्र तत्पट्टे भ श्रीरत्नचंद्रगुरूपदेशात् श्रीमत् हूंवडज्ञातीय मंत्रीश्वरगोत्रे सघवी वर्धावत भार्या नानी···श्रीमल्लिनाथ प्रासाद प्रतिष्ठा महामहोत्सवै. सह करावितं ॥

[देवगढ, टा. पृ. ६८]

लेखांक ४२३ – ऐतिहासिक पत्र

सं. १७८६ वर्षे माघ वदी ६ गाम कोठे देश हाडोली माहे भ रत्नचंद्रजी काल प्राप्त हुवा जी ॥

[भा. १३ पृ. ११३]

लेखांक ४२४ – ऐतिहासिक पत्र देवचंद्र

सं. १७८७ वैशाख शुदी १३ भ देवचंद्रजी गाम भाणपुर स्थाप्या त्यार पुठे स. १८०५ वर्षे गाम जांबूचरे भ. देवचंद्रजी माघ वदी ७ दिने काल प्राप्त थया जी ॥

पाट खाली छे पण श्रावक धर्मनी थापना दृढ राखी छे···कागद लखाववोजी सं. १८०५ वर्ष जेठ वदी ८ शनौ शोभादीने ॥

(उपर्युक्त)

बलात्कार गण – भानपुर शाखा

इस शाखा का आरम्भ भ. ज्ञानकीर्ति से हुआ। आप भ. भुवनकीर्ति के शिष्य थे जिन का वृत्तान्त ईडर शाखामें आ चुका है। आप के शिष्य ब्रह्म देवदास के लिए सवत् १५३४ की फाल्गुन शु. ५ को पुण्यास्रव कथाकोप की एक प्रति लिखी गई (ले. ३९६)। आप के दूसरे शिष्य कुबेर ने रेणुपुर[६७] के ऋषभनाथ मन्दिर की यात्रा का उल्लेख किया है (ले. ३९७)।

ज्ञानकीर्ति के बाद रत्नकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने सवत् १५३५ नोगाम मे दीक्षा ली थी (ले. ३९९-४००)। आप के शिष्यो से अनन्तकीर्ति आदि ६३ लोग दक्षिण मे गये थे जिन की परम्परा चलती रही (ले. ४०२)।

रत्नकीर्ति के बाद यश.कीर्ति नोगाम मे पट्टाभिषिक्त हुए। आप का स्वर्गवास भीलोडा मे सवत् १६१३ में हुआ (ले. ४०२)।

यश.कीर्ति के बाद सिंहनन्दी[६८] तथा उन के बाद गुणचन्द्र भट्टारक हुए। आप ने सवत् १६३० मे सागवाडा मे हर्पसाह की प्रेरणा से अनन्तनाथपूजा की रचना की (ले. ४०४)। आप का पट्टाभिपेक सावला गाव मे तथा स्वर्गवास सागवाडा मे सवत् १६५३ मे हुआ (ले. ४०५)। सवत १६३९ की मार्गशीर्ष शु. १ को पडावश्यक की एक प्रति आप ने अपने शिष्य डुंगरा को दी थी (ले. ४०६)।

गुणचन्द्र के बाद जिनचन्द्र और उन के पश्चात् सकलचन्द्र पट्टाधीश हुए। इन के बन्धु यश की कृपा से ब्रह्म रायमल्ल ने संवत् १६६७ की आषाढ शु. ५ को ग्रीवापुर[६९] मे भक्तामरवृत्ति की रचना की (ले. ४०८)। सकलचन्द्र का पट्टाभिपेक नोगाम मे और स्वर्गवास सागवाडा मे संवत् १६७० मे हुआ (ले. ४०९)।

---

६७ यह धूलिया का सस्कृत रूप है। इसी का प्रसिद्ध नाम केशरियाजी है।

६८ सम्भवतः इन्ही का उल्लेख ब्रह्म नेमिदत्त और ब्रह्म श्रुतसागर ने किया है (ले. ४६६, ४७२)।

६९ यह सम्भवतः मानपुर का सस्कृत रूपान्तर है जो अमेरली जिले में है।

इन के बाद रत्नचन्द्र भट्टारक हुए। आप ने संवत् १६७४ की ज्येष्ठ कृ. ५ को जिन चौबीसी की रचना त्रिपुरा शहर मे की। आप ने सवत् १६७६ मे कोई मूर्ति स्थापित की तथा सवत् १६८१ मे सागवाडा मे पुष्पाजलि पूजा लिखी (ले. ४१०–१२)। संवत् १६९२ की वैशाख शु. ५ को एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की (ले. ४१३)। आप का पट्टा-भिषेक संवत् १६७० मे सागवाडा मे हुआ उस समय अन्य शाखा के साधुओं ने उस का विरोध करने का प्रयास किया था। आप का स्वर्गवास सवत् १७०७ मे नोगाम मे हुआ (ले. ४१४)। आप का पट्टाभिषेक भट्टारक हेमकीर्ति[70] ने किया था (ले. ४१५)।

रत्नचन्द्र ने सवत् १६९९ की ज्येष्ठ शु. ५ को अपने पट्ट पर हर्ष-चन्द्र की स्थापना कर दी थी (ले. ४१४)। ये खण्डेलवाल जाति के थे (ले. ४१६)।

इन के पट्ट पर शुभचन्द्र सवत् १७२३ की वैशाख कृ ५ को घाटोल ग्राम मे आरूढ हुए। इन का स्वर्गवास मेलुडा ग्राम मे संवत् १७४९ की आश्विन कृ. १३ को हुआ (ले. ४१७-१८)। इन के बाद सवत् १७४८ की माघ शु. १० को मेलुडा मे अमरचन्द्र का पट्टाभिषेक हुआ (ले. ४२०)।

अमरचन्द्र के पट्ट पर रत्नचद्र आरूढ हुए। इन के उपदेश से संवत् १७७४ की माघ शु. १३ को देवगढ मे रावत पृथ्वीसिंह के राज्यकाल मे[71] मल्लिनाथ मन्दिर का निर्माण सघवी वर्धावत ने किया (ले. ४२२)। रत्न-चन्द्र का स्वर्गवास कोठा मे सवत् १७८६ की माघ कृ. ६ को हुआ (ले. ४२३)।

रत्नचन्द्र के पट्ट पर सवत् १७८७ की वैशाख शु. १३ को भानपुर में भ. देवचन्द्र का अभिषेक हुआ। इन का स्वर्गवास जाम्बूचर ग्राम मे सवत् १८०५ की माघ कृ. ७ को हुआ।

७० सवत् १६७० में कौन हेमकीर्ति भट्टारक थे यह हमें स्पष्ट नही हो सका।

७१ बुन्देले छत्रसाल के ये पौत्र थे। इन के पुत्र पहाडसिंह की मृत्यु सन १७६६ में हुई थी।

बलात्कार गण–भानपुर शाखा–काल पट

१ भुवनकीर्ति (ईडर शाखा)
|
२ ज्ञानकीर्ति (सवत् १५३४)
|
३ रत्नकीर्ति (सवत् १५३५)
|
४ यशःकीर्ति (सवत् १६१३)
|
५ गुणचन्द्र (सवत् १६३०–१६५३)
|
६ जिनचन्द्र
|
७ सकलचन्द्र (सवत् १६६७–१६७०)
|
८ रत्नचन्द्र (सवत् १६७०–१७०७)
|
९ हर्षचन्द्र (सवत् १६९९)
|
१० शुभचन्द्र (सवत् १७२२–१७४९)
|
११ अमरचन्द्र (सवत् १७४८)
|
१२ रत्नचन्द्र (सवत् १७७४–१७८६)
|
१३ देवचन्द्र (सवत् १७८७–१८०५)

---

११. बलात्कार गण – सूरत शाखा

लेखांक ४२५ – १ मूर्ति देवेंद्रकीर्ति

संवत् १४९३ शाके १३५८ वर्षे वैशाख वदि ५ गुरौ दिने मूलनक्षत्रे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीप्रभाचंद्रदेवाः तत्पट्टे वादिवादीन्द्र भ. श्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे श्रीदेवेंद्रकीर्तिदेवाः पौरपाटान्वये अष्टशाखे आहारदानदानेश्वर सिघई लक्ष्मण तस्य भार्या अखयसिरी कुक्षिसमुत्पन्न अर्जुन··· ॥

[देवगढ, अ. ३ पृ. ४४५]

लेखांक ४२६ – पट्टावली

त्रैविद्यविद्वज्जनशिखडमडनीयभवत्कायधरकमलयुगल–अवंतिदेशप्रतिष्ठोपदेशक–सप्तगतकुटुंबरत्नाकरजाति-सुश्रावकस्थापक–श्रीदेवेंद्रकीर्तिशुभमूर्तिभट्टारकाणाम् ॥

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५०)

लेखांक ४२७ – चौवीसी मूर्ति

सं. १४९९ वर्षे वै. सुदी २ सोमे श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे मुनि-देवेद्रकीर्ति तत्शिष्य श्रीविद्यानंदीदेवा उपदेशात् श्रीहुंबडवंश शाह खेता भार्या रुडी ··एतेषा मध्ये राजा भग्नी राणी श्रेया चतुर्विंशतिका कारापिता ॥

(सूरत, दा. पृ. ५४)

लेखांक ४२८ – मेरु मूर्ति

सं १५१३ वर्षे वैशाख सुदी १० बुधे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भ श्रीप्रभाचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीपद्मनंदी तत् सिष्य श्रीदेवेद्र-कीर्ति दीक्षिताचार्य श्रीविद्यानंदि गुरूपदेशात् गांधार वास्तव्य हुंबडज्ञातीय समस्तश्रीसघेन कारापित मेरु शिखरा कल्याण भूयात् ॥

[सूरत, दा. पृ. ४३]

लेखांक ४२९ – चौवीसी मूर्ति

स १५१३ वर्षे वैशाख सुदी १० बु. आचार्यश्रीदेवेंद्रकीर्तिशिष्य श्रीविद्यानंदी देवादेशात् काष्ठासंघे हुमड वंशे श्रेष्ठी काना भार्या वारु·· स्वश्रेयोय श्रीजिनबिंब कारापितम् श्रीघोघा वेलातट वास्तव्य श्रीमूलसंघीय अर्जिका संयमश्रीश्रेयार्थम् ॥

(सूरत, दा. पृ. ५०)

लेखांक ४३० – १ मूर्ति

सवत १५१८ वर्षे श्रीमूलसंघे आचार्यश्रीविद्यानंदिगुरूपदेशात् सिंहपुराज्ञाति श्रेष्ठी गाई · ॥

(बाळापुर, अ. ४ पृ. ५०२)

लेखांक ४३१ – १ मूर्ति

(सं.) १५१८ माघ सु. ५ बुधवार देवेंद्रकीर्ति शिष्य विद्यानंदि उपदेशथी हूमडवसे समघर भार्या जीवीना पुत्री नवकरण · ॥

(रादेर, दा. पृ. २९)

लेखांक ४३२ – चौवीसी मूर्ति

सं. १५२१ वर्षे वैसाख वदि २ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीविद्यानदिगुरूपदेशात् श्रीराइकवाल ज्ञातीय·· श्रीचंद्रप्रभ चतुर्विंशति नित्यं प्रणमंति ॥

(ना. ३७)

लेखांक ४३३ – १ मूर्ति

(सं.) १५३७ वैसाख सुदी १२ देवेंद्रकीर्तिपदे विद्यानंदि हूमड ज्ञातीय श्रेष्ठी चापा ॥

(रादेर, दा. पृ. २९)

लेखांक ४३४ – सुदर्शनचरित

वंदे देवेंद्रकीर्तिं च सूरिवर्यं दयानिधिं ।
मद्गुरुर्यो विशेषेण दीक्षालक्ष्मीप्रसादकृत् ॥

तमहं भक्तितो वंदे विद्यानंदी सुसेवकः ।
ग्रंथसंख्या १३६२ संवत १५९१ वर्षे आषाढमासे शुक्लपक्षे लिखितं ॥

[म. प्रा. पृ. ७६०]

लेखांक ४३५ – [पंचास्तिकाय]

स्वस्ति श्रीमूलसंघे हुंबड ज्ञातीय सा. कान्हा भार्या रामति…एतेषां मध्ये सा. लखराजेन मोचयित्वा पंचास्तिकायपुस्तकं श्रीविद्यानंदिने ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं दत्तं शुभं भवतु ।

(का. ४१२)

लेखांक ४३६ – हनुमच्चरित्र अजित

जैनेंद्रशासनसुधारसपानपुष्टो देवेंद्रकीर्तियतिनायकनैष्ठिकात्मा ।
तच्छिष्यसयमधरेण चरित्रमेतत् सृष्टं समीरणसुतस्य महर्धिकस्य ॥ ९१
गोलाशृंगारवशे नभसि दिनमणिर्वीरसिंहो विपश्चित् ।
भार्या वीधा प्रतीता तनुरुहविदितो ब्रह्मदीक्षाश्रितोभूत् ॥
तेनोच्चैरेष ग्रथः कृत इति सुतरां शैलराजस्य सूरेः ।
श्रीविद्यानदिदेशात् सुकृतविधिवशात सर्वसिद्धिप्रसिद्ध्यै ॥ ९३
इदं श्रीशैलराजस्य चरित दुरितापहं ।
रचितं भृगुकच्छे च श्रीनेमिजिनमदिरे ॥ ९४
प्रमाणमस्य ग्रंथस्य द्विसहस्रमितं बुधैः ।
श्लोकानामिह मन्तव्यं हनुमच्चरिते शुभे ॥ ९७

(भा. ग्र. पृ. ७)

लेखांक ४३७ – धनकुमारचरित गुणभद्र

संवत १५०१ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे राकाया तिथौ बुधे अद्येह भृगुकच्छपत्तने श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छांभोजदिनमणि भ. श्रीपद्मनंदिदेवास्तच्छिष्यो विख्यातकीर्तिमुनिश्रीदेवेद्रकीर्तिदेवस्तच्छिष्य सकलकलोद्भवमुनिश्रीविद्यानंदिदेवस्तच्छिष्यब्रह्मचारिछाहडेन स्वकर्मक्षयार्थं श्रीधनकुमारचरितं लिखापितं ॥

[म. प्रा. पृ. ७३४]

लेखांक ४३८ – १ मूर्ति

संवत १५०५ वर्षे श्रीमूलसंघे भ पद्मनंदिदेवा शिष्य देवेंद्रकीर्ति तत्शिष्या' विद्यानदि शिष्य ब्रह्म धर्मपाल उपदेशात् पल्लीवालज्ञातीय स. राना भार्या रानी सुत पारिसा भार्या हर्ष प्रणमंति ॥

[सिंदी, अ.४ पृ. ५०२]

लेखांक ४३९ – पट्टावली

तत्पट्टोदयसूर्य–आचार्यवर्य–नवविधब्रह्मचर्यपवित्र–चर्यामंदिर–राजाधिराजमहामंडलेश्वरवज्रांग– गंग–जयसिंह – व्याघ्रनरेंद्रादिपूजितपादपद्मानां अष्टशाखा–प्राग्वाटवंशावतंसानां षड्भाषाकविचक्रवर्ति–भुवनतलव्याप्त–विशदकीर्ति – विश्वविद्याप्रसादसूत्रधार – सद्ब्रह्मचारिशिष्यवरसूरिश्रीश्रुत–सागरसेवितचरणसरोजानां श्रीजिनयात्राप्रासादोद्धरणोपदेशनैकजीवप्रति–बोधकानां श्रीसम्मेदगिरिचंपापुरिपावापुरीऊर्जयंतगिरीअक्षयवड आदीश्वर–दीक्षासर्वसिद्धक्षेत्रकृतयात्राणां श्रीसहस्रकूटजिनबिंबोपदेशक–हरिराजकुलोद्योतकराणां श्रीविद्यानंदीपरमाराध्यस्वामिभट्टारकाणाम् ॥

(जैन सिद्धान्त १७ पृ. ५१)

लेखांक ४४० – मेघमाला व्रत कथा

सत्यं वाचि हृदि स्मरक्षयमतिर्मोक्षाभिलाषोंतरे ।
श्रोत्रं साधुजनोक्तिषु प्रतिदिनं सर्वोपकारः करे ॥
यस्यानंदननिधेर्बभूव स विभुर्विद्यादिनंदी मुनिः ।
संसेव्यः श्रुतसागरेण विदुषा भूयात्सतां संपदे ॥ ५१

(से. १९)

लेखांक ४४१ – सप्तपरमस्थान कथा

सद्भट्टभट्टारकवर्णनीयः चेतो यतीनामभिवंदनीयः ।
विद्यादिनंदी गुणभृत्तदीयः सम्यग्जयत्येष गुरुर्मदीयः ॥ १६२
मया तदादेशवशेन धीमतां प्रकाशितेयं महतां बृहत्कथा ।
पिबंतु तां कर्णसुधां बुधोत्तमा महानुभावाः श्रुतसागराश्रिताः ॥ १६३

(से. २०)

लेखांक ४४२ – ज्येष्ठ जिनवर कथा

आसीदसीममहिमा मुनिपद्मनंदी देवेंद्रकीर्तिगुररस्य पदे सदेकः।
तत्पट्टविष्णुपदपूर्णशशांकमूर्तिः विद्यादिनंदिगुरुरत्र पवित्रचित्तः॥ ७५
गुणरत्नभृतो वचोमृताढ्यः स्याद्वादोर्मिसहस्रशोभितात्मा।
श्रुतसागर इत्यमुष्य शिष्यः स्वाख्यानं रचयांचकार सूरिः॥ ७६
अग्रोतकान्वयशिरोमुकुटायमानः संघाधिनाथविमलूरिति पुण्यमूर्तिः।
भार्यास्य धर्ममहती बृहतीति नाम्ना सासूत सूनुमनवद्यमर्हेद्रदत्तम्॥ ७७
वैराग्यभावितमनाः स जिनूह्वदिष्ट' श्रीमूलसंघगुणरत्नविभूषणोभूत्।
देशव्रतिष्वतितरां व्रतशोभितात्मा संसारसौख्यविमुख' सुतपोनिधिर्वा॥
पुत्रोस्य लक्ष्मण इति प्रणतीर्गुरूणा कुर्वंश्चकास्ति विदुषां धुरि वर्णनीयः।
अभ्यर्थ्य कारितमिद श्रुतसागराख्यमाख्यानक चिरतर शुभदं समस्तु॥७९

[से. १]

लेखांक ४४३ – रविवार व्रतकथा

भट्टारकघटामध्ये यत्प्रतापो विराजते।
तारास्विव रवेः श्रीदो विद्यानंदीश्वरोस्ति मे॥ १६३
प्रमाणलक्षणच्छंदोलंकारमणिमंडित'।
पंडितस्तस्य शिष्योभूत् श्रुतरत्नाकराभिधः॥ १६४
गुरोरनुज्ञामधिगम्य धीधनः चकार संसारसमुद्रतारकं।
स पार्श्वनाथव्रतसत्कथानकं सतां नितात श्रुतसागराभिधः॥१६५

(से. २)

लेखांक ४४४ – चंदनषष्ठी कथा

स्वस्ति श्रीमूलसंघे भवदमरनुतः पद्मनंदी मुनींद्र'।
शिष्यो देवेंद्रकीर्तिर्लसदमलतपा भूरिभट्टारकेज्य'॥
श्रीविद्यानंदिदेवस्तदनु मनुजराजार्च्यपत्पद्मयुग्म'।
च्छिष्येणारचीदं श्रुतजलनिधिना शास्त्रमानंदहेतु॥ ९६

(से. ४)

लेखांक ४४५ – आकाशपंचमी कथा

वाचां लीलावतीनां निधिरमलतपःसंयमोदन्वदिंदुः ।
श्रीविद्यानंदिसूरिर्जयति जगति नाकौकसां पूज्यपादः ॥ १०३
तस्य श्रीश्रुतसागरेण विदुषां वर्येण सौंदर्यवत् ।
शिष्येणारचि सत्कथानकमिदं पीयूषवर्षोपमम् ॥ १०४

[से. ६]

लेखांक ४४६ – पुष्पांजलि कथा

स्वस्ति श्रीमति मूलसंघतिलके गच्छेगिमूर्छच्छिवे ।
भारत्या. परमार्थपंडितनुतो विद्यादिनंदी गुरु. ॥
तत्पादांबुजयुग्ममत्तमधुलिट् चक्रे न वक्राशय. ।
सद्बेधाः श्रुतसागर. शुभमुपाख्यानं स्तुतस्तार्किकैः ॥ ७१

[से. ९]

लेखांक ४४७ – निर्दुःख सप्तमी कथा

सकलभुवनभास्वद्भूषणं भव्यसेव्यः ।
समजनि कृतिविद्यानंदिनामा मुनींद्रः ॥
श्रुतसमुपपदाद्य सागरस्तस्य सिद्धयै ।
शुचिविधिमिममेष द्योतयामास शिष्यः ॥ ४३

(से. १०)

लेखांक ४४८ – श्रवणद्वादशी कथा

विद्यानंदिमुनींद्रचंद्रचरणांभोजातपुष्पंधय. ।
शब्दज्ञ. श्रुतसागरो यतिवरोसौ चारु चक्रे कथाम् ॥ ४०

(से. १३)

लेखांक ४४९ – रत्नत्रय कथा

सर्वज्ञसारगुणरत्नविभूषणोसौ विद्यादिनंदिगुरुरुद्धतरप्रसिद्धि ।
शिष्येण तस्य विदुषा श्रुतसागरेण रत्नत्रयस्य सुकथा कथितात्मसिद्धयै ॥ ८२

(से. १४)

लेखांक ४५० – षोडशकारण कथा

श्रीमूलसंघे विबुधप्रपूज्ये श्रीकुंदकुंदान्वय उत्तमेस्मिन् ।
विद्यादिनंदी भगवान् बभूव स्ववृत्तसारश्रुतसारमाप्तः ॥ ६७
तत्पादभक्त. श्रुतसागराह्वो देशव्रती संयमिनां वरेण्यः ।
कल्याणकीर्तेर्मुहुराग्रहेण कथामिमां चारु चकार सिद्ध्यै ॥ ६८

[से. ३]

लेखांक ४५१ – मुक्तावली कथा

विद्यानंदिमुनीश्वरो विजयते चारित्ररत्नाकरः ॥ ७७
...तच्छिष्यः श्रुतसागरो विजयते मुक्तावलीकृद्यतिः ॥ ७८
जातो हुंबडवंशमंडनमणि. श्रीगायियाख्य. कृती ।
कांताशीरिति तस्य सद्गुरुमुखोद्भूतेव कल्याणकृत् ॥
पुत्रोस्यां मतिसागरो मुनिरभूद् भव्यौघसंबोधक. ।
सोयं कारयति स्म निर्मलतपाः शास्त्रं चिरं नंदतु ॥ ७९

[से. ११]

लेखांक ४५२ – मेरुपंक्ति कथा

विद्यादिनंदिगुरुरुद्धगुणोमरेंद्र–
संसेवितो यतिवर.श्रुतसागरेड्य ॥ ४३
तद्भक्ता जिनधर्मरक्तधिषणा श्रीलक्ष्मराजात्मजा ।
सत्पुण्यैरजितोदरे गुणवती सौवर्णिकाभूत् सुता ॥
संप्रार्थ्य श्रुतसागरं यतिवरं श्रीमेरुपंक्ते. कथां ।
साध्वी कारयति स्म सा जिनपदांभोजालिनी नंदतु ॥ ४४

[से १७]

लेखांक ४५३ – लक्षणपंक्ति कथा

गंधारनगरे रम्ये लखराजाजितात्मजा ।
श्रीराजभगिनी माता मुनीनां स्वर्णिका भवेत् ॥ ३८
मृगांकश्रेष्ठिन. पुत्री स्वसा जीवकसंज्ञिन ।

ढोसीतिकी सुता लोके रता सद्धर्मकर्मणि ॥ ३९
कारयामास तुम्भव्यः श्रीराजः करणश्रियः ।
प्रेरिको भवति स्मात्र चिरं जीवतु तत्त्रयम् ॥ ४१
देवेंद्रकीर्तिगुरुपट्टसमुद्रचंद्रो विद्यादिनंदिसुदिगंवर उत्तमश्री. ।
तत्पादपद्ममधुपः श्रुतसागरोयं ब्रह्मव्रती तप इदं प्रकटीचकार ॥ ४२

[से. १८]

लेखांक ४५४ – औदार्यचिंतामणि व्याकरण

अथ प्रणम्य सर्वज्ञं विद्यानंदास्पदप्रदम् ।
पूज्यपादं प्रवक्ष्यामि प्राकृतव्याकृतिं सताम् ॥
…समन्तभद्रैरपि पूज्यपादैः कलंकमुक्तैरकलंकदेवैः ।
यदुक्तमप्राकृतमर्थसारं तत्प्राकृत च श्रुतसागरेण ॥

(हि. १५ पृ. १५४)

लेखांक ४५५ – तत्त्वत्रयप्रकाशिका

आचार्यैरिह शुद्धतत्त्वमतिभिः श्रीसिंहनंद्याह्वयै. ।
संप्रार्थ्य श्रुतसागरं कृतवरं भाष्यं शुभं कारितं ॥
गद्याना गुणवत् प्रियं गुणवतो ज्ञानार्णवस्यातरे ।
विद्यानंदिगुरुप्रसादजनितं देयादमेयं सुखम् ॥

[हि. १५ पृ. २२२]

लेखांक ४५६ – महाभिषेकटीका

श्रीविद्यानंदिगुरोर्बुद्धिगुरो. पादपंकजभ्रमरः ।
श्रीश्रुतसागर इति देशव्रतितिलकष्टीकते स्मेदं ॥

[षट्प्राभृतादिसंग्रह, प्रस्तावना पृ. ६]

लेखांक ४५७ – श्रुतस्कंधपूजा

सुदेवेंद्रकीर्तिश्च विद्यादिनंदी गरीयान्गुरुर्मेर्हदादिप्रवंदी ।
तयोर्विद्धि मां मूलसंघे कुमारं श्रुतस्कंधमीडे त्रिलोकैकसारम् ॥
सम्यक्त्वसुरत्नं सद्व्रतयत्नं सकलजंतुकरुणाकरणम् ।

श्रुतसागरमेतं भजत समेतं निखिलजने परितः शरणम् ॥

(जैन साहित्य और इतिहास पृ. ४१२)

लेखांक ४५८ – पद्मावती मूर्ति मल्लिभूषण

सं. १५४४ वर्षे वैशाख शुदी ३ सोमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे भ. श्रीविद्यानंदिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीमल्लीभूषण श्रीस्तंभतीर्थे हुंवड ज्ञातिय श्रेष्ठी चांपा भार्या रूपिणी तत्पुत्री श्रीआर्जिका रत्नसिरी क्षुल्लिका जिनमती श्रीविद्यानंदीदीक्षिता आर्जिका कल्याणसिरी तत्त्वल्ली अग्रोतका ज्ञातो साह देवा भार्या नारिंगदे पुत्री जिनमती नस्सही कारापिता प्रणमति श्रेयार्थम् ॥

(सूरत, दा. पृ. ४३)

लेखांक ४५९ – (पंचास्तिकाय)

भ. श्रीविद्यानंदिदेवा. तत्पट्टे भ श्रीमल्लिभूपणेन आचार्यश्रीअमरकीर्तये प्रदत्तं ॥

[का. ४१२]

लेखांक ४६० – [सावयधम्मदोहा पंजिका]

इति उपासकाचारे आचार्यश्रीलक्ष्मीचद्रविरचिते दोहकसूत्राणि समाप्तानि। स्वस्ति संवत् १५५५ वर्षे कार्तिक सु १५ सोमे श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे अभयविद्यानंदिपट्टे मल्लिभूपण तत्शिष्य पं लक्ष्मणपठनार्थ दोहा श्रावकाचार ॥

(सावयधम्मदोहा प्र. पृ ११)

लेखांक ४६१ – पट्टावली

तत्पट्टोदयाचलबालभास्कर–प्रवरपरवादिगजयूथकेसरि–मंडपगिरिमंत्रवादसमस्याप्तचंद्रपूर्णविकटवादि–गोपाचलदुर्गमेघाकर्पकभाविकजन-सस्यामृतवाणिवर्षग–सुरेंद्रनागेंद्रमृगेंद्रादिसेवितचरणारविंदानां ग्यासदीनसभामध्य–प्राप्तसन्मान–पद्मावत्युपासकानां श्रीमल्लिभूपणभट्टारकवर्याणाम् ॥

(जैन सिद्धान्त १७ पृ ५१)

लेखांक ४६२ – अक्षयनिधान कथा

गच्छे श्रीमति मूलसंघतिलके सारस्वते विश्रुते ।
विद्वन्मान्यतमप्रसह्यसुगुणे स्वर्गापवर्गप्रदे ॥
विद्यानंदिगुरुर्बभूव भविकानंदी सतां संमतः ।
तत्पट्टे मुनिमल्लिभूषणगुरुर्भट्टारको नंदतु ॥ ८७
तर्कव्याकरणप्रवीणमतिना तस्योपदेशाहित-
स्वांतेन श्रुतसागरेण यतिना तेनामुना निर्मितं ।
श्रेयोधाम निकाममक्षयनिधिस्वेष्टव्रतं धीमतां
कल्याणप्रदमस्तु शास्तु मतिमानेतद्विदां संमुदे ॥ ८८

(से. २२)

लेखांक ४६३ – पल्यविधान कथा

तत्पादपंकजरजोरचितोत्तमांग
श्रीमल्लिभूषणगुरुर्विदुषां वरेण्यः ॥ २४०
सर्वज्ञशासनमहामणिमंडितेन तस्योपदेशवशिना श्रुतसागरेण ।
देशव्रतिप्रमुतरेण कथेयमुक्ता सिद्धिं ददातु गुरुभक्तिविभावितेभ्यः ॥ २४१
श्रीभानुभूपतिभुजासिजलप्रवाहनिर्मग्नशत्रुकुलजाततप्रभावे ।
सद्बुध्यहंबृहत्कुले बृहतीलदुर्गे श्रीभोजराज इति मंत्रिवरो बभूव ॥ २४२
भार्यास्य सा विनयदेव्यभिधा सुधौघसोद्गारवाक्कमलिकांतमुखी सखीव ॥
सासूत पूतगुणरत्नविभूषितांगं श्रीकर्मसिंहमिति पुत्रमनूकरत्नं ।
कालं च शत्रुकुलकालमनूनपुण्य श्रीघोघरं नतराघगिरींद्रवज्रं ॥ २४४
· ·तुर्यं च वर्यतरमंगजमत्र गंगं जाता पुरस्तदनु पुत्तलिका स्वसैषां ॥ २४५
···यात्रां चकार गजपथगिरौ ससंघा ह्येतत्तपो विदधती सुदृढव्रता सा ॥२४७
तुंगीगिरौ च वलभद्रमुने. पदाब्जभृंगी तथैव सुकृतं यतिसिंश्चकार ।
श्रीमल्लिभूषणगुरुप्रवरोपदेशात् शास्त्रं व्यधापयदिदं कृतिनां हृदिष्टं ॥ २४८

[से. २१]

लेखांक ४६४ – मंगलाष्टक सिंहनंदि

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं श्रीमूलसंघेऽनघे

श्रीभट्टारकमल्लिभूषणगुरोः शिष्येण संवर्णितम् ।
नित्यं ये च पठंति निर्मलधियः संप्राप्य ते संपदां
सौख्यं तारतरं भजंति नितरां श्रीसिंहनंदिस्तुतं ॥ १९

(म. २३)

लेखांक ४६५ – माणिकस्वामी विनती

पुरे मनोरथ जगि सार कर जोडि गुरु सिंहनदि भणिए ।
तेह्नि पुण्य अपार भणे भणावि भाव धरिए ॥ १४

(म. ५९)

लेखांक ४६६ – आराधना कथाकोश

विद्यानंदिगुरुप्रपट्टकमलोल्लासप्रदो भास्करः ।
श्रीभट्टारकमल्लिभूषणगुरुर्भूयात् सतां शर्मणे ॥
··कुर्याच्छर्म सतां प्रमोदजनकः श्रीसिंहनंदी गुरुः ।
···जीयान्मे सूरिवर्यो व्रतनिचयलसत्पुण्यपण्यः श्रुताब्धिः ।
तेषां पादपयोजयुग्मकृपया श्रीजैनसूत्रोचिताः
सम्यग्दर्शनबोधवृत्ततपसामाराधनासत्कथाः ।
भव्याना वरशान्तिकीर्तिविलसत्कीर्तिप्रमोदं श्रिय
कुर्युः संरचिता विशुद्धशुभदाः श्रीनेमिदत्तेन वै ॥

(जैनमित्र कार्यालय, बम्बई १९१५)

लेखांक ४६७ – अंतरिक्ष पार्श्वनाथ पूजा

अर्घ्यं श्रीपुरपार्श्वनाथचरणांभोजद्वयायोत्तम
श्रीभट्टारकमल्लिभूषणगुरो शिष्येण सवर्णित ।
तोयाद्यैर्वरनेमिदत्तयतिना स्वर्णादिपात्रस्थितं
भक्त्या पंडितराघवस्य वचसा कर्मक्षयार्थी ददे ॥

(म ५६)

लेखांक ४६८ – [नागकुमारचरित]　　लक्ष्मीचंद्र

संवत् १५५६ वर्षे चैत्र शुदि १ शनावद्येह श्रीघनौघद्रग श्रीजिन-

चैत्यालये श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ श्रीपद्मनंदिदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीविद्यानंदिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीमल्लिभूषणदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीलक्ष्मीचंद्रोपदेशात् हंसपत्तने श्रेष्ठादा··एतेषां श्रीसांगणकेन लिखापितं ॥

(प्रस्तावना पृ. १३, कारंजा जैन सीरीज १९३३)

लेखांक ४६९ – [महापुराण–पुष्पदंत]

स्वस्ति श्रीसंवत् १५७५ शाके १४४१ प्र. दक्षणायने ग्रीष्मऋतौ ··ष्ट वदि ७ रवौ घोघामंदिरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीमत्कुंदकुंदाचार्यान्वये··भ श्रीमल्लिभूषणदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीलक्ष्मीचंद्र तच्छिष्य मुनिश्रीनेमिचंद्र दसा हूंबड ज्ञातीय गांधी श्रीपति ··तेषा मध्ये बा. सभू तया लिखाप्य प्रदत्तमिदं आदिपुराणशास्त्रं मुनिश्रीनेमिचंद्रेभ्यः ॥

(प्रस्तावना पृ. १०, माणिकचद ग्रंथमाला, बम्बई)

लेखांक ४७० – (महाभिषेक टीका)

संवत १५८२ वर्षे चैत्र मासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ रवौ श्रीआदिजिनचैत्यालये श्रीमूलसंघे ··भ. श्रीमल्लिभूषणदेवा· तत्पट्टे भ. श्रीलक्ष्मीचंद्रदेवा· तेषां शिष्यवरब्रह्म श्रीज्ञानसागरपठनार्थं ॥ आर्या श्रीविमलश्री चेली भ. लक्ष्मीचंद्रदीक्षिता विनयश्रिया स्वय लिखित्वा प्रदत्तं महाभिषेकभाष्यं । शुभं भवतु ॥

(षट्प्राभृतादि संग्रह प्रस्तावना पृ ७)

लेखांक ४७१ – [सुदर्शनचरित–नयनंदि]

संवत् १६०५ वर्षे आषाढ वदि १० शुक्रे बलात्कारगणे श्रीलक्ष्मीचंद्राणां शिष्य श्रीसकलकीर्तिना स्वपरोपकाराय लिखितं ॥

(म प्रा. ७५९)

लेखांक ४७२ – यशस्तिलक चंद्रिका

इति श्रीपद्मनंदि-देवेंद्रकीर्ति-विद्यानंदि-मल्लिभूषणाम्नायेन भ श्रीमल्लि-

भूषणगुरुपरमाभीष्टभ्रात्रा गुर्जरदेशसिंहासन–भ –श्रीलक्ष्मीचंद्रकाभिमतेन मालवदेश–भ -श्रीसिंहनंदिप्रार्थनया यतिश्रीसिद्धांतसागरव्याख्याकृतिनिमित्तं नवनवतिमहावादिस्याद्वादलब्धविजयेन तर्कव्याकरणछंदोलंकारसिद्धांत–साहित्यादिशास्त्रनिपुणमतिना प्राकृतव्याकरणाद्यनेकशास्त्रचंचुना सूरि–श्रीश्रुतसागरेण विरचितायां यशस्तिलकचंद्रिकाभिधानायां यशोधरमहाराज–चरितचम्पूमहाकाव्यटीकायां यशोधरमहाराजलक्ष्मीविनोदवर्णनं नाम तृती-याश्वासचंद्रिका परिसमाप्ता ॥

(निर्णयसागर प्रेस, बम्बई १९१६)

लेखांक ४७३ – सहस्रनाम टीका

श्रीपद्मनंदिपरमात्मपरः पवित्रो देवेंद्रकीर्तिरथ साधुजनाभिवंद्यः ।
विद्यादिनंदिवरसूरिरनल्पबोधः श्रीमल्लिभूषण इतोस्तु च मंगलं मे ॥
अदः पट्टे भट्टादिकमतघटाघट्टनपटुः सुधीर्लक्ष्मीचंद्रश्चरणचतुरोसौ विजयते ॥
आलंबनं सुविदुषां हृदयांबुजानां आनंदनं मुनिजनस्य विमुक्तिहेतोः ।
सट्टीकनं विविधशास्त्रविचारचारु चेतश्चमत्कृतिकृतं श्रुतसागरेण ॥

(हि १५ पृ २२२)

लेखांक ४७४ – तत्त्वार्थवृत्ति

श्रीमद्देवेंद्रकीर्तिभट्टारकप्रशिष्येण शिष्येण च सकलविद्वज्जनविहित-चरणसेवस्य विद्यानंदिदेवस्य संछर्दितमिथ्यामतदुर्गरेण श्रुतसागरेण सूरिणा विरचितायां श्लोकवार्तिकसर्वार्थसिद्धि – न्यायकुमुदचंद्रोदय – प्रमेयकमल-मार्तंड – राजवार्तिक–प्रचंडाष्टसहस्री – प्रभृतिग्रंथसंदर्भनिर्भरावलोकनबुद्धि–विराजितायां तत्त्वार्थटीकायां दशमोध्यायः ॥

(भारतीय ज्ञानपीठ, काशी १९४९)

लेखांक ४७५ – शांतिनाथ बृहत्पूजा–शांतिदास

तद्विष्टेरेतिविख्यातो विद्यानंदी महायतिः ।
तस्य शिष्यवरो योगी मल्लिभूषणः शीलवान् ॥
तस्यासने लक्ष्मीचंद्रो ख्यातकीर्तिर्दिगंतरे ।
अहीरदेशसर्वेपि सुल्हेरपुरपट्टके ॥

दयावान् श्रीदयाचंद्रो दैगंबरो जितेंद्रियः ।
स्वात्मज्ञानी महाध्यानी तस्य पंचामनासने ॥
· मया श्रुत्वा गुरुपार्श्वे हास्यहेतु निवेदयन् ।
ब्रह्मश्रीजिनदासेन आश्वासनं ददौ मम ॥
· पूज्यपादकृतं स्तोत्रं श्रुतसिंधुकृताष्टकं ।
आशाधरोक्तमवगाह्य प्रथमांतं मया कृतं ॥

(म. १)

लेखांक ४७६ – पट्टावली

तत्पट्टकुमुदवनविकाशनशरत्संपूर्णचंद्राणां ··महामंडलेश्वर–भैरवराय–मल्लिराय–देवराय–वगराय–प्रमुखाष्टादशदेशनरपतिपूजितचरणकमल–श्रुत–सागरपारंगत–वादवादीश्वर–राजगुरु–वसुंधराचार्य– भट्टारकपदप्राप्तश्रीवीर–सेनश्रीविशालकीर्तिप्रमुखशिष्यवरसमाराधितपादपद्मानां श्रीमल्लक्ष्मीचंद्रपरम-भट्टारकगुरूणाम् ॥

[जैन सिद्धात १७ पृ. ५१]

लेखांक ४७७ – बोध सताणू वीरचंद्र

सूरिश्रीविद्यानंदी जयो श्रीमल्लिभूषण मुनिचंद ।
तस पटि महिमानिलो गुरु श्रीलक्ष्मीचंद ॥ ९६ ॥
तेह कुलकमल दिवसपति जपति यति वीरचंद ।
सुणता भणता भावता पामी परमानंद ॥ ९७ ॥

(म. ६४)

लेखांक ४७८ – चित्तनिरोधकथा

सूरिश्रीमल्लिभूषण जयो जयो श्रीलक्ष्मीचंद्र ॥ १४ ॥
तास वंश विद्यानिलु लाड नाति शृंगार ।
श्रीवीरचंद्र सूरी भणी चित्तनिरोध विचार ॥ १५ ॥

(ना. ६)

लेखांक ४७९ – पट्टावली

तद्वंशमंडनकंदर्पदलनविश्वलोकहृदयरंजन–महाव्रतिपुरंदराणां नव-

सहस्रप्रमुखदेशाधिपतिराजाधिराज-श्रीअर्जुनजीयराजसभामध्यप्राप्तसन्माना-नां पोडशवर्षपर्यन्तशाकपाकपक्वान्नशाल्योदनादिसर्पि:प्रभृतिसरसाहारपरि-वर्जितानां .... सकलमूलोत्तरगुणगणमणिमंडितविबुधवरश्रीवीरचंद्रभट्टारका-णाम् ॥

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५१)

लेखांक ४८० – १ मूर्ति ज्ञानभूषण

संवत १६०० वर्षे माघ वदि ७ सोमे भ. श्रीवीरचंद्रदेवा: तत्पट्टे भ. श्रीज्ञानभूषण हूंवड ज्ञातीय भावजा भा. वाई तयो पोमासा नित्यं प्रणमंति॥

(बाळापुर, अ. ४ प. ५०३)

लेखांक ४८१ – सिद्धांतसारभाष्य

श्रीसर्वज्ञं प्रणम्यादौ लक्ष्मीवीरेंदुसेवितम् ।
भाष्यं सिद्धांतसारस्य वक्ष्ये ज्ञानसुभूषणम् ॥

[सिद्धातसारादिसग्रह, माणिकचद्र ग्रथमाला, बम्बई]

लेखांक ४८२ – [पंचास्तिकाय]

भ. श्रीमल्लिभूषणा. । भ श्रीलक्ष्मीचंद्रा । भ. श्रीवीरचंद्रा । भ. श्रीज्ञानभूषणानामिदं पुस्तकं ॥

(का. ४१२)

लेखांक ४८३ – कर्मकाण्ड टीका

मूलसंघे महासाधुलक्ष्मीचद्रो यतीश्वर ।
तस्य पादस्य वीरेंदुर्विबुद्धा विश्ववेदित ॥
तदन्वये दयांभोधि ज्ञानभूषो गुणाकर. ।
टीकां हि कर्मकाण्डस्य चक्रे सुमतिकीर्तियुक् ॥

(ना. १०)

लेखांक ४८४ – (गणितसारसंग्रह)

स्वस्तिश्रीसवत् १६१८ वर्षे कार्तिक सुदि ३ गुरौ श्रीगंधारशुभस्थाने श्रीमदादिजिनचैत्यालये श्रीमूलसंघे . भ. श्रीवीरचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीज्ञानभूषणदेवाः तदन्वये आचार्यसुमतिकीर्तेरुपदेशात् श्रीहुंब (ड) ज्ञातीय सोनी सातू ''प्रदत्तं ॥

(का. ६४)

लेखांक ४८५ – चौरासी लक्ष योनि विनती

श्रीमूलसघ महंत संत गुरु लक्ष्मीचंद ।
श्रीवीरचंद विबुधवृंद ज्ञानभूषण मुनिंद ॥
जिनवर विनति जे पढे मन धरि आनंद ।
भुगति मुगति ते लहे जहा छे परमानंद ॥
सुमतिकीरति भावे भणए ध्यायो जिनवर देव ।
संसारमाहि नवि अवतऱ्यो पाम्यो सिवपद हेव ॥ २३ ॥

(म. ६५)

लेखांक ४८६ – पट्टावली

अनेकदेशनरनाथनरपतितुरगपतिगजपतियवनाधीशसभामध्यसंप्राप्तसन्मानश्रीनेमिनाथतीर्थंकरकल्याणिकपवित्रश्रीऊर्जयंतशत्रुंजयतुंगीगिरि-चूलगिर्यादि-सिद्धक्षेत्रयात्रापवित्रीकृतचरणानां ·· सकलसिद्धांतवेदिनिर्ग्रंथाचार्यवर्यशिष्यश्रीसुमतिकीर्ति- स्वदेशविख्यातशुभमूर्तिश्रीरत्नभूषणप्रमुखसूरिपाठकसाधुसंसेवितचरणसरोजानां भट्टारकश्रीज्ञानभूषणगुरूणाम् ॥

[जैन सिद्धान्त १७ पृ. ५२]

लेखांक ४८७ – त्रेपनक्रिया विनती प्रभाचंद्र

विद्यानंदि गुरु गुण निलए मल्लिभूषण देव ।
लक्ष्मीचंद्र सूरि ललित अंगकरि सहुजन सेव ॥

वीरचंद्र विद्याविलास चंद्रवदन मुनींद्र ।
ज्ञानभूषण गणधर समान दीठे होइए आनंद ॥
प्रभाचंद्र सूरि एम कहेए जिनसासनी सिनगार ।
ए वीनती भणे सुणे तेह घरि जयजयकार ॥ ९ ॥

(म. ६०)

लेखांक ४८८ - धर्मपरीक्षा रास

लक्ष्मीचंद्र श्रीगुरु नमू दीक्षादायक एह ।
वीरचद्र वंदू सदा सीक्षादायक तेह ॥
तस पट्टे पट्टोधर ज्ञानभूषण गुरुराय ।
आचारिज पद आपयु तेहना प्रणमू पाय ॥
तेह कुल कमल दिवसपति प्रभाचद्र यतिराय ।
गुरु गछपति प्रतपो घणू मेरु महीधर काय ॥
सुमतिकीर्ति सुरिवेरे रच्यो धर्मपरीक्षा रास ।
शास्त्र घणा जोई करी कीधो वहू प्रकास ॥
रत्नभूषण राय रंजणो भंजणो मिथ्यामार्ग ।
जिनभवनादिक उद्धरे करये वहुविध त्याग ॥
सेत्रजे उद्धर कियो शांतिनाथ प्रासाद ।
दिगंवर धर्म प्रगट कियो सेतंवरसु करि विवाद ॥
महुआ करि श्रावक भला धना आदे उपदेस ।
वहु प्रेरे प्रारंभियो रच्यौ नहां लवलेस ॥
पंडित हेमे प्रेर्‍या घणू वणायगने वीरदास ।
हासोट नगरे पूरो हुवो धर्मपरीक्षा रास ॥
संवत सोल पंचवीसमे मार्गसिर सुदि वीज वार ।
रास रुडो रलियामणो पूर्ण किधो छे सार ॥

[ना. ३४]

लेखांक ४८९ - त्रैलोक्यसार रास

श्रीमूलसघे गुरुलक्ष्मीचंद तसु पाटि वीरचद मुनींद ।
ज्ञानभूषण तसु पाटि चंग प्रभाचंद्र वंदो मनरंग ॥ २१७ ॥

सुमतिकीरति वर कहि सार त्रैलोक्यसार धर्मध्यान विचार।
जे भणे गणे ते सुखिया थाय रयणभूषण धरि सुगति जाय ॥ २१८ ॥
··संवत् सोलनी सत्तावीस माघ शुक्लनी बारस दीस।
कोदादि रचीयो ए रास भावि भगती भावो भास ॥ २२१ ॥

[ना. ९७]

लेखांक ४९० – पट्टावली

···दिल्लिगौर्जरादिदेशसिंहासनाधीश्वराणाम् ··श्रीज्ञानभूषणसरोज-चंचरीकभट्टारकश्रीप्रभाचंद्रगुरूणाम् ॥

[जैनसिद्धान्त १७ पृ. ५२]

लेखांक ४९१ – [श्रीपालचरित्र] वादिचंद्र

सवत १६३७ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे अदेह श्रीकोदादाशुभस्थाने श्रीशीतलनाथचैत्यालये श्रीमूलसंघे ··भ.श्रीज्ञानभूषणदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीप्रभाचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीवादिचंद्रः तेषां मध्ये उपाध्याय धर्मकीर्ति स्वकर्मक्षयार्थं लेखि ॥

[बडौदा, दा. पृ. ३९]

लेखांक ४९२ – पार्श्वपुराण

सांख्य. शिष्यति सर्वथैव क नं वैशेपिको रंकति।
यस्य ज्ञानकृपाणतो विजयतां सोयं प्रभाचंद्रमाः ॥
तत्पट्टमंडनं सूरिर्वादिचंद्रः व्यरीरचत्।
पुराणमेतत् पार्श्वस्य वादिवृंदशिरोमणि. ॥
शून्याब्दे रसाब्जांके वर्षे पक्षे समुज्वले।
कार्तिके मासि पंचम्यां वाल्मीके नगरे मुदा ॥

(हि. ५ कि. ९)

लेखांक ४९३ – ज्ञानसूर्योदय नाटक

मूलसघे समासाद्य ज्ञानभूष बुधोत्तमा ।
दुस्तरं हि भवांभोधि सुतरं मन्यते हृदि ॥ १ ॥

तत्पट्टामलभूषणं समभवद्दैगंबरीये मते ।
चंचद्बर्हकरः सभातिचतुरः श्रीमत्प्रभाचंद्रमा. ॥
तत्पट्टेजनि वादिवृन्दतिलक. श्रीवादिचंद्रो यति-
स्तेनायं व्यरचि प्रबोधतरणिर्भव्याब्जसंबोधन. ॥ २ ॥
वसुवेदरसाब्जांके वर्षे माघे सिताष्टमी दिवसे ।
श्रीमन्मधूकनगरे सिद्धोयं बोधमरम्भः ॥ ३ ॥

(जैन साहित्य और इतिहास पृ. २६८)

लेखांक ४९४ – श्रीपाल आख्यान

प्रगट पाट त अनुक्रमे मानु ज्ञानभूषण ज्ञानवंतजी ।
तस पद कमल भ्रमर अविचल जस प्रभाचंद्र जयवंतजी ॥
जगमोहन पाटे उदयो वादीचद्र गुणालजी ।
नवरस गीते जेणे गायो चक्रवर्ति श्रीपालजी ॥
संवत सोल एकावनावर्षे कीधो ये परवंधजी ।

[जैन साहित्य और इतिहास पृ. २७०]

लेखांक ४९५ – यशोधरचरित

तत्पट्टविशदख्यातिर्वादिवृन्दमतल्लिका ।
कथामेनां दयासिद्धयै वादिचंद्रो व्यरीरचत् ॥ ८० ॥
अंकलेश्वरसुग्रामे श्रीचिंतामणिमंदिरे ।
सप्तपंचरसाब्जाके वर्षेकारि सुशास्त्रकम् ॥ ८१ ॥

(उपर्युक्त पृ. ७१२)

लेखांक ४९६ – पार्श्वनाथ छंद

मव्हा नयरे तोरो वास श्रीसंघनी तू पूरे आस ॥ ७२ ॥
. ज्ञानभूषण गुरु ज्ञानभंडार सरस्वतीगछमाहे शृंगार ॥ ७४ ॥
तस पाटे दीठे आनंद प्रभा विराजित प्रभासुचंद्र ।
वादिचंद्र वर सुधा सुलीह

ते गुरु बोल यह सुछंद सुनता मनना परमानंद ॥ ७५ ॥

(ना. ७)

लेखांक ४९७ – (पंचस्तवनावचूरि)

श्रीसंवत १६६४ वर्षे श्रीसूर्यपुरे श्रीमदादिजिनचैत्यालये मूलसंघे भ. श्रीज्ञानभूषण भ श्रीप्रभाचंद्र भ. श्रीवादिचंद्राः तदाम्नाये आचार्यश्रीकमलकीर्तिस्तच्छिष्य ब्र. श्रीविद्यासागरस्येदं पुस्तकं ॥

[ना. ४८]

लेखांक ४९८ – पट्टावली

. महावादवादीश्वर-राजगुरु वसुंधराचार्यवर्यहुंबडकुलशृंगारहार भ. श्रीमद्वादिचंद्रभट्टारकाणाम् ॥

(जैन सिद्धात १७ पृ. ५२)

लेखांक ४९९ – चंद्रप्रभ मूर्ति महीचंद्र

संवत् १६७९ वर्षे शाके १५५३ श्रीमूलसंघे नंदीसंघे सरस्वतीगच्छे-भ श्रीवादिचद्रदेवा तत्पट्टे भ. श्रीमहीचद्रोपदेशात् हूंबडज्ञातीय वीऊल वास्तव्य मातर गोत्रे सं श्रीवर्धमान ॥

(सूरत, दा. पृ. ४२)

लेखांक ५०० – सम्यग्ज्ञान यंत्र

सं. १६८५ वर्षे माघ सुदी ५ श्रीमूलसंघे कुंदकुंदाचार्यान्वये श्रीवादीचंद्रस्तत्पट्टे भ श्रीमहीचंद्रोपदेशात् 'सिंघपुरा' वगे संघवी वल्लभजी सं. हीरजी ज्ञानं प्रणमति ।

(सूरत, दा. पृ. ४४)

लेखांक ५०१ – षोडशकारण पूजा मेरुचंद्र

मूलसंघ मंडण वरहंसह महीचद मुणिजण सुपसण्णह ।
मेरुचंद इय भासइ जिणथुइ रयण जीवयणे किय णिच्चलमइ ॥

(ना ८२)

लेखांक ५०२ – पद्मावती मूर्ति

सं. १७२२ जेठ सुदी २ मूलसंघे भ. श्रीमेरुचंद्रपट्टे साहश्रीसिंहपुरा ज्ञातीय प्रेम जीवाभाईसुत भ. श्रीमहीचंद्रशिष्य ब्र. जयसागर प्रणमति ॥

(सूरत, दा. पृ. ५६)

लेखांक ५०३ – सीताहरण

मूलसंघे सरस्वतीवर गछे वलात्कारगण सार जी ।
गंधार नयरे प्रत्यक्ष अतिशय कलियुगे छे मनोहार जी ॥
...प्रभाचंद्र गोर तनेया वानी अमिय रसाल जी ।
वादीचंद्र वादी वहु जीत्या घट सरस्वती गुनमाल जी ॥
महीचंद्र मुनि जनमन मोहन वानी जेह विस्तार जी ।
परवादीना मान मुकाव्या गर्व न करे लगार जी ॥
मेरुचंद्र तस पाटे सोहे मोहे भवियन मन जी ।
व्याख्यान वानि अमिय रसाली सांभलो एके मन जी ॥
गोरमहीचंद्र शिष्य जयसागरे रच्यू सीताहरण मनोहार जी ।
...सवत सत्तर वत्तीसा वरसै वैशाख सुद्ध वीज सार जी ।
बुधवारे परिपूर्णज रचयु सूरत नयर मझार जी ॥
आदिजिनेश्वर तणे प्रासादे पद्मावती पसाय जी ।
सांभलता गाताय सहुने मन माहे आनंद थाय जी ॥

परिच्छेद ६ (ना. २५)

लेखांक ५०४ – अनिरुद्धहरण

तेह पाटे महीचद्र भट्टारक दीठे जन मन मोहे जी ।
मेरुचद्र तम पाटे जाणो वाणी अमी रस सोहे जी ॥
गोर महीचंद्र सिष्य एम वोले जयसागर ब्रह्मचारि जी ।
संवत सत्तर वत्तीस माहे मागसिर मास भृगुवार जी ।
सुदि तेरसि रचना रची पूर्ण ग्रंथ थयो सार जी ॥
सुरत नयर माहे तम्हे जाणो आदि जिन गेह सार जी ।

पद्मावती मुझ प्रसन्न थई ने नित्य करो जयकार जी ।

(ना. ६)

लेखांक ५०५ – सगरचरित्र

महीचंद्र सूरिवर तेह पाटे जेन्ह जाने छे देस विदेस रे ।
ब्रह्म जयसागर इम कहे गावे सगरनो रास मनोहार रे ।
कांई संवत सत्तोत्तरो ते सार कांई माघ नवमी वुधवार रे ।
अपर पछे रचना रची कांई गावे सहु नर नार रे ॥
घोघा नयर सुहावनो श्रीआदीसुरने दरवार रे ।
भने भनावे सांभले कांई तेह घरे जयकार रे ॥

[ना. ६]

लेखांक ५०६ – पट्टावली

....लघुशाखाहुंबडकुलशृंगारहारदिल्लीगुर्जरसिंहासनाधीशबलात्कार-गणविरुदावलीविराजमान भ. श्रीमेरुचंद्रगुरूणाम् ॥

[जैन सिद्धात १७ पृ. ५२]

लेखांक ५०७ – आदिनाथमूर्ति　　　विद्यानंदि

श्रीजिनो जयति । स्वस्ति श्री १८०५ वर्षे शाके १६७५ प्रवर्तमाने वैसाखमासे शुक्लपक्षे चंद्रवासरे गुर्जरदेशे सूरतबंदरे जुग्यादिचैत्यालये श्रीमूलसंघे नंदीसंघे . भ श्रीमहीचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीमेरुचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ श्रीजिनचंद्रदेवा. तत्पट्टे भ श्रीविद्यानंदीगुरूपदेशात् सूरतवास्तव्य रायकवाल जातीय धर्मधुरधर .. ॥

[सूरत, दा. पृ. ३१]

लेखांक ५०८ – (आराधना–सकलकीर्ति)

संवत १८२२ मिति मार्गसीर सुदि ८ वुधवारे नागपुरमध्ये श्रीमूल-संघे भ. श्रीविद्यानंदीजी तच्छिष्य ब्रह्मजिनदासेन लखितं ॥

[ना. ९४]

लेखांक ५०९ – (गणितसार संग्रह)   देवेंद्रकीर्ति

संवत १८४२ मिति वैसाख सुदि ११ भ. श्रीविद्याभूषण इदं गणित छत्तिसी भ. श्रीदेवेद्रकीर्तिजी प्रदत्तं शुभं भूयात् ।

(का.६४)

लेखांक ५१० -- पट्टावली

श्रीविद्यानदीपट्टोधरधीराणां श्रीमत्खडेलवालज्ञातीयशुद्धवंशोद्भवानाम् ·····भट्टारकोत्तंसश्रीमद्देवेद्रकीर्तिभट्टारकाणां तपोराज्याभ्युदयार्थं भव्यजनैः क्रियमाणे श्रीजिननाथाभिषेके सर्वे जनाः सावधाना भवंतु । इति श्रीनंदिसंघविरुदावली श्रीसुमतिकीर्तिकृता संपूर्णा ॥

(जैनसिद्धात १७ पृ. ५३)

लेखांक ५११ – पट्टावली   विद्याभूषण

खंडिल्यान्वयशृंगारहाराणां देवेद्रकीर्तिपट्टधारसुरिविरदावलिसमूहविराजमान श्रीमद्विद्याभूषणभट्टारकाणाम् ।

[जैनमित्र १९–६–१९२४]

लेखांक ५१२ – पद्मावती मूर्ति   धर्मचंद्र

सं. १८९९ वैशाख सुद १२ गुरुवार श्रीमूलसघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे कुदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीविद्यानदि तत्पट्टे भ. श्रीदेवेद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीविद्याभूषणजी तत्पट्टे भ श्रीधर्मचंद्र तत्गुरुभ्राता पंडित भाणचंद उपदेशात् सा. वेणिलाल केसुरदास तत्सुता बाई इछाकोर नित्यं प्रणमति ।

[सूरत दा. पृ. ४३]

लेखांक ५१३ – पट्टावली

भट्टारकवरेण्यविद्याभूषणविद्यमानदत्तनंदिसंघपदाना गछाधिराजभट्टारकवरेण्यपरमाराध्यपरमपूज्यश्रीभट्टारकधर्मचंद्राणां तपोराज्याभ्युदयार्थं

भव्यजनैः क्रियमाणे श्रीजिननाथाभिषेके सर्वे जनाः सावधाना भवंतु ।

[जैनमित्र, १९-६-१९२४]

लेखांक ५१४ – विंध्यगिरि अभयचंद्र

संवत् १५४८ वरुषे चैत्र वदि १४ दने भ श्री. अभयचंद्रकस्य शिष्य ब्रह्म धर्मरुचि ब्रह्म गुणसागर पं. की का यात्रा सफल ।

(जैन शिलालेख संग्रह भा. १ पृ. ३३४)

लेखांक ५१५ – पद्मप्रभपूजा

जे नर निर्मल जे कुसुमांजलि मन वच काया सुद्ध करी ।
श्रीअभयचंद कहे निश्चय लहिये स्वर्ग राज कैवल्य पुरी ॥

(म. ५६)

लेखांक ५१६ – (गोमटसार टीका).

निर्ग्रन्थाचार्यवर्येण त्रैविद्यचक्रवर्तिना ।
संशोध्याभयचंद्रेणालेखि प्रथमपुस्तकः ॥

(अ. ४ पृ. ११६)

लेखांक ५१७ – षोडशकारण पूजा अभयनंदि

सिरिपंकजिणदो सिरिदेविंदो विज्जानंदी मल्लिमुनी ।
सिरि लच्छीचदो अभयचंदो अभयनंदि सुमति द्विगुणी ॥

(म ३)

लेखांक ५१८ – दशलक्षण पूजा

ब्रह्मचर्य सुव्रत पर ब्राह्मी सुंदरी प्रथम वृषभ जिन सुतारक ।
श्रीअभयनंदिगुरु सुशील सुसागर सुमतिसागर जिनधर्मधर ॥

(म. ३)

लेखांक ५१९ – जंबूद्वीप जयमाला

अभयचंद्र रूपवंत गुणी अभयनंदि गुणधार।
श्रीसुमतिसागर देवेंद्र भणिया त्रिभुवनतिलक जयवंत ॥ ५२ ॥

[म. ३]

लेखांक ५२० – व्रत जयमाला

जय जय जिन तारन स्वामी नाम पूजा भुवि मुक्ति कर।
श्रीअभयनंदिभयवारण संकर सुमतिसागर जिनधर्मधर ॥ २२ ॥

[म ३]

लेखांक ५२१ – तीर्थ जयमाला

जय परमेश्वर वोधजिनेश्वर अभयनंदि मुनिवर शरणं।
जय कर्मविदारण भवभयवारण सुमतिसागर तव गुण–चरणं ॥ २० ॥

[म. ३]

लेखांक ५२२ – महावीरमूर्ति रत्नकीर्ति

सं. १६६२ वर्षे वैसाख वदी २ शुभदिने श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्रीअभयचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीअभयनंद तच्छिष्य आचार्यश्रीरत्नकीर्ति तस्य शिष्याणी बाई वीरमती नित्यं प्रणमति श्रीमहावीरम्।

(भा. प्र. पृ. १४)

बलात्कार गण – सूरत शाखा

इस शाखा का आरम्भ भ. देवेन्द्रकीर्ति से हुआ। आप भ. पद्मनन्दी के शिष्य थे जिन का वृत्तान्त उत्तर शाखा मे आ चुका है। आप ने संवत् १४९३ की वैशाख कृ. ५ को एक मूर्ति स्थापित की (ले. ४२५)। आप ने उज्जैन के प्रान्त मे प्रतिष्ठाए करवाईं तथा सातसौ घरों की रत्नाकर जाति की स्थापना की (ले. ४२६)। आप के शिष्य त्रिभुवनकीर्ति से जेरहट शाखा का आरम्भ हुआ।

देवेन्द्रकीर्ति के पट्टशिष्य विद्यानन्दी हुए। आप ने सवत् १४९९ की वैशाख शु. २ को एक चौवीसी मूर्ति, सवत् १५१३ की वैशाख शु. १० को एक मेरु तथा एक चौवीसी मूर्ति, सवत् १५१८ की माघ शु. ५ को दो मूर्तिया, संवत् १५२१ की वैशाख कृ. २ को एक चौवीसी मूर्ति तथा सवत् १५२७ की वैशाख शु. १२ को एक अन्य मूर्ति स्थापित की (ले. ४२७–३३)। सवत् १५१३ की चौवीसी मूर्ति आर्यिका संयमश्री के लिए घोघा में प्रतिष्ठित की गई थी[७२]।

विद्यानन्दी ने सुदर्शनचरित नामक सस्कृत ग्रन्थ लिखा (ले. ४३४)। साह लखराज ने पंचास्तिकाय की एक प्रति खरीद कर इन्हें अर्पित की (ले. ४३५)। इन के शिष्य ब्रह्म अजित ने भडौच मे हनुमच्चरित की रचना की (ले. ४३६)। इन के अन्य शिष्य छाहड ने सवत् १५९१ में भडौच में धनकुमारचरित की एक प्रति लिखी (ले. ४३७)। इन के तीसरे शिष्य ब्रह्म धर्मपाल ने सवत् १५०५ में एक मूर्ति स्थापित की (ले. ४३८)

पट्टावली के अनुसार राजा वज्राग, गग जयसिंह, तथा व्याघ्रनरेन्द्र ने आप का सन्मान किया[७३]। आप अठसखे परवार जाति के थे। हरिराज

७२ विद्यानदी के अन्य उल्लेख देखिए (ले. २५७) तथा (ले ३५६), नोट ४३ तथा (ले. ५२३).

७३ वज्राग और गंग जयसिंह कर्णाटक के स्थानीय राजा रहे होंगे। इन का ठीक राज्यकाल ज्ञात नहीं हो सका। व्याघ्रनरेन्द्र सम्भवतः किसी वाघेल वंशीय राजा का सस्कृत रूपान्तर है।



सूरत के भ विद्यानन्दि (प्रथम) की
शिष्या आर्यिका जिनमती की मूर्ति (सूरत)

संदर्भ—पृष्ठ १९५



काष्ठासंघ- नंदितटगच्छ के भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति
(सूरत – संवत् १७४४–७३)
(संवत् १७४७ के हस्तलिखित के चित्र की अनुकृति)

संदर्भ–पृष्ठ २९२

के कुल को आप ने उज्ज्वल किया। सम्मेदशिखर, चम्पापुर, पावापुर, गिरनार, प्रयाग आदि क्षेत्रों की आप ने वंदना की, तथा सहस्रकूट बिम्ब स्थापित किया। श्रुतसागर आप के मुख्य शिष्य थे (ले. ४३९)।

श्रुतसागर सूरि ने महेन्द्रदत्त के पुत्र लक्ष्मण की प्रार्थना पर ज्येष्ठ जिनवर कथा लिखी (ले. ४४२), कल्याणकीर्ति के आग्रह से पोडशकारण कथा लिखी (ले. ४५०), मतिसागर की प्रेरणा से मुक्तावली कथा लिखी [ले. ४५१], साध्वी सौवर्णिका की प्रार्थना पर मेरुपक्ति कथा लिखी [ले. ४५२] तथा श्रीराज की विनति पर लक्षणपक्ति कथा की रचना की [ले. ४५३]। मेघमाला, सप्त परमस्थान, रविवार, चदनषष्ठी, आकाशपचमी, पुष्पांजलि, निर्दु:खसप्तमी, श्रवण द्वादशी, रत्नत्रय इन व्रतो की कथाएं भी आप ने लिखीं (ले. ४४० - ४९)। औदार्यचिन्तामणि नामक प्राकृत व्याकरण, शुभचन्द्र कृत ज्ञानार्णव के गद्य भाग की टीका तत्त्वत्रयप्रकाशिका, महाभिषेक टीका तथा श्रुतस्कन्ध पूजा ये रचनाए आपने लिखीं[७४]। इन में तत्त्वत्रयप्रकाशिका की रचना आचार्य सिंहनन्दि[७५] के आग्रह से हुई (ले. ४५४–५७)।

विद्यानन्दीके पट्टशिष्य मल्लिभूषण हुए। आप के समय संवत् १५४४ की वैशाख शु २ को खभात में एक निषीदिका बनाई गई।[७६] इस के लेख में आर्यिका रत्नश्री, कल्याणश्री और जिनमती का उल्लेख है (ले. ४५८)। मल्लिभूषण ने आचार्य अमरकीर्ति को पचास्तिकाय की एक प्रति दी थी (ले. ४५९)। आप के शिष्य लक्ष्मण के लिए सावयधम्मदोहा पंजिका की एक प्रति संवत् १५५५ की कार्तिक शु. १५

७४ श्रुतसागर सूरि की अन्य रचनाओं के लिए विद्यानन्दि के उत्तराधिकारी मल्लिभूषण और लक्ष्मीचन्द्र का वृत्तान्त देखिए।

७५ सम्भवतः भानपुर शाखा में इन्ही का उल्लेख हुआ है।

७६ ब्र. शीतलप्रसादजी ने यह लेख पद्मावती मूर्ति का कहा है, किन्तु उस लेखपर से वह क्षुल्लिका जिनमती की मूर्ति प्रतीत होती है।

को लिखी गई (ले. ४६०) । पट्टावली के अनुसार आप ने मंडपगिरि और गोपाचल की यात्रा की तथा ग्यासदीन ने आप का सन्मान किया था[७७] । आप पद्मावती के उपासक थे [ले. ४६१] ।

मल्लिभूषण के समय श्रुतसागरसूरि ने इलदुर्ग के भानुभूपति[७८] के मन्त्री भोजराज की पुत्री पुत्तलिका के साथ गजपन्थ और तुंगीगिरि की यात्रा की तथा वहीं पल्यविधान कथा की रचना की [ले. ४६३] । अक्षयनिधान कथा भी आप ने इन्हीं के समय लिखी [ले. ४६२] ।

भ. सिंहनन्दी ने अपने मंगलाष्टक में मल्लिभूषण का गुरुरूप में उल्लेख किया है । इन की एक रचना माणिकस्वामी विनती भी है [ले. ३६४–६५] । ब्रह्म नेमिदत्त ने अपने आराधना कथाकोश में मल्लिभूषण, सिंहनन्दी और श्रुतसागर को वन्दन किया है । इन ने पण्डित रावव के आग्रह पर अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ पूजा लिखी [ले. ४६६–६७] ।[७९]

मल्लिभूषण के पट्टशिष्य लक्ष्मीचन्द्र हुए । इन के उपदेश से सांगणक ने संवत् १५५६ की चैत्र शु. १ को हंसपत्तन[८०] में नागकुमारचरित की एक प्रति लिखी [ले. ४६८] । संवत् १५७५ की ज्येष्ठ कृ. ७ को घोघा में संभूबाई ने महापुराण की एक प्रति लक्ष्मीचंद्र के शिष्य नेमिचन्द्र को अर्पित की [ले. ४६९] । संवत् १५८२ की चैत्र शु. ५ को आप के शिष्य ज्ञानसागर के लिए आर्यिका विनयश्री ने महाभिषेक टीका की प्रति लिखी [ले. ४७०] । संवत् १६०५ में लक्ष्मीचंद्र के शिष्य सकलकीर्ति ने नयनन्दिकृत सुदर्शनचरित की एक प्रति लिखी [ले. ४७१]

---

७७ माल्वे का सुलतान–राज्यकाल १४६९–१५०० ई.

७८ ईडर के राव भाणजी–राज्यकाल १४४६–९६ ई

७९ नेमिदत्त ने संवत् १५८५ में श्रीपालचरित लिखा । सुदर्शनचरित, रात्रिभोजनत्याग कथा तथा नेमिनाथ पुराण ये इन के अन्य ग्रन्थ हैं (अनेकान्त वर्ष ९ पृ ४७६)

८० हंसापुर (जिला सूरत)

लक्ष्मीचन्द्र के समय श्रुतसागरसूरि ने यशस्तिलकचन्द्रिका, सहस्रनाम टीका, तत्त्वार्थ वृत्ति तथा षट्प्राभृतटीका की रचना की [ले. ४७२–७४]। इन की प्रशस्तियों से पता चलता है कि श्रुतसागर ने नीलकण्ठ भट्ट आदि ९९ वादियो पर विजय प्राप्त की तथा सिद्धान्तसागर यति के लिए यशस्तिलकचन्द्रिका बनाई ।[८१]

लक्ष्मीचन्द्र के समय ब्रह्म जिनदास[८२] के शिष्य ब्रह्म शान्तिदास ने शान्तिनाथ बृहत्पूजा की रचना की। उस समय मुल्हेर मे दयाचन्द्र भट्टारक थे (ले. ४७५)।

पट्टावली से पता चलता है कि भ. लक्ष्मीचन्द्र भैरवराय, मल्लिराय, देवराय, वगराय आदि १८ राजाओ द्वारा सम्मानित हुए थे[८३] तथा आप ने भ. वीरसेन, भ. विशालकीर्ति आदि से भी[८४] सन्मान पाया था [ले. ४७६]।

लक्ष्मीचन्द्र के पट्टशिष्य दो थे। इन मे अभयचन्द्र का वृत्तान्त इसी प्रकरण के अन्त में सगृहीत किया है। दूसरे पट्टशिष्य वीरचन्द्र थे। आप ने वोधसताणू तथा चित्तनिरोध कथा की रचना की [ले. ४७७-७८]। आप ने नवसारी के शासक अर्जुनजीयराज से सन्मान पाया[८५] तथा सोलह वर्ष तक नीरस आहार सेवन किया [ले ४७९]।

वीरचन्द्र के पट्टशिष्य ज्ञानभूषण हुए। आप ने संवत् १६०० में एक मूर्ति प्रतिष्ठित की तथा सिद्धान्तसारभाष्य की रचना की [ले. ४८०–

८१ श्रुतसागर के विषय में देखिए–पं. नाथूराम प्रेमी (जैन साहित्य और इतिहास पृ. ४०६) तथा पं. परमानन्द (अनेकान्त व. ९ पृ. ४७४)

८२ इन का वृत्तान्त ईडर शाखा के भ सकलकीर्ति और भुवनकीर्ति के वृत्तान्त में देखिए।

८३ तुलुव राजा वगराय (तृतीय) का राज्यकाल १५३३–१५४५ ई. था। अन्य राजा कर्णाटक के स्थानीय शासक थे किन्तु उन का ठीक राज्यकाल ज्ञात नहीं हो सका।

८४ वीरसेन सम्भवतः कारंजा के सेनगण के भ. गुणभद्र के शिष्य हैं। विशालकीर्ति कारंजा शाखा के विशालकीर्ति (प्रथम) हो सकते है।

८५ अर्जुन जीयराज का इतिहास में कुछ विवरण नहीं मिलता।

८१]। सुमतिकीर्ति की सहायता से आप ने कर्मकाण्ड टीका लिखी (ले. ४८३)। पचास्तिकाय की एक प्रति पर आप का नाम अंकित है (ले. ४८२)। आप के शिष्य सुमतिकीर्ति के उपदेश से संवत् १६१६ की कार्तिक शु. २ को गणितसारसंग्रह की एक प्रति दान की गई (ले. ४८४)। सुमतिकीर्ति ने चौरासी लक्ष योनि विनती की रचना की (ले. ४८५)। इन के अतिरिक्त रत्नभूषण आदि साधु ज्ञानभूषण के शिष्य थे। ज्ञानभूषण ने गिरनार, शत्रुंजय, तुंगीगिरि, चूलगिरि आदि क्षेत्रों की यात्रा की थी (ले. ४८६)।[८६]

ज्ञानभूषण के पट्ट पर प्रभाचन्द्र भट्टारक हुए। आप ने त्रेपन क्रिया विनती लिखी (ले. ४८७)। आप के गुरुबन्धु सुमतिकीर्ति ने सवत् १६२५ में हासोट मे धर्मपरीक्षा रास की रचना की। आप ने शत्रुंजय पर शान्तिनाथ मन्दिर के निर्माण का तथा श्वेताम्बरों के साथ हुए वाद का उल्लेख किया है[८७]। धर्मपरीक्षा के लिए पडित हेम ने प्रेरणा की थी (ले. ४८८)। सुमतिकीर्ति ने संवत् १६२७ में माघ शु. १२ को कोदादा शहर में त्रैलोक्यसार रास की रचना पूर्ण की (ले. ४८९)।

प्रभाचन्द्र के पट्टपर वादिचन्द्र भट्टारक हुए। आप के समय सवत् १६३७ में उपाध्याय धर्मकीर्ति ने कोढादा मे श्रीपालचरित्र की प्रति लिखी (ले. ४९१)। आप ने सवत् १६४० में वाल्मीकनगर मे पार्श्वपुराण की रचना की (ले. ४९२), सवत् १६४८ में मधूकनगर में ज्ञानसूर्योदय नाटक लिखा (ले. ४९३), संवत् १६५१ में श्रीपाल आख्यान पूरा किया (ले. ४९४), सवत् १६५७ मे अकलेश्वर में यशोधरचरित की रचना की तथा महुआ में पार्श्वनाथ छद लिखे (ले. ४९५-९६)।

८६ आप के विषय में नोट ६४ तथा ६१ तथा १२१ देखिए।

८७ शत्रुंजय के शान्तिनाथ मन्दिर का निर्माण (ले. ३८८) के अनुसार सवत् १६८६ में हुआ किन्तु इस लेख से उस के पूर्व भी एक शान्तिनाथमन्दिर वहा था ऐसा प्रतीत होता है।

आप हूंबड जाति के थे (ले. ४९८)। आप की आम्नाय मे ब्र. विद्यासागर ने सवत् १६६४ में पंचस्तवनावचूरि की एक प्रति सूरत मे प्राप्त की (ले. ४९७)।[८८]

वादिचन्द्र के पट्ट पर महीचन्द्र आरूढ हुए। आप ने सवत १६७९ मे एक चन्द्रप्रभ मूर्ति तथा सवत् १६८५ मे एक सम्यग्ज्ञान यन्त्र स्थापित किया (ले. ४९९–५००)।

महीचन्द्र के शिष्य मेरुचन्द्र हुए। आप के गुरुबन्धु जयसागर ने सवत् १७२२ मे एक पद्मावती मूर्ति स्थापित की (ले. ५०२)। इन ने संवत् १७३२ में सूरत में सीताहरण लिखा, सवत् १७३२ मे ही अनिरुद्ध हरण लिखा तथा घोघा में सगरचरित्र की रचना की[८९] (ले. ५०३–५)। पट्टावली से विदित होता है कि मेरुचन्द्र हूंबड जाति के थे (ले. ५०६)। आप ने षोडशकारण पूजा लिखी (ले. ५०१)।

मेरुचन्द्र के बाद जिनचद्र और उन के बाद विद्यानन्दी पट्टाधीश हुए। आप ने संवत् १८०५ मे सूरत मे एक आदिनाथ मूर्ति स्थापित की (ले. ५०७)। आप के शिष्य जिनदास ने नागपुर मे सवत् १८२२ में आराधना की एक प्रति लिखी (ले. ५०८)।

विद्यानन्दि के पट्टशिष्य देवेन्द्रकीर्ति हुए। संवत् १८४२ में इन ने गणितसारसग्रह की एक प्रति अपने शिष्य विद्याभूषण को दी। विद्याभूषण खंडेलवाल जाति के थे (ले. ५०९–११)।

---

८८ वादिचन्द्र के लिए प. नाथूराम प्रेमी का लेख देखिए (जैन साहित्य और इतिहास पृ. २६८)। बम्बई से काव्यमाला के १३ वे गुच्छक में प्रकाशित पवनदूत काव्य सम्भवतः आप की ही रचना है।

८९ सगरचरित्र में भी रचना काल दिया है किन्तु उस का अर्थ हमें स्पष्ट नहीं हो सका।

विद्याभूषण के बाद धर्मचन्द्र पट्टाधीश हुए। इन के गुरुबन्धु माणचंद ने संवत् १८९९ में पद्मावती मूर्ति स्थापित की (ले. ५१२)।"

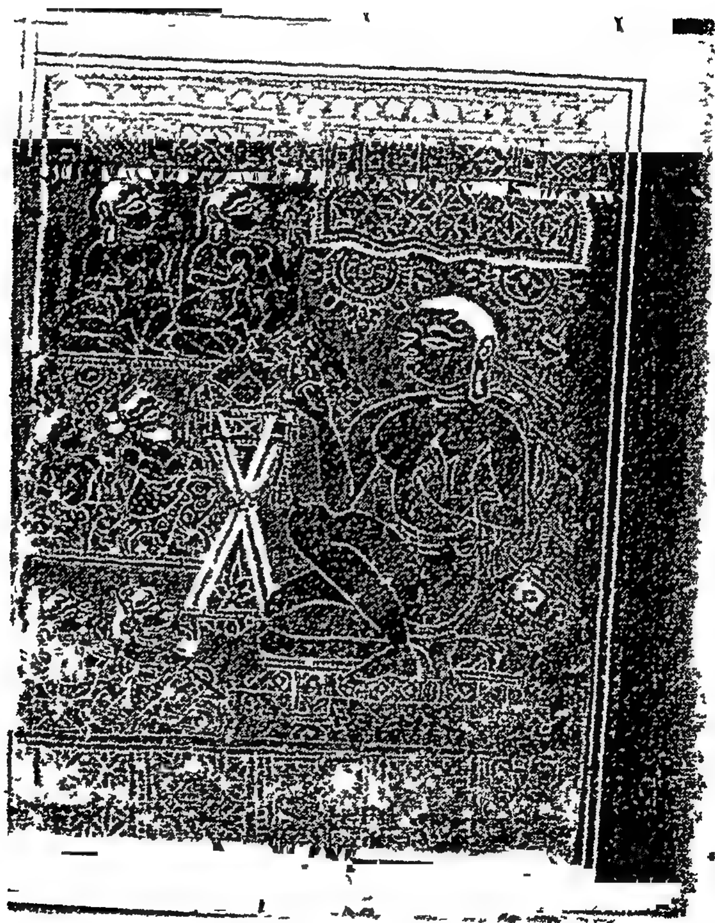
सूरत शाखा की ही एक परम्परा भ. लक्ष्मीचन्द्र के शिष्य अभयचन्द्र से प्रारम्भ हुई। अभयचन्द्र ने पद्मप्रभपूजा लिखी है। सम्भवतः आप ने नेमिचन्द्र विरचित गोमटसारटीका की पहली प्रति लिखी थी। आप के शिष्य धर्मरुचि तथा गुणसागर ने संवत् १५४८ में गोमटेश्वर के दर्शन किये (ले. ५१४-१६)।

अभयचन्द्र के शिष्य अभयनन्दि हुए। इन के शिष्य सुमतिसागर ने षोडशकारण पूजा, दशलक्षण पूजा, जंबूद्वीप जयमाला, व्रत जयमाला तथा तीर्थजयमाला ये पूजापाठ लिखे (ले. ५१७-२१)।

अभयनन्दि के शिष्य रत्नकीर्ति हुए। इन की शिष्या वीरमती ने संवत् १६६२ मे एक महावीर मूर्ति स्थापित कराई (ले. ५२२)।



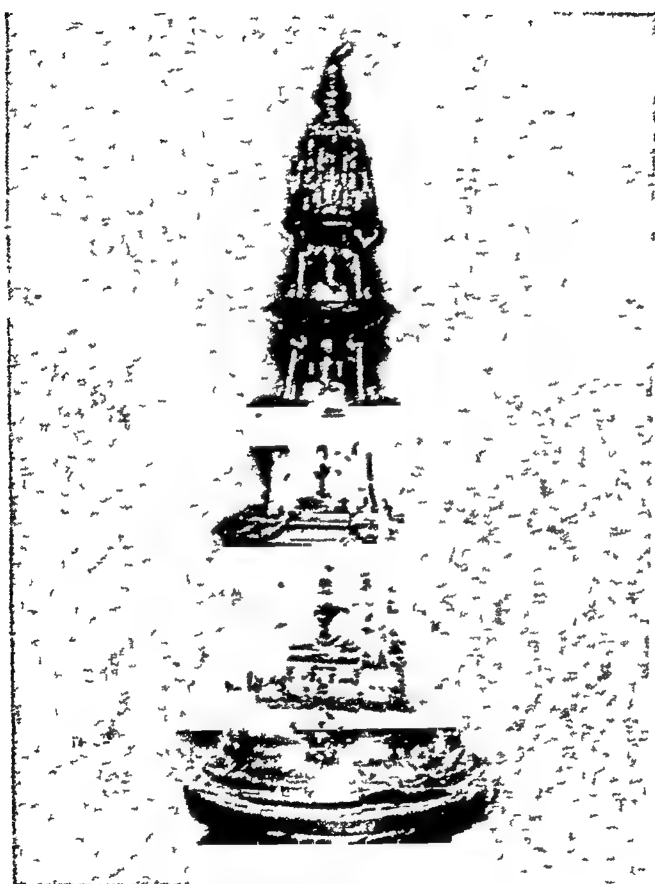
कीर्ति, गुणचन्द्र और सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए [दानवीर माणिकचन्द्र पृ. ३८]



बलात्कार गण- सूरत-शाखा के भट्टारक विद्यानन्दि
(प्रथम) संवत् १४९९-१५३७
(बड़ौदा में प्राप्त हस्तलिखित के संवत् १५२६ में बने हुए
चित्र की अनुकृति)

संदर्भ-पृष्ठ २०१

भट्टारक-संप्रदाय



सूरत के भ. विद्यानन्दि (प्रथम) द्वारा सं १५२६ में स्थापित पंचमेरुकी मूर्ति – इसके कोनोंपर भ पद्मनन्दि (बलात्कारगण– उत्तर शाखा), भ देवेन्द्रकीर्ति (प्रथम) (ब. सूरत शाखा), भ विद्यानन्दि तथा उनके शिष्य कल्याणनन्दिकी मूर्तियां बनी है ।

सदर्भ–पृष्ठ २०१

बलात्कार गण–सूरत शाखा–काल पट

१ पद्मनन्दी (उत्तर शाखा)	
२ देवेन्द्रकीर्ति [सवत् १४९३]	
३ विद्यानन्दी [संवत् १४९९--१५३७]	त्रिभुवनकीर्ति (जेरहट शाखा)
४ मल्लिभूषण [सवत् १५४४–१५५५]	
५ लक्ष्मीचन्द्र [सवत् १५५६–१५८२]	
६ वीरचन्द्र	अभयचन्द्र (सं. १५४८)
७ ज्ञानभूषण [संवत् १६००–१६१६]	अभयनन्दि
८ प्रभाचन्द्र [संवत् १६२५–१६२७]	रत्नकीर्ति (स. १६६२)
९ वादिचन्द्र [सवत् १६३७–१६६४]	
१० महीचन्द्र [सवत् १६७९–१६८५]	
११ मेरुचन्द्र [सवत् १७२२–१७३२]	
१२ जिनचन्द्र	
१३ विद्यानन्दि [सवत् १८०५–१८२२]	
१४ देवेन्द्रकीर्ति [सवत् १८४२]	
१५ विद्याभूषण	
१६ धर्मचन्द्र [सवत् १८९९]	

१२. बलात्कार गण–जेरहट शाखा

लेखांक ५२३ – हरिवंशपुराण श्रुतकीर्ति

कुंदकुंदगणिणा अणुकम्मइ जायइ मुणिगण विविह सहम्मइ ।
गण वलत्त वागेसरि गच्छइ णंदिसंघ मणहर मइसच्छइ ।
पहाचदगणिणा सुदपुण्णइ पोमणंदि तह पट्ट उवण्णइ ।
पुणु सुभचंददेव कम जायइ गणि जिणचंद तह य विक्खायइ ।
विज्जाणंदि कमेण उवण्णइ सीलवंत वहुगुण सुदपुण्णइ ।
पोमणंदि सिस कमिण ति जायइ जे मंडलायरिय विक्खायइ ।
मालवदेसे धम्मसुपयासणु मुणि देवेंदकित्ति पिउभासणु ।
तह सिसु अमियवाणि गुणधारउ तिहुवणकित्ति पवोहणसारउ ।
तह सिसु सुदकित्ति गुरुभत्तउ जेहि हरिवसपुराणु पउत्तउ ।
संवतु विक्कमसेण णरेसह सहसु पंचसय वावण सेसह ।
मंडयगडु वर मालवदेसइ साहि गयासु पयाव असेसइ ।
णयर जेरहद जिणहरु चंगउ णेमिणाहजिणविंवु अभंगउ ।
गंथु सउण्णु तत्थ इहु जायउ चउविह संसुणि सुणि अणुरायउ
माघ किण्ह पंचमि ससिवारइ हत्थणखत्त समत्तु गुणालइ ।

(अ. ११ पृ. १०६)

लेखांक ५२४ – परमेष्ठिप्रकाशसार

दह पण सय तेवण गय वासइ पुणु विक्कमणिवसंवच्छरहे ।
तह सावणमासहु गुरुपचमि सहु गंथु पुण्णु तय सहस तहे ।।
मालव देस दुग्ग मंडवचलु वट्टइ साहि गयासु महावलु ।
साहि णसीरु णाम तह णंदणु रायधम्म अणुरायउ वहुगुणु ।
तह जेरहट णयर सुपसिद्धउ जिण चेइहर मुणिसुपवुद्धइ ।
णेमीसर जिणहर णिवसंतइ विरयउ एहु गंथु हरिसंतइ ।
तेहि लिहाइहि णाणागंथइ इय हरिवंसपमुह सुपसत्थइ ।
विरइय पढम तमहि वित्थारिय धम्मपरिक्ख पमुह मणहारिय ।

इय परमिट्ठिपयाससारे अरुहादिगुणेहि वण्णणालकारे अप्पसुदसुदकित्ति जहासत्ति महाकव्वु विरयंतो णाम सत्तमो परिच्छेउ समत्तो ।।

(अ. ११ पृ. १०७)

लेखांक ५२५ - १ मूर्ति　　धर्मकीर्ति

सं. (१६) ४५ माघ सुदि ५ श्रीमूलसंघे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. यशकीर्तिपट्टे भ. श्रीललितकीर्तिपट्टे भ श्रीधर्मकीर्ति उपदेशात् पौरपट्टे छितिरा मूर गोहिलगोत्र साधु दीनू भार्या · ॥

(यूचौन, अ. ३ पृ ४४५)

लेखांक ५२६ - चंद्रप्रभ मूर्ति

संमत १६६९ चैत्र सुद १५ रवौ मूलसघे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. यशोकीर्ति तत्पट्टे भ. ललितकीर्ति तत्पट्टे भ धर्मकीर्ति उपदेशात् ·· ॥

(पा. ५१)

लेखांक ५२७ - पार्श्वनाथ मूर्ति

सं. १६६९ चैत सुदी १५ रवौ भ. ललितकीर्ति भ. धर्मकीर्ति तदुपदेशात् सा. पदारथ भार्या जिया पुत्र दो खेमकरण पमापेता नित्य नमति ॥

(भा. प्र. पृ. ५)

लेखांक ५२८ - नंदीश्वरमूर्ति

संमत १६७१ वर्षे वैसाख सुद ५ मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ यशकीर्ति तत्पट्टे भ. ललितकीर्ति तत्पट्टे भ. धर्मकीर्तिउपदेशात् पौरपट्टे सा उदयचंदे भार्या···उदयगिरेंद्र प्रतिष्ठा प्रसिद्धं॥

(पा. ६०)

लेखांक ५२९ - हरिवंशपुराण

श्रीमूलसंघेजनि कुंदकुंद सूरिर्महात्माखिलतत्त्ववेदी ।
सीमन्धरस्वामिपदप्रवन्दी पंचाह्वयो जैनमतप्रदीपः ॥
तदन्वयेभूद् यशकीर्तिनामा भट्टारको भाषितजैनमार्गः ।
तत्पट्टवान् श्रीललितादिकीर्तिर्भट्टारकोजायत सत्क्रियावान् ॥
जयति ललितकीर्तिर्ज्ञाततत्त्वार्थसार्थो
नयविनयविवेकप्रोज्ज्वलो भव्यबन्धुः ।
जनपदशतमुख्ये मालवेलं यदाज्ञा

समभवदिह जैनद्योतिका दीपिकेव ॥
तत्पट्टांबुजहर्षवर्षतरणिर्भट्टारको भासुरो
जैनग्रंथविचारकेलिनिपुणः श्रीधर्मकीर्त्याह्वय ।
तेनेदं रचितं पुराणममलं गुर्वाज्ञया किंचन
संक्षेपेण विबुद्धिनापि सुहृदा तत् शोध्यमेतद् ध्रुवम् ॥
वर्षे व्यष्टशते चैकाग्रसप्तत्यधिके रवौ ।
आश्विने कृष्णपंचम्यां ग्रथोयं रचितो मया ॥

[म. प्रा. पृ. ७६१]

लेखांक ५३० – पार्श्वनाथ मूर्ति

संमत १६८१ वर्षे माघ सुदी १५ गुरौ भ. धर्मकीर्ति उपदेशात् परवारज्ञातौ ·· ॥

(पा. ९८)

लेखांक ५३१ – षोडशकारण यंत्र

सं. १६८२ मार्गसिर वदि–रवौ भ. ललितकीर्तिपट्टे भ. धर्मकीर्ति गुरुपदेशात् परवार धना मूर सा. हठीले भार्या दमा पुत्र दयाल भार्या केशरि भोजे गरीवे भालदास भार्या सुभा ·· ॥

(प्रानपुरा, अ. ३ पृ. ४४५)

लेखांक ५३२ – ? यंत्र

संवत १६८३ फाल्गुन सुदी ३ श्रीधर्मकीर्ति उपदेशात् सं. मुकुट भा. किशुन ··एते नमन्ति ॥

[अहार, अ. १० पृ. १५६]

लेखांक ५३३ – पार्श्वनाथ मूर्ति सकलकीर्ति

संमत १७११ भ. सकलकीर्ति सा. लाले पुत्रवते प्रणमंति ॥

[परवार मंदिर, नागपुर]

लेखांक ५३४ – पार्श्वनाथ मूर्ति

सं. १७१२ मार्ग वदि १२ श्रीमूलसंघे भ. सकलकीर्ति ··हरदा ॥

(वाजारगाव, जिला नागपुर)

लेखांक ५३५ – पार्श्वनाथ मूर्ति

संवत १७१३ वर्षे मार्गशिर सुदी १० रवऊ श्रीभ. धवलकीर्ति भ. सकलकीर्ति·· प्रणमंति नित्यम् ।

(नारायणपुर, अ. १० पृ. १५५)

लेखांक ५३६ – ? मूर्ति

संवत १७१८ वर्षे फाल्गुने मासे कृष्णपक्षे ··श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भ. श्री ६ धर्मकीर्ति तत्पट्टे भ. श्री ६ पद्मकीर्ति तत्पट्टे भ. श्री ६ सकलकीर्ति उपदेशेनेयं प्रतिष्ठा कृता तद्गुरुराद्योपाध्याय नेमिचंद्रः पौरपट्टे अष्टशाखाश्रये धनामूले कासिल्ल गोत्रे साहु अधार भार्या लालमती ·· ॥

[पपौरा, अ. ३ पृ. ४४५]

लेखांक ५३७ – षोडशकारण यंत्र

संवत १७२० वर्षे फागुन सुदी १० शुक्र बलात्कारगणे··भ श्रीसकलकीर्तिउपदेशात् गोलापूर्वान्वये गोत्र पेथवार प परवति ·· ॥

[अहार, अ. १० पृ. १५५]

लेखांक ५३८ – आदिनाथ स्तोत्र　　सुरेंद्रकीर्ति

मूलसघको नायक सोहे सकलकीर्ति गुरु वंदो जू ।
तस पट पाट पटोधर सोहे सुरेंद्रकीर्ति मुनि गाजे जू ॥
संवत सत्रासो छपण हे मास कार्तिक शुभ जानो जू ।
दास विहारी विनती गावे नाम लेत सुख पावे जू ॥ २२

(ना. ५५)

बलात्कार गण—जेरहट शाखा

इस शाखा का आरभ भ. त्रिभुवनकीर्ति से हुआ। आप भ. देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे जिन का वृत्तान्त सूरत शाखा में आ चुका है। आप के शिष्य श्रुतकीर्ति ने सवत् १५५२ में ग्यासुद्दीन के राज्यकाल[91] में जेरहट में हरिवंशपुराण लिखा (ले. ५२३)। श्रुतकीर्तिने दिल्ली-जयपुर शाखा के भ. जिनचन्द्र और उन के शिष्य विद्यानन्दि का भी उल्लेख किया है।[92] इन ने सवत् १५५३ मे जेरहट में ही परमेष्ठिप्रकाशसार की रचना की।[93]

भ. त्रिभुवनकीर्ति के बाद क्रमशः सहस्रकीर्ति-पद्मनन्दी-यशःकीर्ति-ललितकीर्ति और धर्मकीर्ति भट्टारक हुए।[94] धर्मकीर्ति ने सवत् १६४५ की माघ शु. ५ को एक मूर्ति, सवत् १६६९ की चैत्र पौर्णिमा को एक चन्द्रप्रभ मूर्ति तथा एक पार्श्वनाथ मूर्ति, और सवत् १६७१ की वैशाख शु. ५ को एक नन्दीश्वर मूर्ति स्थापित की। (ले. ५२५-२८)। आप ने सवत् १६७१ की आश्विन कृ. ५ को हरिवंशपुराण लिखा (ले. ५२९)। सवत् १६८१ में एक पार्श्वनाथ मूर्ति, सवत् १६८२ मे एक षोडशकारण यंत्र तथा सवत् १६८३ मे एक और यन्त्र आप ने स्थापित किया (ले. ५३०—३२)।

---

९१ मालवा सुलतान-राज्यकाल १४६९—१५०० ई

९२ डॉ. हीरालालजी जैन ने श्रुतकीर्तिकृत धर्मपरीक्षा का परिचय दिया है। (अनेकान्त वर्ष ११ पृ. १०६) आप के मत से श्रुतकीर्ति की गुरुपरंपरा प्रभाचद्र-पद्मनन्दि-शुभचन्द्र-जिनचन्द्र-विद्यानन्दि-पद्मनन्दि-देवेन्द्रकीर्ति--त्रिभुवन—कीर्ति ऐसी है । दिल्ली-जयपुर तथा सूरत शाखा के काल्पटों के अवलोकन से साफ होता है कि यहाँ आप ने दो समकालीन परम्पराओं को एकत्रित कर दिया है। नोट ४३ देखिए।

९३ श्रुतकीर्ति के विषय में प. परमानन्द का लेख देखिए [अनेकान्त वर्ष १३ पृ. २७९] जिस में उन के योगसार का भी परिचय दिया है।

९४ त्रिभुवनकीर्ति के बाद की यह परम्परा पं. परमानद के एक नोट पर से ली गई है जिस में धर्मकीर्ति के एक और ग्रन्थ पद्मपुराण का उल्लेख है। (अनेकान्त वर्ष १२ पृ. २८)

६ ललितकीर्ति

७ धर्मकीर्ति [संवत् १६४५–१६८३] — रत्नकीर्ति

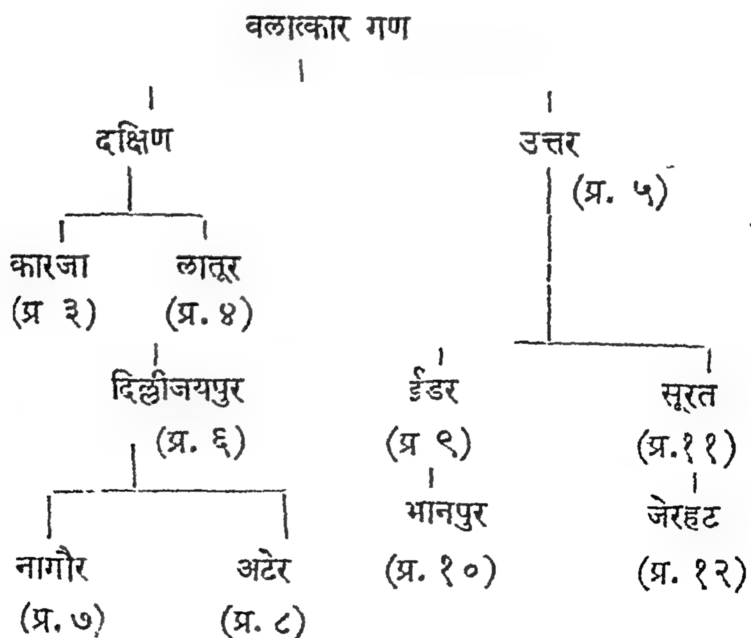
८ पद्मकीर्ति — चन्द्रकीर्ति (स. १६७५-८१)

९ सकलकीर्ति [संवत् १७११–२०]

१० सुरेन्द्रकीर्ति [संवत् १७५६)

परिशिष्ट १

बलात्कार गण की शाखा वृद्धि



परिशिष्ट २

काष्ठा–संघ की स्थापना

मध्ययुगीन जैन साधुओ के इतिहास में काष्ठासंघ का स्थान महत्त्व-पूर्ण है। आचार्य देवसेन ने दर्शनसार में-जिसकी रचना संवत् ९९० में धारा नगरी में हुई थी–कहा है कि आचार्य विनयसेन के शिष्य कुमारसेन ने संवत् ७५३ में नदियड–वर्तमान नादेड (बम्बई प्रदेश)-में इस सघ की स्थापना की थी[1]। इस सघ का सर्वप्रथम शिलालेखीय उल्लेख सवत् ११५२ में हुआ है। 'काष्ठासघ महाचार्यवर्य देवसेन' की चरणपादुकाओं की स्थापना का इस लेख में निर्देश है[2]।

चौदहवीं सदी के बाद इस सघ की अनेक परम्पराओं के उल्लेख मिलते हैं। भ. सुरेन्द्रकीर्ति के अनुसार-जिनका समय सवत् १७४७ है–ये परम्पराएं चार भेदों मे विभाजित थीं–माथुर गच्छ, बागड गच्छ, लाडबागड गच्छ तथा नन्दीतट गच्छ[3]। सुरेन्द्रकीर्ति स्वय नन्दीतट गच्छ के भट्टारक थे।

आश्चर्यकी बात यह है कि बारहवीं सदी तक माथुर, बागड़ तथा लाडबागड इन परम्पराओ के जो उल्लेख मिलते हैं, उनमें इन्हे सघ की सज्ञा दी गई है, तथा काष्ठासंघ के साथ उन का कोई सम्बन्ध नहीं कहा है।

माथुर संघ के प्रसिद्ध आचार्य अमितगति है। आप ने सवत् १०५० से १०७३ तक कोई बारह ग्रन्थ लिखे। इन में से अधिकाश के अन्त में प्रशस्ति में माथुर सघ का यशोगान है, किन्तु काष्ठासघ का नाम-निर्देश भी नहीं है[4]।

इसी तरह लाडबागड-जिसे सस्कृत मे लाटवर्गट कहा गया है–गण के तीन उल्लेख मिलते है। इस गण के आचार्य जयसेन ने सवत् १०५५ मे सकलीकरहाटक–वर्तमान कऱ्हाड (बम्बई प्रदेश)–मे धर्म-रत्नाकर नामक ग्रन्थ लिखा[5]। प्राय. इसी समय इस गण के दूसरे आचार्य

१ जैन हितैषी, वर्ष १३, पृ २५७--२५९। २ अनेकान्त, वर्ष १०, पृ. १०५। ३ दानवीर माणिकचन्द्र, पृ. ४७। ४ जैन साहित्य और इतिहास, पृ. २८३-२८५। ५ अनेकान्त वर्ष ८, पृ. २०१-२०३।

महासेन ने प्रद्युम्नचरित लिखा[6]। तथा संवत् ११४५ मे इस गण के आचार्य विजयकीर्ति के उपदेश से एक मन्दिर बनवाया गया[7]। इन तीनों आचार्यों ने अपनी विस्तृत प्रशस्तियो में लाटवर्गटगण की पूरी प्रशसा की है किन्तु काष्ठासघ का कोई उल्लेख नहीं किया है।

बागड सघ के आचार्य सुरसेन के उपदेश से प्रतिष्ठापित की गई एक प्रतिमा पर जो शिलालेख मिलता है, उस में भी काष्ठासंघ का कोई उल्लेख नहीं है। इस प्रतिमा का समय सवत् १०५१ है[8]। बागड सघ के दूसरे आचार्य यशःकीर्ति ने जगत्सुन्दरी प्रयोगमाला नामक ग्रन्थ लिखा है। इस में भी काष्ठासंघ का कोई निर्देश नहीं है[9]।

इन सब अनुल्लेखों पर से प्रतीत होता है कि सम्भवतः बारहवीं सदी तक माथुर, लाडबागड और बागड़ इन तीनो संघो का काष्ठासंघ से कोई सम्बन्ध नहीं था। यहा स्मरण रखना चाहिये की नन्दीतट गच्छ के कोई प्राचीन उल्लेख नहीं मिलते, यद्यपि इसी नाम के ग्राम में काष्ठासघ की स्थापना कही गई है।

काष्ठासघ का नाम दिल्ली के निकट जो काष्ठा नामक ग्राम है-उसी पर से पडा है। इस ग्राम की स्थिति पहले काफी अच्छी थी। बारहवीं सदी मे यहाँ ट्क्क वश के शासको की राजधानी थी[10]। किन्तु इस से पहले इस ग्राम के कोई उल्लेख नहीं मिलते। इस से भी प्रतीत होता है कि माथुर इत्यादि सघों का बारहवीं सदी मे एकीकरण हो कर ही काष्ठासघ

६ पृ. १८३। ७ ए. इ, भा. २, पृ २३७। ८ ज ए. सो., भा. १९, पृ. ११०। ९ अनेकान्त, वर्ष २, पृ. ६८६।

१० स्टडीज इन इण्डियन लिटररी हिस्टरी, भाग. १ पृ. २९०। (प्रसिद्ध वैद्यक ग्रन्थ 'मदनपाल निघटु' की रचना इसी स्थान के टक्क शासक मदनपाल द्वारा की गयी। फीरोज तुगलक की माता यहीं के टक्क शासक की पुत्री थी जिसके दो भाई सण्णपाल और मदनपाल पीछे मुसलमान हो गये थे। गुजरात के मुस्लिम शासक टाक इसी टक्क या टाक सण्णपाल व मदनपाल के वंशज थे।) दे., पी. वी. काणे -हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र, पूना, भा. १।)

की स्थापना हुई होगी।

इस से देवसेन कृत दर्शनसार की स्थिति काफी संशयास्पद हो जाती है। यहा स्मरण दिलाना उचित होगा कि यह संशयास्पदता अन्य साधनों से पहले भी व्यक्त हो चुकी है[११]। काष्ठासंघ के स्थापक कुमारसेन का समय दर्शनसार में संवत ७५३ कहा गया है। किन्तु उनके गुरु विनयसेन के छोटे गुरुबन्धु जिनसेन का समय उनकी 'जयधवला टीका' की प्रशस्ति से शक ७५९ सुनिश्चित है[१२]। इसी प्रकार माथुरसंघ की स्थापना दर्शनसार के अनुसार आचार्य रामसेन द्वारा संवत् ९५३ में हुई थी[१३]। किन्तु संवत् १०५० में इस संघ के आचार्य अमितगति ने अपने पाच पूर्वाचार्यों का उल्लेख करते हुए भी रामसेन का स्मरण नहीं किया है[१४]।

ऐसी स्थिति में यही मानना उचित होगा कि माथुर आदि चार संघों का एकीकरण हो कर बारहवीं सदी मे काष्ठासघ की स्थापना हुई थी। सम्भवतः यह कार्य उन देवसेन का ही था जिन की चरणपादुकाए संवत् १५४५ मे स्थापित हुई थीं।

इससे उनका 'महाचार्यवर्य' यह विशेषण भी सार्थक सिद्ध होता है।



१३. काष्ठासंघ–माथुरगच्छ

लेखांक ५४१ – रामसेन

तत्तो दुसएतीदे महुराए माहुराण गुरुणाहो ।
णामेण रामसेणो णिप्पिच्छं वण्णियं तेण ॥

(दर्शनसार ४०)

लेखांक ५४२ – सुभाषितरत्नसन्दोह अमितगति

आशीर्विध्वस्तकंतो विपुलशमभृतः श्रीमतः कान्तकीर्तिः ।
सूरेर्यातस्य पारं श्रुतसलिलनिधेर्देवसेनस्य शिष्यः ॥
विज्ञाताशेषशास्त्रो व्रतसमितिभृतामग्रणीरस्तकोपः ।
श्रीमान् मान्यो मुनीनाममितगतियतिस्त्यक्तनिःशेषसङ्ग. ॥ ९१५
तस्य ज्ञातसमस्तशास्त्रसमयः शिष्यः सतामग्रणीः ।
श्रीमान्माथुरसंघसाधुतिलकः श्रीनेमिषेणोभवत् ॥
शिष्यस्तस्य महात्मनः शमयुतो निर्धूतमोहद्विषः ।
श्रीमान्माधवसेनसूरिरभवत् क्षोणीतले पूजितः ॥ ९१७
दलितमदनशत्रोर्भव्यनिर्व्याजबन्धो. ।
शमदमयममूर्तिश्चन्द्रशुभ्रोरुकीर्ति. ॥
अमितगतिरभूद्यस्तस्य शिष्यो विपश्चिद् ।
विरचितमिदमर्थ्यं तेन शास्त्रं पवित्रं ॥ ९१९
समारूढे पूतत्रिदशवसतिं विक्रमनृपे ।
सहस्रे वर्षाणां प्रभवति हि पञ्चाशदधिके ॥
समाप्ते पञ्चम्यामवति धरणीं मुञ्जनृपतौ ।
सिते पक्षे पौषे बुधहितमिदं शास्त्रमनघम् ॥ ९२२

(निर्णयसागर प्रेस, बम्बई १९०३)

लेखांक ५४३ – वर्धमान नीति

वन्दे मम गुरुं तं च नेमिषेणमुनीश्वरम् ।
परोपकारिणां धुर्यं चित्रं चारित्रमाश्रितम् ॥ ६९
माधवसेनं वंदे मुनिश्रेष्ठं महीतले ।
नौमि यदिच्छयैवायं ग्रंथो हि निरमीयत ॥ ७०

यामरसव्योमचंद्राब्दे तपस्यस्यासिते दले ।
अमितगतिमुनि एतापि (?) जयंति जयशालिन. ॥ ७१

(जैन मित्र २–१२–१९२०)

लेखांक ५४४ – धर्मपरीक्षा

संवत्सराणां विगते सहस्रे ससप्ततौ विक्रमपार्थिवस्य ।
इदं निषिध्यान्यमतं समाप्तं जैनेन्द्रधर्मामृतयुक्तिशास्त्रम् ॥

(जैन साहित्य और इतिहास पृ. १८१)

लेखांक ५४५ – पञ्चसंग्रह

त्रिसप्तत्याधिकेब्दानां सहस्रे शकविद्विषः ।
मसूतिकापुरे जातमिदं शास्त्रं मनोरमम् ॥

[माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला, बम्बई]

लेखांक ५४६ – तत्त्वभावना

वृत्तविंशशतेनेति कुर्वता तत्त्वभावनां ।
सद्योमितगतेरिष्टा निर्वृतिः क्रियते करे ॥

[प्र. मू. कि. कापडिया, सूरत]

लेखांक ५४७ – उपासकाचार

तस्मादजायत नयादिव साधुवादः ।
शिष्टार्चितोमितगतिर्जगति प्रतीतः ॥
विज्ञातलौकिकहिताहितकृत्यवृत्ते. ।
आचार्यवर्यपदवीं दधतः पवित्राम् ॥
अयं तडित्वानिव वर्षणं घनो ।
रजोपहारी धिषणापरिष्कृत ॥
उपासकाचारमिमं महामना. ।
परोपकाराय महोन्नतोऽकृत ॥ ७

(अनतकीर्ति ग्रंथमाला, बम्बई १९२२)

लेखांक ५४८ – द्वात्रिंशिका

यैः परमात्मामितगतिवद्यः सर्वविविक्तो भृशमनवद्यः ।
शश्वदधीते मनसि लभन्ते मुक्तिनिकेतं विभववरं ते ॥ ३२

(प्र. मू. कि. कापडिया, सूरत)

लेखांक ५४९ – आराधना

आराधना भगवती कथिता स्वशक्त्या
चिन्तामणिं वितरितुं बुधचिन्तनानि ।
अह्नाय जन्मजलधिं तरितुं तरण्डं
भव्यात्मनां गुणवती ददतां समाधिम् ॥ १२

[जैन साहित्य और इतिहास पृ. ३६]

लेखांक ५५० – अथूणा मंदिर लेख　　　　छत्रसेन

···तस्य पुत्रास्त्रयोभूवन् भूरिशास्त्रविशारदा. ।
आलोकः साहसाख्यश्च तल्लुकाख्यः परोनुजः ॥ ८
यस्तत्राद्यः सहजविशदप्रज्ञया भासमानः ।
स्वांतादर्शस्फुरितसकलैतिह्यतत्त्वार्थसार ॥
··यो माथुरान्वयनभस्तलतिग्मभानोः ।
व्याख्यानरंजितसमस्तसभाजनस्य ॥
श्रीछत्रसेनसुगुरोश्चरणारविंद- ।
सेवापरोभवदनन्यमनाः सदैव ॥ ११
आयुस्तप्तमहींद्रसारनिहितस्तोकांबुवन्नश्वरं ।
संचिंत्य द्विपकर्णचंचलतरां लक्ष्म्याश्च दृष्ट्वा स्थितिं ।
ज्ञात्वा शास्त्रसुनिश्चयात् स्थिरतरे नूनं यश श्रेयसी ।
तेनाकारि मनोहरं जिनगृहं भूमेरिदं भूषणम् ॥ २२
···वर्षसहस्रे याते षट्षष्ठ्युत्तरशतेन संयुक्ते ।
विक्रमभानोः काले स्थलिविषयमवति सति विजयराजे ॥ २५
विक्रम सवत् ११६६ वैशाख सुदि ३ सोमे वृषभनाथस्य प्रतिष्ठा ॥
(हि. १३ पृ ३३५)

लेखांक ५५१ – बिजौलियामंदिर लेख गुणभद्र

श्रीमन्माथुरसंघेभूद् गुणभद्रो महामुनिः ।
कृता प्रशस्तिरेषा च कविकंठविभूषणा ॥ ८७
·· प्रसिद्धिमगमद्देव. काले विक्रमभास्वतः ।
षड्विंशद्वादशशते फाल्गुने कृष्णपक्षके ॥ ९१
तृतीयायां तिथौ वारे गुरौ तारे च हस्तके ।
धृतिनामनि योगे च करणे तैतिले तथा ॥ ९२

(भा. २१ पृ. २२)

लेखांक ५५२ – देवी मूर्ति ललितकीर्ति

संवत् १२३४ वर्षे माघ सुदी ५ बुधे श्रीमान् माथुरसघे पंडिताचार्य धर्मकीर्ति शिष्य ललितकीर्ति. । वर्धमानपुरान्वये सा. प्रामदेव भार्या प्राहिणी··· ॥

[आमला Indian Culture वर्ष ११, पृ. १६८]

लेखांक ५५३ – षट्कर्मोपदेश अमरकीर्ति

बारह सयइ ससत्तचयालिहि विक्कमसवच्छरहु विसालहि ॥
गणहि मि भद्दवयहु पक्खंतरि गुरुवारम्मि चउद्दसि वासरि ॥
इक्के मासे इहु सम्मियउ सइं लिहियउ आलसु अवहत्थियउ ॥
परमेसर पइ णवरसभरिउ विरइयउ णेमिणाहहो चरिउ ॥
अण्णु वि चरित्तु सव्वत्थसहिउ पयडत्थु महावीरहो विहिउ ॥
तीयउ चरित्त जसहर णिवास पद्धडिया बंधे किउ पयासु ॥
टिप्पणउ धम्मचरियहो पयडु तिह विरयउ जिह बुज्झेइ जडु ॥
सक्कयसिलोयविहि जणियदिहि गुंफियउ सुहासियरयणणिही
धम्मोवएसचूडामणिक्खु तह झाणपईउ जि झाणसिक्खु ॥
छक्कम्मुवएस सहु पबन्ध किय अट्ठसंख सइ सच्चसंध ॥
सक्कयपाइयकव्वय घणाइं अवराइं कियइं रंजियजणाइ ॥

[अ. ११ पृ ४१४]

लेखांक ५५४ – नेमिनाथचरित

ताह रज्जिय वट्टंतए विक्कमकालि गए बारह सव चउआलए सुक्खु।
सुहिवक्खसए भद्दवएहो सियपक्खेयारसि दिणि तुरिउ ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ५५५ – (पंचास्तिकाय)　　गुणकीर्ति

संवत्सरेस्मिन् श्रीविक्रमादित्यगताब्दसवत् १४६८ वर्षे आषाढ वदि २ शुक्रदिने श्रीगोपाचले राजाश्रीवीरम्मदेवविजयराज्य-प्रवर्तमाने श्रीकाष्ठा-संघे माथुरगच्छे पुष्करगणे आचार्यश्रीभावसेनदेवाः तत्पट्टे श्रीसहस्रकीर्ति-देवाः तत्पट्टे भ श्रीगुणकीर्तिदेवा. तेषामाम्नाये अग्रोतकान्वयपरमश्रावक-वशिलगोत्रीयसघाधिपति महराज तद्भार्या साध्वी जाल्ही एतेषां मध्ये संघइ महराजवधू साधुनरदेवपुत्री देवसिरी तया इद पंचास्तिकायसारग्रथं लिखापितं ॥

(का ४१२)

लेखांक ५५६ – १ मूर्ति

सं. १४७३ श्रावण वदी १ श्रीकाष्ठासंघे भ श्रीगुणकीर्ति सा. जिनदास ॥

(भा प्र. पृ ६)

लेखांक ५५७ – (भविष्यदत्त पंचमी कथा)　　यशःकीर्ति

संवत १४८६ वर्षे आषाढ वदि ७ गुरुदिने गोपाचलदुर्गे राजा डूंगरसिंह राज्य प्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासघे माथुरगच्छे पुष्करगणे आचार्य श्रीसहस्रकीर्तिदेवा. तत्पट्टे आचार्यश्रीगुणकीर्तिदेवा तच्छिष्य श्रीयशःकीर्ति-देवाः तेन निजज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं इद भविष्यदत्तपचमीकथा लिखापित।

[अ. ८ पृ. ४६५]

लेखांक ५५८ – पांडव पुराण

सिरिकट्ठसंघ माहुरहो गच्छ पुक्खरगणि मुणिवइ विलच्छि ॥

संजायउ वीरजिणुक्कमेण परिवाडिय जइवर णिहयएण ॥
सिरिदेवसेणु तह विमलसेणु तह धम्मसेणु पुणु भावसेणु ॥
तहो पट्ट उवण्णउ सहसकित्ति अणवरय भमिय जइ जासु कित्ति ॥
तह विक्खायउ गुणकित्ति णामु तवतेए जासु सरीरु खामु ॥
तहो णियवंधउ जसकित्ति जाउ आयरिय पणासिय दोसु वाउ ॥

[अ. ७ पृ. १६३]

लेखांक ५५९– रिट्ठनेमिचरिउ

गय तिहुयणसयंभु सुरठाणहो जं उव्वरिउ किंपि सुणियाणहो ॥
तं जसकित्तिमुणिहि उद्धरियउ । णिएवि सुत्तु हरिवंसच्छरियउ ॥
णियगुरुसिरिगुणकित्ति पसाए । किउ परिपुण्णु मणहो अणुराए ॥
सरहसेणेदं सेठि आएसे । कुमरणयरि आविउ सविसेसे ॥
गोवगिरिहे समीवे विसालए । पणियारहे जिणवरचेयालए ॥
भद्दवमासि विणासियभवकलि । हुउ परिपुण्णु चउद्दिसि णिम्मलि ॥

[जैन साहित्य और इतिहास पृ. ३९३]

लेखांक ५६० – आदिनाथ मूर्ति

संवत १४९७ वर्षे वैसाख ७ शुक्रे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीगोपाचलदुर्गे महाराजाधिराज राजा श्रीडूंग(रसिंह) राज्य सवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भ. गुणकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. यशःकीर्तिदेवाः प्रतिष्ठाचार्य पंडित रइधू तेषां आम्नाये अग्रोतवंशे गोयलगोत्रे साधु ॥

(अ. १० पृ ३८०)

लेखांक ५६१ – सम्मइजिन चरिउ

सिरि अयरवालकवंसम्मि सारेण ।
दहएगपडिमाणपालण सणेहेण ।
खेल्हाहिहाणेण णमिऊण गुरु तेण ।
जसकित्ति विणयत्तु मंडिय गुणोहेण ।
ससिपहजिणेंदस्स पडिमा विसुद्धस्स ।
कराविया मइजि गोवायले तुंग ॥

(अ. १० पृ १११)

लेखांक ५६२ – आदिपुराण

सिरिगुणकित्ति णामु जइपुंगमु तउ तवेइ जो दुविहु असंगमु ॥
पुणु तहु पट्टिय वरजसभायणु सिरिजसकित्ति भव्वसुहदायणु ॥
तहु पयपंकयाहि पणमंतउ जा वुह णिवसइ जिणपयभत्तउ ॥
ता रिसिणा सो भणिउ विणोए हत्थु णिएवि सुमुहुत्ते जोए ॥
भो सिंधियसेणय सुसहाए होसि वियक्खणु मज्झु पसाए ॥
इय भणेवि मंतक्खर दिण्णउ तेणाराहिउ तं जि अछिण्णउ ॥
चिरपुण्णे कइत्तगुणसिद्धउ सुगुरुपसाए हुवउ पसिद्धउ ॥

(हि. १३ पृ. १०४)

लेखांक ५६३ – १ यंत्र   मलयकीर्ति

संवत १५०२ वर्षे कार्तिक सुदि ५ भौमदिने श्रीकाष्ठासंघे भ. श्रीगुणकीर्तिदेवा. तत्पट्टे श्रीयशकीर्तिदेवाः तत्पट्टे श्रीमलैकीर्तिदेवान्वये साहु वरदेवा तस्य भार्या जैणी ॥

(अहार, अ. १० पृ. १५६)

लेखांक ५६४ – १ मूर्ति

सं १५१० माघ सुदि १३ सौमे श्रीकाष्ठासघे आचार्य मलयकीर्तिदेवाः तयो प्रतिष्ठितम् ॥

(भा. प्र. पृ. १३)

लेखांक ५६५ – [समयसार]   गुणभद्र

गगनावनिभूतेन्दुगण्ये श्रीविक्रमाद्गते ।
अब्दे राधे तृतीयाया शुक्लायां बुधवासरे ॥ २
जिनालयैराढ्यगृहैर्विमानसमैर्वरैश्चुम्बितवायुमार्गे. ।
अदीनलोको जनभित्तसौख्यप्रदोस्ति गोपाद्रिरिहर्धिपूर्णे ॥ ३
श्रीतोमरानूकशिखामणित्वं य प्राप भूपालगतार्चिताङ्घ्रिः ।
श्रीराजमानो हतशत्रुमान श्रीडुंगरेंद्रोत्र नराधिपोस्ति ॥ ४
दीक्षापरीक्षानिपुण. प्रभावान् प्रभावयुक्तोद्यमदादियुक्त ।

श्रीमाथुरानूकललामभूतो भूनाथमान्यो गुणकीर्तिसूरिः ॥ ५
· पट्टे तदीयेजनि पुण्यमूर्तिः श्रीमान यशःकीर्तिरनल्पशिष्यैः ॥ ६
···तेजोनिधिः सूरिगुणाकरोस्ति पट्टे तदीये मलयादिकीर्तिः ॥ ७
···पट्टे ततोस्यारिरनगसंगभग कले. श्रीगुणभद्रसूरिः ॥ ८
आम्नाये वरगर्गगोत्रतिलक तेषां जनानंदकृत् ।
यो अन्वयमुखसाधुमहितः श्रीजैनधर्मावृतः ॥
दानादिव्यसनो निरुद्धकुनय सम्यक्त्वरत्नांबुधिः ।
जज्ञेसौ जिणदाससाधुरनघो दासो जिनांघ्रिद्वयो ॥ ९

(से. २४)

लेखांक ५६६ – [पंचास्तिकाय]

संवत् १५१२ वर्षे माघ वदि २ बुधे श्रीकाष्ठासघे माथुरगच्छे भ. श्रीगुणकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ श्रीयश.कीर्तिदेवा. तत्पट्टे श्रीमलयकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीगुणभद्रदेवा. । भ. श्रीगुणभद्रैर्निजकर्मक्षयाय इद पचास्तिकाय-शास्त्रं ब्र धर्मदासाय प्रत्तं ॥

(का. ४१२)

लेखांक ५६७ – [ज्ञानार्णव]

संवत १५२१ वर्षे असाढ सुदि ६ सोमवासरे श्रीगोपाचलदुर्गे तोमर-वंशे राजाधिराजश्रीकीर्तिसिंहराज्ये प्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भ. श्रीगुणकीर्तिदेवा तत्पट्टे भ श्रीयश.कीर्तिदेवा तत्पट्टे भ. श्रीमलयकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ श्रीगुणभद्रदेवा. तदाम्नाये गर्गगोत्रे ॥

(अ ५ पृ. ४०३)

लेखांक ५६८ – आदिनाथ मूर्ति

सं. १५२९ वै. सुदी ७ बुधे श्रीकाष्टासघे भ श्रीमलयकीर्ति भ गुण-भद्राम्नाये अग्रोत्कान्वये मित्तलगोत्र · ॥

(भा. प्र. पृ. ८)

लेखांक ५६९ – आदिनाथ मूर्ति

सं. १५३१ फाल्गुण सुदी ५ शुक्रे श्रीकाष्ठासंघे भ गुणभद्राम्नाये जैसवाल सा काल्हा भार्या जयश्री · ॥

(भा. प्र. पृ. ८)

लेखांक ५७० – नेमिनाथ मूर्ति

सं. १५३७ वैसाख सुदी १० बुधे काष्ठासघे भ. मलयकीर्ति भ. गुणभद्राम्नाये अग्रोत्कान्वये गोयलगोत्रे सा. राजू भार्या जाल्ही·· ··महाराजश्रीकल्याणमल्लराज्ये ॥

(भा. प्र. पृ. १४)

लेखांक ५७१ – चौवीसी मूर्ति

संवत १५४८ वैशाख सुदि ५ काष्ठासंघे भ गुणभद्रदेवा सा लूणा सुत तिहुणा ॥

(फतेहपुर, अ. ११ पृ ४०६)

लेखांक ५७२ – [महापुराण–पुष्पदंत]

संवत १५७५ वर्षे भादवा सुदि बुद्धदिने कुरुजांगलदेसे सुलितानसिकंदरपुत्र सुलितान इब्राहिमु राज्य प्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे माथुरान्वये पुष्करगणे भ. श्रीगुणभद्रसूरिदेवाः तदाम्नाये जैसवालु चौ. टोडरमलु इदं उत्तरपुराणटीका लिखापित ॥

(प्रस्तावना पृ १५ माणिकचद्र ग्रथमाला, बम्बई)

लेखांक ५७३ – गुटक

स्वस्ति श्रीविक्रमार्कसंवत्सर १५७६ जेठ वदि १ पडिवा शुक्रदिने कुरुजांगलदेशे सुवर्णपथनाम्नि सुदुर्गे सिकंदरसाहि तत्पुत्र सुलतान इब्राहिमु राज्य प्रवर्तमाने काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे आचार्यश्रीमाहवसेनदेवाः तत्पट्टे भ. उद्धरसेनदेवा तत्पट्टे भ. देवसेनदेवा. तत्पट्टे भ विमलसेनदेवाः तत्पट्टे भ. धर्मसेनदेवा. तत्पट्टे भ भावसेनदेवा तत्पट्टे भ सहस्रकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ. गुणकीर्तिदेवा· तत्पट्टे भ. यश कीर्तिदेवा· तत्पट्टे भ मलयकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ श्रीगुणभद्रदेवा तत्पट्टे भ श्रीगुणचंद्र तच्छिष्य ब्रह्म मांडण एषां गुरूणामाम्नाये ··॥

(अ ५ पृ. २५७)

लेखांक ५७४ – शांतिनाथचरित्र

इह जोयणिपुरु पुरवरहं सारु जहु वण्णणि इह मक्कु वि असारु ।
·· पव्वंतणिवड संगहइ दंडु रायाहिराउ वव्वरु पयंडु ।
···जहिं मुणिवर सत्थइ वायरंति महजण्ण पूय सावय करंति ।
·तह कट्ठ संघ माहुर त्रि गच्छि पुक्खरगण मुणिवर चडवि लच्छि ।
जसमुत्ति वि जसकित्ति वि मुणिंदु भव्वयणकमलवियसणदिणेंदु ।
तहु सीसु वि मुणिवरु मलयकित्ति अणवरय भमइ जगि जाह कित्ति ।
तहु सीखु वि गुणगणरयणभूरि भुवणयलि सिध्दु गुणभद्दसूरि ।
तहु पयभत्तउ साहु भोयराउ जाणिज्जइ ।
गुणवट्टियउ णिवास जोयणिपुरि णिवसिज्जइ ॥
· एयाहँ मज्झि साहारणेण काराविउ एहु गंथु तेण ।
कम्मक्खय त्रि णिमित्ते सारउ संतिणाहचरिउ वि गुणारउ ।
·· विक्कमरायहु ववगयकालइ रिसिवसुसरभुवि अंकालइ ।
कत्तिय पढम पक्खि पचमि दिणि हुउ पुरिपुण्णु वि उग्गंतइ इणि ॥

(अ. ५ पृ. २५४)

लेखांक ५७५ – (धनदचरित्र)

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यराज्ये सं १५९० वर्षे मार्गशिर सुदि ११ दिने बृहस्पतिवारे अश्विनीनक्षत्रे परिघजोगे श्रीकुरुजांगलदेशे सुलितान मुगल कावली हमायुंराज्य प्रवर्तमाने श्रीकाष्टासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भ. श्रीमलयकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ श्रीगुणभद्रसूरिदेवाः तस्य शिष्य मुनि धर्मदास तस्य आम्नाये अग्रोतकवंशभूषणे गर्गगोत्र दहीरपुरवास्तव्य श्रावकाचारविचारणैकविदग्धान् सा डाल्ह · ॥

(अ. ५ पृ. ५०)

लेखांक ५७६ – (उत्तरपुराण–पुष्पदंत) भानुकीर्ति

संवत् १६०६ वर्षे मार्गसिर वदि ८ अष्टमी तिथौ भृगुवासरे आदौ अश्लेषातारे मघानाम्नि नक्षत्रे शुभनाम्नि योगे भयाणाजनपदे अत्राह्मावाद शुभस्थाने सुरिसाह सलेमसाहि विजयराज्ये श्रीमत्काष्टासंघे माथुरान्वये

पुष्करगणे भ. श्रीगुणकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ श्रीयशःकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ. मलयकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ श्रीगुणभद्रदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीभानुकीर्तिस्तदन्वये अग्रोतकान्वये गोयलगोत्रे‥ एतेषां मध्ये सा रूपचंदेन उत्तरपुराणाख्यं शास्त्रं लिखाप्य भ श्रीभानुकीर्तये दत्तं निजज्ञानावर्णीकर्मक्षयनिमित्तं ॥

(म. प्रा. पृ ७२३)

लेखांक ५७७ – [भविष्यदत्तचरित]   कुमारसेन

संवत् १६१५ वर्षे फागुण सुदि सप्तमी बुधवासरे अकबरराज्ये प्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे ‥ भ. श्रीगुणभद्रसूरिदेवाः तत्पट्टे भ. श्रीभानुकीर्तिदेवाः तत्सिष्य मंडलाचार्य श्रीकुमारसेनदेवा तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गोइलगोत्रे ‥ ॥

(अ. ७ पृ. ५०)

लेखांक ५७८ – जंबूस्वामिचरित–राजमल्ल

श्रीमति काष्ठासंघे माथुरगच्छेथ पुष्करे च गणे ।
लोहाचार्यप्रभृतौ समन्वये वर्तमानेथ ॥ ६०
तत्पट्टे परममलयकीर्तिदेवास्ततः परं चापि ।
श्रीगुणभद्रःसूरिर्भट्टारकसंज्ञकश्चाभूत् ॥ ६१
तत्पट्टमुच्चमुदयाद्रिमिवानु भानुः
श्रीभानुकीर्तिरिह भाति हतांधकारः ।
उद्द्योतयन्निखिलसूक्ष्मपदार्थसार्थान्
भट्टारको भुवनपालकपद्मबंधुः ॥ ६२
तत्पट्टमब्धिमभिवर्धनहेतुरिन्दुः
सौम्यः सदोदयमयो लसदंशुजालैः ।
ब्रह्मव्रताचरणनिर्जितमारसेनो
भट्टारको विजयतेऽथ कुमारसेनः ॥ ६३

[अध्याय १]

लेखांक ५७९ – [जंबूस्वामिचरित–राजमल्ल]

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगताब्दसंवत् १६३२ वर्षे चैत्र

सुदि ८ वासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीअर्गलपुरदुर्गे श्रीपातिसाहिजलालदीनअकवरसाहिप्रवर्तमाने श्रीमत्काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भ. श्रीमलयकीर्तिदेवा: तत्पट्टे भ. श्रीगुणभद्रसूरिदेवा: तत्पट्टे भ. श्रीभानुकीर्तिदेवा: तत्पट्टे भ. श्रीकुमारसेननामधेयास्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये भटानियाकोलवास्तव्यसाधुश्रीनंदन: एतेषां मध्ये परमसुश्रावकसाधुश्रीटोडरेन जंबूस्वामिचरित्रं कारापितं ॥

(माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला, बम्बई)

लेखांक ५८० – पट्टावली माधवसेन

श्रीमन्माधवसेनसाधुममहं ज्ञानप्रकाशोल्लसत्-
स्वात्मालोकनिलीयमात्मपरमानंदोर्मिसंवर्मिनम् ।
ध्यायामि स्फुरदुग्रकर्मनिगणोच्छेदाय विण्वग्भवा-
वर्ते गुप्तिगृहे वसन्नहरहर्मुक्त्यै स्पृहावानिव ॥ २२

(भा. १ कि. ४ पृ. १०४)

लेखांक ५८१ – पट्टावली विजयसेन

समजनि जनिताशः क्षिप्तदुष्कर्मपाश:
कृतशुभगतिवास: प्रोद्गतात्मप्रकाशः ।
जयति विजयसेनः प्रास्तकंदर्पसेन:
तदनु मनुजवंद्य: सर्वभावैरनिंद्य: ॥ २३

[उपर्युक्त]

लेखांक ५८२ – पट्टावली नयसेन

तत्पट्टपूर्वाचलचंद्ररश्मिर्मुनीश्वरोभून्नयसेननामा ।
तपो यदीयं जगतां त्रयेपि जेगीयते साधुजनैरजस्रम् ॥ २५
यद्यस्ति शक्तिर्गुणवर्णनाया मुनीशितुः श्रीनयसेनसूरे: ।
तदा विहायान्यकथां समस्तां मामोपवासं परिवर्णयन्तु ॥ २६

(उपर्युक्त)

लेखांक ५८३ – पट्टावली　　श्रेयांससेन

शिष्यस्तदीयोस्ति निरस्तदोषः श्रेयांससेनो मुनिपुंडरीकः ।
अध्यात्ममार्गे खलु येन चित्तं निवेशितं सर्वमपास्य कृत्यं ॥ २७

(उपर्युक्त पृ १०५)

लेखांक ५८४ – पट्टावली　　अनंतकीर्ति

तत्पट्टधारी सुकृतानुसारी सन्मार्गचारी निजकृत्यकारी ।
अनंतकीर्तिर्मुनिपुंगवोत्र जीयाज्जगल्लोकहितप्रदाता ॥ २९

[उपर्युक्त]

लेखांक ५८५ – पट्टावली　　कमलकीर्ति

प्रसृमरवरकीर्तेः सर्वतोनंतकीर्तेः
गगनवसनपट्टे राजते तस्य पट्टे ।
सकलजनहितोक्तिः जैनतत्त्वार्थवेदी
जगति कमलकीर्तिर्विश्वविख्यातकीर्तिः ॥ ३१

(उपर्युक्त)

लेखांक ५८६ – १ मूर्ति

संवत् १४४३ ज्येष्ठ सुदी ५ गुरौ महासारस्थज राजा नाथदेव राज्यप्रवर्धमाने काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे प्रतिष्ठा ··कमलकीर्तिदेव जैसवाल विसाल रागा(संघा)चार्य · ॥

[मसाढ, जैनमित्र २-८-१९११]

लेखांक ५८७ – पट्टावली　　क्षेमकीर्ति

अध्यात्मनिष्ठ प्रसरत्प्रतिष्ठ' कृपावरिष्ठ' प्रतिभावरिष्ठ. ।
पट्टे स्थितस्य त्रिजगत्प्रशस्य. श्रीक्षेमकीर्तिः कुमुदेन्दुकीर्तिः ॥ ३३

(भा. १ कि. ४ पृ १०५)

लेखांक ५८८ – (प्रवचनसार) हेमकीर्ति

विक्रमादित्यराज्येऽस्मिश्चतुर्दशपरे शते ।
नवषष्ट्या युते किनु गोपाद्रौ देवपत्तने ॥ ३
अनेकभूभुक्पदपद्मलभस्तास्मिन्निवासी ननु पाररूपः ।
शृंगारहारो भुवि कामिनीनां भूभुक्प्रसिद्धः श्रीवीरमेंद्र ॥ ४
…श्रीकाष्ठसंघे जगति प्रसिद्धे महद्गुणौघे त्वयमाथुरान्वये ।
सदा सदाचारविचारदक्षे गणे सुरम्ये वरपुष्कराख्ये ॥ ८
मुनीश्वरोभून्नयसेनदेवः कृशाष्टकर्मा यशसां निवासः ।
पट्टे तदीये मुनिरश्वसेन आसीत्सदा ब्रह्मणि दत्तचेताः ॥ ९
पट्टे तदीये शुभकर्मनिष्ठोप्यनंतकीर्तिर्गुणरत्नवार्धि. ।
मुनीश्वरोभूज्जिनशासनेंदुस्तत्पट्टधारी भुवि क्षेमकीर्तिः ॥ १०
पट्टे तदीये ननु हेमकीर्तिस्तप'प्रभानिर्जितभानुभानु' ।
रत्नत्रयालंकृतधर्ममूर्तिर्यतीश्वरोभूज्जगति प्रसिद्धः ॥ ११
…पारावारो हि लोके यो जनानिमिषसेवितः ।
देवकीर्तिर्मुनिः साक्षात् परं क्षारविवर्जित. ॥ १३
व्याख्यायैव गुरु' साक्षात् पशुधर्मविनिर्गत' ।
पद्मकीर्तिमुनिर्भाति पर रागविवर्जित. ॥ १४
…प्रतापचंद्रो हि मुनिप्रधान' स्वव्याख्यया रंजितसर्वलोकः ।
नियंत्रितात्मीयमनोविहंगो विवादिभूभृत्कुलिशो नितांतः ॥ १६
गुणरत्नैरकूपारो भवभ्रमणशंकित ।
हेमचंद्रो यतिः साक्षात् परं ग्राहविवर्जितः ॥ १७
पद्मकीर्तिमुनेः शिष्यो गुणरत्नमहोनिधिः ।
ब्रह्मचारी हरीराज शीलव्रतविभूषितः ॥ १९

(रायचन्द्र शास्त्रमाला, बम्बई १९३५)

लेखांक ५८९ – आराधनासारटीका

अश्वसेनमुनीशोभूत् पारदृश्वा श्रुताम्बुधे ।
पूर्णचंद्रायितं येन स्याद्वादविपुलांबरे ॥ १
श्रीमाथुरान्वयमभूदधिपूर्णचंद्रो

निर्धूतमोहतिमिरप्रसरो मुनींद्र' ।
तत्पट्टमंडनमभूत् सदनंतकीर्ति-
ध्यानाग्निदग्धकुसुमेषुरनंतकीर्तिः ॥ २
काष्ठासंघे भुवनविदिते क्षेमकीर्तिस्तपस्वी
लीलाध्यानप्रसृमरमहामोहदावानलाभः ।
आसीद्दासीकृतरतिपतिर्भूपतिश्रेणिवेणी--
प्रत्यग्रस्रवेत्सहचरपदद्वंद्वपद्मस्ततोपि ॥ ३
तत्पट्टोदयभूधरेतिमहति प्राप्तोदये दुर्जयं
रागद्वेषमहांधकारपटलं संवित्करैर्दारयन् ।
श्रीमान् राजति हेमकीर्तितरणिः स्फीतां विकाशश्रियं
भव्यांभोजचये दिगंवरपथालंकारभूतो दधत् ॥ ४
विदितसमयसारज्योतिप क्षेमकीर्ति(र्ते)-
र्हिमकरसमकीर्तिः पुण्यमूर्तिर्विनेय ।
जिनपतिशुचिवाणीस्फारपीयूषवापी-
स्नपनशमिततापो रत्नकीर्तिश्चकास्ति ॥ ५
आदेशमासाद्य गुरोः परात्मप्रबोधनाय श्रुतपाठचंचु ।
आराधनाया मुनिरत्नकीर्तिष्टीकामिमां स्पष्टतमां व्यधत्त ॥ ६

[माणिकचंद्र ग्रथमाला, बम्बई]

लेखांक ५९० - चंद्रप्रभमूर्ति   कमलकीर्ति

संवत १५०६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी १५ शुक्रे काष्ठासंघे श्रीकमलकीर्तिदेवा तदाम्नाये सा. थिरू स्त्री भानदे पुत्र सा. जयमाल जाल्हण ते प्रणमंति महाराज पुत्र गोशल ॥

(भा प्र. पृ. १३)

लेखांक ५९१ - (भविसत्तकहा)

प्रमदांवरसद्द्रव्यसंमिते समये वरे ।
कार्तिके मासि शुक्लाया पंचम्यां भौमवासरे ॥
गोपाचलमहादुर्गे चतुर्वर्णसमाकुले ।
निजर्धिस्पर्धितस्वर्गे पुरे जिनमतोदये ॥

तत्रास्ति नरेंद्रो हि धरे वादीभकेशरी ।
डुंगरेंद्रोन्यराजेंद्रमंडलीमहितो महान् ॥
श्रीकाष्टासंघविख्यातमाथुरान्वयसन्मणौ ।
गणेशगणसंभूतिसत्खनौ पुष्करे गणे ॥
श्रीगौतमान्वयायातानंतकीर्तेः पदाग्रणीः ।
पट्टाचार्यो हि तेजस्वी कंजकीर्तिरभूद्यमी ॥
जैनागमाध्यात्मविचारदक्षो
व्यक्तीकृतात्मार्थपरार्थदक्ष. ।
तस्यास्ति पट्टे मुनिवृन्दवन्द्य.
श्रीक्षेमकीर्तिर्वरपुण्यमूर्तिः ॥
पट्टोदयाद्रिशिखरे मुनिहेमकीर्तेः
प्राप्तोदय' कमलकीर्तिरखंडकीर्ति. ।
साहित्यलक्षणविवादपटुः प्रमाणी
मिथ्यात्ववादिकुमुदाकरचंडरश्मिः ॥
तेषामाम्नाये ·· ·· ॥

[म. प्रा. पृ. ७५६]

लेखांक ५९२ – महावीर मूर्ति

सं. १५१० वर्षे माघ सुदि ८ सोमे काष्टासंघे भ कमलकीर्तिदेव अग्रोत्कान्वये गर्गगोत्रे तारन भा. देन्ही पुत्र सहय भा. वारु पुत्र पेमचंद प्रणमंति ॥

[भा. प्र. पृ. ५]

लेखांक ५९३ – १ मूर्ति शुभचंद्र

संवत १५३० वर्षे माघ सुदि ११ शुक्रे श्रीगोपाचलदुर्गे महाराजाश्रीकीर्तिसिंघदेव काष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भ. श्रीहेमकीर्ति तत्पट्टे भ. कमलकीर्ति तत्पट्टे भ शुभचंद्रदेव तदाम्नाए अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे सं.······ ॥

[रणथंभौर, अ. ८ पृ ४४८]

लेखांक ५९४ – हरिवंशपुराण–रइधू

कमलकित्ति उत्तम खमधारउ भव्वहि भवअंबोणिहितारउ।
तस्सपट्टकणयद्दिपरिट्ठिउ सिरिसुहचंदु सुतवउक्कंठिउ॥

[अ. ११ पृ. २६८]

लेखांक ५९५ – दशलक्षण यंत्र यशःसेन

सं १६३९ वैशाख वदि ८ चंद्रवासरे श्रीकाष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भ. श्रीकमलकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीशुभचंद्रदेवाः तत्पट्टे भ. यशः-सेनदेवाः तदाम्नाये पद्मावतीपुरवालान्वये साव होरगू ·· ॥

[फतेहपुर, अ.११ पृ. ४०८]

लेखांक ५९६ – अमरसेनचरित-माणिक्यराज पद्मनंदी

सिरि खेमकित्तिपट्टहि पवीणु सिरिहेमकित्ति जि हयउ वासु।
तहु पट्ट वि कुमरविसेण णामु
तहु पट्टि णिविट्ठिउ वुहपहाणु सिरिहेमचंदु मयतिमिरभाणु।
त पट्टि धुरंधरु वयपवीणु वर पोमणंदि जो तवह खीणु।
त पणविवि णियगुरु सीलखाणि
'विक्कमरायहु ववगइ कालइ लेसु मुणीस वि सर अंकालइ।
धरणि अंक सहु चइत त्रि मासे सणिवारे सुयपंचमिदिवसे॥

(अ. १० पृ. १६१)

लेखांक ५९७ – शिलालेख यशःकीर्ति

विक्रमादित्य संवत १५७२ वर्षे वेशाख सुदी ५ वार सोमे भ. श्रीजश-कीर्ति राजश्रीकला भार्या सौनवाई विजयी राज इदी धूलेव ग्रामं प्रति श्रीऋषभनाथ प्रणम्य·· श्रीकाष्ठासंघे वाजा न्यात काश्यपगोत्र राकडिया हिसा मंडप नव चूकीय ··· ॥

[केशरियाजी, वीर २ पृ. ४५९]

लेखांक ५९८ – लाटीसंहिता–राजमल्ल

श्रीमति काष्ठासंघे माथुरगच्छेथ पुष्करे च गणे ।
लोहाचार्यप्रभृतौ समन्वये वर्तमाने च ॥ ६४
आसीत् सूरिकुमारसेनविदित पट्टस्थभट्टारक. .. ॥ ६५
तत्पट्टेजनि हेमचंद्रगणभृत् भट्टारकोर्वीपति. .. ॥ ६६
तत्पट्टेभवदर्हतामवयवः श्रीपद्मनंदी गणी .. ॥ ६७
तत्पट्टे परमाख्यया मुनियशःकीर्तिश्च भट्टारको
नैर्ग्रंथ्यं पदमार्हतं श्रुतवलादादाय नि शेषत ।
सर्पिर्दुग्धदधीक्षुतैलमखिलं पंचापि यावद्रसान्
त्यक्त्वा जन्ममथं तदुग्रमकरोन् कर्मक्षयार्थं तपः ॥ ६८

[अध्याय १]

लेखांक ५९९ – सुगति शिरोमणि चूनडी महेंद्रसेन

अरे राज लवली जहागीरका फिरिय जगति तिस आनि हो ।
शशि रस वसु विंदा धरहो सवत सुनहु सुजानहो ॥
गुरु मुनि माहेंद्रसेनजी पदपंकज नमु तास हो ।
सहर सुहाया बूडियै कहत भगौतीदास हो ॥ ३५

(म. ३६)

लेखांक ६०० – अनेकार्थ नाममाला

सोलह सय रु सतासियइ साढि तीज तम पाखि ॥
गुरु दिन श्रवण नक्षत्र भनि प्रीति जोगु पुनि भाषि ॥ ६६
साहिजहांके राजमहि सिहरदिनगर मंझारि ।
अर्थ अनेक जु नामकी माला भनिय विचारि ॥ ६७
गुरु गुणचदु अनिद रिसि पंच महाव्रतधार ।
सकलचद तिस पट्ट भनि जो भवसागर तार ॥ ६८
तासु पट्ट पुनि जानिए रिसि मुनि माहिदसेन ।
भट्टारक भुवि प्रगट जसु जिनि जितियो रणि मैन ॥ ६९

··· कवि सु भगौतीदासु ।
तिनि लघुमति दोहा करे वहुमति करहु न हासु ॥ ७०

[अ. ५ पृ. १५]

लेखांक ६०१ – ज्योतिषसार

वर्षे षोडशशतचतुर्नवतिमिते श्रीविक्रमादित्यके
पचम्यां दिवसे विशुद्धतरके मास्याश्विने निर्मले ।
पक्षे स्वातिनक्षत्रयोगमहिते वारे बुधे संस्थिते
राजत्साहिसहावदीनभुवने साहिजहां कथ्यते ॥
श्रीभट्टारकपद्मनंदिसुधियो देवा वभूवुर्भुवि
काष्ठासघशिरोमणीभ्युदयदे ख्याते गणे पुष्करे ।
गच्छे माथुरनाम्नि जोजतिवरा कीर्तियशः तत्पदात्
तत्पट्टे गुणचंद्रदेवगुणिनस्तत्पट्टपूर्वाचले ॥
सूर्याभाः सकलादिचंद्रगुरवस्तत्पट्टशोभाकराः
संजाता हि महेद्रसेनविपुला विद्यागुणालंकृताः ॥
·वर्धमानके देहरइं नौतन कोट हिसार ।
दास भगौतीने भन्यौ सो पुणु परोपकारि ॥

(म. २)

लेखांक ६०२ – वैद्यविनोद

श्रीमद्भट्टारकमाहेद्रसेनगुरवे नमः ॥
···सत्रहसइं रुचिडोत्तरइं सुकल चतुर्दशि चैतु ।
गुरु दिन भनी पुरनु करिउ सुलितांपुरि सह जयतु ॥
लिखिउ अकवरावाद णिरु साहजहां के राज ।
साहनि मइसपइसरिसु देवकोसमजवाज ॥
कृष्णदासतनुरुह गुणी नयरी बुडियइ वासु ।
सुहृद जु जोगीदास कउ कवि सु भगवतीदासु ॥

(म. ३)

लेखांक ६०३ – बृहत् सीता सतु

देसकोस गजि वाज जासु नमहि नृप क्षत्रपति ।
जहांगीरकौ राज सीता सतु मै भनि किया ॥ ८०

गुरु गुणचंद आनंदसिंधु वखानिये ।
सकलचंद तिस पट्ट जगत तिस जानिये ।
तासु पट्ट जसु नाम खमागुनमंडनो ।
परहां गुरु मुनि माहिंदसेन मुणहु दुख खंडणो ॥ ८१
गुरु मुनि माहिंदसेन भगौती तिस पद पंकज रैन भगौती ।
किस्नदास वणिउ तनुजभगौती तुरिये गहिउ व्रत मुनि जु भगौती ॥
नगर बूढिये वसै भगौती जन्मभूमि है आसि भगौती ।

(अ. ११ पृ. २०५)

लेखांक ६०४ – (नवांककेवली)

श्रीकाष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भ श्रीगुणचंद्रदेवा. तत्पट्टे भ. श्रीसकलचद्रदेवा· तत्पट्टे भ. श्रीमाहेंद्रसेनदेवाः तत्शिष्य पं. भगौतीदास तेनेदं गोतमस्वामि नवांककेवली लिपिकृत· । बाई मथुरा पठनार्थं लिखापितं अर्गलपुरस्थाने ॥

(म. ४)

लेखांक ६०५ – [द्वात्रिंशदिंद्र केवली]

श्रीकाष्ठासघे माथुरगच्छे पुष्करगणे भ. श्रीमाहेंद्रसेन तत्शिष्य पं. भगोतीदासेन तेनेदं द्वात्रिंशत् इद्रकेवली गौतमस्वामिगाथाकृतं। ततो वचनिका कृतं ॥

(म. ५)

लेखांक ६०६ – लाटीसंहिता क्षेमकीर्ति

श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये परिणते सति ॥
सहैकचत्वारिंशद्भिरब्दानां शतषोडश ॥ २
तत्रादि चाश्विनी मासे सितपक्षे शुभान्विते ।
दशम्यां च दाशरथे शोभने रविवासरे ॥ ३
अस्ति साम्राज्यतुल्योसौ भूपतिश्चाप्यकब्बरः ।
महद्भिर्मंडलेशैश्च चुंबितांह्रिपदांबुज. ॥ ४
अस्ति दैगंबरो धर्मो जैनः शर्मैककारणम् ।

तत्रास्ति काष्ठासंघश्च क्षालितांह.कदम्बकः ॥ ५
तत्रापि माथुरो गच्छो गणः पुष्करसंज्ञकः ।
लोहाचार्यान्वयस्तत्र तत्परंपरया यथा ॥ ६
नाम्ना कुमारसेनोभूद्भट्टारकपदाधिपः ।
तत्पट्टे हेमचंद्रोभूद्भट्टारकशिरोमणिः ॥ ७
तत्पट्टे पद्मनंदी च भट्टारकनभोंशुमान् ।
तत्पट्टेभूद्भट्टारको यशस्कीर्तिस्तपोनिधिः ॥ ८
तत्पट्टे क्षेमकीर्तिः स्यादद्य भट्टारकाग्रणीः ।
तदाम्नाये सुविख्यातं पत्तनं नाम डौकनि ॥ ९
तत्रत्यः श्रावको भारु `` `॥ १०
एतेषामस्ति मध्ये गृहवृषरुचिमान् फामनः संघनाथ-
स्तेनोच्चैः कारितेयं सदनसमुचिता संहिता नाम लाटी ।
श्रेयोर्थं फामनीयैः प्रमुदितमनसा दानमानासनाद्यै
स्वोपज्ञा राजमल्लेन विदितविदुषाम्नायिना हैमचंद्रे ॥ ३८

(माणिकचन्द्र ग्रथमाला, बम्बई १९२७)

लेखांक ६०७ – पट्टावली त्रिभुवनकीर्ति

श्रीमच्छ्रीक्षेमकीर्ति मकलगुणनिधिर्विश्वरूपे भूरिपूज्यः
तेषां पट्टे समोद. समजनि मुनिभि. स्थापितो शास्त्रविद्भिः ।
श्री···रे हिसारे···सुयतिततिवरा. सत्क्रियोद्योतपुंजे
सोनंद तासु सेव्यस्त्रिभुवनपुरत.कीर्तिपः सूरिराजः ॥ ४३

[भा १ कि. ४ पृ. १०६]

लेखांक ६०८ – पट्टावली सहस्रकीर्ति

धात्रीमंडलमडनस्तु जयतात् श्रीसहस्रकीर्तिर्गुरु
राजद्राजकयातिसाहिविदितो भट्टारकाभूषणः ।
वर्षे वह्निनगांकचंद्रकमिते शुच्यार्यनम्रे दिने
पट्टेभूत स च यस्य वै त्रिभुवनाद्याकीर्तिपट्टे स्थिते ॥ ४५

(भा.१ कि. ४ पृ. १०८)

लेखांक ६०९ – दशलक्षण यंत्र

सं. १६८५ माह सुदि ५ गुरुवासरे श्रीकाष्ठासंघे माथुरगच्छे पुष्कर-गणे लोहाचार्याम्नाये भ. श्रीयश.कीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीक्षेमकीर्ति तत्पट्टे भ. त्रिभुवनकीर्ति तत्पट्टे भ सहस्रकीर्ति शिष्य जयकीर्ति तदाम्नाये पातिसाह श्रीसाहजांह खूरम दिल्ली राज्ये क्यामखां वंशे फतेहपुरे दिवान अलीखां तत्पुत्र दिवान श्रीदौलतखां राज्ये गर्गगोत्र सा. सांतू · भ. श्रीसहस्रकीर्ति-उपदेशे सा. माला दशलक्षणीयत्रं प्रतिष्ठापितं फतेहपुरमध्ये ।

(अ. ११ पृ. ४०८)

लेखांक ६१० – चरणपादुका

संवत १६८८ वर्षे फागुण सुदि ८ शनिवासरे श्रीकाष्ठासंघे माथुर-गच्छे पुष्करगणे तदाम्नाये भ. जसकीर्तिदेवा. तत्पट्टे भ. क्षेमकीर्तिदेवाः तत्पट्टे श्रीत्रिभुवनकीर्तिदेवाः तत्पट्टे भ सहस्रकीर्ति तस्य शिष्यणी अर्जिका श्रीप्रतापश्री कुरुजंगल देशे सपीदो नगरे गर्गगोत्रे चो. इंद्र सज्जनस्य भार्या ४ प्रमुखो भार्या तस्य पुत्री दमोदरी द्वितीय नाम गुरुमुख श्रीप्रतापश्री··· पादुका करापित कर्मक्षयनिमित्तं शुभं भवतु ॥

(भा. ७ पृ. १६)

लेखांक ६११ – ऋषिमंडल यंत्र

स. १७५५ फाल्गुण सुदि १२ बृहस्पतिवारे काष्ठासंघे माथुरगच्छे ·· भ. त्रिभुवनकीर्ति तत्पट्टे भ सहस्रकीर्ति तत् शिष्य दीपचंद तदाम्नाये अग्रोकार पंचे हिसार वास्तव्य साह श्रीगिरधरदास तद् भार्या कतरणी · ॥

[अ. ११ पृ. ४०९].

लेखांक ६१२ – कूपलेख महीचंद्र

श्रीभगवतजी सत्य स १७३९ वर्षे मिति जेष्ठ सुदि ३ राज्य श्रीदिवान-दीनदारखां गुरु श्री १०८ भ श्रीमहीश्चंद्रजी व सकल श्रावक फतेहपुर का पुन्यनिमित्त जलथानक करायो सर्वको शुभकारक भवत ॥

(अ. ११ पृ. ४०५)

लेखांक ६१३ – मंदिर लेख　　देवेंद्रकीर्ति

संवत १५०८ मिती फागुन सुदि २ साह श्रावक तोहण देवराकी नीव डलवाई। संवत १७७० मिती फागुन सुदि २ भ. श्रीखेमकीर्ति त. भ. सहसकीर्ति त. भ. महीचंद्र त. भ. देवेंद्रकीर्ति तत आम्नाय चौधरी सषमल तस्य पुत्र चौधरी रुपचंद वा सकल पंच श्रावक मिलकर देहराकी मरम्मत कराई॥

(फतेहपुर, अ. ११ पृ. ४०५)

लेखांक ६१४ – शिखर माहात्म्य　　जगत्कीर्ति

काष्ठासंघ ओर माथुर गच्छे पोष्कर गण कहो सुभ दछे।
लोहाचार्य आमणाय जो कही-हिसार पद मनोहर सही ॥ ३२
भट्टारक सहसकीर्ति जान भव्यपयोजप्रकासण भाण।
तासु पद महेंद्रकीर्ति जाण विद्यागुणभंडार सुजाण ॥ ३३
देवेंद्रकीर्ति तत्पद वखाण शीलसिरोमणि ··की खाण।
तिनके पद परम गुणवान जगतकीर्ति भट्टारक जान ॥ ३४
शिष्य लालचद्र सुदि भाषा रचि वनावे।
येक चित्त सुने पढे ते भव्य सिवकू जाय ॥ ३५
संमत अठरासै भले ब्यालिस ऊपर जान।
पाछै फाल्गुण सुक्कू सपूर्ण ग्रंथ वखाण ॥ ३६

(ना १०७)

लेखांक ६१५ – दशलक्षण यंत्र　　ललितकीर्ति

सं. १८६१ शक १७२६ मिती वैशाख सुदी ३ शनिवार श्रीकाष्ठासघे माथुरगच्छे ·भ देवेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ जगत्कीर्ति तत्पट्टे भ ललितकीर्ति तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे साहजी जठमलजी तत् भार्या कृपा ·· श्रीबृहत् दशलक्षण यंत्र करापितं उद्यापित फतेहपुरमध्ये जती हरजीमल श्रीरस्तु सेखावत लक्ष्मणसिहजी राज्ये।

(अ. ११ पृ. ४०९)

लेखांक ६१६ – मंदिर लेख

संवत १८८१ मिते मार्गशीर्ष शुक्ल षष्ठयां शुक्रवासरे काष्ठासंघे माथुरगच्छे····· भ. श्रीजगत्कीर्तिस्तत्पट्टे भ. श्रीललितकीर्तिजित्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये गोयल गोत्रे प्रयागनगरवास्तव्य साधुश्रीरायजीमल्ल ··साधुश्रीहीरालालेन कौशावीनगरवाह्य प्रभासपर्वतोपरि श्रीपद्मप्रभजिनदीक्षाह्वानकल्याणकक्षेत्रे श्रीजिनविंबप्रतिष्ठा कारिता अंगरेजवहादुरराज्ये सुभं ।

[पभोसा, एपिग्राफिया इंडिका २ पृ. २४४]

लेखांक ६१७ – महापुराणटीका

वर्षे सागरनागभोगिकुमिते मार्गे च मासेऽसिते
पक्षे पक्षतिसत्तिथौ रविदिने टीका कृतेयं वरा ।
काष्ठासंघवरे च माथुरवरे गच्छे गणे पुष्करे
देवः श्रीजगदादिकीर्तिरभवत् ख्यातो जितात्मा महान् ॥
तच्छिष्येण च मन्दतान्वितधिया भट्टारकत्वं यता
शुम्भद्वै ललितादिकीर्त्यभिधया ख्यातेन लोके ध्रुवम् ॥

(प्रस्तावना पृ. १५, भारतीय ज्ञानपीठ, काशी १९५१)

लेखांक ६१८ – चंद्रप्रभमूर्ति राजेंद्रकीर्ति

सं १९१० मिती माघ सुदी १४ शनि काष्ठासघे लोहाचार्याम्नाये भ. राजेद्रकीर्तिदेवास्तदाम्नाये अग्रोत्कान्वये वातिलगोत्रे साधुश्रीसाखीलाल तत्पुत्र मुनिसुव्रतदासेन सकलभ्रातृवर्गसिद्ध्यर्थं श्रीजिनविंव प्रतिष्ठा कारापितं ॥

(भा. प्र. पृ. १)

लेखांक ६१९ – पार्श्वनाथ मूर्ति

सं. १९२३ मिती द्वितीय जेठ सुदि १० लोहाचार्याम्नाये भ. राजेद्रकीर्तिर्देवास्तदाम्नाये अग्रोतकान्वये वासल गोत्रे साहू जिनवरदास ॥

(फतेहपुर, अ. ११ पृ. ४०७)

लेखांक ६२० – नेमिनाथ मूर्ति

संवत १९२९ वैसाख सुदि ३ भ. राजेद्रकीर्ति तदाम्नाये अग्रोतकान्वये साहु मूभीलाल भार्या श्रेयांशकुमारी तया प्रतिष्ठा करापितं ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ६२१ -- पट्टावली　　मुनींद्रकीर्ति

एषो निजगुरुपट्ट प्राप्याध्यासीन्मुनींद्रशुभकीर्तिः ।
युगयुगश्वेद्विकवर्षे वीरस्याहो गतो हि सुरलोकं ॥ ५३

(भा. १ कि. ४ पृ. १०७)

काष्ठासंघ–माथुर गच्छ

इस गच्छ का नाम मथुरा नगर से लिया गया है।[९५] दर्शनसार के अनुसार संवत् ९५३ में रामसेन इस सघ के आचार्य थे। उन ने निःपिच्छ का उपदेश दिया अर्थात् मुनियो के लिए पिच्छी के धारण का निषेध किया [ले. ५४१]।

इस संघ के पहले ऐतिहासिक उल्लेख आचार्य अमितगति के ग्रन्थो में पाये जाते हैं। आप की गुरुपरम्परा देवसेन–अमितगति–नेमिषेण–माधवसेन–अमितगति इस प्रकार थी। आप ने सवत् १०५० मे मुंजराज के राज्यकाल में सुभाषितरत्नसन्दोह लिखा, सवत् १०६८ मे वर्धमाननीति की रचना की, सवत् १०७० में धर्मपरीक्षा तथा सवत् १०७३ में पचसग्रह का लेखन पूर्ण किया। तत्त्वभावना, उपासकाचार, द्वात्रिंशिका और आराधना ये आप के अन्य ग्रन्थ हैं (ले. ५४२–४९)।[९६]

माथुर सघ के दूसरे प्राचीन आचार्य छत्रसेन थे। आप के शिष्य आलोक ने सवत् ११६६ में परमार विजयराज के राज्यकाल मे[९७] ऋषभनाथ का मन्दिर बनवाया [ले. ५५०]।

इस सघ के तीसरे ज्ञात आचार्य गुणभद्र हैं। आप ने संवत् १२२६ मे बनवाये गये पार्श्वनाथ मन्दिर की विस्तृत प्रशस्ति लिखी है [ले. ५५१]। यह मन्दिर चौहान वशीय सोमेश्वर के राज्यकाल मे बना था।[९८]

९५ इस गच्छ के उत्तर कालीन विशेषणों में पुष्कर गग और लोहाचार्याम्नाय का अन्तर्भाव होता है। पुष्करगण के विषय में सेनगण के हिन्दी सार का आरम्भ देखिए। लोहाचार्य से सम्भवत. अंगज्ञानी आचार्यों में अन्तिम आचार्य लोहार्य का अभिप्राय है–प्रस्तावना प्रकरण २ देखिए।

९६ अमितगति के विषय में विस्तृत विवेचन देखिए–जैन साहित्य और इतिहास पृ. १७२

९७ इस लेख के अतिरिक्त विजयराज के अन्य उल्लेख ज्ञात नही हैं।

९८ सोमेश्वर चौहान वश के अन्तिम राजा पृथ्वीराज के पिता थे। इन का राज्यकाल निश्चित नहीं है।

धर्मकीर्ति के शिष्य ललितकीर्ति इस संघ के चौथे प्राचीन आचार्य हैं। आप ने सवत् १२३४ मे एक देवीकी मूर्ति प्रतिष्ठित की थी [ले. ५५२]।

पांचवे प्राचीन आचार्य अमरकीर्ति ने अपनी गुरुपरम्परा अमितगति–शान्तिषेण–अमरसेन–श्रीषेण–चन्द्रकीर्ति–अमरकीर्ति इस प्रकार दी है।[९९] आप ने सवत् १२४४ में नेमिनाथचरित की तथा सवत् १२४७ मे षट्कर्मोपदेश की रचना की [ले ५५३–५४]। द्वितीय ग्रन्थ की प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि आप ने महावीरचरित, यशोधरचरित, धर्मचरितटिप्पण, सुभाषितरत्ननिधि, धर्मोपदेशचूडामणि, ध्यानप्रदीप आदि ग्रन्थ लिखे थे।

मध्यकालीन माथुरगच्छ परम्परा का आरम्भ माधवसेन[१००] से होता, है। आप के दो शिष्य उद्धरसेन और विजयसेन से दो परम्पराए आरम्भ हुई। अनुश्रुति के अनुसार माधवसेन दिल्ली के बादशाह अल्लाउद्दीन खिलजी के राज्यकाल मे हुए थे [ले. ५७३,५८० तथा इन के मूल सन्दर्भ]।

उद्धरसेन के बाद क्रमशः देवसेन, विमलसेन, धर्मसेन, भावसेन, सहस्रकीर्ति और गुणकीर्ति भट्टारक हुए (ले. ५७३,५५८)। गुणकीर्ति की आम्नाय मे संवत् १४६८ मे ग्वालियर मे राजा वीरमदेव के राज्यकाल

---

९९ गुरुपरम्परा निदर्शक मूल पद्य हमें प्राप्त नही हो सके। यह प. परमानन्द के अनुवाद पर से ली गई है [अनेकान्त व. ११ पृ. ४१५]

१०० पट्टावली में माधवसेन से पहले क्रमशः जयसेन, वीरसेन, ब्रह्मसेन, रुद्रसेन, भद्रसेन, कीर्तिषेण, जयकीर्ति, विश्वकीर्ति, अभयकीर्ति, भूतिसेन, भावकीर्ति, विश्वचन्द्र, अभयचन्द्र, माघचन्द्र, नेमिचन्द्र, विनयचन्द्र, बालचन्द्र, त्रिभुवनचन्द्र, रामचन्द्र, विजयचन्द्र, यशःकीर्ति, अभयकीर्ति, महासेन, कुन्दकीर्ति, त्रिभुवनचन्द्र, रामसेन, हर्षसेन, गुणसेन, कुमारसेन, तथा प्रतापसेन इन का उल्लेख हुआ है।

में[१०१] अगरवाल साध्वी देवश्री ने पंचास्तिकाय की प्रति लिखवाई थी [ले. ५५५]। आप ने संवत् १४७३ में एक मूर्ति स्थापित की (ले. ५५६)।

गुणकीर्ति के पट्टशिष्य यशःकीर्ति हुए। आप ने ग्वालियर में डूंगरसिंह के राज्यकाल में[१०२] संवत् १४८६ में भविष्यदत्तपंचमीकथा की एकप्रति लिखी [ले ५५७]। आप ने पांडवपुराण लिखा तथा त्रिभुवन स्वयभू कृत अरिष्टनेमिचरित की एक अधूरी प्रति को स्वयं पूरा किया [ले. ५५८–५९]।

यशःकीर्ति के शिष्य पंडित रइधू ने संवत् १४९७ में ग्वालियर में डूंगरसिंह के राज्यकाल में एक आदिनाथ मूर्ति स्थापित की [ले. ५६०]। इन के सन्मतिजिनचरित से पता चलता है कि अगरवाल जाति के क्षुल्लक खेल्हा ने ग्वालियरमें चद्रप्रभ की उत्तुग मूर्ति करवाई थी [ले. ५६१]।[१०३] यशःकीर्ति से गुरुमन्त्र पा कर सिंहसेन ने आदिपुराण की रचना की [ले. ५६२]।

यशःकीर्ति के पट्टशिष्य मलयकीर्ति हुए। आप ने संवत् १५०२ में एक यत्र तथा संवत् १५१० में एक मूर्ति स्थापित की [ले. ५६३–५६४]।

मलयकीर्ति के अनन्तर गुणभद्र भट्टारक हुए। इन के आम्नाय मे अगरवाल जिनदास ने सवत् १५१० में ग्वालियर मे डूंगरसिंह के राज्यकाल में समयसार की एक प्रति लिखवाई [ले. ५६५]। संवत् १५१२ में गुणभद्र ने पचास्तिकाय की एक प्रनि ब्रह्म धर्मदास को दी [ले.

१०१–१०२ तोमरवंश का इतिहास अभी सुनिश्चित नहीं हुआ है। वीरमदेव, डूंगरसिंह, कीर्तिसिंह और मानसिंह इन चार राजाओं के उल्लेख इसी प्रकरण मे हुए हैं।

१०३ पंडित रइधू की अन्य कृतियों के विवेचन के लिए पं. परमानन्द का एक लेख देखिए–अनेकान्त वर्ष १० पृ ३७७

५६६)। इन के आम्नाय मे सवत् १५२१ मे ग्वालियर मे कीर्तिसिंह के राज्यकाल[१०४] में ज्ञानार्णव की एक प्रति लिखी गई (ले. ५६७)। संवत् १५२९ और सवत् १५३१ मे आप ने दो आदिनाथ मूर्तिया स्थापित कीं (ले. ५६८–६९)। सवत् १५३७ मे एक नेमिनाथ मूर्ति तथा सवत् १५४८ मे एक चौवीसी मूर्ति भी आप ने स्थापित की (ले. ५७०–७१)। इन मे पहली प्रतिष्ठा कल्याणमल्ल के राज्यकाल[१०५] में की गई थी। सवत् १५७५ मे सुलतान इब्राहीम के राज्य काल में[१०६] चौधरी टोडरमल ने गुणभद्र के आम्नाय मे महापुराण की एक प्रति लिखी (ले. ५७२)।

गुणभद्र के प्रशिष्य ब्रह्म मडन ने सवत् १५७६ मे सोनपत मे इब्राहीम के राज्य काल मे स्तोत्रादिका एक गुटका लिखा (ले. ५७३)। सवत् १५८७ में आप के एक शिष्य ने शान्तिनाथ चरित्र लिखा[१०७] (ले. ५७४)। सवत् १५९० में हुमायून के राज्यकाल मे गुणभद्र के शिष्य धर्मदास के आम्नाय मे धनदचरित्र की एक प्रति लिखी गई (ले. ५७५)।

गुणभद्र के पट्ट पर भानुकीर्ति भट्टारक हुए। सवत् १६०६ मे शाह सलीम[१०८] के राज्य काल मे साह रूपचद ने अलाहाबाद मे उत्तर-पुराण की एक प्रति आप को अर्पित की (ले. ५७६)।

भानुकीर्ति के शिष्य कुमारसेन के आम्नाय मे सवत् १६१५ में अकबर के राज्यकाल मे भविष्यदत्तचरित की एक प्रति लिखी गई (ले. ५७७)। आप के आम्नाय मे ही सवत् १६३२ मे आगरा में अकबर

१०४ देखिए नोट १०१

१०५ कल्याणमल कोई स्थानीय शासक रहे होंगे।

१०६ दिल्ली के लोदी सुलतान–सन् १५१८–२६ ई

१०७ इस ग्रन्थ के कर्ता के विषय मे मतभेद है। एक मत से महिंदु या महीचंद्र इस के कर्ता हैं, किंतु ग्रन्थातर के उल्लेखसे ज्ञात होता है कि इस के कर्ता दो हैं, महदू और नभज्जुण।

१०८ दिल्ली के सूर वंश के शासक–१५४५–१५५४ ई.

का राज्य था उस समय भटानिया कोल निवासी साहु टोडर की प्रार्थना पर पण्डित राजमल्ल ने जम्बूस्वामी चरित की रचना की (ले. ५७९–८०)।[१०९]

माथुर गच्छ की दूसरी मध्यकालीन परम्परा माधवसेन के शिष्य विजयसेन से आरम्भ हुई। इन के बाद इस में क्रमश. मासोपवासी नयसेन, श्रेयाससेन, अनन्तकीर्ति तथा कमलकीर्ति भट्टारक हुए। कमलकीर्ति ने सवत् १४४३ मे नाथदेव के राज्यकाल[११०] मे एक मूर्ति स्थापित की (ले. ५८६)।

कमलकीर्ति के बाद क्षेमकीर्ति और उन के शिष्य हेमकीर्ति हुए। देवकीर्ति, पद्मकीर्ति, प्रतापचन्द्र, हेमचन्द्र आदि मुनि इन के आम्नाय मे थे। पद्मकीर्ति के शिष्य हरिराज ने सवत् १४६९ मे ग्वालियर में वीरमदेव के राज्यकाल में[१११] प्रवचनसार की एक प्रति लिखी थी (ले. ५८८)। हेमकीर्ति के गुरुबन्धु रत्नकीर्ति ने देवसेनकृत आराधनासार पर सस्कृत टीका लिखी (ले. ५८९)।

हेमकीर्ति के पट्टशिष्य कमलकीर्ति हुए। आप ने सवत् १५०६ में एक चद्रप्रभ मूर्ति स्थापित की (ले. ५९०)। आप की आम्नाय मे सवत् १५०६ मे ग्वालियर में डूगरसिंह के राज्यकाल मे[११२] भविसत्तकहा की एक प्रति लिखी गई (ले ५९१)। आप ने सवत् १५१० मे एक महावीर मूर्ति स्थापित की (ले ५९२)

कमलकीर्ति के शुभचन्द्र और कुमारसेन ये दो पट्टशिष्य हुए।

१०९ राजमल्ल पर विस्तृत विवेचन के लिए जम्बूस्वामीचरित (माणिकचद ग्रथमाला) की प. मुख्तार कृत प्रस्तावना देखिए। इसी प्रकरण में ले. ६०६ व नोट ११५ भी देखिए

११० नाथदेव कोई स्थानीय शासक रहे होंगे।

१११ देखिए पूर्वोक्त नोट १०१

११२ देखिए पूर्वोक्त नोट १०२

शुभचन्द्र ने संवत् १५३० मे ग्वालियर मे कीर्तिसिंह के राज्यकाल[११३] मे एक मूर्ति स्थापित की (ले. ५९३)। रइधू रचित[११४] हरिवंशपुराण से पता चलता है कि इन का मठ सोनागिरि में था (ले. ५९४)। इन के शिष्य यशःसेन ने सवत् १६२९ में एक दशलक्षण यन्त्र स्थापित किया (ले. ५९५)।

कमलकीर्ति के दूसरे पट्टशिष्य कुमारसेन हुए। इन के शिष्य हेमचन्द्र थे। कवि राजमल्ल इन्ही की आम्नाय के थे।[११५]

हेमचन्द्र के शिष्य पद्मनन्दि हुए। इन के शिष्य माणिक्कराज ने सवत् १५७६ मे अमरसेनचरित की रचना पूर्ण की (ले. ५९६)।

पद्मनन्दी के शिष्य यशःकीर्ति हुए। इन के समय संवत् १५७२ मे केशरियाजी मे सभामडप वनवाया गया (ले. ५९७)। कवि राजमल्ल के कथनानुसार यशःकीर्ति ने दीर्घ काल तक नीरस आहार का ही सेवन किया था (ले. ५९८)।

यशःकीर्ति के पट्टशिष्य दो हुए–गुणचन्द्र और क्षेमकीर्ति। गुणचन्द्र के शिष्य सकलचन्द्र और उन के शिष्य महेन्द्रसेन हुए। इन के शिष्य भगवतीदास ने जहागीर के राज्यकाल में सवत् १६८० मे सुगति शिरोमणि चूनडी, शाहजहा के राज्यकाल मे-सवत् १६८७ में अनेकार्थ नाममाला, सवत् १६९४ में ज्योतिषसार, वैद्यविनोद, बृहत् सीता सतु तथा लघु सीता सतु की रचना की (ले ५९९–६०३)। नवाक केवली तथा द्वात्रिंशदिन्द्र केवली इन शकुन ग्रन्थो की प्रतिलिपिया इन ने की थीं (ले. ६०४–६०५)।

यशःकीर्ति के दूसरे पट्टशिष्य क्षेमकीर्ति थे। इन के समय सवत् १६४१ मे पण्डित राजमल्ल ने डौकनी निवासी साह फामन के लिए लाटी सहिता नामक ग्रन्थ लिखा (ले. ६०६) उस समय अकवर का

११३ देखिए पूर्वोक्त नोट १०४

११४ देखिए पूर्वोक्त नोट १०३

११५ देखिए पूर्वोक्त नोट १०९

राज्य था। क्षेमकीर्ति के शिष्यो में वैराट नगर के भी लोग थे। वहाँ का जिनमन्दिर चित्रों से अलंकृत किया गया था।

क्षेमकीर्ति के पट्टशिष्य त्रिभुवनकीर्ति हुए। इन का पट्टाभिषेक हिसार में हुआ था (ले. ६०७)। इन के बाद सवत् १६६३ में सहस्र-कीर्ति पट्टाधीश हुए (ले. ६०८)। इन के शिष्य जयकीर्ति ने संवत् १६८५ में एक दशलक्षण यन्त्र स्थापित किया (ले. ६०९)। इन की शिष्या प्रतापश्री की समाधि सपीदों नगर मे सवत् १६८८ में बनी (ले. ६१०)। इन के एक और शिष्य दीपचन्द्र ने सवत् १७५५ मे एक ऋषिमंडल यत्र स्थापित किया (ले. ६११)।

सहस्रकीर्ति के पट्टशिष्य महीचंद्र के समय संवत् १७२९ में फतेह-पुर में एक कुआ बनाया गया था (ले. ६१२)।

महीचद्र के शिष्य देवेन्द्रकीर्ति ने सवत् १७७० में फतेहपुर के एक पुराने मंदिर का जीर्णोद्धार कराया (ले. ६१३)।

देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य जगत्कीर्ति हुए। इन के शिष्य लालचंद ने सवत् १८४२ में समेद शिखर माहात्म्य की रचना की (ले ६१४)।

जगत्कीर्ति के शिष्य ललितकीर्ति हुए। आप के समय सवत् १८६१ में फतेहपुर में दशलक्षण व्रत का उद्यापन हुआ (ले ६१५) तथा सवत् १८८१ मे पभोसा में एक मन्दिर का निर्माण हुआ (ले. ६१६)। आप ने सवत् १८८५ मे महापुराणटीका की रचना की (ले. ६१७)।[११६]

ललितकीर्ति के पट्ट पर राजेन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने सवत् १९१० मे एक चन्द्रप्रभ मूर्ति, सवत् १९२३ मे एक पार्श्वनाथ मूर्ति तथा सवत् १९२९ मे एक नेमिनाथ मूर्ति स्थापित की (ले.६१९-२०)।

राजेन्द्रकीर्ति के बाद मुनीन्द्रकीर्ति पट्टाधीश हुए। इन का स्वर्ग-वास सवत् १९५२ में हुआ (ले ६२१)।

११६ ललितकीर्ति और कविवर वृन्दावनदासजी में अच्छे सम्बन्ध थे। इस विषय में प. नाथूराम प्रेमी कृत वृन्दावनविलास की प्रस्तावना देखिए।

काष्ठासंघ–माथुर गच्छ–कालपट

१ रामसेन (स ९५३)

२ देवसेन

।

३ अमितगति

।

४ नेमिषेण

।

५ माधवसेन

।

६ अमितगति (स. १०५०-१०७३)

।

७ शान्तिषेण

।

८ अमरसेन

।

९ श्रीषेण

।

१० चन्द्रकीर्ति

।

११ अमरकीर्ति (स. १२४४-१२४७)

१२ छत्रसेन (स. ११६६)

१३ गुणभद्र (स. १२२६)

१४ धर्मकीर्ति

।

१५ ललितकीर्ति (स. १२३४)

१६ माधवसेन

१७ उद्धरसेन — विजयसेन

।

(अगला पृष्ठ देखिए)

१८ देवसेन
|
१९ विमलसेन
|
२० धर्मसेन
|
२१ भावसेन
|
२२ सहस्रकीर्ति
|
२३ गुणकीर्ति (स १४६८-१४७३)
|
२४ यश कीर्ति (सं. १४८६-१४९७)
|
२५ मलयकीर्ति (स. १५०२-१५१०)
|
२६ गुणभद्र (स. १५१०-१५९०)

२७ गुणचन्द्र (स १५७६) — भानुकीर्ति (स. १६०६)
|
कुमारसेन (स. १६१५-३२)

१७ विजयसेन
|
१८ नयसेन
|
१९ श्रेयाससेन
|
२० अनन्तकीर्ति
|
२१ कमलकीर्ति (स १४४३)
|
२२ क्षेमकीर्ति
|

२३ हेमकीर्ति (स. १४६९)

२४ कमलकीर्ति (स १५०६-१५१०)

२५ कुमारसेन — शुभचन्द्र (स. १५३०)

२६ हेमचन्द्र — यश.सेन

२७ पद्मनन्दि (स. १५७६)

२८ यशःकीर्ति (स. १५७२)

गुणचन्द्र

२९ क्षेमकीर्ति (स. १६४१) — सकलचन्द्र

३० त्रिभुवनकीर्ति — महेन्द्रसेन

३१ सहस्रकीर्ति (स. १६६३)

३२ महीचन्द्र (स. १७३९)

३३ देवेन्द्रकीर्ति (स १७७०)

३४ जगत्कीर्ति (स. १८४२)

३५ ललितकीर्ति (स १८६१-१८८५)

३६ राजेन्द्रकीर्ति (स.१९१०-१९२९)

३७ मुनीन्द्रकीर्ति (स. १९५२)

१४. काष्ठासंघ–लाडवागड–पुन्नाट–गच्छ

लेखांक ६२२ – हरिवंशपुराण जिनसेन

दधार कर्मप्रकृतिं श्रुतिं च यो जिताक्षवृत्तिर्जयसेनसद्गुरु. ।
प्रसिद्धवैयाकरणप्रभाववानशेषराद्धान्तसमुद्रपारगः ॥ ३०
तदीयशिष्योऽमितसेनसद्गुरु पवित्रपुन्नाटगणाग्रणीर्गणी ।
जिनेन्द्रसच्छासनवत्सलात्मना तपोभृता वर्षशताधिजीविना ॥ ३१
सुशास्त्रदानेन वदान्यतामुना वदान्यमुख्येन भुवि प्रकाशिता ।
यदग्रजो धर्मसहोदरः शमी समग्रधीर्धर्म इवात्तविग्रहः ॥ ३२
तपोमयीं कीर्तिमशेषदिक्षु य क्षिपन् बभौ कीर्तितकीर्तिषेणकः ।
तदग्रशिष्येण शिवाग्रसौख्यभागरिष्टनेमीश्वरभक्तिभाविना ।
स्वशक्तिभाजा जिनसेनसूरिणा धियाल्पयोक्ता हरिवंशपद्धतिः ॥ ३३
शाकेष्वब्दशतेषु सप्तसु दिशं पंचोत्तरेपूत्तरां
पातींद्रायुधनाम्नि कृष्णनृपजे श्रीवल्लभे दक्षिणां ।
पूर्वां श्रीमदवंतिभूभृति नृपे वत्सादिराजे परां
सौराणामधिमंडलं जययुते वीरे वराहेऽवति ॥ ५२
कल्याणै. परिवर्धमानविपुलश्रीवर्धमाने पुरे
श्रीपार्श्वालयनन्नराजवसतौ पर्याप्तशेषः पुरा ।
पश्चाद्दोस्तटिकाप्रजाप्रजनितप्राज्यार्चनावर्चने
शांते शांतगृहे जिनस्य रचितो वंशो हरीणामयम् ॥ ५३

(पर्व ६६, माणिकचंद ग्रंथमाला, बम्बई १९२०)

लेखांक ६२३ – कडब दानपत्र अर्ककीर्ति

श्रीयापनीय-नंदिसंघ-पुंनागवृक्षमूलगणे श्रीकित्त्या– (कीर्त्या) चार्यान्वये बहुष्वाचार्येष्वतीतेषु व्रतसमितिगुप्तिगुप्तमुनिवृंदवंदितचरण कूविलाचार्यनामासीत् । तस्यान्तेवासी समुपनतजनपरिश्रमाहारः स्वदानसंतर्पितसमस्तविद्वज्जनो जनितमहोदय. विजयकीर्तिनाम मुनिप्रभुरभूत् ।

अर्ककीर्तिरिति ख्यातिमातन्वन्मुनिसत्तम. ।
तस्य शिष्यत्वमायातो नायातो वशमेनसाम् ॥

तस्मै मुनिवराय तस्य विमलादित्यस्य शणेश्वरपीडापनोदाय मयूर-

खडिमधिवसति विजयस्कंधावारे चाकिराजेन विज्ञापितो वल्लभेंद्रः इडिगूर्विषयमध्यवर्तिनं जालमंगलनामधेयग्रामं शकनृपसंवत्सरेषु शरशिखिमुनिषु (७३५) व्यतीतेषु ज्येष्ठमासशुक्लपक्षदशम्यां पुष्यनक्षत्रे चंद्रवारे मान्यपुरवरापरदिग्विभागालंकारभूतशिलाग्रामजिनेंद्रभवनाय दत्तवान्... ॥

(जैन शिलालेख संग्रह भा. २ पृ. १३७)

लेखांक ६२४ – आराधना कथाकोष   हरिषेण

...पुन्नाटसंघांबरसंनिवासी श्रीमौनिभट्टारकपूर्णचंद्र ॥ ३
..कार्तस्वरापूर्णजनाधिवासे श्रीवर्धमानाख्यपुरेवसन् स. ॥ ४
सारागमाहितमतिर्विदुषा प्रपूज्यो
नानातपोविधिविधानकरो विनेय ।
तस्याभवद्गुणनिधिर्जनताभिवंद्य
श्रीशब्दपूर्वपदको हरिषेणसंज्ञ. ॥ ५
...नानाशास्त्रविचक्षणो बुधगणै सेव्यो विशुद्धाशय
सेनान्तो भरतादिरस्य परम. शिष्यो बभूव क्षितौ ॥ ६
तस्य शुभ्रयशसो हि विनेयः सबभूव विनयी हरिषेण ॥ ७
आराधनोद्धृत. पथ्यो भव्यानां भावितात्मनाम् ।
हरिषेणकृतो भाति कथाकोशो महीतले ॥ ८
नवाष्टनवकेष्वेषु स्थानेषु त्रिषु जायतः (?) ।
विक्रमादित्यकालस्य परिमाणमिदं स्फुटम् ॥ ११
संवत्सरे चतुर्विंशे वर्तमाने खराभिधे ।
विनयादिकपालस्य राज्ये शक्रोपमानके ॥ १३

(सिंधी जैन ग्रंथमाला, बम्बई)

लेखांक ६२५ – धर्मरत्नाकर   जयसेन

मेदार्येण महर्षिभिर्विहरता तेपे तपो दुश्चर
श्रीखड्डिल्लकपत्तनान्तिकरणाभ्यर्धिप्रभावात्तदा ॥
गाठ्येनाप्युपतस्थुता सुरतरुप्रख्या जनाना श्रियं
तेनाजीयत लाडबागड इति त्वेको हि संघोऽनघ. ॥

धर्मज्योत्स्ना विकिरति सदा यत्र लक्ष्मीनिवासा
प्रापुश्चित्रं सकलकुमुदायत्युपेता विकाशम् ।
श्रीमान् सोभून्मुनिजननुतो धर्मसेनो गणींद्र–
स्तस्मिन् रत्नत्रितयसदनीभूतयोगीन्द्रवर्गे ॥
तेभ्यः श्रीशांतिपेण. समजनि सुगुरुः पापधूलीसमीरः ॥
श्रीगोपसेनगुरुराविरभूत्स तस्मात् ॥
अज्ञात. कलिना जगत्सु वलिना श्रीभावसेनस्तत' ॥
ततो जात शिष्य सकलजनतानंदजनन.
प्रसिद्ध साधूनां जगति जयसेनाख्य इह स. ॥
इदं चक्रे शास्त्र जिनसमयसारार्थनिचित
हितार्थं जंतूनां स्वमतिविभवाद् गर्वविकलः ॥
वाणेद्रियव्योमसोममिते संवत्सरे शुभे ।
ग्रथोऽय सिद्धतां यात. सकलीकरहाटके ॥

(अ. ८ पृ. १०३)

लेखांक ६२६ – प्रद्युम्नचरित महासेन

श्रीलाटवर्गटनभस्तलपूर्णचंद्र.
शास्त्रार्णवान्तगसुधीस्तपसां निवास' ।
कान्ताकलावपि न यस्य शरैर्विभिन्न
स्वान्तं वभूव स मुनिर्जयसेननामा ॥ १
तीर्णागमांवुधिरजायत 'तस्य शिष्य'
श्रीमद्गुणाकरगुणाकरसेनसूरि' ।
.. तच्छिष्यो विदिताखिलोरुसमयो वादी च वाग्मी कवि
आसीत् श्रीमहसेनसूरिरनघ श्रीमुंजराजार्चित ॥ ३
श्रीसिंधुराजस्य महत्तमेन श्रीपर्पटेनार्चितपादपद्म ।
चकार तेनाभिहित प्रवधं स पावन निष्ठितमंगजस्य ॥ ४

(जैन साहित्य और इतिहास पृ १८३)

लेखांक ६२७ – दूबकुण्ड शिलालेख विजयकीर्ति

श्रीलाटवागटगणोन्नतरोहणाद्रि-माणिक्यभूतचरितो गुरुदेवसेन' ॥

. जातः श्रीकुलभूषणोऽखिलवियद्वासोगणग्रामणीः
सम्यग्दर्शनशुद्धबोधचरणालंकारधारी ततः ॥
रत्नत्रयाभरणधारणजातशोभ--स्तस्मादजायत स दुर्लभसेनसूरि ॥
आस्थानाधिपतौ बुधादविगुणे श्रीभोजदेवे नृपे
सभ्येष्वंबरसेनपंडितशिरोरत्नादिपूद्यन्मदान् ।
योनेकान् शतशो अजेष्ट पटुताभीष्टोद्यमो वादिनः
शास्त्रांभोनिधिपारगोऽभवदतः श्रीशांतिषेणो गुरुः ॥
गुरुचरणसरोजाराधनावाप्तपुण्य-
प्रभवदमलबुद्धिः शुद्धरत्नत्रयोऽस्मात् ।
अजनि विजयकीर्तिः सूक्तरत्नावकीर्णा
जलधिभुवमिवैतां यः प्रशस्तिं व्यधत्त ॥
तस्मादवाप्य परमागमसारभूत धर्मोपदेशमधिकाधिगतप्रबोधा ।
लक्ष्म्याश्च बंधुसुहृदा च समागमस्य मत्वायुषश्च वपुषश्च विनश्वरत्व ॥
प्रारब्धाधर्मकांतारविदाहः साधुदाहडः ।
सद्विवेकश्च कूकेकः सूर्पटः सुकृते पटुः ॥
शुभ्राभ्रोल्लिखितांबर वरसुधासांद्रद्रवापांडुर
सार्थं श्रीजिनमंदिरं त्रिजगदानंदप्रदं सुदरं ।
संभूयेदमकारयन् गुरुशिरः संचारिकेत्वबर-
भ्रातेनोच्छलतेव वायुविहते द्यामादिशत् पश्यताम् ॥
अथैतस्य जिनेश्वरमंदिरस्य निष्पादनपूजनसंस्काराय कालान्तरस्फुटितत्रुटितप्रतीकारार्थं च महाराजाधिराजश्रीविक्रमसिंह स्वपुण्यराशेरप्रतिहतप्रसरं परमोपचयं चेतसि निधाय गोणीं प्रति विंशोपक गोधूमगोणीचतुष्टयवापयोग्यं क्षेत्रं च महाचक्रग्रामभूमौ रजकद्रहपूर्वदिग्भागवाटिका वापीसमन्वितां प्रदीपमुनिजनशरीराभ्यंजनार्थं करघटिकाद्वयं च दत्तवान् ॥
संवत् ११४५ भाद्रपद सुदि ३ सोमदिने ।

(एपिग्राफिया इंडिका २ पृ २३७)

लेखांक ६२८ -- पट्टावली **महेंद्रसेन**

त्रिषष्टिपुराणपुरुषचरित्रकर्ता स्वकीयतपस्तपनप्रकटप्रभावान् मेदपाट-

देशे प्रकटप्रभावं क्षेत्रपाल मबोध्य सकलमहीमडलेष्वाश्रयं चकार तेप श्रीमहेंद्रसेनदेवाना ॥

(म. ३८)

लेखांक ६२९ – पट्टावली अनंतकीर्ति

चतुर्दशमतीर्थंकरचरित्रकर्ता तेषा अनंतकीर्तिदेवानां ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ६३० – पट्टावली विजयसेन

तत्पट्टे श्रीविजयसेनभट्टारकाणा यैर्वाराणस्यां पांगुलहरिचंद्रराजानं प्रबोध्य तस्यैव सभायामनेकशिष्यसमूहसमन्वितं चंद्रतपस्विनं विजित्य महावादवादीति नाम प्रकटीचकार ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ६३१ – पट्टावली चित्रसेन

तदन्वये श्रीमल्लाटवर्गटगच्छवशप्रतापप्रकटनयावज्जीवबोधोपवासैकांतरे नीरस्याहारेण तापनायोगसमुद्धारणवीरश्रीचित्रसेनदेवाना यै. पंचलाटवर्गटदेशे प्रतिबोधं विधाय मिथ्यात्वमलनिरसन चक्रे तत. पुन्नाटगच्छ इति भांडागारे स्थितं लोके लाटवर्गटनामाभिधान पृथिव्या प्रथितं प्रकटीबभूव॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ६३२ – पट्टावली पद्मसेन

तदन्वये श्रीमत्लाटवर्गटप्रभावश्रीपद्मसेनदेवाना तस्य शिष्यश्रीनरेंद्रसेनदेवैः किंचिदविद्यागर्वत असूत्रप्ररूपणादागाधार. स्वगच्छान्नि सारित. कदाग्रहग्रस्तं श्रेणिगच्छमशिश्रियत् ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ६३३ – रत्नत्रयपूजा

अतुलसुखनिधानं सर्वकल्याणवीज
जननजलधिपोतं भव्यसत्त्वैकपात्रं ।
दुरिततरुकुठारं पुण्यतीर्थप्रधान
पिवतु जितविपक्षं दर्शनाख्यं सुधाम्वु ॥

इति श्रीलाडवागडीयपंडिताचार्यश्रीमन्नरेंद्रसेनविरचिते रत्नत्रयपूजा-विधाने दर्शनपूजा समाप्ता ॥

(म. १११)

लेखांक ६३४ – वीतराग स्तोत्र

कल्याणकीर्तिरचितालयकल्पवृक्षं
पश्यन्ति पुण्यरहिता न हि वीतरागम् ॥ ८
श्रीजैनसूरिविनतक्रमपद्मसेनं
हेलाविनिर्दलितमोहनरेन्द्रसेन ॥ ९

(अ. ८ पृ २३३)

लेखांक ६३५ – पट्टावली . त्रिभुवनकीर्ति

तस्य श्रीपद्मसेनस्य वर्याचार्यस्य धीमत. ।
पट्टोदयाचले चंद्रनिचंद्रविवुधाग्रणी ॥
श्रीत्रिभुवनकीर्तिदेवा वभूवु ॥

(म. ३८)

लेखांक ६३६ – पट्टावली धर्मकीर्ति

तत्पट्टोदयाद्रिप्रभाकर भ श्रीधर्मकीर्तिदेवानाम् ॥

(उपर्युक्त)

लेखांक ६३७ – मंदिरलेख

विक्रमादित्यसंवत् १४३१ वर्षे वैशाख सुदी अक्षयतिथौ वुधदिने गुरु वाधेहा वाणि कृत्य परि सरोवर लोकाति खंडवाला पगनो राज ॐ

विजयराज पालयति सति उदयराज गैल श्रीमज्जिनेन्द्राराधनतत्परपर्यन्त वागड प्रतिपात्रो श्रीसंघ भ. श्रीधर्मकीर्तिगुरूपदेशेन...काष्ठासंघे श्रीविमलनाथ का जिन विम्ब प्रतिष्ठितं ॥

(केशरियाजी, वीर २ पृ. ४६०)

लेखांक ६३८ – (मूलाचार) मलयकीर्ति

मुनींद्रोनंतकीर्तिरस्तु धुर्यो विजयसेनक ।
जयसेनो गणाध्यक्षो वादिशुण्डालकेसरी ॥ १५
प्रमाणनयनिक्षेपैर्हेत्वाभासादिभिः परै ।
विजेता वादिवृन्दस्य सेनः केशवपूर्वक. ॥ १६
चरित्रसेनः कुशलो मीमांसावनितापति ।
वेदवेदांगतत्त्वज्ञो योगी योगविदां वर ॥ १७
तस्य पट्टे वभूव श्रीपद्मसेनो जितांगभू. ।
श्मश्रुयुक्तसरस्वत्या विरुदं यस्य भासते ॥ १८
तत्पट्टे व्योमतारेश. संसृतेर्धर्मनाशकृत ।
तपसा सूर्यवर्चस्को यमिनां पदमुत्तमम् ॥ १९
-प्राप्त. करोत्वेते त्रिभुवनोत्तरकीर्तिभाक् ।
कल्याणं संपद. सर्वा. सर्वामरनमस्कृत ॥ २०
श्रीधर्मकीर्तिर्भुवने प्रसिद्धस्तत्पट्टरत्नाकरचंद्ररोचिः ।
षट्तर्कवेत्ता गतमानमायक्रोधारिलोभोऽभवदत्र पुण्य. ॥ २१
तस्य पादसरोजालिर्गुणमूर्तिर्विचक्षण ।
मलयोत्तरकीर्तिर्वो मुदं कुर्याद्दिगंवर. ॥ २२
हेमकीर्तिर्गुणज्येष्ठो ज्येष्ठो मत्त कुशाग्रधीः ।
धर्मध्यानरत. शान्तो दान्त सूनृतवाग्यमी ॥ २३
ततोऽनुजो मुनींद्रस्तु सहस्रोत्तरकीर्तियुक् ।
गुर्जरीं जगतीं शास्तो द्वौ यती महिमोदयौ ॥ २४
वयं त्रयोपि धीमन्त साधीयांसो निरेनस ।
धर्मकीर्तेर्भगवत शिष्या इव रवेः करा. ॥ २५

...साधुफेरू स्ववचोभिरिति स्वामिन् विधीयते श्रीश्रुतपंचम्या उद्यापनमितीरित श्रुत्वा सप्रमोद. श्रीधर्मकीर्तिमुनिपाय तन्निमित्त श्रीमूलाचार-

पुस्तकं लेखयांचकार पश्चात् तस्मिन् मुनिपतौ नाकलोकं प्राप्ते सति तच्छि-ष्याय यमनियमस्वाध्यायध्यानाध्ययननिरताय तपोधनश्रीमलयकीर्तये तत्स-बहुमानं सोत्सवं सविनयमर्पयत् ।

–इदं मूलाचारपुस्तकं । सं. १४९३ ।

(अ १३ पृ. १०९)

लेखांक ६३९ – पट्टावली

तत्पट्टे भ. श्रीमलयकीर्तिदेवानां यैर्निजबोधनशक्तित' एलदुग्गाधीश्वर-राजश्रीरणमल्लं प्रतिबोध्य तरसुंवानगरे केकापिछायान् हटान् महाकायश्री-शांतिनाथस्य प्रासाद. कारित. ॥

(म. ३८)

लेखांक ६४० – पट्टावली   नरेंद्रकीर्ति

तत्पट्टे कलबुर्गाधीश्वरसुलतानपिरोजस्याहसमस्यां पूरयित्वा पुन. श्रीजिनचैत्यालये प्रतोलीं काराप्य कुशलानां राजराजगुरुवसुंधराचार्य प्रस्तरी-नगराधीश्वरराजाधिराजवैजनाथेन संसेवितचरणारविंदसमस्तवादीभव-ज्रांकुशश्रीनरेंद्रकीर्तिदेवानां यैस्तस्मिन्नेव श्रीपार्श्वनाथचैत्यालयं काराप्य सहस्रकूटं संस्थाप्य श्रीपार्श्वनाथस्य पूजामहिमानं प्रकटीचक्रे ।

[उपर्युक्त]

लेखांक ६४१ –

वाग्वर देश मझार नयर आंतरी सुभ सोहे ।
राजपाल रणमल्ल सयल लोक मन मोहे ॥
रणमल्ल राय प्रतिबोधी कड तव जैन विचक्षण ।
तिहा शांतिनाथ जिन चैत्य पोल निमित्त हठ कारण ॥
वहीं पिच्छने संघात पोली अग्रे करी स्थापण ।
भट्टारक कोटी मुगुट नरेंद्रकीर्ति वंदितचरण ॥

[म ४९]

लेखांक ६४२ – प्रतापकीर्ति

काष्ठासंघ शृंगार लाडवागड गछ सोहे ।
नरेंद्रकीर्ति गुरुराय वादीपंचानन मोहे ॥
कलवर्गी पातस्याह जैननि समस्या पुरावी ।
पीरोजसाहा माण पालखी अंतरिक्ष चलावी ॥
तग्न पाट सोहे वादी विकट प्रतापकीर्ति सूरिवर जयो ।
केदारभट्ट पाथरी नयर राजसभा मांहि जीतियो ॥

(म. ४९)

लेखांक ६४३ –

काष्ठासुसंघ शृंगार जु सोभत लाडवागड गछ दिवाकर रे ।
वादि विकट वज्रांकुश हस्त में चामर पीछी छाजतु रे ॥
नरेंद्रसुकीर्ति वादिगजकेशरी अंतरीक्ष पालखी चलावतु रे ।
प्रतापसुकीर्ति वादिगजकेशरी मानत भूप सुपंडित रे ॥

(म. ४९)

लेखांक ६४४– विरुदावली त्रिभुवनकीर्ति

श्रीमलयकीर्तिपट्टोधराणा ॥ श्रीलाटवर्गटगच्छविपुलगगनमार्तंडमंडलानां भट्टारकश्रीमन्नरेंद्रकीर्तिसद्गुरुचरणकमलाराधनकुशलानाम् ॥ सकलविवुध-मुनिमंडलीमंडितचरणारविंदाना समुन्मूलितमिथ्यात्वतरुकंदानां श्रीमत्-प्रतापकीर्तियतिचक्रवर्तिनाम् ॥ तेषा पट्टे भट्टारक श्रीत्रिभुवनकीर्तिदेवगुण रत्नभूषणयतीनाम ॥ तेषां सद्गुरुणामुपदेशेन अद्येह देवगिरिमहास्थान-वास्तव्येन श्रीमद्बघ्रावालज्ञातीयमुखमंडनेन ॥

(म ११७)

काष्ठासंघ–लाडबागड–पुन्नाट गच्छ

इस संघ के आचार्य पहले पुन्नाट अर्थात् कर्णाटक प्रदेश मे विहार करते थे इस लिए इस का नाम पुन्नाट था। बाद मे उन का प्रमुख कार्यक्षेत्र लाडबागड अर्थात् गुजरात प्रदेश हुआ इस लिए इस का नाम लाडबागड गच्छ पडा। इसी का संस्कृत रूप लाटवर्गट है। पुन्नाट और लाटवर्गट संघों की एकता (ले ६३१) पर से प्रतीत होती है और इस की पुष्टि (ले. ७४७) से होती है जिस मे लाडबागड गच्छ के कवि पामो ने अपना गच्छ पुन्नाट कहा है।

पुन्नाट संघ के प्राचीनतम ज्ञात आचार्य जिनसेन है। आप ने शक ७०५ मे वर्धमानपुर के पार्श्वनाथमन्दिर तथा दोस्तटिका के शान्तिनाथ-मन्दिर मे रहकर हरिवंशपुराण की रचना की (ले. ६२२)। इस समय उत्तर में इन्द्रायुध, दक्षिण मे श्रीवल्लभ, पूर्व मे वत्सराज और पश्चिम मे जयवराह का राज्य चल रहा था। जिनसेन के गुरु कीर्तिषेण थे। वे पुन्नाट गण के अग्रणी अमितसेन के गुरुबन्धु थे। अमितसेन की गुरुपरम्परा मे ग्रन्थकर्ता ने अगज्ञानी आचार्यों के बाद ३० आचार्यों के नाम दिये है।

शक ७३५ मे कीर्त्याचार्यान्वय के कूविलाचार्य के प्रशिष्य तथा विजयकीर्ति के शिष्य अर्ककीर्ति को चाकिराज की प्रार्थना से वल्लभेन्द्र ने[117] जालमंगल नामक ग्राम दान दिया। अर्ककीर्ति ने अपना संघ यापनीय नन्दिसंघ तथा पुनागवृक्षमूलगण कहा है। सम्भवत पुनागवृक्षमूलगण पुन्नाटसंघ का ही एक रूपान्तर है (ले ६२३)।

पुन्नाट संघ के आचार्य हरिषेण ने संवत् ९८९ मे वर्धमानपुर मे विनायकपाल के राज्यकाल मे[118] बृहत् कथाकोष की रचना की (ले ६२४)। मौनि भट्टारक–हरिषेण–भरतसेन-हरिषेण ऐसी इन की परम्परा थी।

---

117 यह सम्भवत राष्ट्रकूट राजा गोविन्द (तृतीय) का उल्लेख है जिन की ज्ञात तिथियां ७८३–८१४ ई. है।

118 ये रघुवंशीय प्रतिहार राजा थे। सन् ९३१ का इन का एक उल्लेख मिला है। वर्धमानपुर का वर्तमान रूप वढवाण-मतान्तर से बदनावर सौराष्ट्र है।

लाडबागड संघ के आचार्य जयसेन ने संवत् १०५५ में सकली-करहाटक ग्राम में धर्मरत्नाकर नामक ग्रन्थ लिखा।[११९] इन की गुरुपरम्परा धर्मसेन-शान्तिषेण-गोपसेन-भावसेन-जयसेन इस प्रकार थी। इन के मत से इस संघ का आरम्भ मेदार्य की उग्र तपश्चर्या से हुआ था (ले. ६२५) जो खडिल्य ग्रामके पास निवास करते थे।

इस संघ के अगले आचार्य महासेन थे। आप ने प्रद्युम्नचरित नामक काव्य की रचना की। मुंजराज तथा सिन्धुराज के मन्त्री पर्पट ने आप का सन्मान किया था। जयसेन-गुणाकरसेन-महासेन ऐसी आप की परम्परा थी (ले. ६२६)।

इस के अनन्तर आचार्य विजयकीर्ति का उल्लेख मिलता है। कछवाहा वंश के विक्रमसिंह ने संवत् ११४५ में एक जिनमन्दिर के लिए कुछ जमीन दान दी। यह मन्दिर विजयकीर्ति के शिष्य दाहड, सूर्पट, कूकेक आदि ने मिल कर बनाया था। इस दान की विस्तृत प्रशस्ति विजयकीर्ति ने लिखी (ले. ६२७) इन की गुरुपरम्परा देवसेन-कुलभूषण-दुर्लभसेन-अम्बरसेन आदि वादियों के विजेता शान्तिषेण-विजयकीर्ति इस प्रकार थी।

पट्टावली में उल्लिखित आचार्यों में महेन्द्रसेन पहले ऐतिहासिक व्यक्ति प्रतीत होते हैं।[१२०] इन ने त्रिषष्टिपुरुषचरित्र लिखा तथा मेवाड में क्षेत्रपाल को उपदेश दे कर चमत्कार दर्शाया (ले. ६२८)।

महेन्द्रसेन के शिष्य अनन्तकीर्ति ने चौदहवें तीर्थंकर का चरित्र लिखा (६२९)।

---

११९ पं. परमानन्द ने इन्हें लाडबागड संघ के आचार्य कहा है। यहाँ स्पष्टत. ल की जगह गलती से ल पढा गया है। लाडबागड नाम के किसी संघ का कोई उल्लेख नहीं मिलता।

१२० इन के पहले अगजानी आचार्यों के बाद क्रम से विनयधर, सिद्धसेन, वज्रसेन, महासेन, रविषेण, कुमारसेन, प्रभाचन्द्र, अकलंक, वीरसेन, सुमतिसेन, जिनसेन, वासवसेन, रामसेन, जयसेन, सिद्धसेन तथा केशवसेन का उल्लेख है।

अनन्तकीर्ति के शिष्य विजयसेन ने वाणारसी मे पागुल हरिचन्द्र राजा की सभा मे[१२१] चन्द्र तपस्वी का पराजय किया (ले. ६३०)। इन के शिष्य चित्रसेन के समय से इस सघ का पुन्नाट सघ यह नाम लुप्तप्राय हुआ (ले. ६३१)। चित्रसेन ने एकान्तर उपवासादि कठोर तपश्चर्या की।

इन के पट्टशिष्य पद्मसेन हुए। आप के शिष्य नरेन्द्रसेन ने शास्त्र-विरुद्ध उपदेश करने वाले आशाधर को[१२२] अपने सघ से बहिष्कृत किया (ले. ६३२)। नरेन्द्रसेन ने रत्नत्रयपूजा की रचना की (ले. ६३३)। इन के शिष्य कल्याणकीर्ति ने वीतरागस्तोत्र की रचना की (ले. ६३४)।

पद्मसेन के बाद क्रमश त्रिभुवनकीर्ति और धर्मकीर्ति भट्टारक हुए। धर्मकीर्ति के समय सवत् १४३१ मे केशरियाजी तीर्थक्षेत्र पर विमलनाथ मन्दिर का निर्माण हुआ (ले ६३७)।

धर्मकीर्ति के तीन शिष्य हुए– हेमकीर्ति, मलयकीर्ति तथा सहस्र-कीर्ति। ये तीनो गुजरात प्रदेश मे विहार करते थे। दिल्ली के साह फेरू ने सवत् १४९३ मे श्रुतपचमी उद्यापन के निमित्त मूलाचार की एक प्रति मलयकीर्ति को अर्पित की (ले. ६३८)। मलयकीर्ति ने एलदुग्ग के राजा रणमल को उपदेश दे कर तरसुवा मे मूलसघ का प्रभाव कम किया तथा शान्तिनाथ की विशाल मूर्ति स्थापित की (ले ६३९)।[१२३]

मलयकीर्ति के पट्टशिष्य नरेन्द्रकीर्ति हुए। आप ने कलबुर्गा के पिरोजशाह[१२४] की सभा मे समस्या पूर्ति कर के जिनमन्दिर का जीर्णोद्धार

---

१२१ कनौज के गाहडवाल राजा हरिश्चन्द्र– सन ११९३–१२०० ई.।

१२२ समय के अनुमान से पण्डित आशाधर का ही यह उल्लेख होना चाहिए। किन्तु इसे अन्य उल्लेखो से कोई पुष्टि नहीं मिलती।

१२३ ईडर के राजा रणमल– १३४५–१४०३ ई। यही घटना ले.६४१ मे मलयकीर्ति के पट्टशिष्य नरेन्द्रकीर्ति के विषय मे कही गई है।

करने की अनुज्ञा प्राप्त की तथा प्रस्तरी में राजा वैजनाथ[१२५] से सम्मान पा कर पार्श्वनाथ मन्दिर में सहस्रकूट जिनमूर्ति की स्थापना की (ले. ६४०)। अनुश्रुति के अनुसार आप ने आकाश मार्ग से गमन किया था (ले. ६४२)।

नरेन्द्रकीर्ति के पट्टशिष्य प्रतापकीर्ति हुए। आप ने पाथरी नगर में केदारभट्ट को विवाद मे पराजित किया। पंडित भूप ने आप की प्रशंसा की है तथा आप की पिच्छी चामर की थी ऐसा कहा है (ले. ६४२–४३)।

प्रतापकीर्ति के पट्टशिष्य त्रिभुवनकीर्ति हुए। इन की आम्नाय के कुछ लोग देवगिरि में रहते थे (ले. ६४४)।[१२६]

१२५ वैजनाथ का राज्य काल ज्ञात नहीं होता।

१२६ ज्ञात होता है कि इन के बाद इस परम्परा मे कोई भट्टारक नहीं हुए क्यों कि इस आम्नाय के श्रावकों ने नन्दीतट गच्छ के भट्टारकों द्वारा अनेक प्रतिष्ठाएं करवाने के उल्लेख मिले हैं। देखिए ले. ६८४–८६ आदि।

काष्ठासंघ-पुन्नाट-लाडबागड गच्छ-कालपट

जयसेन
|
अमितसेन — कीर्तिषेण
कीर्तिषेण
|
जिनसेन (स. ८४०)

कूविलाचार्य
|
त्रिजयकीर्ति
|
अर्ककीर्ति (सवत् ८७०)

मौनिभट्टारक
|
हरिषेण
|
भरतसेन
|
हरिषेण (सवत् ९८९)

धर्मसेन
|
शान्तिषेण
|
गोपसेन
|
जयसेन (सवत् १०५५)

जयसेन
|
गुणाकरसेन
|
महासेन

देवसेन
|

कुलभूषण
|
दुर्लभसेन
|
शान्तिषेण
|
विजयकीर्ति (संवत् ११४५)

महेन्द्रसेन
|
अनन्तकीर्ति
|
विजयसेन
|
चित्रसेन
|
पद्मसेन
|
त्रिभुवनकीर्ति
|
धर्मकीर्ति (संवत् १४३१)
|
मलयकीर्ति (संवत् १४०३)
|
नरेन्द्रकीर्ति
|
प्रतापकीर्ति
|
त्रिभुवनकीर्ति

---

१५ काष्ठासंघ–बागड गच्छ

लेखांक ६४५ – ? मूर्ति सुरसेन

श्रीसुरसेनोपदेशेन सिंहैकयशोराजनोन्नैकैः सहोदरैः ससारभयभीतैरेत-जिनबिंब कारित इति ॥ जयति श्रीबागटसघ ॥ सवत् १०५१ कृष्ण गणेनघ . ।

(कटरा, जर्नल आफ एशियाटिक सोसायटी भा १९ पृ. ११०)

लेखांक ६४६ – जगत्सुन्दरी प्रयोगमाला यशःकीर्ति

आसि पुरा वित्थिण्णे वायडसघे ससकसो (भो) ।
मुणिरामइत्ति धीरो गिरिव्व णईसुव्व गभीरो ॥ १८
संजाउ तस्स सीसो विबुहो सिरिविमलइत्ति विक्खाओ ।
विमलपरत्ति रवडिया धवलिया धूणिय गयणाययले ॥ १९
जसइत्ति णाम पयडो पयपयरुहजुअलपडियभव्वयणो ।
सत्थमिणं जणदुलहं तेण हहिय समुद्धरियं ॥ २६

(अ २ पृ. ६०६)

काष्ठासंघ-बागड गच्छ

काष्ठासघ के चार गच्छो मे एक बागड गच्छ भी है। इस के उल्लेख सिर्फ दो मिले है। सम्भवत यह गच्छ लाडबागड गच्छ मे जल्दी ही विलीन हो गया था।

इस गच्छ के आचार्य सुरसेन के उपदेश से सिंहराज आदि बन्धुओ ने सवत् १०५१ में एक जिनमूर्ति स्थापित की थी (ले ६४५)।

रामकीर्ति के प्रशिष्य तथा विमलकीर्ति के शिष्य यश कीर्ति इस सघ के दूसरे ज्ञात आचार्य है। आप ने जगत्सुन्दरी प्रयोगमाला नामक मन्त्र-शास्त्र के ग्रन्थ की रचना की थी (ले ६४६)। इन का समय अनुमानत १५ वीं सदी है।

१६. काष्ठासंघ–नन्दीतट गच्छ

लेखांक ६४७ –

सत्तसए तेवण्णे विक्कमरायस्स मरणपत्तस्स ।
णदियडे वरगामे कट्ठो संघो मुणेयव्वो ॥

(दर्शनसार ३८)

लेखांक ६४८ – **रामसेन**

रामसेनोऽति विदितः प्रतिबोधनपण्डितः ।
स्थापिता येन सज्जातिर्नरसिंहाभिधा भुवि ॥ -

(पट्टावली, दा पृ. ४७)

लेखांक ६४९ –

नरसिंहपुर वर नयर तजीय ते नीर्थी पहुता ।
गाम हु नाम न्याती रची तली सुपत्ति-मत्ता ॥
वीसहगोत्र ते थीर करी तव थापिय ।
नरसिंहपुरा सगुण नाम जिनधर्मज आपीय ॥
श्रीशांतिनाथ सुपसालय करी श्रीरामसेन उवएस धरी ।
भूमंडल नीयर तारु रुद्धि वृद्ध सावय वरी ॥ १६१

(म. ४९)

लेखांक ६५० – **नेमिसेन**

श्रीरामसेन मुनिराय नयर नरसिंहपुर पामी ।
नरसिंहपुरा वर ज्ञाति प्रतिबोधी मुखगामी ॥
तत्पट्टे नेमिसेन पद्मावति आराधी ।
भट्टपुरा कुलवन जैनधर्म प्रति साधी ॥
नेमिसेन वादी विकट परमत वादी जीतय ।
जयसागर एवं वदति श्रीकाष्ठासघ कुल दीपये ॥ ३३

(म. ४९)

लेखांक ६५१ – शीतलनाथ मूर्ति   सोमकीर्ति

संवत् १५३२ वर्षे वैसाख सुदि ५ रवौ काष्ठासघे नदीतटगच्छे भ. श्रीभीमसेन तत्पट्टे सोमकीर्ति आचार्यश्रीवीरसेनसूरियुक्त प्रतिष्ठित नारसिंहज्ञातिय वोरढेकगोत्रे चापा भार्या परगू ।

(अ. ४ पृ ५०२)

लेखांक ६५२ – यशोधरचरित

नन्दीतटाख्यगच्छे वंशे श्रीरामदेवसेनस्य ।
जातो गुणार्णवैका श्रीमाश्च श्रीभीमसेनेति ॥ ९३
निर्मितं तस्य शिष्येण श्रीयशोधरसंज्ञिकं ।
श्रीसोमकीर्तिमुनिना विशोध्याधीयतां बुधा ॥ ९४
वर्षे षट्त्रिंशसंख्ये तिथिपरिगणिना युक्तसंवत्सरे वै ।
पचम्यां पौषकृष्णे दिनकरदिवसे चोत्तराभे हि चद्रे ॥
गौढिल्या मेदपाटे जिनवरभवने शीतलेन्द्रस्य रम्ये ।
सोमादीकीर्तिनेद नृपवरचरित निर्मितं शुद्धभक्त्या ॥ ९५

(प्रस्तावना पृ २६, कारजा जैन सीरीज, १९३१)

लेखांक ६५३ – ? मूर्ति

स. १५४० वर्षे वैशाख सुदि १० बुध श्रीकाष्ठासंघे भ. श्रीसोमकीर्ति प्र. भट्टेउ राजा कासिकगोत्रे सा. ठाकुरसी भा रुषी पुत्र योधा प्रणमति ।

(भा. ७ पृ. १६)

लेखांक ६५४   विमलपुराण

गुर्जर देस मझारि गढ पावापुर दुर्धर ।
सुलतान पीरोजसाह खान वजीर वन समुधर ॥
तेह सभा शृंगार नर सुर भूपति देखत ।
पद्मा देवि प्रसन्न पालखी अतरीक्ष पेखत ॥
सकलवादीभकुंभपचानन वादवादि सेवत चरण ।
जयसागर एव वदति श्रीसोमकीर्ति मगलकरण ॥ ३५

(म. ४९)

लेखांक ६५५ – विमलपुराण रत्नभूषण

विख्याते जगतीतले त्रिभुवनस्वामिस्तुतेभून्महान् ।
काष्ठासंघसुनामनि प्रभुयतौ विद्यागणे सूरिराट् ॥
सारगार्णवपारगो बहुयशा: श्रीरामसेनो जिन- ।
ध्यानार्णोविततिप्रधूतवृजिनो भानुस्तमोराशिषु ॥ १
तत्क्रमेण गणभूधरभानु: सोमकीर्तिरिव शीतमयूख: । ॥ २
तत्पदे विजयसेनभदंतो बोधिताखिलजन: कमनीय: ॥ ३
तत्पट्टे सूरिराज: सकलगुणनिधि: श्रीयश:कीर्तिदेव: ।
तत्पादांभोजषट्पत्सकलशशिमुखो वादिनागेंद्रसिंह: ॥
सजज्ञे प्रातसेनोदय इति वचसां विस्तरे स प्रवीण: ।
तत्पद्वार्जालिसक्तस्त्रिभुवनमहिमा तन्मुखप्रांतकीर्ति: ॥ ४
राजते रजनिनाथशशांको तत्पदोदयनगाहिमदीप्ति: ।
तर्कनाटककुलागमदक्षो रत्नभूषणमहाकविराज: ॥ ५
श्रीमल्लोहाकरेऽभूत् परमपुरवरे हर्षनामा वरीयान् ।
तत्पत्नी साधुशीला गुणगणसदनं वीरिकाख्येन साध्वी ॥
पुत्र: श्रीकृष्णदासो रतिप इव तयोर्ब्रह्मचारीश्वरश्च ।
सत्कीर्ती राजते वै वृषभजिनपदांभोजषट्पत्समान: ॥ ६
गूर्जरे जनपदे पुरे कृत: कल्पवल्ल्यभिध एकवत्सरात् ।
वर्धमानयशसा मया पुरो: पत्कजाहितसुचेतसा ध्रुव ॥ ८
वेदर्षिषट्चंद्रमितेथ वर्षे पक्षे सिते मासि नभस्यलंभे ।
एकादशी शुक्रमृगर्क्षयोगे ध्रौव्यान्विते निर्मित एष एव ॥ १०

(अध्याय १०, हरीभाई देवकरण ग्रंथमाला ९)

लेखांक ६५६ – ज्येष्ठजिनवरपूजा

त्रिभुवनकीर्ति पदपंकज वरिय ।
रत्नभूषण सूरि महा कहिया ॥ १७
ब्रह्म कृष्ण जिनदास विस्तरिया ।
जयजयकार करी उच्चरिया ॥ १८

(व १९०५)

लेखांक ६५७ –

गादी मूडा अति भला काष्ठासघ मगलकरण ।
जयसागर एवं वदति श्रीरत्नभूषण वदो चरण ॥ ८

(म ४९)

लेखांक ६५८ –

एमा करियदे याजा दिगवर राजा कलुलनयरी प्रवेशतही ।
कहि जयसागर विद्या आगर रत्नभूषण गुरु आवतही ॥ ७

(म ४९)

लेखांक ६५९ – तीर्थजयमाला

जय जिनवर स्वामी पय सर नामी कर जोडी मन भाव धरी ।
जयसागर वदो पाय निकदो रत्नभूपण गुरु नमस्करी ॥

(म ११६)

लेखांक ६६० – पार्श्वपंचकल्याणिक

त्रिबुधनरनिषेव्य' पचकल्याणकाले ।
विमलतरजलाद्यैरर्चितो भव्यवृंदै ॥
जयजलनिधिपारै रत्नभूषाख्यवंद्यो ।
निखिलभुवनकीर्ति पार्श्वनाथोऽव्यताद् व ॥ २६

(म २७)

लेखांक ६६१ – पार्श्वमूर्ति **जयकीर्ति**

स १६८६ वर्षे चैत्र वदी ३ भौमे भ श्रीरत्नभूषण भ जयकीर्ति हूबडजातीय पार्श्वनाथ प्रणमति ।

(बडौदा दा पृ ६७)

लेखांक ६६२ – आदिनाथ पूजा **केशवसेन**

कुसुमाजलिं किल रत्नभूषणमाप्रणम्य कवीश्वर ।

सूरिकेशवसेन एव सयंजं विनतीश्वरं ॥

(ना. ६१)

लेखांक ६६३ -

वीरावाई मात उदर सर मान हंस कल ।
हर्षसाह कुल भाण प्रकटयस सदा सुनिर्मल ॥
कुमति किरिट घट सिंह ब्रह्म मंगल वड सोदर ।
नरपतिपूजितपाय कणकचंपकवपुसुंदर ॥
काष्ठासंघ गिरिराज रवि कविराज जग जय धरण ।
सकलसूरिसिरमुगुटमनी केशवसेन सूरि सुखकरण ॥ ८८

(म. ४१)

लेखांक ६६४ -

केशवसेन सूरींद्र चंद्रमुख मदनमनोहर ।
याचक गुण गायत ब्रह्म मंगल जस सोदर ॥
कल्लोलकीर्ति वादीभहरि इदार मझ सूरिपद-वरण ।
प्रात प्रात तस जपता सकलसंघ-मंगल-करण ॥ ९०

(म ४१)

लेखांक ६६५ - (हरिवंशपुराण-श्रीभूषण) विश्वकीर्ति

श्री संवत् १७०० श्रीकाष्ठासंघे भ सोमकीर्ति तत्पट्टे भ विजयसेन तत्पट्टे भ यश:कीर्ति तत्पट्टे भ उदयसेन तत्पट्टे भ त्रिभुवनकीर्ति तत्पटे भ रत्नभूषण तत्पट्टे भ जयकीर्ति तत्पट्टे भ केशवसेन तच्छिष्य विश्वकीर्तिलिखितं ॥

(कारंजा)

लेखांक ६६६ - (न्यायदीपिका)

स. १६९६ श्रीकाष्ठासंघे नदीतटगच्छे भ रत्नभूषण तत्पट्टे भ जयकीर्ति तत्पट्टे भ केशवसेन तत्पट्टे भ विश्वकीर्ति तच्छिष्य प मनजी लिखितं मालासा ग्रामे ॥

(कारंजा)

लेखांक ६६७ – अतिशय जयमाला　　धर्मसेन

षट्चत्वारिंशत्शुभगुणगणै राजते योरिहंता ।
स्वस्वस्थाने स्थितनरसुरान् वर्षते धर्मतोयं ॥
तस्मै देयो जलकुसुमभरैर्दीपसद्धूपकैश्च ।
काष्ठासंघे भुवनविदिते धर्मसेनै सूरिभि ॥ ९

(म २४)

लेखांक ६६८ –

काम क्रोध परिहरवि काष्ठासंघमंडन भयो ।
कवि वीरदास सचूं चवी धर्मसेन भट्टारक जयो ॥ २

(भा ७ पृ १६)

लेखांक ६६९ – ? मूर्ति　　विश्वसेन

सं १५९६ वर्षे फा. वदि २ सोमे श्रीकाष्ठासंघे नरसिंघपुरा ज्ञातीय नागर गोत्रे स रत्नसी भा लीलादे नित्य प्रणमति भ. श्रीविश्वसेन प्रतिष्ठा ॥

(भा. ७ पृ. १६)

लेखांक ६७० – आराधनासारटीका

इति आराधनाटीका समाप्ता । भ श्रीविश्वसेनेन लखिता । श्रीकाष्ठासंघे नंदीतटगच्छाधिराज भ श्रीविमलसेन तत्पट्टे भ श्रीविशालकीर्तिगुरुभ्यो नम ।

(ना १०२)

लेखांक ६७१ –

काष्ठासंघ गुरुराय लक्ष्मीसेनह गुरु भणिए ।
धर्मसेन तस पाटि नाम यस श्रवणे सुणिए ॥
विमलसेन विख्यातकीर्ति राय राणा रीझे ।
सर्व सौख्य संपत्ति नाम परमानी लीजे ॥

श्रीविशालकीर्ति पट्टोद्धरण नंदियडगच्छ उद्योतकर ।
श्रीविश्वसेन भवियण जयो सयल संघ वद्दउ पर ॥ ३

(म. ४९)

लेखांक ६७२ –

लीधो संयम रयण मयण मच्छरमे हलाव्यो ।
तीनइ अवसरी श्रीपाल साहि कुल कलश चडाव्यो ॥
श्रीडुंगरपुरनयरी ग्रही दीक्षा दिगंबर ।
उत्सव हुई अनेक भोज घर भोजतने पर ॥
श्रीविसालकीर्ति निज करकमली पद प्रमाणती अप्पयो ।
कर्म सीकला दीन दीन प्रताप्यो विश्वसेन गुरु थप्पयो ॥ १६०

(म ४९)

लेखांक ६७३ –

रूपवंत राजान शील संजम तु छज्जि ।
चाल्यु दक्षण खेत्र संजम तु महिअलि गज्जि ॥
श्रीकाष्टसघ नंदीयडगच्छ विद्यागुण वखाणीइ ।
सूरि विद्याभूषण कहि विश्वसेन जगि जाणीइ ॥ ५

(म. ४९)

लेखांक ६७४ – सीताहरण विजयकीर्ति

काष्ठासंघ शृगार विविध विद्यारससागर ।
नदीतटगच्छ काव्य पुराण गुण आगर ॥
सूरि विश्वसेन पाटि प्रगट सूरि विजयकीर्ति वंदित चरण ।
महेंद्रसेन एव वदति राम सीता मगलकरण ॥ १६०

(म. ८५)

लेखांक ६७५ – बारामासी

काष्टासुसंघ नदीतट मडित विश्वसेनगुरु गाजतुही ।
विजयकीर्ति तस पाट प्रभाकर महेंद्रसेन शिष्य राजतुही ॥ १३
(म. ८५)

लेखांक ६७६ – पार्श्वमूर्ति विद्याभूषण

सं. १६०४ वर्षे वैशाख वदी ११ शुक्रे काष्टासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भ. श्रीरामसेनान्वये भ. श्रीविशालकीर्नि तत्पट्टे भ. श्रीविश्वसेन तत्पट्टे भ. श्रीविद्याभूषणेन प्रतिष्ठितं हूवड ज्ञातीय गृहीतदीक्षा वाई अनंत मती नित्यं प्रणमति ।

(बडौदा द पृ. ६७)

लेखांक ६७७ – पार्श्वमूर्ति

संवत् १६३८ श्रीकाष्ठासंघे भ विद्याभूषण प्रतिष्ठितं हुवड सा जयवंत ।

(ज प्र. किल्लेदार, नागपुर)

लेखांक ६७८ – द्वादशानुप्रेक्षा

विद्याभूषण इम कहे जे चिंतए दिड रात ।
द्वादशानुप्रेक्षा भली धन्य धन्य तेहनी माय ॥ १७

(म. १२०)

लेखांक ६७९ –

श्रेष्ठी सुजाण हरदाससुत काष्टासंघमानंदकर ।
विश्वसेन पट्टि भलु सूरि विद्याभूषण वदइ प्रवर ॥ ४

(म ४९)

लेखांक ६८० –

विश्वसेन सिष्यह सुगुण ज्ञान दान दाता चतुर ।
कवि राजनभट्ट समुच्चरइ विद्याभूषण वंदू प्रवर ॥ १६७

(म ४९)

लेखांक ६८१ – श्रीभूषण

संवत् पट दृग संम पड्यू पचोत्तर प्राक्रम ।
सीतावर सह कोय हठी हठ यासह हाकिम ॥

पाडी करी पोगाल देशनीकालो दीधो ।
मत्तचोरासीमाही उत्तर कोने नवि कीधो ॥
पुछीयु तन जागीरने वली धर्म पूछ्यो मुदा ।
दिगंवर धर्म दीवानथी श्रीभूषणे राख्यो मदा ॥ १०७

(म. ४९)

लेखांक ६८२ – पार्श्वमूर्ति

शक १५०१ मा तिथि ८ काष्ठासंघे भ. श्रीश्रीभूषण सदुपदेशात् प. जयवंत ।

(ल. मे. पिंजरकर, नागपुर)

लेखांक ६८३ – शांतिनाथ पुराण

विद्याभूषणपट्टकंजतरणि श्रीभूषणो भूषणो ।
जीयाज्जीवदयापरो गुणनिधिः संसेवित सज्जनैः ॥
काष्ठासंघसरित्पतिः शशधरो वादी विशालोपमः ।
सद्वृत्तोर्कधरोऽतिसुंदरतरो श्रीजैनमार्गानुगः ॥ ४६१
संवत्सरे षोडशनामधेये एकोनशतषष्ठियुते वरेण्ये ।
श्रीमार्गशीर्षे रचित मया हि शास्त्रं च वर्षे विमलं विशुद्धम् ॥ ४६२
त्रयोदशीसद्दिवसे विशुद्ध वारे गुरौ शांतिजिनस्य रम्यं ।
पुराणमेतद् विमलं विशाल जीयाच्चिरं पुण्यकर नराणाम् ॥ ४६३
श्रीगुर्जरेऽस्ति पुर प्रसिद्धं सौजित्रनामाभिधमेव सारं ।
श्रीनेमिनाथस्य समीपमाशु चकार शास्त्रं जिनभूतिरम्यम् ॥ ४६६

(जैन साहित्य और इतिहास पृ ३४५)

लेखांक ६८४ – पद्मावती मूर्ति

संवत १६६० वर्षे फाल्गुण शुदि १० श्रीकाष्ठासंघे लाडवागडगच्छे भ. प्रतापकीर्त्याम्नाये बघेरवाल ज्ञातीय प्रणमंति श्रीकाष्ठासंघे नदीतट-गच्छे भ श्रीश्रीभूषण प्रतिष्ठित ।

(व. हि. जोगी, नागपुर)

लेखांक ६८५ – रत्नत्रय यंत्र

संवत १६६५ वर्षे माघ सुदि १० शुक्रे श्रीकाष्ठासंघे भ. श्रीभूषण-प्रतिष्ठितं श्रीर्यचारित्रयंत्रं नित्यं प्रणमंति ।

(नादगाव, अ. ४ पृ ५०४)

लेखांक ६८६ – चंद्रप्रभ मूर्ति

संमत १६७६ वर्षे माघ वदी ८ श्रीकाष्टासंघे लाडवागडगच्छे भ. श्रीप्रतापकीर्त्याम्नाये बघेरवालज्ञातौ वोरखंड्यागोत्रे धर्मजी सा भार्या अंबाई तयोः पुत्र लखमण सा प्रमुख पंच पुत्रा सभार्या सपुत्रा श्रीचंद्रप्रभुं प्रणमंति। श्रीकाष्ठासंघे नंदीतटगच्छे भ. श्रीभूषणप्रतिष्ठितं वहादुरपुरे ।

(परवार मन्दिर, नागपुर)

लेखांक ६८७ – द्वादशांग पूजा

अर्चे आगमदेवता सुखकरां लोकत्रये दीपिकां ।
नीराज्य प्रतिकारकैः क्रमयुगं संपूज्य वोधप्रदां ॥
विद्याभूषणसद्गुरो. पदयुगं नत्वा कृतं निर्मलं ।
सच्छ्रीभूषणसंज्ञकेन कथितं ज्ञानप्रद वुद्धिद ॥

(म. २६)

लेखांक ६८८ –

माकुही मात कृष्णासाह तात श्रीभूषण विख्यात दिन दिनह दीवाजा
वादीगजघट्ट दीयत सुथट्ट न्यायकु हट्ट दीवादीव दीपाया ॥ १२९

(म. ४९)

लेखांक ६८९ –

काष्टादिसंघमडन तिलक श्रीभूषण सूरिवर जयो ।
सुविवेक ब्रह्म एवं वदति सकल संघ मंगल भयो ॥ १५८

(म ४९)

लेखांक ६९० –

काष्ठासंघ गछपति राउ देखो सब लोके सुरतको आनंद पायो ।
वादीचंदको मान उतारि करीव देखो श्रीभूषण सुरेश्वर आयो ॥ १६

(म. ४९)

लेखांक ६९१ –

जिम श्रीभूषण देखी करी तिम वादीचंद्र रडथड पडे ।
कवि राजमल्ल कहे सांभलो मूलसंघ हैडे रडे ॥ ११०

(म. ४९)

लेखांक ६९२ –

काष्ठासंघकुल अभिनवो श्रीभूषण प्रकट सदा ।
सोमविजय एव वदति नृत्य करे नारी मुदा ॥ १०३

(म. ४९)

लेखांक ६९३ – श्रावकाचार

संक्षेपि कह्या मि त्रेहपन भेद । विस्तार सिद्धांत कहि ते वेद ॥
श्रीभूषण गछनायक सीस । हेमचंद्र सबोध कही पणवीस ॥ २५

(म. २८)

लेखांक ६९४ –

श्रीभूषणसूरिराज दिनकरसम भाज अधिक वध्दुएला जय जयकरण ।
नेमिजिनस्वामी चंग सकलकर्मनु भग शिव वधू कियु संग गुणसेन सरण ॥१०

(म. ४९)

लेखांक ६९५ –

काष्ठासंघ गछाभरण श्रीभूषण कहिये सुगुण ।
हर्षसागर एव वदति सकलसंघ–मगल–करण ॥ १०१

(म. ४९)

लेखांक ६९६ – नेमि धर्मोपदेश

काष्ठासंघ उदयगिरि जाण। विद्याभूषण गछपति भाण ॥
तस पद मंडन निर्मलमती। श्रीभूषण गिरुया गछपती ॥
तास शिष्य बोले मनहार। ब्रह्म ज्ञानसागर सुविचार ॥ ४१

(म. २९)

लेखांक ६९७ – नेमिनाथ पूजा

श्रीकाष्ठसंघोदयवासरेश-श्रीभूषणाद्यैर्मुनिभिः प्रवंद्यः।
श्रीनेमिनाथो जगतां सुखाय भूयात् सदा ज्ञानसमुद्रवंद्य. ॥

(म. २९)

लेखांक ६९८ – गोमटदेव पूजा

यो हर्ताखिलकर्मणां भुजवली कर्ता सदा शर्मणां।
यो दाता त्वभयस्य संसृतिवने त्राता जगत्तारक. ॥
काष्ठासंघमहोदयाद्रिदिनकृत्श्रीभूषणाद्यै. स्तुत.।
ब्रह्मज्ञानसमर्चितो भवहर. पायात् सतां सर्वदा ॥

(म. ११४)

लेखांक ६९९ – पार्श्वनाथ पूजा

श्रीभूषणं नाम परं पवित्रं श्रीपार्श्वनाथ धरणेंद्रपूज्य।
श्रीज्ञानपाथोनिधिपूज्यपाद स्तुवे सदा मोक्षपदार्थसिद्ध्यै ॥

(म. ११३)

लेखांक ७०० – जिन चउवीसी

भावसहित जे पढी त्रिकाल। तास मनोवांछित गुणमाल ॥
श्रीभूषण गुरु पद आधार। ब्रह्म ज्ञानसागर कहे सार ॥ ५१

(म. ७६)

लेखांक ७०१ – द्वादशी कथा

रोग शोक संतापह टले । मनवांछित पद पूरण मले ॥
श्रीभूषण सुत द्वारा लहे । ब्रह्म ज्ञानसागर इम कहे ॥ ३६

(ना. ३)

लेखांक ७०२ – दशलक्षण कथा

भट्टारक श्रीभूषण वीर । तिनके चेला गुणगंभीर ॥
ब्रह्म ज्ञानसागर सुविचार । कही कथा दशलक्षण सार ॥ ३७

[जैन व्रतकथा संग्रह, दिल्ली, १९२१]

लेखांक ७०३ – अक्षरबावनी

काष्ठासंघ समुद्र विविध रत्नादिक पूरित ।
नंदितटगच्छ भाण पाप मिथ्यामत चूरित ॥
विद्यागुणगंभीर रामसेन मुनि राजे ।
तास अनुक्रम धीर श्रीभूषण सूरि गाजे ॥
कलियुगमां श्रुतकेवलि पट्टदर्शनगुरु गछपति ।
तास शिष्य एवं वदति ब्रह्म ज्ञानसागर यति ॥ ५३
वंश वघेर प्रसिद्ध गोत्र एह भणिज्जे ।
श्रावक धर्म पवित्र काष्ठासंघ गणिज्जे ॥
संघपति बापु नाम लघु वय बहु गुणधारी ।
दयावंत निर्दोष सब जनकु सुखकारी ॥
उसकी प्रीत विशेषथे पढनेकु बावनी करी ।
ब्रह्म ज्ञानसागर वदति आगमतत्त्व अमृत भरी ॥ ५४

(म ७५)

लेखांक ७०४ – राखीबंधन रास

विद्याभूषण गुरु गछपती । श्रीभूषण शिष्ये शुभ मती ॥
ब्रह्म ज्ञान बोले मनोहार । राखीबंधन कथा विचार ॥ ७६

(ना. ८)

लेखांक ७०५ – पल्यविधान कथा

काष्ठासंघ परमसुरेंद्र । श्रीभूषणगुरु हितकर चंद्र ॥
तस पदपंकज–मधुकर रहे । ब्रह्म ज्ञानसागर इम कहे ॥ ८०

(ना. ८)

लेखांक ७०६ – निःशल्याष्टमी कथा

काष्ठासंघ कुलांबरचंद । श्रीभूषणगुरु परमानंद ॥
तस पदपंकज–मधुकर सार । ज्ञानसमुद्र कहे सार ॥ ६२

(ना. ८)

लेखांक ७०७ – श्रुतस्कंध कथा

ए व्रततु फल एहउ जाण । श्रीजिणराज कह्यु बखाण ॥
श्रीभूषणपद वंदी सदा । ब्रह्म ज्ञानसागर कहे मुदा ॥ ४८

(ना. ८)

लेखांक ७०८ – मौन एकादशी कथा

काष्ठासंघ उदयगिर भान । सकल कला विद्या गुण जान ॥
विश्वसेन गछपति गुणवंत । विद्याभूषण सुरिवर संत ॥ ७६
श्रीभूषण भट्टारक सार । दयावंत विद्याभंडार ॥
तास सिस्य मनभावे करी । ब्रह्म ज्ञान कथा उच्चरी ॥ ७७

(ना ८)

लेखांक ७०९ – पार्श्वनाथ पुराण   चंद्रकीर्ति

काष्ठासंघे गच्छनंदीतटीय. श्रीमद्विद्याभूषणाख्यश्च सूरि ।
आसीत्पट्टे तस्य कामांतकारी विद्यापात्र दिव्यचारित्रधारी ॥
यदग्रतो नैति गुरुर्गुरुत्व श्लाघ्य न गच्छत्युशनोपि बुद्धया ।
भारत्यपि नैति माहात्म्यमुग्र श्रीभूषण सूरिवर. स पायात् ॥
श्रीमद्देवगिरौ मनोहरपुरे श्रीपार्श्वनाथालये ।
वर्षेऽब्धीपुरसैकमेय इह वै श्रीविक्रमांके सरे ॥

सप्तम्यां गुरुवासरे श्रवणभे वैशाखमासे सिते ।
पार्श्वाधीशपुराणमुत्तममिदं पर्याप्तमेवोत्तरम् ॥
इति त्रिजगदेकचूडामणिश्रीपार्श्वनाथपुराणे श्रीचंद्रकीर्त्याचार्यप्रणीते भगव-
न्निर्वाणकल्याणकव्यावर्णनो नाम पचदशः सर्गः ॥

(जैन साहित्य और इतिहास पृ. ३४६)

लेखांक ७१० -- पद्मावती मूर्ति

संवत १६८१ वर्षे फाल्गुन सुदि २ काष्टासंघे भ. चंद्रकीर्ति...
नरसिंगपुराज्ञातीय सा सजण. . ।

(अ. ४ पृ. ५०४)

लेखांक ७११ -- पार्श्वनाथ पूजा

श्रीभूषणालंकृतविश्वसेन-नरेंद्रसूनुर्जिनपार्श्वनाथः ।
श्रीचंद्रकीर्ति मनतं पुनातु वाणारसीपत्तनमंडन व ॥

(म. ५६)

लेखांक ७१२ -- नंदीश्वरपूजा

अस्ति श्रीकाष्टसंघो यतिजनकलितो गच्छनंदीतटाको ।
विद्यापूर्वे गणातेऽजनिपत गुरवो रामसेनाश्च तस्मिन् ॥
तद्वंशे रेजिरे वै मुनिगणसहिताः सूरयो विश्वसेना ।
विद्याभूषाख्यसूरिर्जिनमतिरभवत्तत्पदांभोधिचंद्र. ॥
तत्पट्टोदयभूधरैकतरणि पंचेष्वरण्यारणिः ।
श्रीश्रीभूषणसूरिराट् विजयते सर्वज्ञविद्याचणः ॥
तच्छिष्यो जिनपादपद्ममधुपः श्रीचंद्रकीर्तिर्वरं ।
तेनाचार्यवरेण निर्मितमिदं नांदीश्वरायार्चनं ॥

(म. ११२)

लेखांक ७१३ -- ज्येष्ठजिनवर पूजा

काष्टासंघमहोदयाद्रिमिहिर श्रीभूषणाद्यैः स्तुतः ।
पायोभिर्घृतदुग्धादिव्यदधिभिश्रेक्षोरसैस्तर्पित. ॥

ज्येष्ठे मासि समर्चित' पुरुपांतर्दिव्यार्चनैश्चाष्टधा ।
देयाद् व' मतत सुमुक्तिविभव श्रीचद्रकीर्तिस्तुत ॥

(म. ११५)

लेखांक ७१४ – षोडशकारण पूजा

एतान्युत्तमकारणानि सतत देयासुरत्यद्भुतं ।
राज्यं प्राज्यमनेककुंजरघटाश्वस्यंदनाग्रेसरं ॥
लक्ष्मीछत्रसुचामरासनयुतां स्वर्गापवर्गश्रिय ।
भव्येभ्य' प्रियदर्शनव्रतगुणश्लाघ्येभ्य एवोत्तमं ॥
एतद् व्रतं य. सततं विधत्ते समोदते सयजते त्रिकाल ।
संभावयत्यर्चनवस्तुभेदैः यात्येप मोक्षं किल चंद्रकीर्तिः ॥

(म. ७)

लेखांक ७१५ – सरस्वतीपूजा

सकलसुखनिधानं विश्वविद्याप्रधान। वहुतरमहिमान चद्रकीर्तीशमानं। पठति परमभक्त्या यः सदा शुद्धभाव । स इह सुसमयश्रीभूपण' स्यात् सदैव ॥

(म. १०९)

लेखांक ७१६ – जिन चउवीसी

श्रीभूषणसूरि वंदित पद वीरनाथ विद्याभरण ।
सकलसंघ जयकार कर चंद्रकीर्ति चर्चितचरण ॥ २४

(म. ४४)

लेखांक ७१७ – पांडव पुराण

इष्ट देव वंदि करी भाव शुद्धि मन आनए ।
चंद्रकीर्ति एवं वदति कथा भारती वर्णए ॥ १

(म. ८६)

लेखांक ७१८ – गुरुपूजा

ईदृग्विधान् मुनिवरान् खलु चद्रकीर्तीन्
स्तुत्वा च ये परिणमंति च संयजंते ॥

ध्यायंति ते सुरनरोरगराजसौख्यं
भुक्त्वा भवंति विबुधाः किल सौख्यभाज. ॥

(म. ११०)

लेखांक ७१९ –

दक्षिणमें राजत वादिवज्रांकुश चंद्रसुकीर्ति ये चिद्‌घन री ।
दिगंबरमे यह सोभित वादि जु मानत पंडित चिद्‌घन री ॥ २५

(म. ४९)

लेखांक ७२० –

कर्णाटक देश मनोहर सुंदर सोभत नरसिंहपाटन रे ।
कावेरीके तीर जु आवत संघहे त्रास पड्यो सब विद्धनु रे ।
चंद्रकीर्ति सुवादि विकटहि जानिके मान भट्टसुपंडित बोलतु रे ।
बोलत लक्ष्मण वादके कारण भट्ट सुकृष्ण ये आवतु रे ॥ १९
प्रथम सुवचनमे वादि जु खडत कृष्णसुभट्ट ये हारतु रे ।
न्यायके युक्तिसु बोलत वादि रे चंद्रसुकीर्ति जय पावतु रे ॥
वाजत ढोल तबल्ल निसानसु मानत भूपति सिर आनतु रे ।
काष्टासंघ दिवाकरकु येह देखन आवत चारुसुकीर्तिय रे ॥ २०

(म. ४९)

लेखांक ७२१ – चौरासी लक्षयोनि विनती

काष्ठासंघ विख्यात प्रसिद्ध गच्छ नंदीतट सार ।
विश्वसेन विश्वाभरण विद्याभूषण गुरु भवतार ॥
श्रीभूषण प्रताप घणो महिमंडल दूजो भान ।
चंद्रकीर्ति तस पट्ट विराजे माने वादी सब आन ॥
श्रीगुरुचरण नामी करी विनवे लक्ष्मण जिनराज ।
हवे कर्मबंध छेदो प्रभु अवर नहीं मुझ काज ॥ २९

(म. १५)

लेखांक ७२२ – बारामासी

मुगति वरी श्रीनेमि जिनेश्वर राजुल स्वर्ग सुख पावत रे ।
विद्याभूसन पाट दिवाकर सूरि श्रीभूसन सोभत रे ॥
काष्ठासुसंघ विख्यात प्रसिद्ध ये नंदीतट गछ सुहावत रे ।
चंद्रसुकीर्तिके सिष्य विराजत बोलत लक्ष्मण पंडित रे ॥ १३

(ना. १२३)

लेखांक ७२३ – तीन चउवीसी विनती

काष्ठासंघ उदयाचल भान । सूरि श्रीभूषण पट्ट बखान ॥
चंद्रकीर्ति सूरीश्वर जान । तास शिष्य लक्ष्मण बोले बान ॥ १९

(म. २०)

लेखांक ७२४ – पार्श्वनाथ विनती

काष्ठासंघे गुणह गंभीर । सूरिश्रीभूषण पट्ट सुधीर ।
चद्रसुकीर्ति नमित नरसीस । सेवक लखमन चरन विसेस ॥ १२

(म. ३२)

लेखांक ७२५ – राजकीर्ति

चंद्रसुकीर्ति पट्टोधर राजसुकीर्ति राया मण रजी ।
बानारसि मध्य विवाद करी धरी मान मिथ्यातको मनकुं भजी ॥
पालखी छत्र सुखासन राजित भ्राजित दुर्जन मनकु गंजी ।
हीरजी ब्रह्म के साहिब सद्गुरु नाम लिये भवपातक भंजी ॥ २१८

(म. ४९)

लेखांक ७२६ –

गादी लाल गुलाल राजकीर्ति गुरु बैसे सही ।
हेमसागर एव वदति मिथ्या तिमिर छेदे सही ॥ ११४

(म. ४९)

लेखांक ७२७ – रविवार व्रत कथा

श्रीभूषण गुरु काष्ठासंघ । चन्द्रकीर्ति गुरु जग जसवंत ॥
राजकीर्ति गौतम सम जाण । ब्रह्म ज्ञानंनि कियो बखाण ॥ ४३

(म २५)

लेखांक ७२८ – (लाडबागड गच्छ पट्टावली)

भ. श्रीराजकीर्ति तत्पट्टे भ श्रीलक्ष्मीसेन विजयराजे भ. राजकीर्ति तत्सिष्य प हाजी लिखितं ॥ इति श्रीगुर्वावली समाप्ता ॥

(म. ३८)

लेखांक ७२९ – पद्मावती मूर्ति लक्ष्मीसेन

शके १५६१ वर्ष फाल्गुण वदी १० शनिश्चरे काष्ठासंघे लाडबागड-गच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये श्रीनरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. प्रतापकीर्त्याम्नाये बघेरवाल ज्ञाति वोरखंड्या गोत्र सा भावा भार्या गोमाई तयोः पुत्र सा पासा द्वितीय पुत्र देयासा नित्यं प्रणमंति श्रीकाष्ठासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे रामसेनान्वये भ. श्रीलक्ष्मीसेन प्रतिष्टित ।

(पा. ११५)

लेखांक ७३० – बाहुबली मूर्ति

समत १७०३ वर्षे ज्येष्ठ वदी १० शुक्रे श्रीकाष्टासंघे लाडबागडगच्छे लोहाचार्यान्वये वराडप्रदेशे कारंजीनगरे प्रतापकीर्ति आम्नाय बघेरवाल ज्ञातिय मावला गोत्र सा श्रीरमसा भार्या पद्माई . एते समस्त श्रीकाष्टा-संघे नंदीतटगच्छे रामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ श्रीविश्वसेन तत्पट्टे भ विद्याभूषण तत्पट्टे भ. श्रीभूषण तत्पट्टे भ चन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ. राजकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीलक्ष्मीसेनजी प्रतिष्टितं ॥

(ना. १३)

लेखांक ७३१ – पार्श्वमूर्ति इंद्रभूषण

शके १५८० माघ सुदी ५ सोमे कारंजानगरे काष्ठासंघे नदीतटगच्छे भ. इद्रभूषणप्रतिष्ठित वघेरवाल ज्ञाति गोवल गोत्रे.. ॥

(ना. २६)

लेखांक ७३२ – पद्मावती मूर्ति

शके १५८० माघ सुदी ५ सोमवार काष्ठासंघे नंदीतटगच्छे भ. श्रीइद्रभूषण प्रतिष्ठितं वघेरवाल ज्ञातौ चोरखंडिया गोत्रे तेऊजी .. ॥

(मा स. महाजन, नागपुर)

लेखांक ७३३ – विंध्यगिरि लेख

संवत् १७१८ वर्षे वैसाष सुदि ७ सोमे श्रीकाष्ठासघे मण्डि [नन्दि] तटगच्छे ..श्रीराजकीर्ति. तत्पट्टे भ श्रीलक्ष्मीसेन तत्पट्टे भ. श्रीइंद्रभूषण तत्पट्टे शोसू [श्रीसुरेंद्रकीर्ति ?], वघेरवाल जाती वोरखञ्ज चाई-पुत्र पंभा धनाइ . सपरिवारे गोमट स्वामिचा जात्रा सफल ॥

(जैन शिलालेख सग्रह १, पृ. २३०)

लेखांक ७३४ – कोकिळ पंचमी कथा

काष्टासंघ गछाधिप राय । इंद्रभूषण गुरु प्रणमी पाय ॥
हर्षसहित श्रीपति व्रह्मा कहे । सकलसंघ धर लक्ष्मी वहे ॥ ५६
संमत सत्तरसे छेतीस । चैत्र सुधी पडवानो दीस ॥
कथासंवंध संपूरण थयो । सकल संघने मंगल भयो ॥ ५७

(ना. ८)

लेखांक ७३५ – गोमटस्वामी स्तोत्र

इति परमजिनेद्रो गोमटाख्यो जिनोव्यात्
कुगतिजननदु.खाद्व: सदा संस्तुतोसौ ।
सुकृतसदनकाष्टासंघमुख्येंद्रभूषा–
भिधविहितनिदेशाद् भूपतिप्राज्ञमिश्रै ॥ ९

(म. ३१)

लेखांक ७३६ –

इंद्रभूषण सूरिराय पाय विद्वज्जन वंदित ।
राजकीर्तिनो शिष्य वेऽयमत दूरे स्थापित ॥
सकलदेशमाहे प्रगट कविजनमाहे मानती ।
जिनसेन कहे मूलसंघ सेनगण वारवार करती स्तुती ॥ १४

(म. ४९)

लेखांक ७३७ –

श्रीकाष्ठासंघ नाम प्रथम गोत्र पचवीस ।
मूलसंघ उपदेश गोत्र अते सत्तावीस ॥
वघेरवाल वड ज्ञाति गोत्र वावण गुणपूरा ।
धर्मधुरंधर धीर परम जिण मारग सूरा ॥
महाव्रतधारक श्रीभट्टारक लक्ष्मीसेनय जानिये ।
गुरु इंद्रभूषण गंगसमसुगुण नरेंद्रकीर्ति वखाणिए ॥ ११२

(म. ४९)

लेखांक ७३८ – गुरुस्तुति

स्वस्ति स्यात्पदलांछिते वरगणे काष्ठादिसंघे सुधीः
ख्यातः प्रीतमना नृणां वहुमत. श्रीराजकीर्तिस्ततः ।
लक्ष्मीसेनविभुस्ततोथ विलसच्छ्रीजैनभूषामणिः
जीयाद् वासवभूषणश्च सुकृतेर्वीजस्य रक्षामणि. ॥

(म. १०८)

लेखांक ७३९ –

काष्ठासंघ गछांवर ए मुनि सुंदर इंदु सो इंद्रभूषण विराजे ।
सुमत्यब्धि कहे गछपति समो अन्य कोइ नहीं अवनी मान पावे ॥१४

(म ४९)

लेखांक ७४० –

श्रीराजकीर्ति शिष्यह सुगुण लक्ष्मीसेन पट्टोधरण ।

नरेंद्रसागर इत्थं वदति श्रीइंद्रभूषण तारण तरण ॥ ८९

(म. ४९)

लेखांक ७४१ –

न्यायप्रमान मुखाम्र जु वोलत वादिगजांकुस मर्दतु रे ।
ब्रह्म रुपाब्धि कहे जु यनीपेरे इंद्रभूषण सोभतु रे ॥ १२

(म. ४९)

लेखांक ७४२ –

इंद्रभूषण हे सूर दूर कृत अन्य मतेंद्रह ।
काष्ठासंघ शृंगार हार तस मध्य मुनेंद्रह ॥
जिनदास कहे सुर कुर मनमथ वादी मारये ।
कुवादवादींद्र इंद्र सकलही हारये ॥ १४८

(म. ४९)

लेखांक ७४३ –

चारित्रपात्र त्रिभुवनविदित सील सौख्य शोभे सदा ।
द्विज विश्वनाथ इम उच्चरे इंद्रभूषण सेवो मुदा ॥ १२१

(म. ४९)

लेखांक ७४४ – रत्नत्रय यंत्र   सुरेंद्रकीर्ति

संवत् १७४४ सके १६०९ फाल्गुण सुद १३ श्रीकाष्ठासंघे लाडवागडगच्छे भ प्रतापकीर्त्याम्नाये बघेरवालज्ञातौ गोवाल गोत्रे स. पदाजी भार्या तानाई ..प्रणमति । श्रीकाष्ठासंघे नदीतटगच्छे भ. इंद्रभूषण तत्पट्टे भ सुरेंद्रकीर्तिः ॥

(ना. ५७)

लेखांक ७४५ – मेरु मूर्ति

सवत १७४७ शाके १६१२ प्रमोदनाम सवत्सरे ज्येष्टमासे कृष्णपक्षे सातम बुधवासरे नदीतटगच्छे भविध [विद्या] गणे भ श्रीरामसेनान्वये

तत्पट्टे भ. श्रीविशालकीर्ति ..तत्पट्टे भ. श्रीदेवेंद्रभूषण तत्पट्टे भ. श्रीसुरेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं ॥

(सूरत, दा. पृ. ४६)

लेखांक ७४६ – रत्नत्रय यंत्र

संवत १७४७ सके १६१२ ज्येष्ठ वदी ७ भ. श्रीइंद्रभूषण तत्पट्टे भ सुरेंद्रकीर्ति प्रतिष्ठितं । श्रीकाष्ठासंघे लाडवागडगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भ श्रीनरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये बघेरवाल ज्ञाति गोवाल गोत्रे सं. वापु पुत्र सं भोज श्री अवढनगर प्रतिष्ठितं ॥

(ना. ६०)

लेखांक ७४७ – भरत भुजवली चरित्र

श्रीकाष्ठांबर संग गंग सम निर्मल कहिये ।
क्षालित पाप कलंक पंक गणधर मुनि सहिये ॥
लोहाचार्य वर मुनी गुणी सहु शास्त्रह ज्ञाता ।
कलयुग जानी चार गछ थापे सुभ दाता ॥
पुन्नाट वागड गछ जु नंदीतट माथुर ये ।
गण चार नाम जु जुवा तेहना पति भासुर ये ॥ २१७
पुन्नाटसंज्ञक गछ स्वछ पुष्करगण राणो ।
विनयंधर सुरेश ईश तद्वंशे मानो ॥
प्रतापकीर्ति भट्टारक तर्कशिरोमणि धामह ।
तत्पट्टे अतिसुहन भुवनकीर्ति अभिरामह ॥
गछ नंदीतट विद्यागण सुरेंद्रकीर्ति नित्त वंदिये ।
तस्य शिष्य पामो कहे दुखदरिद्र निकंदिये ॥ २१८
सक सोडस सत चौद वुद्ध फाल्गुण सुदपक्षह ।
चतुर्थीदिन चरित्र धरित पूरण करी दक्षह ।
कारजो जिनचंद्र इंद्रवंदित नमि स्वार्थे ।
संघवी भोजनी प्रीत तेहना पठनार्थे ॥
वलि सकलश्रीसघने येथि सहू वांछित फले ।
चक्रिकाम नामे करी पामो कहे सुरतरु फले ॥ २१९

(म. ८७)

लेखांक ७४८ – अष्टद्रव्य छप्पय

काष्ठासंघ–उदयाचल दिनमनिसम गुरु वंदिए ।
सुरेंद्रकीर्ति पत्कज भ्रमर पामो कहे अर्धक दिए ॥ ९

(ना. १२३)

लेखांक ७४९ – नवकार पचीसी

गछ नंदीतट नाम धरातल काष्ठासंघ विद्यागण धारै ।
रामसुसेन परंपरमाहि सुरेंद्रकीरति भट्टारक वारै ॥
संवत सत्तरसै वरसै फुनि अंक एकावन मान विचारै ।
आदिजिनेंद्र कला अधिकी धनसागरकी मति एम वधारै ॥ २४
वागड देस वसै नगरी अभिधान गिरीपुर इंद्रपुरीसी ।
कोटडिया किरपाल नरोत्तम हुंबड न्याति विसेसहि वीसी ॥
आदिजिनेंद्रभुवनविचै जिनमूरति राजत कचनकीसी ।
ब्रह्म भणे धनसागरजी तिहां पूरि भई नवकारपचीसी ॥ २५

(म. ८१)

लेखांक ७५० – विहरमान तीर्थंकर स्तुति

गुज्जर खडमें है गुजरात तिहां पुर राजपुरादिक नामी ।
हुंबड भट्टपुरा मनोहार जिनोक्त मारगके विसरामी ॥
संवत सत्तर त्रेपनमांहि तिहां श्रिय संघको आग्रह पामी ।
जोडि रची धनसागर सीतलनाथ जिनेसरके सिर नामी ॥ २६
काष्टासुमघ विख्यात वरिष्ठ नदीतटगछ विद्यागणधारक ।
रामसुसेनपरपरमाहि सुवासवभूषण दूषणवारक ॥
पट्ट प्रभाकर है तिनको विद्यमान सुरेंद्रकीर्ति भट्टारक ।
तेह समे धनसागर ब्रह्म कवित्त वखान करै सुखकारक ॥ २७

(म. ८२)

लेखांक ७५१ – चौवीसी मूर्ति

सवत १७५३ वर्षे वैसाख सुदि ७ सनौ श्रीकाष्टासघे लाडवागडगच्छे लोहाचार्यान्वये तदनुक्रमे भ श्रीप्रतापकीर्ति तदाम्नाये बघेरवालज्ञातौ

गोवालगोत्रे संघवी भोज भार्या पद्माई.. श्रीकाष्ठासंघे नंदीतटगच्छे रामसेनान्वये तदनुक्रमे भ. इंद्रभूषण तत्पट्टे भ. सुरेंद्रकीर्ति ॥

(ना. ५५)

लेखांक ७५२ – केशरियाजी मंदिर

संवत १७५४ वर्षे पौपमासे कृष्णपक्षी पंचम्यां बुध श्रीकाष्टासंघे नंदीतटगच्छे विद्यागणे भ. श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ. श्रीराजकीर्ति तत्पट्टे भ. श्रीलक्ष्मीसेन तत्पट्टे भ. श्रीइंद्रभूषण तत्पट्टे भ. श्रीसुरेंद्रकीर्त्युपदेशात् दसा हूमड ज्ञातीय वृद्धशाखायां विश्वेश्वरगोत्रे सहा अल्हावंश .. इत्यादि सपरिवार सह संघवी पाहर तेन लघु प्रासाद कारपिता शुभं भवतु॥

(वीर २ पृ. ४६०)

लेखांक ७५३ – केशरियाजी मंदिर

स्वस्तिश्री संवत् १७५६ वर्षे शाके १६५ (२) ९ प्रवर्तमाने सर्वजितनाम संवत्सरे मासोत्तम मासे कृष्णपक्षे १३ तिथौ शुक्रवासरे श्रीकाष्ठासंघे लाडवागडगच्छे लोहाचार्यान्वये तदनुक्रमेण भ. श्रीप्रतापकीर्ति आम्नाये श्रीकाष्ठासंघे नदीतटगच्छे विद्यागणे भ. श्रीरामसेनान्वये तदनुक्रमेण भ. श्रीश्रीभूपण... भ. श्रीइंद्रभूपण तत्पट्टकमलमधुकरायमान भ. श्रीसुरेंद्रकीर्ति विराजमाने प्रतिष्ठितं बघेरवालज्ञाति गोवालगोत्र संघवी श्रीअल्हा भार्या कुडाई .. ।

(वीर २ पृ. ४६०)

लेखांक ७५४ – पार्श्वपुराण

काष्ठासंघ प्रसिद्ध गछ नंदीतट नायक ।
विद्यागण गंभीर सकल विद्या गुण गायक ॥
रामसेन आम्नाय इंद्रभूषण भट्टारक ।
तत्पट्टोद्धर धीर सुरेंद्रकीर्ति भट्टारक ॥
तद्वदन विनिर्गत अमृतसम मद्रुपदेश वानी सुनी ।
षट्चरण पास जिनवरतणा जोड्या धनसागर गुणी ॥ १४४
देश वराड मझार नगर कारंजा सोहे ।
चद्रनाथ जिन्न चैत्य मूल नायक मन मोहे ॥

काष्टासंघ सुगछ लाडवागड वड भागी ।
बघेरवाल विख्यात न्यात श्रावक गुणरागी ।
जिनधर्मी जमुना संघपति सुत पूंजा संघपति वचन ।
चितमैं धरी अत्याग्रह थकी रची सुधनसागर रचन ॥ १४५
षोडश शत एकवीस शालिवाहन शक जाणो ।
रस भुज भुज भुज प्रमित वीर जिन शाक वखाणो ॥
विक्रम शाक विवक्त वरस सत्रासे वीते ।
उत्तर छप्पनमांहि असित आश्विन वी दीजे ॥
कुलमंगल मगलवार दिन मंगल मंगल तेरसी ।
धनसागर पासजिनेसका पट्पद वचन कहे रसी ॥ १४६

(म. ८३)

लेखांक ७५५ – पद्मावती पूजा

श्रीमच्चंद्रनाथस्य चंचच्चैत्यालये वरे ।
काष्टासघे गुणोपेते गच्छे नंदीतटाह्वये ॥ १
विद्यानामगणे रम्ये भट्टारकपुरंदरा. ।
श्रीमद्रामसेनाह्वा अभूवन् सर्वसिद्धिदा. ॥ २
तदन्वयवियच्छोभाकरणे सूर्यतुल्यभाः ।
जाता भट्टारका भव्या श्रीइंद्रभूषणाह्वयाः ॥ ३
तत्पादाबुजभृगाभा' श्रीमत्सुरेंद्रकीर्तयः ।
चक्रे पद्मावतीपूजा तै श्रीसूर्यपुरे वरे ॥ ४
श्रीमद्दक्षिणदेशीय. अजनपुरवास्तव्य' ।
हिरासंघपति. परं ॥ ५
तत्सुतोप्यतिधर्मिष्ट पुजाख्य' सद्गुणोदधि ।
तस्याग्रहवशाद्रम्या नानापद्यसमन्विता ॥ ६
वह्निमुन्येश्वरात्रीश १७७३ प्रमिते वत्सरे मुदा ।
रवौ च कृष्णपचम्या मासे भाद्रपदाह्वये ॥ ७

(ना ८२)

लेखांक ७५६ – कल्याणमंदिर स्तोत्र

काष्ठावर गण गयण रयण अति सौम्याकार ।

भट्टारक मुनि दक्ष इंद्रभूषण गुणधारं ॥
तास पट्ट उदयाद्रि कीर्ति सुरेंद्र विचारी ।
क्रियापात्र परधान भव्यजने हितकारी ॥
कुमुदचंद्र कृत स्तुति प्रवर तास कवित्त कीधा मुदा ।
सुरेंद्रकीर्ति गछपति कहे भणता सुखसंपत्ति सदा ॥ ४५

(म ८८)

लेखांक ७५७ – एकीभाव स्तोत्र

भट्टारक गुणपूर इंद्रभूषण जगभूषण ।
पट्टधर परधान सदा राजे गतदूषण ॥
सुरेंद्रकीर्ति गछपति कह्या एकीभाव तणो कवित्त ।
भनता सुनता दिनप्रति ते नर पामे मुगति हित ॥ २६

(म. ८८)

लेखांक ७५८ – विषापहार स्तोत्र

गणनायक गुरुराज इंद्रभूषण मतिपूरा ।
सकलसंघ परिवार धर्ममारगमां सूरा ॥
सुरेंद्रकीर्ति गछपति प्रवर पट्टोद्धर पदवीधरण ।
विषापहार कृत कवित वर भव्यजीव जग उद्धरण ॥ ४०

(म ८८)

लेखांक ७५९ – भूपाल स्तोत्र

श्रीजिनमार्ग विसुद्ध गछ काष्ठांबर दाख्यो ।
विविध क्रियाकलाप सकलगुणपूरण भाख्यो ॥
भट्टारक मुनिराज इंद्रभूषण गछधारी ।
तास पट्ट सुविशाल सदा सोभे आचारि ॥
सुरेंद्रकीर्ति मुनिपति सकल नित्य ध्यान जिनवर करे ।
भूपाल कवितरचना रची भनता बहु पातक हरे ॥ २७

(म. ८८)

लेखांक ७६० – गुरुपादुका　　विजयकीर्ति

स्वस्तिश्री सं. १८१२ माघ सुदी ५ गुरौ काष्ठासंघे श्रीविजयकीर्ति-गुरूपदेशात् सुरेंद्रकीर्तिगुरुपादुका नित्यं प्रणमति ।

(सूरत, दा. पृ ५२)

लेखांक ७६१ – शीतलनाथ मूर्ति

स्वस्तिश्री नृपविक्रमात् १८१२ माघ सुदी ५ गुरौ श्रीमत् काष्ठासघ नंदीतटगच्छे विद्यागणे श्रीरामसेनान्वये भ. श्रीलक्ष्मीसेन तत्पट्टे भ. श्रीविजयकीर्तिविजयराज्ये सुरतबंदरे वास्तव्य मेवाडा ज्ञाती लघुशाखायां सा सनाथा विशनदास सुत विठल भ्राता मूलजी इत्यादि पुत्रपौत्रादि विह सह श्रीसीतलनाथबिंब नित्यं प्रणमति ।

(सूरत, दा. पृ. ५०)

लेखांक ७६२ – गुरुपूजा

श्रीमत् श्रीभूषणाख्यः तदुपरि शशिकीर्त्युत्तरे राजकीर्ति. ।
सेनांतश्चेदिरादिस्तदनु शतमखस्योत्तरे भूषणेति ॥
श्रीमानेव सुरेंद्रकीर्तिरभवत् लक्ष्मी च सेनो ह्यतः ।
तत्पट्टे जयतामसौ विजयकीर्त्याख्य सदा बुद्धिमान् ॥

(ना. ५७)

लेखांक ७६३ – अकृत्रिम चैत्यालयबावनी　　सकलकीर्ति

देश बराड मझारि नगर अजनपुर सोभै ।
तिहा जिनवरना चैत्य पद्मप्रभ मन मोहै ॥
पूज करै अति सार श्रावक विविध प्रकारी ।
सघ चतुर्विध दान देइ शक्ति अनुसारी ॥
सवत्सर अष्टादश सही षोडश ऊपरि जानए ।
आश्विन मास सुभ सुक्ल पक्ष पचम्या गुरुवार वखाणए ॥ ५५
काष्टासंघ विख्यात गछ नदीतट जानो ।
सुरेन्द्रकीर्ति गुरु सार तत पट नाम वखानो ॥

सकलकीर्ति सोभत गछपति महाछवि छाजे।
तस पदमधुकर जाणि ब्रह्म चंद्र अनुराजे ॥
बुधि ओछी विस्तार बहु पंडित जन सब समझ करी।
क्षमाभाव तुम्हें कीजिए चैत्य बावनी अनुसरी ॥ ५६

(ना. १२३)

लेखांक ७६४ – सरस्वतीमूर्ति देवेंद्रकीर्ति

संवत् १८८१ वर्षे माघ मासे शुद्ध ५ सोम श्रीकाष्ठासंघे भ सुरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. देवेंद्रकीर्ति राजोमान ज्ञाति बघेरवाल · ॥

(ना. ५०)

लेखांक ७६५ – नवग्रहयन्त्र

संवत १८८५ मार्गशिर्ष वद १२ गुरु दिने श्रीकाष्ठासंघे लाडवागडगच्छे भ प्रतापकीर्ति आम्नाये नंदीतटगच्छे भ सुरेंद्रकीर्ति तत्पट्टे भ. देवेंद्रकीर्ति राज्यमान ज्ञाति बघेरवाल गोत्र वोरखंड्या सा खेमासा सुत पूनासा यंत्रं प्रणमंति ॥

(मा स. महाजन, नागपुर)

लेखांक ७६६ – पुरन्दर–व्रतकथा

काष्ठासंघ उद्योतनिधान। सुरेंद्रकीर्ति गुरु तास बखाण ॥
तस पट्टे अति रलियावनी। देवेंद्रकीर्ति यतिशिरोमणी ॥ ५७
तास सेवक बोले सुजान। खेमा सुत सा पूना वान ॥
मंदबुद्धि अक्षर जो सही। कर लीज्यो तुम्हे सुद्धे सही ॥ ५८

(म ४६)

काष्ठासंघ-नन्दीतट गच्छ

इस गच्छ का नाम नन्दीतट ग्राम (वर्तमान नान्देड–बम्बई राज्य) पर से लिया गया है। देवसेन कृत दर्शनसार के अनुसार यहीं कुमारसेन ने काष्ठासंघ की स्थापना की थी (ले. ६४७)। इस गच्छ का दूसरा विशेषण विद्यागण है जो स्पष्टत. सरस्वतीगच्छ का अनुकरण मात्र है। तीसरा विशेषण रामसेनान्वय है। इन के विषय मे कहा गया है कि नरसिंहपुरा जाति की स्थापना इन ने की तथा उस शहर मे शान्तिनाथ का मन्दिर बनवाया (ले. ६४८–४९)। इन के शिष्य नेमिसेन ने पद्मावती की आराधना की तथा भट्टपुरा जाति की स्थापना की (ले. ६५०)।

इतिहास काल में रत्नकीर्ति के पट्टशिष्य लक्ष्मीसेन से नन्दीतट गच्छ का वृत्तान्त उपलब्ध होता है।[१२७] इन के दो शिष्यो से दो परम्पराए आरम्भ हुई। भीमसेन और धर्मसेन ये इन दो शिष्यो के नाम थे।

भीमसेन के पट्टशिष्य सोमकीर्ति हुए। आप ने संवत् १५३२ मे वीरसेनसूरि के साथ एक शीतलनाथ मूर्ति स्थापित की (ले. ६५१), संवत् १५३६ मे गोढिली मे यशोधरचरित की रचना पूरी की (ले. ६५२) तथा संवत् १५४० मे एक मूर्ति स्थापित की (ले. ६५३)। आप ने सुलतान पिरोजशाह के राज्यकाल मे पावागढ मे पद्मावती की कृपा से आकाश गमन का चमत्कार दिखलाया था (ले ६५४)।[१२८]

सोमकीर्ति के बाद क्रमश विजयसेन, यशःकीर्ति, उदयसेन, त्रिभुवनकीर्ति तथा रत्नभूषण भट्टारक हुए। रत्नभूषण के शिष्य कृष्णदास ने कल्पवल्ली[१२९] पुर मे संवत् १६७४ मे विमलनाथपुराण की रचना की। इन के पिता का नाम हर्षसाह तथा माता का नाम वीरिका था। (ले.

१२७ रत्नकीर्ति के पहले पट्टावली मे उपलब्ध होनेवाले नामो के लिए देखिए– दानवीर माणिकचन्द्र पृ. ४७

१२८ सोमकीर्ति ने प्रद्युम्नचरित तथा सप्तव्यसन कथा इन दो ग्रन्थों की रचना क्रमश. संवत् १५३१ तथा संवत् १५२६ मे की थी (अनेकान्त वर्ष १२ पृ. २८)

१२९ कलोल (जिला पचमहाल– गुजरात)

६५५)।[130] रत्नभूषण के दूसरे शिष्य जयसागर ने स्येष्ठजिनवर-पूजा, पार्श्वनाथ पंच कल्याणिक तथा तीर्थजयमाला की रचना की (ले. ६५६-६०)।[131]

रत्नभूषण के बाद जयकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने संवत् १६८६ में एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की (ले. ६६१)।

जयकीर्ति के पट्ट पर केशवसेन भट्टारक हुए। इन के बन्धु का नाम मंगल था तथा पट्टाभिषेक इंदोर में हुआ था।[132] इन की रची आदिनाथपूजा उपलब्ध है (ले. ६६२-६४)।

केशवसेन के पट्टपर विश्वकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने संवत् १७०० में हरिवंशपुराण की एक प्रति लिखी (ले. ६६५) तथा आप के शिष्य मनजी ने संवत् १६९६ में न्यायदीपिका की एक प्रति लिखी। (ले. ६६६)

नन्दीतट गच्छ की दूसरी परम्परा लक्ष्मीसेन के शिष्य धर्मसेन से आरम्भ होती है। इन की लिखी हुई अतिशयजयमाला उपलब्ध है। वीरदास ने इन की प्रशंसा की है (ले. ६६७-६८)।

धर्मसेन के बाद क्रमशः विमलसेन और विशालकीर्ति भट्टारक हुए। इन के शिष्य विश्वसेन ने संवत् १५९६ में एक मूर्ति स्थापित की (ले. ६६९)। इन की लिखी आराधनासारटीका उपलब्ध है (ले. ६७०)। विशालकीर्ति ने डूंगरपुर में इन्हें अपना पद सौंपा था (ले. ६७२)। दक्षिणदेश में भी इन का विहार हुआ था (ले. ६७३)। विजयकीर्ति और विद्याभूषण ये इन के दो पट्टशिष्य थे। विजयकीर्ति के शिष्य महेन्द्रसेन ने सीताहरण और बारामासी ये दो काव्य लिखे हैं (ले ६७४-७५)।

---

१३० कृष्णदास ही सम्भवतः भट्टारक केशवसेन हैं- (ले ६६३) में इन के माता पिता के नाम देखिए।

१३१ सम्भवतः ज्ञानभूषण के शिष्यरूप में (ले. ४८६) में इन्हीं रत्नभूषण का उल्लेख हुआ है।

१३२ पूर्वोक्त नोट १३० देखिए।

विश्वसेन के पट्टशिष्य विद्याभूषण ने संवत १६०४ में तथा संवत् १६३६ में दो पार्श्वनाथ मूर्तियां स्थापित की (ले ६७६–७७)। इन ने द्वादशानुप्रेक्षा की रचना की (ले ६७८)। हरदाससुत तथा राजमल्ल ने इन की प्रशंसा की है (ले ६७९–८०)।

विद्याभूषण के बाद श्रीभूषण पट्टाधीश हुए। संवत् १६३४ में इन का श्वेताम्बरों से वाद हुआ था और उस के परिणामस्वरूप श्वेताम्बरों को देशत्याग करना पड़ा था (ले ६८१)। इन ने संवत् १६३६ में एक पार्श्वनाथ मूर्ति स्थापित की (ले ६८२)। सोजित्रा में संवत् १६५९ में शान्तिनाथपुराण की रचना आप ने पूरी की (ले. ६८३)। आप ने संवत् १६६० में एक पद्मावतीमूर्ति, संवत १६६५ में एक रत्नत्रय यन्त्र तथा संवत् १६७६ में एक चन्द्रप्रभ मूर्ति स्थापित की (ले. ६८४–८६)। आप की लिखी द्वादशांगपूजा उपलब्ध है (ले. ६८७)। आप के पिता का नाम कृष्णसाह तथा माता का नाम माकुही था (ले. ६८८)। आप ने वादिचंद्र को वाद में पराजित किया था (ले. ६९०–९१)। विवेक, राजमल्ल और सोमविजय ने आप की प्रशंसा की है (ले. ६८९–९२)। आप के शिष्य हेमचन्द्र ने श्रावकाचार नामक छोटीसी कविता लिखी है (ले ६९३)। गुणसेन और हर्षसागर ने भी आप की प्रशंसा की है (ले. ६९४–९५)।

श्रीभूषण के प्रधान शिष्य ब्रह्म ज्ञानसागर थे। इन ने संघपति बापू के लिए अक्षर बावनी लिखी (ले ७०३)। नेमि धर्मोपदेश, नेमिनाथ-पूजा, गोमटदेव पूजा, पार्श्वनाथ पूजा, जिन चउवीसी, द्वादशी कथा, दश-लक्षण कथा, राखी बन्धन रास, पल्यविधान कथा, निःशल्याष्टमी कथा, श्रुतस्कन्ध कथा, मौन एकादशी कथा ये इन की अन्य रचनाएं हैं (ले ६९६–७०८)।[१३३]

---

१३३ पं. नाथूराम प्रेमी ने श्रीभूषण की साम्प्रदायिकता पर प्रकाश डाला है– देखिए जैन साहित्य और इतिहास पृ ३४० । इस में इन के प्रतिबोध चिन्तामणि नामक ग्रन्थ का भी उल्लेख किया गया है।

श्रीभूषण के वाद चन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने सवत् १६५४ मे देवगिरि मे पार्श्वनाथ पुराण लिखा था (ले. ७०९)। आप ने सवत १६८१ में एक पद्मावती मूर्ति स्थापित की (ले. ७१०)। पार्श्वनाथ पूजा, नन्दीश्वरपूजा, ज्येष्ठजिनवरपूजा, षोडशकारण पूजा, सरस्वती पूजा, जिन चउवीसी, पाडवपुराण तथा गुरुपूजा ये रचनाए चन्द्रकीर्ति ने लिखीं (ले. ७११–१८)। चन्द्रकीर्ति ने दक्षिण की यात्रा करते समय कावेरी के तीर पर नरसिंहपट्टन मे कृष्णभट्ट को वाद में पराजित किया। इस समय चारुकीर्ति भट्टारक भी उपस्थित थे (ले. ७२०)।

चन्द्रकीर्ति के शिष्य लक्ष्मण ने चौरासी लक्ष योनि विनती, बारामासी, तीन चउवीसी विनती, तथा पार्श्वनाथ विनती की रचना की (ले. ७२१–२४)। पंडित चिद्घन ने चंद्रकीर्ति की प्रशसा की है (ले. ७१९)।

चन्द्रकीर्ति के पट्ट पर राजकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने वाणारसी मे विवाद मे जय प्राप्त किया। हीरजी और हेमसागर ने आप की प्रशसा की है (ले. ७२५–२६)। ब्रह्म ज्ञान ने इन के समय रविवार व्रत कथा लिखी (ले. ७२७) तथा इन के शिष्य प. हाजी ने लाडवागड गच्छ की पट्टावली की एक प्रति लिखी (ले. ७२८)।

राजकीर्ति के पट्टशिष्य लक्ष्मीसेन हुए। आप ने शक १५६१ मे पद्मावती मूर्ति, तथा सवत् १७०३ मे बाहुबली मूर्ति स्थापित की (ले. ७२९–३०)।

लक्ष्मीसेन के वाद इन्द्रभूषण भट्टारक हुए। आप ने शक १५८० में एक पार्श्वनाथ मूर्ति तथा एक पद्मावती मूर्ति स्थापित की (ले ७३१–३२)। आप के कुछ शिष्यो ने सवत् १७१८ में गोमटेश्वर की यात्रा की (ले. ७३३)।[१३४] इन के शिष्य श्रीपति ने सवत् १७३६ में कोंकिल

---

१३४ मूल लेख से प्रतीत होता है कि यह यात्रा सुरेन्द्रकीर्ति के समय हुई किन्तु सवत् निर्देश इन्द्रभूषण के समय के लिए ही अधिक उपयुक्त है।

पचमी कथा लिखी (ले. ७३४)। इन की आज्ञा से भूपतिमिश्र ने गोमटस्वामी स्तोत्र लिखा (ले. ७३५)। जिनसेन, नरेन्द्रकीर्ति, सुमतिसागर, नरेन्द्रसागर, रूपसागर, जिनदास एव द्विज विश्वनाथ ने इन्द्रभूषण की प्रशसा की है (ले. ७३६–४३)। इन के समय बघेरवाल जाति के ५२ गोत्रो मे २५ गोत्र काष्ठासघ के अनुयायी थे (ले. ७३७)।

इन्द्रभूषण के बाद सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने सवत् १७४४ मे रत्नत्रय यन्त्र, सवत १७४७ मे मेरुमूर्ति तथा इस वर्ष भी एक रत्नत्रय यन्त्र स्थापित किया (ले. ७४४–४६)। आप के शिष्य पामो ने संवत् १७४९ में भरत भुजबलि चरित्र की रचना की (ले. ७४७)। इन ने अष्टद्रव्य छप्पय भी लिखे (ले ७४८)। सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य धनसागर ने सवत् १७५१ मे नवकार पचीसी लिखी तथा संवत् १७५३ मे विहरमान तीर्थंकर स्तुति की रचना की (ले. ७४९–५०) सुरेन्द्रकीर्ति ने संवत् १७५३ मे चौवीसी मूर्ति स्थापित की तथा सवत् १७५४ तथा सवत् १७५६ मे केशरियाजी क्षेत्र पर दो चैत्यालयो की प्रतिष्ठा की (ले. ७५१–५३)। आप के पूर्वोक्त शिष्य धनसागर ने सवत् १७५६ मे पार्श्वपुराण लिखा (ले. ७५४)। सुरेन्द्रकीर्ति ने संवत् १७७३ मे पद्मावती पूजा लिखी (ले. ७५५)। आप ने कल्याणमन्दिर, एकीभाव, विषापहार, भूपाल इन चार स्तोत्रो का छप्पयो मे रूपान्तर किया (ले. ७५६–५९)।

सुरेन्द्रकीर्ति के तीन पट्टशिष्य ज्ञात है। लक्ष्मीसेन, सकलकीर्ति और देवेन्द्रकीर्ति ये उन के नाम थे। लक्ष्मीसेन के पट्ट पर विजयकीर्ति भट्टारक हुए। आप ने सवत् १८१२ मे सुरेन्द्रकीर्ति की चरणपादुकाए स्थापित की तथा एक शीतलनाथ मूर्ति भी स्थापित की (ले. ७६०–६२)।

सुरेन्द्रकीर्ति के दूसरे शिष्य सकलकीर्ति थे। इन के शिष्य चन्द्र ने सवत् १८१६ मे अकृत्रिम चैत्यालय बावनी लिखी (ले. ७६३)।

सुरेन्द्रकीर्ति के तीसरे पट्टधर देवेन्द्रकीर्ति हुए। आप ने संवत् १८८१ में एक सरस्वती मूर्ति तथा संवत १८८५ में एक नवग्रह यन्त्र की स्थापना की (ले. ७६४–६५)। देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य पूना ने पुरन्दर व्रत कथा की रचना की (ले ७६६)।

काष्ठासंघ–नन्दीतट गच्छ–कालपट

रत्नकीर्ति
|
लक्ष्मीसेन
|
भीमसेन ——— धर्मसेन [अगला पृष्ठ देखिए]
|
सोमकीर्ति [संवत् १५२६–१५४०]
|
विजयसेन
|
यशःकीर्ति
|
उदयसेन
|
त्रिभुवनकीर्ति
|
रत्नभूषण [संवत् १६७४]
|
जयकीर्ति [संवत् १६८६]
|
केशवसेन
|
विश्वकीर्ति [संवत् १६९६–१७००]

धर्मसेन
|
विमलसेन
|
विशालकीर्ति
|
विश्वसेन [संवत् १५९६]
|
विजयकीर्ति

विद्याभूषण [संवत् १६०४-१६३६]
|
श्रीभूषण [संवत् १६३४-१६७६]
|
चन्द्रकीर्ति [संवत् १६५४-१६८१]
|
राजकीर्ति
|
लक्ष्मीसेन [संवत् १६९६-१७०३]
|
इन्द्रभूषण [संवत् १७१५-१७३६]
|
सुरेन्द्रकीर्ति [संवत् १७४४-१७७३]
|

लक्ष्मीसेन
|
विजयकीर्ति
[संवत् १८१२]

सकलकीर्ति
[संवत् १८१६]

देवेन्द्रकीर्ति
[संवत् १८८१-८५]

परिशिष्ट ३ भट्टारक नाम सूची

[परिशिष्टों मे सर्वत्र लेखांक का सन्दर्भ दिया है।]

अजितकीर्ति (कुमुदचन्द्र के शिष्य) ११३
अजितकीर्ति (विशालकीर्ति के शिष्य) २०५,२०६
अजितकीर्ति (हेमकीर्ति के शिष्य) २१८–२२०
अनन्तकीर्ति (महेन्द्रकीर्ति के शिष्य) ३००
अनन्तकीर्ति (महेन्द्रसेन के शिष्य) ६२९
अनन्तकीर्ति (मुनिचन्द्र के शिष्य) ९०
अनन्तकीर्ति (श्रेयाससेन के शिष्य) ५८४
अनन्तकीर्ति (सहस्रकीर्ति के शिष्य) नो. ५३
अनन्तवीर्य १५
अभयचन्द्र ५१४–५१६
अभयनन्दि ५१७–५२१
अमरकीर्ति (चन्द्रकीर्ति के शिष्य) ५५३–५५४
अमरकीर्ति (चारुकीर्ति के शिष्य) ९८
अमरकीर्ति (धर्मभूषण के शिष्य ९५–९६
अमरचन्द्र ४१९–४२०
अमरसेन नो. ९९
अमितगति (देवसेन के शिष्य) ५४२
अमितगति (माधवसेन के शिष्य) ५४२–५४०
अमितसेन ६२२
अर्ककीर्ति ६२३
अष्टोपवासी २५
आर्यनन्दि १, २
आर्यसेन ११
इन्द्रभूषण ७३१–७४३
उदयसेन ६५५
उद्धरसेन ५५८,५७३
एकवीर १५
कनककीर्ति (मुनीन्द्रकीर्ति के शिष्य) नो. ५३
कनककीर्ति (रामकीर्ति के शिष्य) नो ६८
कनकसेन (वीरसेन के शिष्य) ९
कनकसेन (श्रवणसेन के बन्धु) १४
कमलकीर्ति (अनन्तकीर्ति के शिष्य) ५८५–५८६
कमलकीर्ति (हेमकीर्ति के शिष्य ५९०–५९२
कल्नेलेदेव १५
कल्याणकीर्ति २०४
कीर्तिषेण ६२२
कुमारसेन (कमलकीर्ति के शिष्य) ५९६,५९८
कुमारसेन (भानुकीर्ति के शिष्य) ५७७–५७९
कुमारसेन (सेनान्वय) ९
कुमुदचन्द्र (देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य) ११३–११६
कुमुदचन्द्र (नेसर्गी) ९२
कुलभूषण ६२७
कूविलाचार्य ६२३
केशवदेव ९०
केशवनन्दि ८९
केशवसेन ६६२–६६४

गुणकीर्ति (कल्याणकीर्ति के शिष्य) २०४
गुणकीर्ति (सहस्त्रकीर्ति के शिष्य) ५५५–५५६
गुणकीर्ति (सुमतिकीर्ति के शिष्य) ३७८–३८१
गुणचन्द्र (गुणभद्र के शिष्य) ५७३
गुणचन्द्र (यशःकीर्ति के शिष्य) ६००–६०१
गुणचन्द्र (सिंहनन्दि के शिष्य) ४०३–४०६
गुणभद्र (माथुर गच्छ) ५५१
गुणभद्र (जिनसेन के शिष्य) ५–८
गुणभद्र (मलयकीर्ति के शिष्य) ५६५–५७५
गुणभद्र (माणिक्यसेन के शिष्य) ३८
गुणभद्र (सोमसेन के शिष्य) २३–२४
गुणसेन २९
गुणाकरसेन ६२६
गोपसेन ६२५
चन्द्रकीर्ति (अजितकीर्ति के शिष्य) २२१–२२२
चन्द्रकीर्ति (गुणकीर्ति के शिष्य) २०४
चन्द्रकीर्ति (नेमिचन्द्र के शिष्य) ३९४
चन्द्रकीर्ति (प्रभाचन्द्र के शिष्य) २६९,२८६
चन्द्रकीर्ति (महेन्द्रकीर्ति के शिष्य) प्र ८
चन्द्रकीर्ति (रत्नकीर्ति के शिष्य) ५३९–५४०
चन्द्रकीर्ति (श्रीधर के शिष्य) ९१
चन्द्रकीर्ति (श्रीभूषण के शिष्य) ७०९–७२४
चन्द्रकीर्ति (श्रीषेण के शिष्य) नो. ९९
चन्द्रकीर्ति (ज्ञानभूषण के शिष्य) नो. ५३
चन्द्रप्रभ १२
चन्द्रभूषण (जिनेन्द्रभूषण के शिष्य) नो. ५६
चन्द्रभूषण (सुरेन्द्रभूषण के शिष्य) नो. ५६
चन्द्रसेन १,२
चारुचन्द्रभूषण नो. ५६
चित्रसेन ६३१
छत्रसेन (माथुरान्वय) ५५०
छत्रसेन (समन्तभद्र के शिष्य) ५२–६३
जगत्कीर्ति (देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य) ६१४
जगत्कीर्ति (सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य) २७०
जगद्भूषण ३१०–३१३
जयकीर्ति ६६१
जयसेन (गुणाकरसेन के गुरु) ६२६
जयसेन (पुन्नाट गण) ६२२
जयसेन (भावसेन के शिष्य) ६२५
जिनसेन (वीरसेन के शिष्य) २–८
जिनसेन (सोमसेन के शिष्य) ४५–५१
जिनचन्द्र (गुणचन्द्र के शिष्य) ४०७
जिनचन्द्र (मेरुचन्द्र के शिष्य) ५०७
जिनचन्द्र (शुभचन्द्र के शिष्य) २४७–२६४
जिनेन्द्रभूषण (मुनीन्द्रभूषण के शिष्य) नो. ५६
जिनेन्द्रभूषण (लक्ष्मीभूषण के शिष्य) ३२५–३२७
जिनेन्द्रभूषण (हरेन्द्रभूषण के शिष्य) नो. ५६

त्रिभुवनकीर्ति (उदयसेन के शिष्य) ६५५
त्रिभुवनकीर्ति (देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य) ५२३--५२४
त्रिभुवनकीर्ति (पद्मसेन के शिष्य) ६३५
त्रिभुवनकीर्ति (प्रतापकीर्ति के शिष्य) ६४४
त्रिभुवनकीर्ति (क्षेमकीर्ति के शिष्य) ६०७
दुर्लभसेन ६२७
देवचन्द्र ४२४
देवसेन (अमितगति के गुरु) ५४२
देवसेन (उद्धरसेन के शिष्य) ५५८--५७३
देवसेन (कुलभूषण के गुरु) ६२७
देवसेन (धारसेन के शिष्य) २०
देवेन्द्रकीर्ति (धर्मचन्द्र के शिष्य, नागोर) २९४
देवेन्द्रकीर्ति (धर्मचन्द्र के शिष्य, देवेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य) १८६--१९२
देवेन्द्रकीर्ति (धर्मचन्द्र के शिष्य, विशालकीर्ति के प्रशिष्य) १४८--१७८
देवेन्द्रकीर्ति (धर्मभूषण के शिष्य) १०८--११२
देवेन्द्रकीर्ति (नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य) प्र ६
देवेन्द्रकीर्ति (पद्मनन्दि के शिष्य, ईडर) ३१०--३०१
देवेन्द्रकीर्ति (पद्मनन्दि के शिष्य, कारंजा) नो २९
देवेन्द्रकीर्ति (पद्मनन्दि के शिष्य, सूरत) ४२५--४२६
देवेन्द्रकीर्ति (महीचन्द्र के शिष्य) ६१३
देवेन्द्रकीर्ति (रत्नकीर्ति के शिष्य) नो २९
देवेन्द्रकीर्ति (विद्यानन्द के शिष्य) १०२--१०३
देवेन्द्रकीर्ति (विद्यानन्दि के शिष्य) ५०९--५१०
देवेन्द्रकीर्ति (सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य) ७६४--७६६
देवेन्द्रभूषण (जिनेन्द्रभूषण के शिष्य) नो. ५६
देवेन्द्रभूषण (विश्वभूषण के शिष्य) ३२०
देशनन्दि ९३
धर्मकीर्ति (त्रिभुवनकीर्ति के शिष्य) ६३६--६३७
धर्मकीर्ति (भुवनकीर्ति के शिष्य) २८०--२८१
धर्मकीर्ति (ललितकीर्ति के शिष्य) ५२५--५३२
धर्मकीर्ति (सिंहकीर्ति के शिष्य) ३०९
धर्मचन्द्र (कुमुदचन्द्र के शिष्य) ११७--१२६
धर्मचन्द्र (देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य, धर्मचन्द्र के प्रशिष्य) १७९--१८५
धर्मचन्द्र (देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य, विद्यानन्द के प्रशिष्य) १०४--१०५
धर्मचन्द्र (विद्याभूषण के शिष्य) ५१२--५१३
धर्मचन्द्र (विशालकीर्ति के शिष्य) ५१२--५१३
धर्मचन्द्र (विशालकीर्ति के शिष्य) १३६--१४७
धर्मचन्द्र (शुभकीर्ति के शिष्य) २२९--२३०

धर्मचन्द्र (श्रीभूषण के शिष्य) २९२–२९३
धर्मभूषण (अमरकीर्ति के शिष्य) ९५–९६
धर्मभूषण (धर्मचन्द्र के शिष्य कुमुदचन्द्र के प्रशिष्य) १२७–१३५
धर्मभूषण (धर्मचन्द्र के शिष्य, देवेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य) १०६–१०७
धर्मभूषण (वर्धमान के शिष्य) ९६–९७
धर्मभूषण (शुभकीर्ति के शिष्य) ९५–९६
धर्मसेन (लक्ष्मीसेन के शिष्य) ६६७–६६८
धर्मसेन (विमलसेन के शिष्य) ५५८, ५७३
धर्मसेन (शान्तिषेण के गुरु) ६२५
धारसेन ११
नयनन्दि ९१
नयसेन ५८२
नरेन्द्रकीर्ति (देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य) २६९
नरेन्द्रकीर्ति (मलयकीर्ति के शिष्य) ६४०–६४१
नरेन्द्रकीर्ति (सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य) प्र ६
नरेन्द्रकीर्ति (क्षेमकीर्ति के शिष्य) ३०३
नरेन्द्र भूषण नो ५६
नरेन्द्रसेन ६४–६९
नागेन्द्रकीर्ति २२१–२२२
नेमिचन्द्र (विजयकीर्ति के शिष्य) ३९४
नेमिचन्द्र (श्रीधर के शिष्य) ९१
नेमिचन्द्र (सहस्रकीर्ति के शिष्य) २८५–२८७
नेमिषेण (नन्दीतट गच्छ) ६५०
नेमिषेण (माथुर गच्छ) ५४२
पद्मकीर्ति (धर्मकीर्ति के शिष्य) ५३६
पद्मकीर्ति (विशालकीर्ति के शिष्य) २०७–२०९
पद्मनन्दि (चन्द्रकीर्ति के शिष्य) नो. ५३
पद्मनन्दि (देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य) नो. २९
पद्मनन्दि (प्रभाचन्द्र के शिष्य) २३७–२४१
पद्मनन्दि (रामकीर्ति के शिष्य) ३८७–३८९
पद्मनन्दि (सहस्रकीर्ति के शिष्य) प्र. १२
पद्मनन्दि (हेमचन्द्र के शिष्य) ५९६
पद्मप्रभ ९१
पद्मसेन ६३२–६३४
पल्हपण्डित १५
प्रतापकीर्ति ६४२–६३४
प्रभाचन्द्र (जिनचन्द्र के शिष्य) २६५–२६८
प्रभाचन्द्र (बालचन्द्र के शिष्य) १५
प्रभाचन्द्र (रत्नकीर्ति के शिष्य) २३३–२३६
प्रभाचन्द्र (ज्ञानभूषण के शिष्य) ४८७–४९०
बालचन्द्र १५
ब्रह्मसेन ११
भवनभूषण ३०१
भानुकीर्ति (गुणभद्र के शिष्य) ५७६
भानुकीर्ति (यशःकीर्ति के शिष्य) २८९–२९०

भावसेन (गोपसेन के शिष्य) ६२५
भावसेन (धर्मसेन के शिष्य) ५५८,५७३
भीमसेन ६५२
भुवनकीर्ति (रत्नकीर्ति के शिष्य) २७८–२७०
भुवनकीर्ति (सकलकीर्ति के शिष्य) ३४३–३५१
मलयकीर्ति (धर्मकीर्ति के शिष्य) ६२८–६३१
मलयकीर्ति (यशःकीर्ति के शिष्य) ५६३–५६४
मल्लिभूषण ४५८–४६३
महासेन (गुणाकरसेन के शिष्य) ६२६
महासेन (ब्रह्मसेन के शिष्य) ११
महीचन्द्र (वादिचन्द्र के शिष्य) ४९९–५००
महीचन्द्र (विशालकीर्ति के शिष्य) १०५–२०१
महीचन्द्र (सहस्रकीर्ति के शिष्य) ६१२
महीभूषण २००–२०३
महेन्द्रकीर्ति (देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य, जयपुर) २७४
महेन्द्रकीर्ति (देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य, नरेन्द्रकीर्ति के प्रशिष्य) प्र. ६
महेन्द्रकीर्ति (विद्यानन्द के शिष्य) २९०
महेन्द्रभूषण ३२५–३२८
महेन्द्रसेन (केशवसेन के शिष्य) ६२८
महेन्द्रसेन (सकलचन्द्र के शिष्य) ५९९–६०५
माणिकनन्दि २०४
माणिकसेन २७–२८
माणिक्यसेन ३७
माधवसेन (चन्द्रप्रभ के शिष्य) १४
माधवसेन (नेमिषेण के शिष्य) ५४२
माधवसेन (प्रतापसेन के शिष्य) ५८०
मुनिचन्द्र ९०
मुनिसेन १६
मुनीन्द्रकीर्ति (राजेन्द्रकीर्ति के शिष्य) ६२१
मुनीन्द्रकीर्ति (क्षेमेन्द्रकीर्ति के शिष्य) नो. ५३
मुनीन्द्रभूषण ३२३–३२४
मेघनन्दि ८९
मेरुचन्द्र ५०१–५०६
मौनिभट्टारक ३२४
यशःकीर्ति (गुणकीर्ति के शिष्य) ५५७–५६२
यशःकीर्ति (नेमिचन्द्र के शिष्य) २८८
यशःकीर्ति (पद्मनन्दि के शिष्य, जेरहट) ५२५–५२९
यशःकीर्ति (पद्मनन्दि के शिष्य, माथुर गच्छ) ५९७–५९८
यशःकीर्ति (रत्नकीर्ति के शिष्य) ४०१–४०२
यशःकीर्ति (रामकीर्ति के शिष्य) ३९५
यशःकीर्ति (विजयसेन के शिष्य) ६५५
यशःकीर्ति (विमलकीर्ति के शिष्य) ६४६
यशःसेन ५९५
युक्तवीर २६

रत्नकीर्ति (अभयनन्दि के शिष्य) ५२२
रत्नकीर्ति (जिनचन्द्र के शिष्य) २५८,२७७
रत्नकीर्ति (देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य) नो. २९
रत्नकीर्ति (धर्मचन्द्र के शिष्य) २३१--२३२
रत्नकीर्ति (ललितकीर्ति के शिष्य) ५३९--५४०
रत्नकीर्ति (लक्ष्मीसेन के गुरु) प्र १६
रत्नकीर्ति (सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य) २९७
रत्नकीर्ति (ज्ञानकीर्ति के शिष्य) ३९९–४००
रत्नचन्द्र (अमरचन्द्र के शिष्य) ४२१-४२३
रत्नचन्द्र (सकलचन्द्र के शिष्य) ४१०–४१५
राजकीर्ति ७२५–७२८
राजेन्द्रकीर्ति ६१८–६२०
राजेन्द्रभूषण ३२८
रामकीर्ति (चन्द्रकीर्ति के शिष्य) ३९५
रामकीर्ति (वादिभूषण के शिष्य) ३८५–३८६
रामकीर्ति (विमलकीर्ति के शिष्य) ६४६
रामकीर्ति (सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य) नो. ६६
रामचन्द्र १३
रामसेन (नन्दीतट गच्छ) ६४८–६४९
रामसेन (माथुर गच्छ) ५४१
रामसेन (सेन गण) १२
ललितकीर्ति (जगत्कीर्ति के शिष्य) ६१५–६१७
ललितकीर्ति (धर्मकीर्ति के शिष्य) ५५२
ललितकीर्ति (यशःकीर्ति के शिष्य) ५२५–५२९
लक्ष्मीचन्द्र (मल्लिभूषण के शिष्य) ४६८–४७६
लक्ष्मीचन्द्र (विशालकीर्ति के शिष्य) २८३
लक्ष्मीभूषण ३२३–३२४
लक्ष्मीसेन (गुणभद्र के शिष्य) ३०–३३
लक्ष्मीसेन (रत्नकीर्ति के शिष्य) ६७१
लक्ष्मीसेन (राजकीर्ति के शिष्य) ७२९–७३०
लक्ष्मीसेन (सिद्धसेन के शिष्य) ८५
लक्ष्मीसेन (सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य) ७६१–७६२
लोकसेन ८
वज्रपाणि १०
वर्धमान ९५–९६
वसन्तकीर्ति २२३–२२५
वादिचन्द्र ४९१–४९८
वादिभूषण ३८२–३८४
वासुपूज्य ९१
विजयकीर्ति (कनककीर्ति के शिष्य) नो. ६६
विजयकीर्ति (कुविलाचार्य के शिष्य) ६२३
विजयकीर्ति (नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य) ३९४
विजयकीर्ति (भवनभूषण के शिष्य) ३०२
विजयकीर्ति (लक्ष्मीसेन के शिष्य) ७६०–७६१
विजयकीर्ति (शान्तिषेण के शिष्य) ६२७
विजयकीर्ति (ज्ञानभूषण के शिष्य) ३६२–३६६
विजयसेन (अनन्तकीर्ति के शिष्य) ६३०
विजयसेन (माधवसेन के शिष्य) ५८१
विजयसेन (सोमकीर्ति के शिष्य) ६५५

विद्यानन्दि (जिनचन्द्र के शिष्य) ५०७–५०८
विद्यानन्दि (देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य) ४२७–४५७
विद्यानन्दि (रत्नकीर्ति के शिष्य) २९८
विद्यानन्दि (विशालकीर्ति के शिष्य) १००–१०१
विद्याभूषण (देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य) ५११
विद्याभूषण (पद्मकीर्ति के शिष्य) २१०
विद्याभूषण (विश्वसेन के शिष्य) ६७६–६८०
विनयनन्दि १५
विनयसेन ४–५
विमलकीर्ति ६४६
विमलसेन (देवसेन के शिष्य) ५५८,५७३
विमलसेन (धर्मसेन के शिष्य) ६७१
विशालकीर्ति (अजितकीर्ति के शिष्य) १९४
विशालकीर्ति (अमरकीर्ति के शिष्य) ९९–१००
विशालकीर्ति (धर्मकीर्ति के शिष्य) २८२
विशालकीर्ति (धर्मभूषण के शिष्य) १३८–१४०
विशालकीर्ति (नागेन्द्रकीर्ति के शिष्य) नो. ३१
विशालकीर्ति (वर्तमान, लातूर) नो. ३१
विशालकीर्ति (वसन्तकीर्ति के शिष्य) ९५,२२६
विशालकीर्ति (विमलसेन के शिष्य) ६७१–६७३
विश्वकीर्ति ६६५–६६६
विश्वभूषण २१४–२१७
विश्वसेन ६६१–६७३
वीरचन्द्र ४७७–४७९
वीरसेन (आर्यनन्दि के शिष्य) १–५
वीरसेन (कुमारसेन के शिष्य) ९
वीरसेन (गुणभद्र के शिष्य) २५
वीरसेन (लक्ष्मीसेन के शिष्य) नो. २०
शान्तिकीर्ति २०४
शान्तिषेण (अमितगति के शिष्य) नो. ९९
शान्तिषेण (दुर्लभसेन के शिष्य) ६२७
शान्तिषेण (धर्मसेन के शिष्य) ६२५
शान्तिषेण (नरेन्द्रसेन के शिष्य) ७०–७६
शीलभूषण ३०९
शुभकीर्ति ९५, २२७–२२८
शुभचन्द्र (कमलकीर्ति के शिष्य) ५९३–५९४
शुभचन्द्र (पद्मनन्दि के शिष्य) २४२–२४६
शुभचन्द्र (विजयकीर्ति के शिष्य) ३६७–३७५
शुभचन्द्र (हर्षचन्द्र के शिष्य) ४१७–४१८
श्रवणसेन ९४
श्रीचन्द्र ८६–८८
श्रीधर (चन्द्रकीर्ति के शिष्य) ९१
श्रीधर (नयनन्दि के शिष्य) ९१
श्रीधरसेन १६
श्रीनन्दि ८६–८८
श्रीभूषण (भानुकीर्ति के शिष्य) २९१
श्रीभूषण (विद्याभूषण के शिष्य) ६८१–७०८

श्रीषेण नो. ९९
श्रुतवीर १८
श्रेयाससेन ५८३
सकलकीर्ति (पद्मकीर्ति के शिष्य) ५३३–५३७
सकलकीर्ति (पद्मनन्दि के शिष्य) ३२९–३४२
सकलकीर्ति (सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य) ७६३
सकलचन्द्र (गुणचन्द्र के शिष्य) ६००–६०१
सकलचन्द्र (जिनचन्द्र के शिष्य) ४०७–४०९
सकलभूषण नो ५३
समन्तभद्र ६१–६२
सहस्त्रकीर्ति (त्रिभुवनकीर्ति के शिष्य, जेरहट) प्र १२
सहस्त्रकीर्ति (त्रिभुवनकीर्ति के शिष्य, माथुरगच्छ) ६०८–६११
सहस्त्रकीर्ति (भावसेन के शिष्य) ५५८, ५७२
सहस्त्रकीर्ति (लक्ष्मीचन्द्र के शिष्य) २८४
सहस्त्रकीर्ति (सकलभूषण के शिष्य) नो ५३
सिद्धसेन ७७–८४
सिंहकीर्ति ३०३–३०८
सिंहनन्दि ४०३ ४६४, ४६६, ४७२
सुखेन्द्रकीर्ति २७६
सुमतिकीर्ति ८९, ३७६–३७७
सुरसेन ६४५
सुरेन्द्रकीर्ति (इन्द्रभूषण के शिष्य) ७४४–७५९
सुरेन्द्रकीर्ति (देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य) २९५–२९६
सुरेन्द्रकीर्ति (नरेन्द्रकीर्ति के शिष्य) प्र ६
सुरेन्द्रकीर्ति (यशःकीर्ति के शिष्य) नो ६६
सुरेन्द्रकीर्ति (सकलकीर्ति के शिष्य) ५३८
सुरेन्द्रकीर्ति (क्षेमेन्द्रकीर्ति के शिष्य) २७६
सुरेन्द्रभूषण (देवेन्द्रभूषण के शिष्य) ३१८–३२२
सुरेन्द्रभूषण (नरेन्द्रभूषण के शिष्य) नो.५६
सोमकीर्ति ६५१–६५४
सोमसेन (गुणभद्र के शिष्य) ३९–४४
सोमसेन (देवसेन के शिष्य) २१–२२
सोमसेन (लक्ष्मीसेन के शिष्य) ३४–३६
सोमसेन (श्रुतवीर के गुरु) १७
हरिषेण (भरतसेन के शिष्य) ६२४
हरिषेण (मौनिभट्टारक के शिष्य) ६२४
हरेन्द्रभूषण नो. ५६
हर्षकीर्ति नो. ५३
हर्षचन्द्र ४१६
हेमकीर्ति (विद्याभूषण के शिष्य, नागौर) नो. ५३
हेमकीर्ति (विद्याभूषण के शिष्य, लातूर) २११–२१७
हेमकीर्ति (क्षेमकीर्ति के शिष्य) ५८८–५८९
हेमचन्द्र ५९६–५९८
हेमनन्दि १५
क्षेमकीर्ति (कमलकीर्ति के शिष्य) ५८७
क्षेमकीर्ति (देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य) ३९२
क्षेमकीर्ति (यशःकीर्ति के शिष्य) ६०६

क्षेमेन्द्रकीर्ति (महेन्द्रकीर्ति के शिष्य) २७६
क्षेमेन्द्रकीर्ति (हेमकीर्ति के शिष्य) नो.५३
ज्ञानकीर्ति ३९६–३९८
ज्ञानभूषण (भुवनकीर्ति के शिष्य) ३५२–३६१
ज्ञानभूषण (रत्नकीर्ति के शिष्य) नो. ५३
ज्ञानभूषण (वीरचन्द्र के शिष्य) ४८०–४८६
ज्ञानभूषण (शीलभूषण के शिष्य) ३१०

परिशिष्ट ४, आचार्यादि–नामसूची

[भट्टारकों के शिष्यों में सम्मिलित मुनि, आर्यिका आदि]

अजित ४३६
अनन्तकीर्ति ४०२
अनन्तमती ६७६
अमरकीर्ति ४५९
अमरजी ४१५
अर्जुनसुत ६२,६९
आगमश्री २४४,३०८
आशाधर ६३२
इन्दुमती १८१
कमलकीर्ति ४९७
कर्मसी ४०८
कल्याणकीर्ति (सूरत) ४५१
कल्याणकीर्ति (ईडर) ३९०–३९१
कल्याणकीर्ति (लाडबागड) ६३४
कल्याणश्री ४५८
कामराज ३८९
कुबेर ३९७
कृष्णदास ६५५–६५६
खुशालदास २७१
गुणदास ३४४,३५१
गुणनन्दि ३६१
गुणसागर ५१४
गुणसेन ६१४
गोमटसागर २००
गोवर्धनदास २७४
गौतमसागर २०३
गंगादास १३७,१३९–१४५
चन्द्र ७६३
चन्द्रसागर १५२–१५५
चन्दाबाई ३००
चारित्रश्री २४४,३००
चारुकीर्ति २२५,२५३
चिद्वन ३१९
चोखचन्द्र २६९

छाहड ४३७
जगत्सिंह ३२१
जनार्दन २०४
जयकीर्ति (दिल्ली) २५३
जयकीर्ति (माथुर) ६०९
जयनन्दि २५३
जयसागर (सूरत) ५०२–५०५
जयसागर (नन्दीतट) ६५०,६५४
६५७–६६०
जिनदास (ईडर) ३४०–३५२,४७५
जिनदास (सूरत) ५०८
जिनदास (नन्दीतट) ७४२
जिनमती ४५८
जिनसागर १५२–१५५,१६४–१७८
जिनसेन ७३६
जीवनदास १६१
तानू ७५
तेजपाल २६९,३९०
त्रिभुवनकीर्ति ३६७
त्रिभुवनचन्द्र ३९१
दशरथगुरु ८
दीपचंद ६११
दीपद २५९
देवकीर्ति (ईडर) ३९०–३९१
देवकीर्ति (माथुर) ५८८
देवजी ३८२
देवदास ३८२
देवश्री ३६५
धनपण्डित ९३
धनपाल २३६
धनसागर ७४९,७५०,७५४
धर्मकीर्ति ४९१
धर्मचन्द्र २६७
धर्मदास ५६६,५७५
धर्मपाल ४३८
धर्मरुचि ५१४
नयनन्दि २५१
नरसिंह २४५,२५३–२५४
नरेन्द्रसागर ७४०
नरेन्द्रसेन ६३२–६३३
नागचन्द्र ३६०
नाथूराम २३५
नेत्रनन्दि २५५
नेमिचन्द्र (सूरत) ४६९
नेमिचन्द्र (जेरहट) ५३६
पद्मकीर्ति ५८८
पंडितदेव २५३
पामो ७४७–७४८
पार्श्वकीर्ति ११७–११९,१२४
पासमति १५९
पुण्यकीर्ति २७९
पुण्यसागर २०५–२०६
पूना ७६६
पूरनमल ५१
प्रतापचन्द्र ५८८
प्रतापश्री ६१०
बिहारीदास ६३,५३८
बुद्धिसागर १६१
भगवतीदास ५९९–६०५
भाणचद ५१२

भीमसेन २५३
भूप ६४३
भूपति ७३५
भोज ३१०
मकरन्द २१७
मतिसागर ४५१
मदनकीर्ति २५४-२५५
मदनदेव २४५
मनजी ६६६
मल्लिदास ३४४
महतिसागर १९०-१९२
महाकीर्ति २०१
महेन्द्रदत्त ४४२
महेन्द्रसेन ६७४-६७५
माडण ५७३
माणिकनन्दि १६२
माणिक्यराज ५९६
मेधावी (मीहा) २५३,२५६,२५८
यश ४०८
रइधू ५६०-५६१
रतन ७४,७८
रत्नकीर्ति (सेनगण) ८१
रत्नकीर्ति (माथुर) ५८९
रत्नश्री ४५८
रत्नसागर १५२-१५५
राघव ८३,४६७
राजनभट्ट ६८०
राजमल्ल (माथुर) ५७८,५७९, ५९८,६०६
राजमल्ल (नन्दीतट) ६९१
रायमल्ल ४०८
रूपचंद १६१
रूपजी १५२,१५५
रूपसागर ७४१
लक्ष्मण (सूरत) ४६०
लक्ष्मण (नन्दीतट) ७२०-७२४
लक्ष्मीदास २७१
लालचन्द्र (ईडर) ३९३
लालचन्द्र (माथुर) ६१५
लालजी ३८९
लोकश्री २४४
वर्धमान १०२
वानारसीदास ७३
विद्यासागर ४९७
विनयश्री २४४
विमलकीर्ति २५८
विश्वनाथ द्विज ७४३
वीरजी १५३,१५५
वीरदास (कारजा) ११६-११७
वीरदास (नन्दीतट) ६६८
वीरमती ५२२
वृषभ १८१-१८५
शालिवाहन ३१३
शान्तमती १८१
शान्तिदास ४७५
शिखरश्री ७३
शंकर ३८०
श्रीपति ७३४
श्रुतकीर्ति (ईडर) ३९०-३९१
श्रुतकीर्ति (जेरहट) ५२३-५२४

श्रुतसागर ४२९--४५७,४६२--४६६,४७२--४७४
सकलकीर्ति ४७१
सजूबाई ३९४
सहस्रकीर्ति ६३८
सयमश्री ४२९
सागरसेन ८६,८८
सिद्धान्तसागर ४७२
सिंहनन्दि ९६
सिंहसेन ५६२
सुमतिकीर्ति (ईडर) ३७०
सुमतिकीर्ति (सूरत) ४८३--४८६,४८८--४८९
सुमतिसागर (सूरत) ५१७--५२१
सुमतिसागर (नन्दीतट) ७३९
सुविवेक ६८९
सोनोपण्डित १९४
सोमविजय (सेन गण) ३१
सोमविजय (नन्दीतट) ६९२
हरजीमल ६१५
हरदासमुत ६७९
हरीराज ५८८
हर्ष ३८०
हर्षमती १०९
हर्षसागर ६९५
हाजी ७२८
हीरजी ७२५
हीराबाई ३०९
हेमकीर्ति (दिल्ली) २४३
हेमकीर्ति (भानपुर) ४१५
हेमकीर्ति (नन्दीतट) ६३८
हेमचन्द्र (दिल्ली) २७९
हेमचन्द्र (माथुर) ५८८
हेमचन्द्र (नन्दीतट) ६९३
हेमपण्डित ४८८
हेमराज ३१७
हेमसागर ७२६
क्षेमकीर्ति २७४
क्षेमचन्द्र ३७०
ज्ञानसागर ६९६–७०८,७२७

परिशिष्ट ५, ग्रन्थ नाम सूची

अकृत्रिम चैत्य जयमाला १८६
अकृत्रिम चैत्य पूजा १८८
अकृत्रिम चैत्य बावनी ७६३
अंगपण्णत्ती ३७३
अठाई व्रत कथा १९७
अणुव्रत रत्न प्रदीप २७९
अतिशय जयमाला ६६७
अध्यात्मतरंगिणी टीका २५६,३८२,३६७
अनन्तनाथ चरित्र ६२९
अनन्तनाथ स्तोत्र ५८
अनन्तनाथ पूजा ४०४
अनन्तव्रत कथा १६८
अनिरुद्ध छप्पय ६०
अनिरुद्ध हरण ५०४
अनेकार्थ नाममाला ६००
अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ पूजा ४६७
अमरसेन चरित ५९६
अम्बिका रास १०९
अरिष्टनेमिचरित ५५९
अष्ट द्रव्य छप्पय ७४८
अष्टसहस्री ३९३
अक्षयनिधान कथा ४६२
अक्षर बावनी ७०३
आकाशपचमी कथा ४४५
आत्मानुशासन ६
आदित्वार कथा (गगादास कृत) १४०
आदित्वार कथा (पुण्यसागर कृत) २०६
आदित्यव्रत कथा १६३
आदिनाथ पूजा ६६२
आदिनाथ स्तोत्र (जिनसागर) १७२
आदिनाथस्तोत्र (बिहारीदास) ५३८
आदिपुराण (जिनसेन) ३,७
आदिपुराण (महीचन्द्र) १९५
आदिपुराण (सिंहसेन) ५६२
आराधना (अमितगति) ५४९
आराधना (सकलकीर्ति) ३३९,५०८
आराधना कथाकोष ४६६
आराधना पंजिका २३५
आराधनासार टीका ५८९,६७०
इन्द्रभूषण स्तुति ७३८
उत्तरपुराण (गुणभद्र) ८
उत्तरपुराण (पुष्पदन्त) ५७६
उत्तरपुराण टिप्पण ८७
उपदेशरत्नमाला ८१
उपासकाचार ५४७
ऋषिपंचमी कथा ३१८
ऋषिमण्डल पूजा ३६१
एकीभाव स्तोत्र ७५७
औदार्यचिन्तामणि (प्राकृतव्याकरण) ४५४
कथाकोष १५९
करकण्डु चरित ३६९
कर्मकाण्ड टीका ४८३
कर्मदहन विधान ३७५
कर्मविपाक रास ३४६
कल्याणमन्दिर पूजा १५०
कल्याणमन्दिर स्तोत्र ७५६
कषायपाहुड २
कार्तिकेयानुप्रेक्षा टीका ३७०
काली गोरी संवाद १९९
कृष्णपुर पार्श्वनाथ स्तोत्र ३५

कैलास छप्पय (धर्मचन्द्र कृत) १४६
कैलास छप्पय (सोयरा कृत) ६९
कोकिळपञ्चमी कथा ७३४
कौतुकसार २००
गणधर वलय पूजा ३७५
गणितसार संग्रह ३८९,३९१, ४८४,५०९
गरुड पंचमी कथा १९६
गुणस्थान गुणमाला ३४१
गोमट्टदेव पूजा ६९८
गोमटसार टीका ५१६
गोमटस्वामी स्तोत्र ७३५
गौतमचरित्र २९३
चन्दनषष्ठी कथा ४४४
चन्दना कथा ३७५
चन्द्रनाथ चरित ३७५
चारित्रशुद्धि विधान ३७५
चित्तनिरोध कथा ४७८
चिन्तामणि पूजा ३७५
चिन्तामणि सर्वतोभद्र व्याकरण ३७५
चौरासी लक्ष योनि विनति (लक्ष्मण कृत) ७२१
चौरासी लक्ष योनि विनति (सुमतिकीर्ति कृत) ४८५
जगत्सुन्दरी प्रयोगमाला ६४६
जटामुकुट १४५
जम्बूद्वीप जयमाला ५१९
जम्बूस्वामी चरित ५७८, ५७९
जम्बूस्वामी रास ३४८
जयधवला २
जसोधर रास ३५०
जिनकथा १६४
जिनचौवीसी (चंद्रकीर्ति) ७१६
जिनचौवीसी (रत्नचन्द्र) ४१०
जिनचौवीसी (ज्ञानसागर) ७००
जिनेन्द्रमाहात्म्य ३२५
जीरापल्ली पार्श्वनाथ स्तोत्र २४१
जीवन्धर चरित ३७५
जीवन्धर पुराण १७०
जीवन्धर रास ३४९, ३८०
ज्येष्ठजिनवर कथा ४४२
ज्येष्ठजिनवर पूजा (कृष्णदास) ६५६
ज्येष्ठजिनवर पूजा (जिनदास) ३४२
ज्येष्ठजिनवर पूजा (जिनसागर) १७७
ज्येष्ठजिनवर पूजा (चन्द्रकीर्ति) ७१३
ज्योतिप्रकाश ३१६
ज्योतिषसार ६०१
तत्त्वत्रय प्रकाशिका ४५५
तत्त्वभावना ५४६
तत्त्वज्ञानतरंगिणी ३५८
तत्त्वार्थवृत्ति ४७४
तीन चौवीसी विनती ७२३
तीर्थ जयमाला (जयसागर) ६५९
तीर्थ जयमाला (सुमतिसागर) ५२१
तीस चौवीसी पूजा ३७५
त्रिलोक प्रज्ञप्ति २५४
त्रिषष्टि पुराण पुरुष चरित्र ६२८
त्रेपन क्रिया विनती (गंगादास) १४४
त्रेपन क्रिया विनती (प्रभाचन्द्र) ४८७
त्रैलोक्यसार रास ४८९
त्रैवर्णिकाचार ४१
दर्शनसार ५

दशभक्त्यादि महाशास्त्र ९९, १०१, १०२
दशलक्षण कथा ७०२
दशलक्षण पूजा ५१८
देवेन्द्रकीर्ति पूजा १६१
देवेन्द्रकीर्ति लावणी १९०
द्रौपदी हरण ५३
द्वात्रिंशदिन्द्रकेवली ६०५
द्वात्रिंशिका ५४८
द्वादशांगपूजा ६८७
द्वादशानुप्रेक्षा ११०, ६७८
द्वादशी कथा ७०१
धनकुमार चरित ४३७
धनदचरित ५७५
धर्मचन्द्र पूजा १२६
धर्मचरित टिप्पण ५९३
धर्मपरीक्षा (अमितगति) ५४४
धर्मपरीक्षा (श्रुतकीर्ति) ५२४
धर्मपरीक्षा रास (जिनदास) ३४७
धर्मपरीक्षा रास (सुमतिकीर्ति) ४८८
धर्मरत्नाकर ६२५
धर्मरसिक ४१
धर्मसंग्रह २५९
धर्मामृत वृत्ति ३७५
धर्मोपदेशचूडामणि ५५३
धवला १
ध्यानप्रदीप ५५२
नन्दीश्वर उद्यापन १७१
नन्दीश्वर कथा ३७४
नन्दीश्वर पूजा ११२, १८७, ७१२
नरेन्द्रसेन पूजा ६६
नवकार पचीसी ७४९
नववाडी १९४
नवाककेवली ६०४
नागकुमारचरित २६४, २६७, ४६८
निर्दुःख सप्तमी कथा ४४७
निर्दोष सप्तमी कथा १८२
निःशल्याष्टमी कथा ७०६
नीतिवाक्यामृत २५८
नेमिनाथ चरित (अमरकीर्ति) ५५४
नेमिनाथ चरित २५१
नेमिनाथ धर्मोपदेश ६९६
नेमिनाथ पूजा (देवेन्द्रकीर्ति) १११
नेमिनाथ पूजा (ज्ञानसागर) ६९७
नेमिनाथ भवान्तर १९८
न्यायदीपिका ९७, ६६६
पद्मचरित २५५
पद्मचरित टिप्पण ८८
पद्मनन्दि पञ्चविंशतिका ३२६, ३६५
पद्मनाभचरित ३७५
पद्मावती कथा १६५
पद्मावती पूजा ७५५
पद्मावती सहस्रनाम २०२
पद्मावती स्तोत्र (छत्रसेन) ५९
पद्मावती स्तोत्र (जिनसागर) १७५
परमेष्ठिप्रकाशसार ५२४
पल्यविधान कथा (श्रुतसागर) ४६३
पल्यविधान कथा (ज्ञानसागर) ७०५
पल्योपम विधान ३७५
पञ्चकल्याणिक कथा १९२

पचसग्रह ५४५
पचस्तवनावचूरि ११६,४९७
पचास्तिकाय ४३५,४५९,४८२,५५५,५६६
पाण्डवपुराण (चद्रकीर्ति) ७१७
पाण्डवपुराण (यशःकीर्ति) ५५८
पाण्डवपुराण (शुभचन्द्र) २८७,३७५
पार्श्वनाथ छद ४९६
पार्श्वनाथ पुराण (चद्रकीर्ति) ७०९
पार्श्वनाथ पुराण (धनसागर) ७५४
पार्श्वनाथ पुराण (वादिचंद्र) ४९२
पार्श्वनाथ पुराण (सकलकीर्ति) ३३६
पार्श्वनाथ पूजा (कुमुदचंद्र) ११५
पार्श्वनाथ पूजा (चद्रकीर्ति) ७११
पार्श्वनाथ पूजा (छत्रसेन) ५६
पार्श्वनाथ पूजा (नरेन्द्रसेन) ६७
पार्श्वनाथ पूजा (ज्ञानसागर) ६९९
पार्श्वनाथ भवान्तर १३९
पार्श्वनाथ विनती ७२४
पार्श्वनाथ स्तोत्र १७४
पार्श्वाभ्युदय ४
पार्श्वाभ्युदय पजिका ३७५
पुरन्दर व्रत कथा ७६६
पुराणसार ८६
पुष्पाजलि कथा (जिनसागर) १६६
पुष्पाजलि कथा (श्रुतसागर) ८४६
प्रद्युम्नचरित (महासेन) ६२६
प्रद्युम्नचरित (शुभचन्द्र) ३७५
प्रवचनसार २४५,५८८
प्रश्नोत्तर-श्रावकाचार ३३५
बहुतरी ११८
बारामासी (चद्रकीर्ति) ७२२
बारामासी (महेद्रसेन) ६७५
बाला पूजा २०३
बाहुबलिचरित २३६
बृहत् कथाकोष २७६,६२४
बृहत् सीता सतु ६०३
बोध सताणू ४७७
भक्तामर वृत्ति ४०८
भरत भुजबलि चरित ७४७
भविष्यदत्त कथा ५९१, ५५७, ५७७
भावनापद्धति २४०
भूपाल स्तोत्र ७५९
महाभिषेक टीका ४५६, ४७०
महापुराण ४६९,५७२
महापुराण टीका ६१७
महावीरचरित ५५३
माणिकस्वामी विनती ४६५
मुक्तावली कथा ४५१
मुगति शिरोमणि चूनडी ५९९
मुनीन्द्रभूषण पूजा ३२४
मूलाचार २५३,२६९,३२३,६२८
मूलाचारप्रदीप ३३८
मेघमाला कथा ४४०
मेरुपक्ति कथा ४५२
मेरुपूजा (गगादास) १४१
मेरुपूजा (छत्रसेन) ५५
मौन्य एकादशी कथा ७०८
यशस्तिलक चन्द्रिका ४७२
यशोधर चरित (पुष्पदन्त) २६८, ३०९
यशोधर चरित (अमरकीर्ति) ५५३

यशोधर चरित (वादिचन्द्र) ४९५
यशोधर चरित (सोमकीर्ति) ६५१
रत्नत्रय उद्यापन २३५
रत्नत्रय कथा ४४९
रत्नत्रय पूजा ६३३
रविव्रत कथा (अभय पण्डित) ४४
रविव्रत कथा (भानुकीर्ति) २९०
रविव्रत कथा (महतिसागर) १९१
रविव्रत कथा (वृषभ) १८१, १८५
रविव्रत कथा (श्रुतसागर) ४४३
रविव्रत कथा (सुरेन्द्रकीर्ति) २९६
रविव्रत कथा (ज्ञानसागर) ७२७
राखीबन्धन रास ७०४
रामटेक छन्द २१७
रामपुराण ३९
रामायण रास ३४४
लवणांकुश कथा १६७
लक्षणपंक्ति कथा ४५३
लाटीसंहिता ६०६, ५९८
वर्धमान नीति ५४३
विजयकीर्ति पूजा ७६२
विमलपुराण ६५५
विश्वलोचन कोश १६
विषापहार टीका ३६०
विषापहार पूजा ७५१
विषापहार स्तोत्र ३५८
विहरमान तीर्थंकर स्तुति ७५०
वीतराग स्तोत्र ६३४
वैद्यविनोद ६०२
व्रतजयमाला ५२०
शब्दरत्नप्रदीप ४०
शब्दार्णवचन्द्रिका ३९०
शान्तिनाथ बृहत्पूजा ४७५
शान्तिनाथ चरित ५७४
शान्तिनाथ पुराण ६८३
शान्तिनाथ विनती ७४
शान्तिनाथ स्तोत्र १७३
शिखर माहात्म्य ६१४
शीलपताका २०१
श्रवणद्वादशी कथा ४४८
श्रावकाचार (वसुनन्दि) २८६
श्रावकाचार (हेमचन्द्र) ६९३
श्रीपाल आख्यान ४९४
श्रीपालचरित ४०१
श्रुतस्कन्ध कथा १३७, ७०७
श्रुतस्कन्ध पूजा ४५७
श्रेणिकचरित्र (गुणदास) ३५१
श्रेणिकचरित्र (जनार्दन) २०४
श्रेणिकपृच्छा कर्मविपाक ३८१
षट्कर्मोपदेश ५५३
षट्कर्मोपदेश रत्नमाला २७४
षट्खण्डागम १
षडावश्यक ४०६
षड्दर्शनप्रमाणप्रमेयानुप्रवेश ३७२
षोडशकारण कथा ४५०
षोडशकारण पूजा (चन्द्रकीर्ति) ७१४
षोडशकारण पूजा (मेरुचन्द्र) ५०१
षोडशकारण पूजा (सुमतिसागर) ५१७
सगरचरित ५०५
सप्तपरमस्थान कथा ४८१

समयसार २०, ५६५
समवशरण पीठिका ४७
समवशरण षट्पदी ५४
सम्मइजिन चरिउ ५६१
सम्मेदाचल पूजा १४३
सरस्वती पूजा ३७५, ७१५
सहस्रनाम टीका ४७३
संशयिवदन विदारण ३७१
सावयधम्मदोहा पंजिका ४६०
सिद्ध पूजा ३७५
सिद्धसेन पूजा ८२
सिद्धान्तसार २७७
सिद्धान्तसार भाष्य ४८१
सीताहरण ५०३, ६७४
सुकुमारचरित ३३७
सुगन्धदशमी कथा १६९, ३१७
सुदर्शनचरित ११७, ४३४, ४७१
सुभाषितरत्ननिधि ५५३
सुभाषितरत्नसन्दोह ५४२
स्वरूपसम्बोधनवृत्ति ३७५
हनुमच्चरित्र ४३६
हरिवंशपुराण (संस्कृत) ६२२, ६६५, ५२९
हरिवंशपुराण (अपभ्रंश) ५९४, ५२४
हरिवंशपुराण (हिन्दी) २७१, ३१३
हरिवंशपुराण (मराठी) २०५
हरिवंश रास ७३, ३४५
क्षेत्रपाल पूजा १४२
क्षेत्रपाल स्तोत्र १७६
ज्ञानसूर्योदय ४९३
ज्ञानार्णव ५६७

परिशिष्ट ६, मन्दिर उल्लेख सूची

आदिनाथ मन्दिर
अर्थूणा ५५०
अमरावती ८१
आबू ३३३
कलोल ६५५
खंभात ३६९
गन्धार ४८४, ५०३
गिरिपुर ३६५,७४९
घोघा ५०५
तक्षकपुर २६७
धूलिया १५५,३१४,३१५,३१७, ५९७
बालापुर १९२
महरौठ २९३
सागवाडा ३३०,३८०,३९०,४०४, ४१२,४१४
सूरत ६५,४१७,५०४,५०७
सम्भवनाथ मन्दिर
सागवाडा ४०६
पद्मप्रभ मन्दिर

अजनगाव ७६३

सुपार्श्वनाथ मन्दिर

कर्णखेट १८५
कारंजा २१, ४७, ५३, ५४
खोलापुर १४७

चन्द्रप्रभ मन्दिर

कारंजा १३७, १४४, १४६, १५०, १६४, १८२, २०२, ७४७, ७५४
ग्रीवापुर ४०८
ग्वालियर ५६२
चित्रकूट २१
देवलगाव ६९, ७३
मीलोडा ३८९
मीसी २१३
मुळगुंद ९
सोनागिरि ९४
हिसार २५८

शीतलनाथ मन्दिर

आबू ३३३
कोटाटा ४९१
गौढिली ६५२
गजपुर ७५०

वासुपूज्य मन्दिर

सूरत २५४, २५९

विमलनाथ मन्दिर

धूलिया ६३७

धर्मनाथ मन्दिर

एरंडवेल १०९

शान्तिनाथ मन्दिर

आतरी ६४१
आशापुर १९५, २००
तरसुंबा ६३९
दोस्तटिका ६२२
नरसिंहपुर ६४९
पोन्नवाड ११
चळिळगाव ८९
मालव ९०
रामटेक ११९, २१७
शत्रुंजय ३८८, ४८८
गिरड १७०, १७८
साहार १५१

कुन्थुनाथ मन्दिर

विजयनगर ९६

मल्लिनाथ मन्दिर

देवगढ ४२२

नेमिनाथ मन्दिर

आबू ३३३
जेरहट ५२३, ५२४
तक्षकपुर ३९३
भडौच ४३६
रिद्धिपुर १९१
सवाई जयपुर २७६
सोजित्रा ६८३

पार्श्वनाथ मन्दिर

अंकलेश्वर ४९५
कृष्णापुर ३५
जिन्तूर ३९
देवगिरि ७०९

नेसर्गी ९२
पलाइथा ३२३
प्रस्तरी ६४०
महुआ ४९६
वर्धमानपुर ६२२
श्रीपुर ४६७
सवाई जयपुर २७४
महावीर मन्दिर
पलाइथा ३२३
हिसार ६०१
अज्ञात-मूलनायक-मन्दिर
अगडि १०
आतगी ३८८
आबू ३३३
कलबुर्गी ६४०
कोण्डनूर ९१
घनौघ ४६८
घोघा ४६९
झुंझुनपुर २५३
दूबकुण्ड ६२७
धरणगाव २०
पणियार ५५९
पभोसा ६१६
फतेहपुर ६१३
बेदरी ७५
बळ्ळिगावे १२
शिलाग्राम ६२३
शौरीपुर ३१५

परिशिष्ट ७, जातिनामसूची

अग्रोतक (अग्रोकार, अगरवाल) २५३,२५९,३२७,३२८,४४२,४५८ ५५५,५६०,५६१,५६८,५७०,५७५ –७७,५७९,५९२,५९३,६११,६१५, ६१६,६१८–२०
उज्जैनी पल्लीवाल १३६,२१३
ओसवाल २०
खंडेलवाल (खडिल्य, खडेरवाल) २५३,२५५,२५६,२५८,२६६,२७२ २७९,२८६,४१६,५१०,५११
गंगराडा ६४,११०
गगवाल २८९
गंगेरवाल १८५
गुजर पल्लीवाल २८
गोलसिंगारे (गोलशृंगार) ११९,४३६
गोलापूर्व ५४०
गोलाराडा २५२,२५७,३१०
जागडा पोरवाड ३५४
जैसवाल २६४,५६९,५७२,५८६
धाकड ४९
नरसिंहपुरा ६४९,६५१,६६९,७१०
नागद्रा ३९६
नेवा ७२,१२८
पद्मावती पल्लीवाल २०७,५९५
पल्लीवाल ४३८
पौरपाट (परवार) २२०,४२५,५२५,५२८

५३०,५३६
बघेरवाल (व्याघ्रेरवाल) २१,३२,४५,
४८,१०५,१०७,१०८,१२१,१२२,
१२५,१३१,१३८,१४९,२२३,२४८
३२३,३८५,६४४,६८४,६८६,७०३
७२९, ७३०–३३, ७३७, ७४४-४६,
७५१,७५३,७५४,७६४,७६५
बरहिया २६२
भट्टपुरा ६५०,७५०
मेवाडा ७६१
रत्नाकर ४२६
राइकवाल ४३२,५०७
लम्बकञ्चुक (लमेचू) २५०,३०३,३०४,
३१४,३१९,३२१,३५२
श्रीमाल २१५,३८४
सिंहपुरा ४३०,५००
सोहितवाल (सैतवाल) ११४,११७,
१२४,२०९,२६१
हुबड (हूमड) २४,५०,१५४,२३०,
२५१,३३१,३३४,३४०,३४२,३५६,
३६२,३६८,३७६,३७७,३८७,३८८,
३९२,४०४,४२२,४२७–२९,४३१,
४३३,४५१,४६३,४६९,४८४,४९९,
५०६,६६१,६७६,७४९,७५०,७५२.

परिशिष्ट ८, शासक नाम सूची

अकबर ५७७, ५७९, ६०६
अकालवर्ष ८
अमोघवर्ष २, ४, ८
अर्जुन जीयराज ४७९
अलीखान ६०९
अल्लाउद्दीन १००
इन्द्र ३५९
इन्द्रायुध ६२२
इब्राहीम ५७२, ५७३
इरुग ९६
कल्पराय ३५९
कल्याणमल्ल २६८, ५७०
कीर्तिसिंह ५६७, ५९३
कुतुबखान २५३, २५६
कृष्णदेव १०१
कृष्णराय १०१
केतलदेवी ११
क्यामखान ६०९
गंग ४३९
ग्यासुद्दीन ४६१, ५२३, ५२४
चाकिराज ६२३
चामुण्डराय ८९
चूहडसिंह २७२
चैन्न ९६
जगत्तुग १
जयवराह ६२२
जयसिंह २७१, २७२
जयसिंह ४३९
जहांगीर ५९९, ६०३
डूंगरसिंह ५५७, ५६०, ५६५, ५९१

त्रिभुवनमल्ल १२
त्रैलोक्यमल्ल ११, ८९
दीनदारखान ६१२
देवराय ३५९, ४७६, ९९
दौलतखान ६०९
नसीर शाह ५२४
नाथदेव ५८६
पर्पट ६२६
पहाडसिंह ४२२
पाण्डुराय ३५९
पीरोजसाह (कलबुर्गा) ६४०, ६४२
पीरोजसाह (पावागढ) ६५४
पुजराज ३९०
पृथ्वीसिंह ४२२
पेरोजखान २५९
पेरोजसाह २३५
प्रतापचन्द्र २५०
बंगराय ४७६
बहलोलशाह २५३, २५८
बाबर ५७४
बिसनसिंह २७१
बुक्क ९६
बोद्दणराय १
बोमरस ३५९
भानु ४६३
भीमसिंह ३९५
भैरवराय ३५९, ४७६
भोज ८६–८८
भोज (मन्त्री) ४६३
मल्लिराय ४७६
महमदशाह (बेगडा) १८
महमदशाह (नासिरुद्दीन) २३६
महमदशाह (दिल्ली) २७१
मानसिंह २६४
मुंज ५४२, ६२६
मुदिपाल ३५९
रघुनाथ २९३
रणमल्ल ६३९–४१
रामचन्द्र २६७
रामनाथ ३५९
लक्ष्मणसिंह ६१५
लोकादित्य ९
वज्राग ४३९
वत्सराज ६२२
वल्लभेन्द्र ६२३
विक्रमसिंह ६२७
विनयादित्य १०
विनयाबुधि ९
विनायकपाल ६२४
विरूपाक्ष ९९
वीर पृथ्वीपति १०१
वीरमदेव ५५५, ५८८
वैजनाथ ६४०
व्याघ्रनरेन्द्र ४३९
शाहजहा ३८८, ६००–६०२, ६०९
शिवसिंह २६३
श्रीकृष्णवल्लभ ९
श्रीवल्लभ ६२२
सलीम ५७६
सिकन्दर ९९
सिन्धुराज ६२६
हरिचन्द्र ६३०
हरिहर ९६
हुमायून ५७५
हैबतखान २५३

परिशिष्ट ९, भौगोलिक नामसूची

अउली ३०३
अकबराबाद ६०२
अचलपुर ५०
अजमेर २२३,२३०,२३२,२३३,२७८, २८०,२८६,३००,३०२
अटेर ३२२
अबडनगर ७४६
अब्राह्माबाद ५७६
अमरावती ८१
अर्गलपुर (आगरा) ५७९,६०४
अर्बुदाचल (आबू) ३३३
अल्केश्वरपुर १८
अलवर ३०९
अवंति ४२६,६२२
अहमदाबाद ३८८
अहीर ४७५
अक्षयवट (प्रयाग) ४३९
अकलेश्वर ४९५
अंबावती (अंबर) २७२
अंजनपुर ७५५
आगरा १६१,३१३
आरग ९९
आरा ३२८
आशापुर १९५,२००
आतरी ३८८,६४१
इडिगूर ६२३
इटार ६६४
उदयपुर ८०,३९६
ऊर्जयन (गिरनार) ४३९,४८६
एरंडवेल १०९
एल्दुर्ग (ईडर) ६३९
कनकाद्रि (सोनागिरि) ५९४
कर्णखेट १८५
कर्णाटक ३६०,१७,२५,९६,७२०
कलबुर्गा ६४०,६४२
कलोल ६५५,६५८,६६४
कल्यवल्ली (कलोल) ६५५
कम्पिम ३३
कारंजा २१,४७,५०,५३,५४,६०,६७, ७०,७२,७८,८४,१३७.१४४,१४६, १४९,१५०,१६३,१६४,१८२,१८९, १९०,२०२,७३०,७४७,७५४
कालवाड ३६
काला डहरा २९७,२९९,३०१
कावेरी १०१,७२०
कुरुजागल ५७२,५७३,५७५,६१०
कुन्तल ९६
कृष्णपुर ३५
कोडिशिला १५६
कोटा ४२३
कोणूर ९१
कोदाटा ४८९,४९१
कोल्हापुर ७८
कौशाबी ६१६
खडक्क १५५,३९७
खड्ग ३९४
खगेजवाड ३६९
खंडिल्ल ६२५
खमायच (खंभात) २३६
खोहे ३३०

खोलापूर १४७
गहेली ३१७
गजपंथ १५२,४६३
गाधार ४२८,४५३,४८४,५०३
गिरनार ५०,१५४
गिरिपुर ३६५,७४९
गुजरात २३३,३३०,७५०
गुर्जर १५६,३८८,४१०,४७२,५०६,६३८,६५४,६५५,६८३
गोढिली ६५२
गोपाचल २५५,२६४,२९६,३२६,५५५,५५७,५५९,५६०,५६१,५६५,५६७,५८८,५९१,४६१
गोमटेश्वर ७३३
ग्रीवापुर ४०८
घनौघ ४६८
घांटोल ४१७,४२१
घोघा २५१,४२९,४६१,५०५
चंपापुर ४३९
चितोड २६५
चित्रकूट २१,९०
चीत्तुडा ३९६
चूलगिरि ४८६
जजाहुति ८९
जयपुर १२१
जहानावाद २७१
जालमंगल ६२३
जाली ४९
जावृचर ४२४
जिन्तुर ६९
जीरापल्ली २४१
जेरहट ५२३,५२४
जोइणिपुर (दिल्ली) २३६,५७४
जोवनेर २८२–२८५
झाडी २१७
झारखंड ७८
झुंझणुपुर २५३–२५४
टोडा २४५,२६८
डूंगरपुर ६७१
डौकनी ६०६
ढूंढाहड २७१
तरसुवा ६३१
तक्षकपुर २६७,३९३
तारंगा १५६
तुंगीगिरि ४६३,४८६
तौलव १९०
त्रिपुरा ४१०
त्रिवक १५२
दहे २१७
दहीरपुर ५७५
दिल्ली २३५,२३७,२४६,२४८,२७७,३५१,४९०,५०६,६०९
देवगढ २१७,४२२
देवगिरी २३६,६४४,७०९
देवलगाव ६९,७३
दोस्तटिका ६२२
घरणग्राम २०
धवल ९
धारा ८६, ८७, ८८, २३६
धूलिया २५५
धूलेव ३९४, ५९७
धौपे २५०

नरसिंहपाटन ७२०
नरसिंहपुर ६४९, ६५०
नवग्रामपुर २६१
नवसहस्र ४७९
नदिग्राम ११०
नंदीतट ६४७
नागपुर ८५
नागोर २६५, २८९, २९१
नासिक १५२
नेसर्गी ९२
नोगाम ३३०,३९९,४०२,४०९,४१४
पट्टण २३६
पनियार २९६, ५५९
परतापोर ४१४
पलाइथा ३२३
पचामन ४७५
पाथरी ६४३
पावागढ ६५४
पावापुर ४३९
पोन्नवाड ११
प्रभास (पभोसा) ६१६
प्रयाग ६१६
प्रस्तरी (पाथरी) ६४०
फतेहपुर ६०९, ६१२, ६१५
बहादुरपुर ६८६
बळगावे १२, ८९
बंकापुर ८
बागड ३६०, ३९२, ३९६, ४०२
४०६, ६३७, ७४९
बालापुर १९२
बासखोह २७२
बूडिया ५९९, ६०२, ६०३
बेदर ७५
बेळगामि ८९
भदावर ३२३
भयाणा ५७६
भरवच्छ (भडौच) १८
भभेरी १९
भागल देस १५३
भानपुर ४२४
भीमनदी ११
भीलोडा ३८९,४०२
भीसी २१३
भृगुकच्छ (भडौच) ४३६,४३७
मथुरा ५४१
मधूकनगर ४९३
मयूरखंडि ६२३
मलयखेड १४७,१८९,१९०
मसूतिका ५४५
महरौठ २९२,२९३,२९४
महाचक्र ६२७
महीनदी ४०८
महुआ ४८८,४९६
महेन्द्रपुर १५२
मंडपदुर्ग २२५,४६१,५२३,५२४
माणिक्यस्वामी ५०
मालव ९०,४७२,५२३,५२४,५२९
मालासा ६६६
मागीतुगी १५३
मुडासा २६३
मुल्हेर ४७५
मूडलि ३३२

मुळगुद ९
मेडता २७९
मेदपाट (मेवाड) २१,६२८,६५२
मेल्लुडा ४१७,४२१
मेवाड ३९६
योगिनीपुर (दिल्ली) २५३
राजपुर ७५०
रामटेक ५०,७४,११९,२१७
रायदेश ३८९
रिद्धिपुर १९१
रूपनगर २९८
रेणुपुर (धूलिया) ३९७
रेवा २८८
रैवतक (गिरनार) १५७
लवनपुरी १९०
लाटवर्गट ६३१
लोहाकर ६५५
वनवास ८,८९
वराट (वराड, वऱ्हाड, विदर्भ) २१, २९,१६१,१८५,७३०,७५४
वर्धमानपुर (बदनावर) ६२२,६२४
वाग्वर ३३०,३८०,३८८,३९०,६४१
वाटग्राम २
वाणारसी ६३०,७११,७२५
वाल्मीकपुर ४९२
विजय (विद्या) नगर ९६,९९
विंध्यगिरि ९५
वीऊन्ल ४९९
वृघणपुर (बुऱ्हानपुर) ६०
शत्रुंजय (सेत्रुजा) १५८,३८८,४८६, ४८८
शाकवाट (शाकमार्ग, सागवाडा) ३७५,४०४
शिरड १६७,१७०,१७८,१९०
शीतलवाड ३९२
शौरीपुर ३१५
श्रीपुर ४६७
श्रीरंगपट्टण १०१
सकलीकरहाटक ६२५
सर्पीदो ६१०
समरपुर २६९
सम्मेदशिखर ५०,४३९
सवाई जयपुर २७४,२७५,२७६
सागवाडा ३३०,३८०,३९०,४०५, ४०६,४०९,४१२,४१४
सागलपुर ३९६
सावली ५०,४०५
साहार १५१
सागावत २७१
सिहरदि ६००
सुनामपुर २५६,२५८
सुल्तानपुर ६०२
सुवर्णपथ (सोनपत) ५७३
सूरत ६५,१५४,१५९,१६१,४९७, ५०४,५०७,६९०,७५५,७६१,
सोजित्रा ६८३
सोनागिरि ९४
सोमवार १३
सोरठ १५७,१५८
सौरमडल ६२२
स्तभतीर्थ (खंभात) ४५८
स्थलिविषय ५५०

हसपत्तन ४६८
हस्तिनागपुर ३२३
हाडोली ४२३
हासोट ४८८
हिसार २५३, २५६, २५८, २५९, ३७०, ६०१, ६०७, ६११, ६१८
